आप बीती

[शिकार के रोचक अनुभव]

लेखक

के० बी० हकीमुद्दीन

डिवीज़नल फ़ॉरेस्ट आफ़िसर (रिटायर्ड)

उत्तर-प्रदेश

प्रकाशक

के० बी० हकीमुद्दीन

सिंगाही (खीरी)

प्रथम संस्करण १९५३

मूल्य—तीन रुपये आठ आने

मुद्रक
श्री रामेश्वरदयाल दीक्षित
व्यवस्थापक—हिन्दुस्तानी आर्ट-कॉटेज, लखनऊ

दीबाचा

दुनिया में बहुत-से शुग़ल हैं जिनमें इंसान अपने शौक़, अपनी सोसायटी और अपनी हैसियत के मुताबिक दिल बहलाता और वक़्त गुज़ारता है। अमीरों के लिए, जिनको खाने-पीने की फ़िकर नहीं होती, आम शुग़ल शराब, जुआ, औरत, सिनेमा, खेल-कूद और सैर व शिकार हैं। ऊपर लिखे हुए तमाम शौक़ों में खेल-कूद और सैर व शिकार सबसे अच्छे शौक़ हैं और मेरे ख़्याल के मुताबिक शिकार इनमें भी सबसे बेहतर शौक़ है। शिकार—

(१) इंसान की काफ़ी वरजिश बे इरादे शिकार की तलाश में जंगलों, नदी-नाले और पहाड़ों में चलने-फिरने से हो जाती है जिससे तन्दुरुस्ती सँभलती है।

(२) शिकार से मामले को जल्द तय करने की आदत होती है।

(३) इससे आँख, नाक और कानों का इस्तेमाल बहुत तेज़ हो जाता है।

(४) यह इंसान को मेहनती, मज़बूत, बहादुर और अपने ऊपर भरोसा रखनेवाला बनाता है। अच्छी तन्दुरुस्ती हर किस्म के खेल-कूद के लिए जरूरी है और खासकर शिकार के लिए बहुत ही जरूरी है। जबकि शिकारी खुद अपने ही बल-बूते पर शिकार का लुत्फ़ उठाये न कि जब दूसरे लोग कुल इन्तज़ाम करें और शिकारी सिर्फ बन्दूक चलावे। शुक्र है कि मेरी तन्दुरुस्ती उम्र भर काफी अच्छी रही और इस वक़्त ६७ बरस की उम्र तक भी मैं जवानों का मुकाबिला दफ्तर और बाहर के कामों में अच्छी तरह करता हूँ।

मेरे साथी और दोस्त अक्सर मुझे कहा करते थे कि तुम अपने शिकार के तजुर्बे और वाक़ियात लिखो ; लेकिन यह देखते हुए कि शिकार पर दर्जनों किताबें बड़े-बड़े शिकारियों ने लिखी हैं, मेरी हिम्मत नहीं पड़ती थी कि मैं अपनी टूटी-फूटी ज़बान में लिखूँ ; लेकिन चूँकि हर एक के तजुर्बे एक दूसरे से मुख़्तलिफ होते हैं। लिहाजा मैं अपने वाक़ियात को जिस तरह से वह वाक़े हुए हैं, सादी ज़ुबान में बयान करने की कोशिश करता हूँ। बहुत-सी बातों में मेरे शिकार के तरीके दूसरों से मुख़्तलिफ हैं क्योंकि मैंने जरूरत वक़्त और अपनी समझ के मुताबिक वह तरीके इस्तेमाल किये हैं जिनसे खर्चे और वक़्त में कमी हो।

मैंने अपनी नातजुर्बेकारी और कम उमरी के जमाने में जो-जो गल्तियाँ ख़तरनाक जानवरों के शिकार में की हैं उनको खास तौर से ज़ाहिर किया है ताकि नातजुर्बेकार कम उम्र शिकारी जो मेरी किताब को पढ़ें वह उन गल्तियों के ख़तरों से बचें। अब काफ़ी तजुर्बे के बाद जब मैं अपनी पिछली गल्तियों पर ग़ौर करता हूँ तो दिल धड़कता है और ताज्जुब करता हूँ कि मैं किस तरह से उन ख़तरनाक हादसों से बचा।

मेरे दोस्त और साथी अक्सर मज़ाक में ख़तरनाक वाक़ियात के बाद मुझे भूत, जिन्न और खुदकिस्मत कहा करते थे। मेरे दोस्त मिस्टर ओनियाल फॉरेस्ट अफसर ने अक्सर कहा कि तुम तो अमीनाबाद पार्क लखनऊ में बकरी और मचान बाँधकर बैठ जाओ तो वहाँ भी शेर या गुलदार आ कूदेगा, चाहे वह अजायबखाने ही का क्यों न हो; मगर वह आवेगा ज़रूर।

मैंने अपनी किताब में सही नाम उन अफसरान दोस्त और मातहतों के बग़ैर उनकी इज़ाज़त लिये दे दिये हैं जो मौक़े पर मौजूद थे और चूँकि यह वाक़ियात हैं और उनके मुआज़िज़ नाम से मेरी किताब की इज़्ज़त होगी। उम्मीद करता हूँ कि वह मुझे माफ़ करेंगे। अब मैं उस पिछले ज़माने को और उन साथी दोस्तों अफसरान के संग-साथ को बड़ी हसरत की निगाह से देखता हूँ जिनसे मैंने बहुत लुत्फ़ उठाया है। अगर मसला आवागमन सही है तो मैं फिर डिवीजनल फारेस्ट अफसर ही आनेवाली ज़िन्दगी में बनने की ख़्वाहिश करूँगा।

आख़ीर में मैं श्रीमान् राजा प्रताप विक्रमशाह तालुकदार सिंगाही रियासत का दिल से मशकूर हूँ; जहाँ मैं पिछले पाँच बरस से बतौर मैनेजर के मुलाज़िम हूँ और जहाँ मैं ३८ बरस जंगलात में मुलाज़मत करने के बाद पेंशन का ज़माना आराम व इज़्ज़त से अपनी जन्मभूमि में गुज़ार रहा हूँ। वह मुझको अक्सर मौके शिकार के देते रहते हैं; जिससे मैं अब तक फिर जंगलों में दिल बहलाने और पुराने शौक शिकार में चला जाता हूँ।

के० बी० हकीमउद्दीन

विषय-सूची

१. मेरी जन्मभूमि और मेरा बचपन

मैं फरवरी सन् १८८६ में कस्बा सिंगाही जिला खीरी मुल्क अवध में पैदा हुआ था जो कि हिन्दुस्तान के सूबे यू० पी० के उत्तरी हिस्से तराई में वाक़ै है। कस्बा सिंगाही खैरीगढ़ राजधानी का सदर मुकाम है। इसका रकबा करीब ३०० मुरब्बा मील के है। इसके उत्तर में १२ मील के फासले पर सरहद नैपाल है। पच्छिम में करीब १० मील से सरकारी जंगल नार्थ खीरी फारेस्ट डिवीजन के शुरू होते हैं और दक्खिन व पूरब में इसी तरह की और छोटी-छोटी रियासतें जंगल व घास के रकबे हैं। इस खित्ते की औसत सालाना बारिश करीब ५० इंच के है। जाड़ों में सख्त जाड़ा और पाला पड़ता है और गर्मियों में ११२ डिग्री तक अक्सर गर्मी पहुँच जाती है। कुओं में पानी १० से २५ फीट तक की गहराई पर मिल जाता है। लू हल्की और चन्द ही दिन चलती है। रातें गर्मियों में भी काफी ठंडी होती हैं। मुल्क हमवार है। नदी, नाले व झीलें काफी हैं और आब व हवा मतूब है। बरसात में करीब २५ फी सदी रकबा पर सैलाव आ जाता है और पूरी बरसात भर कीचड़-पानी करीब-करीब हर जगह रहता है। ऊपर बयान किये हुए हालात की वजह से हर तरह की बनासपती, घास व जंगल बहुत शादाव व घने रहते हैं, जिनमें हर तरह की चिड़ियाँ और जंगली जानवर जो कि उत्तरी हिन्दुस्तान की तराई में होते हैं वह सब यहाँ पाये जाते हैं। जाड़ों के मौसम में तरह-तरह की मुरगाबियाँ, क़ास-कुलंग वगैरा हजारों की तादाद में उत्तरी ठंडे मुल्कों से आते हैं और अक्तूबर से मार्च तक हर साल ठहरते हैं। इनके अलावा मोर, मुर्गी, तीतर, बटेर, चर्च यहाँ हर मौसम में हर तरफ

कसरत से पाये जाते हैं। जानवरों में हिरन, चीतल, काकड़ा, पाढ़ा, गोन, साँभर, नीलगाय, सुअर, जंगली कुत्ते, गुलदार, घड़ियाल, रीछ और शेर भी काफी पाये जाते हैं। लिहाजा हर तरह का शिकार इस छोटी-सी रियासत में पूरे साल भर मिलता है। गो शिकार बहुत तेजी से घटता जाता है और उसके मुकाबिले में जो कि अब से पचास बरस पहिले हालत थी अब चौथाई से भी कम हो गया है। इसकी वजह यह है कि (१) उस वक्त हथियारों के लायसेंस बहुत कम थे। (२) ज्यादा भरनी बन्दूकें थीं। (३) इस कदर सड़कें, पुल और बँगले जंगलों में न थे जहाँ पहुँचना बगैर खास इंतजाम और काफी खर्चा और वक्त के मुमकिन न था। (४) मोटरें, टार्च और सस्ते कारतूसी रायफल और बंदूकें जो कि पहिली बड़ी लड़ाई के बाद इस मुल्क में करीब चालीस बरस से आई हैं। जंगली जानवर अपनी सालाना पैदावार से कहीं ज्यादा मारे जाने लगे। (५) इस जमाने चालीस बरस में जंगली जानवरान में तीन मर्तबा मरी की बीमारी भी इस सूबे में बहुत सख्त पड़ी; जिसमें हजारों जंगली जानवर हर जिले में मर गये। (६) गोश्त के मँहगे हो जाने से लोग बन्दूक, जाल और कुत्तों से गोश्त के लालच में बमुकाबले पहिले के जंगली जानवरों को बहुत ज्यादा बगैर लिहाज नर, मादा व बच्चे के मारने लगे हैं बल्कि हर देहात में अच्छे-अच्छे लोगों ने जंगली जानवरों को मारकर उनका गोश्त पोशीदा और अक्सर जाहिरा बेचने का पेशा कर रक्खा है और अगर यही हाल रहा तो अब से आयंदा पचास बरस के अन्दर सिवाये उन जंगलों के जो आबादियों से दूर हैं या पहाड़ी इलाकों के जहाँ पहुँचना मुशकिल है, जंगली जानवर देखने को नहीं मिलेंगे और आयन्दा की नस्ल सिर्फ उनके किस्सा व कहानियाँ किताबों में पढ़ा करेंगे। यह मैं इसलिए अपने जाती तजुर्बे पर कहता हूँ कि मेरे बचपन में हिरनों के गोल सैकड़ों के सिंगाही से तीन-चार मील पूरब तरफ और इसी तरह चीतलों के गोल पश्चिम में पाये जाते थे। दस-बीस चीतल, हिरन, नीलगाय सिंगाही के आस-पास में हर

वक्त देखने में आते थे मगर अब इन्हीं मुक़ामात में ये जानवर सौ की जगह दस भी बाकी नहीं रह गये हैं। उस जमाने में हर शख्स जिसके पास किसी किस्म की भी भरनी बन्दूक थी और जो बन्दूक दाग सकता था वह जिस दिन चाहता था २-४ हिरन चीतल आसानी से मार लाता था और अब यह करीब-करीब गैरमुमकिन है। मेरे पिता सिंगाही में डाक्टर थे जहाँ मैं पैदा हुआ और बचपन का जमाना कटा और जहाँ के लोगों का शिकार तफरीह का खास शुगल था। उस वक्त इस रियासत में करीब एक दर्जन के हाथी थे और इसी कदर घोड़े और बैल के ताँगे थे। जिनको यहाँ अद्धा कहते हैं। राजा से लेकर मामूली आदमी तक जिसके पास बन्दूक थी या जिसको माँगे से मिल सकती थी, शिकार का शौकीन था। मैं अपने बचपन में रोज लोगों को देखता था कि तरह-तरह की चिड़ियाँ और जानवर मारकर लाते थे और उनके किस्से बयान किया करते थे। जिनको देखकर और सुनकर मुझे शिकार से दिलचस्पी पैदा होनी शुरू हुई। जब मैं सिंगाही के स्कूल में पढ़ता था सबसे पहले मैंने अपने हमजोली के लड़कों से तीर-कमान का इस्तेमाल सीखा। इसके बाद गुल्ला-गुलेल का इस्तेमाल सीखा; जिसमें बजाय तीर के कमान से मिट्टी की गोली को निशाने पर काफी जोर से मारते हैं। इसमें मुझे ठाकुर सुर्जीसिंह ने काफी मश्क करा दी जो कि मेरे पिता का चपरासी था और मैं भी छोटी-छोटी भोली-भाली चिड़ियाँ अक्सर मारकर बहुत खुश होने लगा, शौक और बढ़ने लगा। मेरे पिता के पास एक नाली भरनी बन्दूक थी मगर वह शिकार के शौकीन न थे। कभी-कभी राजा के साथ चले जाते थे मगर अपनी बन्दूक अपने चपरासी सुर्जीसिंह को अक्सर मोर, मुर्गी व हिरन, चीतल और मुर्गाबियाँ मारने को दे देते थे जो कभी खाली न आता था और उसको सबसे ज्यादा हिस्सा मिलता था। जिसकी वजह से वह काफी दिलचस्पी लेता था। जब मैं बन्दूक उठाने के काबिल हुआ तो सुर्जीसिंह ने मुझे बन्दूक चलाना भी सिखाया और कभी-कभी जब

मुझे इजाज़त मिल जाती थी तो अपने बैल के ताँगे यानी अद्धे में सुर्जीसिंह के साथ चला जाता था और उसको शिकार मारते देखता और सीखता था और चिड़ियों पर मैं भी बन्दूक चलाता था। एक मर्तबा मैं सुर्जीसिंह के साथ अपने दोस्त अब्दुल रहमान व मंसबअली के गया जो कि मेरे साथ पढ़ते थे। सिंगाही से दो-तीन मील पूरब ढखेरवा की तरफ जाने के बाद एक हिरनों का गोल खेत में चरता नजर आया। मैंने दागने की ख्वाहिश की। सुर्जीसिंह ने अद्धे को करीब चालीस कदम पर रोककर बन्दूक में ग़र्राब भरकर मुझे दी। मैंने जिस जगह पर ज्यादा नर हिरन थे बंदूक उन पर दागी। आवाज होते ही सब हिरन इधर-उधर भागे मगर तीन गिर गये। एक नर जिसकी गर्दन में सिर्फ एक ग़र्राब लगा वह पड़ा रहा। दूसरा नर जिसके तीन ग़र्राब बगल में लगे थे वह भी तड़पता रहा। मगर एक मादीन जिसकी पिछली टाँग कूले से टूट गयी थी, उठकर भागी। हम तीनों अद्धे से कूदकर दौड़े। सुर्जीसिंह ने आवाज दी कि लँगड़ी हिरनी जो भाग रही है उसको पकड़ो और वह खुद बन्दूक फिर भरने लगा। हम तीनों को पीछा करते देखकर हिरनी और ज़ोर से भागी और घास के रक़बे में आँखों से ग़ायब हो गयी। सुर्जीसिंह बन्दूक भरकर अद्धा लाया। हम सब लोग भी बैठकर अद्धे को हिरनी की तरफ ले गये। थोड़े फासले पर हिरनी उठकर भागी और सुर्जीसिंह ने दूसरी फैर दागकर उसको ख़तम किया। तीनों को लादकर मुझे अपनी पहिली कामयाबी पर बहुत खुशी हुई। वापसी पर सुर्जीसिंह ने दो नर हिरन और मारे। इस तरह दो-चार मर्तबा सुर्जीसिंह के साथ जाने से हिरन मारना जो कि उस ज़माने में ज्यादा-से थे, काफी सीख लिया। सुर्जीसिंह ने रियासत में शिकारियों में नौकरी कर ली और फिर हम तीनों अद्धे में अकेले अक्सर इतवार के दिन जाने लगे। सुर्जीसिंह की जगह एक नौ उमर लड़का कादिरखाँ नौकर रक्खा गया जो कि बैल का अद्धा भी चला लेता था और शिकार का बहुत शौकीन था। जब कभी हम जाते तीन-चार

हिरन आसानी से मार लाते। जबकि हिरनों के सौ-सौ, दो-दो सौ और तीन-तीन सौ के गोल आमतौर पर जगह ब जगह दिखलाई देते थे और अब वहाँ दो-चार भी मुश्किल से दिखलाई देते हैं।

क़रीब सन् १८९० ई० में माताजी के स्वर्गवास के बाद मैं अलीगढ़ स्कूल में पढ़ने चला गया। बड़े दिन और गर्मियों की दो माह की छुट्टियों में मैं मकान आता था। मकान आने से चन्द दिन पहिले से मैं घण्टों रात में शिकार के मंसूबे और नये तरीके मुख्तलिफ़ किस्म की चिड़ियाँ और जानवरों के मारने के बेचैनी से सोचा करता था जो कि मेरी जन्मभूमि सिंगाही के चारों तरफ १ से ६ मील के अन्दर सैकड़ों की तादाद में पाये जाते थे।

एक मर्तबा जब मैं अलीगढ़ से छुट्टियों में आया तो उन्हीं दिनों में गोरी बादशाह का सालाना मेला सिंगाही से ९ मील के फासले पर रियासत की और गवर्नमेंट जंगलात की सरहद पर पुराने किला के सामने होनेवाला था। मेरे पुराने दोस्त अब्दुल रहमान और मंसबअली ने कहा कि क़िला का मेला कभी नहीं देखा है, चलो देखें। बड़ी मुश्किल से कई रोज में दूसरों की सिफारिश पर पिताजी ने इजाज़त दी और रियासत के एक जिलेदार के साथ हम तीनों को अपने अद्धे पर भेजा। शाम को अँधेरे के वक्त हम किला के मेला पर पहुँचे और थोड़ी देर बाद जिलेदार ने अपने चपरासी के साथ हमको मेला देखने भेज दिया। मेला काफी बड़ा था और कई हजार आस-पास के गाँव के आदमी व औरत आये थे और खरीद-फरोख्त में मशगूल थे। मगर चपरासी हमको थोड़ा-सा चक्कर देकर वापस ले आया। इसी तरह जिलेदार ने सुबह भी चपरासी से कहा कि लड़कों को मेला दिखला लाओ फिर वापस चलें। हम लोग थोड़ी ही दूर गये होंगे तो देखा कि मेलेवाले किला के फाटक की तरफ दौड़े चले जा रहे हैं। हमने दो-एक से पूछा कि कहाँ जाते हो? जवाब दिया कि हमको मालूम नहीं। सब भागे जा रहे हैं तो हम भी जा रहे हैं। थोड़ी दूर हम और गये होंगे तो देखा कि ज्यादा

आदमी भागे जा रहे हैं। मगर कोई वजह नहीं बतलाता कि क्यों और कहाँ जा रहे हैं। लिहाजा हमने भी तेजी से किला के फाटक की तरफ जाना शुरू कर दिया जो करीब दो फर्लाङ्ग के फासले पर था। जब फाटक पर पहुँचे तो देखा कि लोग उसी तेजी से वापस भागे आ रहे हैं। फिर पूछा कि आखिर क्या मामला है? क्यों गये और क्यों वापस भागे आ रहे हो? तो उसमें से एक ने बतलाया कि जंगलात के बँगला में जो कि किला के अन्दर है कप्तान पुलिस पड़े हुए हैं और एक शेर और एक रीछ अभी मारकर दो हाथियों पर ले गये हैं। हम लोग देखने चले गये तो हंटर से मारकर भगा दिया। शायद मजमा बहुत ज्यादा हो गया होगा इसलिए भगा दिया हो। लिहाजा हम भी किला के फाटक ही से वापस हो गये। चूँकि ना-उम्मीद होकर लौट रहे थे मेरे मुँह से एकाएक बेसमझे यह निकल गया कि अब मैं अपना ही मारा हुआ शेर देखूँगा। इस पर मेरे दोस्त अब्दुल रहमान मजाक उड़ाने और चिढ़ाने लगे और नतीजा यह हुआ कि अब्दुल रहमान जो कि मंसबअली से ज्यादा मसखरे और तंदुरुस्त थे उनसे मेरी लड़ाई हो गयी और हम दोनों रास्ते भर एक दूसरे से नहीं बोले। इसका असर यह पड़ा कि रास्ते भर मैं ग़ौर करता रहा और उस दिन से मेरे दिल में शेर मारने का नया शौक और इरादा मजबूत होता गया ताकि अपने दोस्त को दिखलाऊँ कि जो कहा वह पूरा करके दिखला दिया। जैसे-जैसे मैं बढ़ता गया रियासत के बड़े लोगों के साथ मुझे शिकार जाने के मौके मिलते रहे और अक्सर १०-१२ और इससे भी ज्यादा हाथियों को लेकर सूबा के मशहूर शिकारियों के साथ मिस्ल रायबहादुर कुवँर दिल्लीपत शाह साहब व रायबहादुर कुवँर बम्बहादुरशाह साहब के साथ शिकार जाता रहा; जिससे मेरा शौक़ और तजुर्बा बढ़ता रहा। ये लोग हर साल बड़े-बड़े अफसरान कमिश्नर, गवर्नर, वाइसराय, प्रिंस आफ़ वेल्स व मिस्टर मान्टेगू और राजा-महाराजाओं को नैपाल की तराई, गवर्नमेंट फारेस्ट और अपने मशहूर मिर्चिया के जंगल में बारहसिंगे,

शेर, गुलदार, रीछ, साँभर, चीतल वगैरह के शिकार के लिए बुलाते रहते थे। मिर्चिया का जंगल सिंगाही से करीब ५० मील के फासले पर पच्छिम तरफ नैपाल के सरहद पर वाक़े है। जहाँ हजारों की तादाद में बारहसिंगे एक वक्त में बड़े-बड़े घास के रक़बों और भीलों के किनारे दिखलाई देते थे। इनका शिकार जाड़ों में मार्च तक होता था।

अप्रैल से ये जानवर हर साल अपने सफेद पक्के सींग गिरा देते हैं। रियासत खैरीगढ़ का मिर्चिया का जंगल हिंदुस्तान में मशहूर था। जहाँ एक वक्त में ५० हाथियों की लाइन के सामने ४-५ सौ नर बारहसिंगे सफेद खूबसूरत सींगों के साथ और दो-तीन हजार मादीन एक दिन में घास और भीलों के रकबों में भागते दिखलाई देते थे और शिकारी साहबान भागते हुए जानवरों को चलते हुए हाथियों से गोली से मारते थे और कोई फोटू लेते थे। खैरीगढ़ राजधानी की रानी सूरथकुँवर साहबा इस अजीब व गरीब शिकारगाह से बहुत मशहूर थीं। जहाँ दूर - दूर से बड़े लोग शिकार के लिए आते थे। अलावा बारहसिंगे के इस हजारों एकड़ घास के रकबे के सूखे हिस्सों में शेर, गुलदार, रीछ, पाढ़ा व सुअर भी निकलते थे। अब यह रकबे पंजाब से आये हुए लोगों को फारम और काश्त के लिए दिये जा रहे हैं और तमाम शिकार नेपाल के इलाकों में पनाह लेने लगा है। जब-जब मैं स्कूल की छुट्टियों में आता था, मेरा ज्यादातर वक्त तरह-तरह के शिकार में गुजरता था; जिससे मुझको कम उम्र में ही बहुत कुछ शिकार का तजुर्बा होता गया।

मेरा जिन्दगी का सबसे बड़ा अरमान यह था कि मैं मुहकमा जंगलात में मुलाजिमत करूँ, शेरों का शिकार खेलूँ और अपने बचपन के दोस्त अब्दुल रहमान को यह साबित कर दिखाऊँ कि जो कुछ मैंने किला शाह गोरी के मेला पर कहा था, वह गैर मुमकिन न था। एक मर्तबा मैं बड़े दिन की छुट्टियों में शिकार के बड़े मन्सूबे, और खयाली इंतजाम लेकर आया। जिनको कई रात में, घंटों सोचकर तय किया था और हस्ब मामूल मकान पर पहुँचने

के चन्द ही घंटा के बाद अपने पिताजी की एकनाली पुरानी जंग लगी हुई बन्दूक को साफ किया, तेल लगाया और सामान छर्रा गोली, बारूद और टोपी वगैरा बाजार से खरीदकर दूसरे दिन शिकार जाने का इंतजाम पूरा कर लिया। अब सिर्फ पिताजी की इजाजत लेना बाकी रह गयी थी, जो कि जरा मुश्किल से मिला करती थी। एक पूरे दिन मौका के इंतजार में रहा मगर हिम्मत न पड़ी; क्योंकि पहले डाँट पड़ने का तो पूरा ही यकीन था। मेरे शिकार के मजनून दोस्त अब्दुल रहमान व मंसब अली सुबह व शाम आते और मायूस होकर चले जाते। दूसरे दिन शाम का मौका ज्यादा मुनासिब समझा जब पिताजी के दोस्त भी आकर बैठते थे। क्योंकि उनसे अक्सर सिफारिश की मदद मिल जाती थी। हम तीनों उनके इंतजार में थे कि एक हाथी, रियासत झंडीपुर से खत लेकर आया—जो कि सिंगाही से १० मील के फासले पर है। राजा साहब झंडीपुर दिक़ में अ से बीमार थे और पिताजी के इलाज में थे। खत पढ़कर हाथीवान से कहा गया कि रात को ठहरो सुबह चलेंगे, इस पर मैंने भी ख्वाहिश साथ जाने की की जो कि खुशी से फौरन मंजूर कर ली और मैं भी खुश हुआ कि हाथी की सवारी और नये स्थान देखने को मिलेंगे। सुबह होते हम रवाना हुए। पहले सरयू नदी को दो मील जङ्गल से गुजर कर पार किया। फिर खेतों और गाँवों में होते हुए करीब दोपहर के झंडीपुर पहुँचे और उसी वक्त राजा साहब के सामने गये जो अधेड़ उम्र के दुबले-पतले कमजोर आदमी थे। उनका मुआयना करने के बाद और दवा वगैरा देने के बाद हमको दूसरे कमरे में खाने के वास्ते ले गये। वहाँ मेरे दो पुराने क्लास फैलो भी मौजूद थे जो कि राजा साहबान सिंगाही और झंडी के दूर के रिश्तेदार थे। खाने के बाद ये दोनों दोस्त मुझको महल दिखलाने और राजा साहब के दो छोटे भाइयों, राजा रघुबरसिंह साहब और राजा भगेलसिंह साहब से मिलाने ले गये और राजा रघुबरसिंह, जिनको शिकार और सवारी वगैरा का बहुत शौक था उनसे मेरे शिकार के शौक की बात खूब

नमक-मिर्च लगाकर बयान किया। उन्होंने उसी वक्त हुक्म दिया कि कल सुबह शिकार जाने के लिए इन्तजाम किया जावे। मैंने उज्र किया कि मैं शाम को पिताजी के साथ वापस जाऊँगा; मगर उन्होंने कहा कि हम उनसे रोकने की इजाज़त ले लेंगे और शाम को जब पिताजी रुख्शत होने लगे तो मुझे रोकने की इजाज़त ले ली और कह दिया कि इसी अद्धे पर मेरा बिस्तर और जरूरी कपड़े भी भिजवा देवें। मैं दिल में बहुत खुश हुआ, क्योंकि शिकार, सैर व तफरीह से मुझे खास दिलचस्पी थी। शाम से आधी रात तक बड़े लुत्फ़ से नाच, गाने व भाँडों के ड्रामा में गुजरी और रात का खाना एक बजे खाया। यह मुझे पहला मौका रईसों की रात की महफ़िल देखने का था। सबसे ज्यादा दिलचस्पी की बात, जो कि मैं शायद उम्र भर न भूलूँगा—वह एक मिस्टर गुलदुम थे, जिनके ऊपर चारों तरफ से तरह-तरह के मजाक के फिकरे कसे जाते थे और वह बहुत तेजी से सबका ऐसा मुँहतोड़ जवाब देते थे कि हँसते-हँसते लोग लोट-पोट हो जाते थे; मगर वह अपना टेढ़ा मुँह, पस्ता क़द, सफेद ढीला अंगरखा और दुपल्ली टोपी दिये हुए उछलते रहते थे। मिस्टर गुलदुम को किसी राजा ने शादी के मौका पर थाल में बिठाकर तोहफा की तौर पर पेश किया था और उनकी तनख्वाह उस वक्त में ३०) माहवार अच्छा खाना और मकान थी, और काम यह था कि राजा साहब की महफिल को हँसाते रहें; मगर वह खुद कभी नहीं हँसते थे। दूसरे दिन सुबह हम छः शख्स दो तेज अद्धों में रवाना हुए और छः मील के फासले पर भंडीपुर से पश्चिम तरफ एक पीपल के दरख्त के नीचे उतरे। यहाँ पर एक कुआँ था। इसके पश्चिम तरफ एक बड़ा सरसब्ज चरागाह था, पूरब में एक छोटा-सा गाँव और उत्तर की तरफ खेती थी। दक्खिन में शारदा नदी का पुराना छुटान था, जिसमें लम्बी-लम्बी घास, नरकुल और झाऊ था और जो शारदा नदी के साथ-साथ, मील आध मील की चौड़ाई में दूर तक चली गयी थी। इस लम्बी घास में बारहसिंगे का हँकुवा हाथियों से करने का इरादा

था। नौ हाथी यहाँ तयार खड़े हुए थे जो कि तीन बजे रात से रवाना हुए थे। यहाँ पर बन्दूक, रायफल और कारतूस तकसीम किये गये और हर हाथी पर दो-दो आदमी बैठे। मेरे साथ मिस्टर गुलदुम बिठाये गये। मुझे पाँच सौ बोर दुनाली रायफल दी गयी जो कि मैंने पहिले कभी नहीं दागी थी। अब हँकुवा शुरू हुआ। राजा रघुबरसिंह हौदे-वाले हाथी पर बैठे और उनका हाथी मेरे दाहिने था। पहिली लाइन नदी तक ली और फिर दूसरी लाइन पर वापस आये। इस तरह कई लाइनें लीं; मगर सिवाय चन्द मादीन बारहसिंगे और एक छोटे नर के कुछ न निकला। मायूस होकर वापस आ रहे थे कि एक घने घास के रक़बे से करीब एक दर्जन सुअर छोटे व बड़े निकलकर सामने छोटी घास और बालू की पट्टी से गुजर रहे थे कि राजा रघुबरसिंह ने पाँच फैर चार सौ एक बोर रायफल से चलाये। एक सुअर वहीं गिर गया और दो जख्मी होकर गिरते-पड़ते आगे घनी घास में जा छुपे। मुझको आदत चलते हुए हाथी और भागते हुए जानवर को गोली से मारने की बिलकुल न थी; लिहाज़ा मैं न दाग सका और न मिस्टर गुलदुम ही फैर कर सके। मिस्टर गुलदुम ने राजा साहब के निशाने की तारीफ के पुल बाँध दिये। दो जख्मी सुअरों के मारने और ढूँढ़ने में बड़ा लुत्फ रहा। इसके बाद हम सब लोग पीपल के साये में, जहाँ फर्श बिछा दिया गया था और खाना तैयार था, उतरे। मुँह-हाथ धोकर खाना खाया और शाम तक वहीं आराम करते रहे। और मिस्टर गुलदुम के मज़ाकिया फ़िकरों से हँसते रहे। तीसरे पहर को नौकरों ने एक काला हिरन करीब दो सौ गज के फासले पर चरागाह में देखा। सबने एक-एक, दो-दो गोलियाँ चलायीं और वह भागता हुआ निकल गया। बन्दूकों की आवाज सुनकर गाँववाले आ गये और इत्तिला दी कि गाँव के नजदीक गन्ने के खेत में करीब एक दर्जन नीलगाय थोड़ी देर हुई घुसे हैं और अभी तक उसी में मौजूद हैं। यह तय हुआ कि शाम को चलते वक्त नीलगाय का हाँका किया जावेगा। शाम के वक्त फिर बैल के अद्धों में सवार होकर वापस

हुए और रास्ते में गन्ने के खेत के उत्तर तरफ हम लोग खड़े हो गये और दक्खिन की तरफ से हँकुवा कराया। सिर्फ एक नीलगाय सामने से निकला, जिस पर सब ही ने फैर चलाये और वहीं गिरा लिया। बाकी दाहिने-बायें से वग़ैर दिखायी दिये निकल गये। गाँववाले इस नीलगाय की दावत से बहुत खुश हुए। जब हम लोग नीलगाय देख रहे थे। उत्तर की तरफ एक हलवाला, जो दूर खेत जोत रहा था, वह बड़े जोर से चिल्ला रहा था कि मार डाला। हम सब लोग वहाँ पहुँचे, तो देखा कि एक गोली उसके हल पर पड़ी जिसकी लकड़ी फट गयी; मगर वह और उसके बैल बच गये। उसको दो रुपया हल की मरम्मत के लिए देकर वापस झंडीपुर अँधेरे तक पहुँचे। यह एक नया सबक सीखा कि मैदानी रक़बे में वग़ैर सामने दूर तक देखे गोली हरगिज न चलाना चाहिए। गो बारहसिंगा, जिसके शिकार को गये थे वह नहीं मिला; मगर दिन भर खूब लुत्फ से गुजरा। पीपल के दरख्त के नीचे गुलदुम ने हँसाते-हँसाते पेट दुखा दिये। इसके बाद हर साल मैं एक या दो मर्तबा झंडीपुर दो-चार दिन के लिए जाया किया और शिकार व तफरीह का लुत्फ उठाया किया।

मेरी माताजी का देहान्त जब मैं १३-१४ बरस का था, हो गया था और मेरी शादी पन्द्रह बरस की उम्र में सन् १९०१ ई० में कर दी गई थी। अलीगढ़ में सन् १९०५ में प्लेग जोर से फैला। स्कूल व कालेज बन्द हो गये। लिहाजा मैंने लखीमपुर हाई स्कूल में नवें क्लास में नाम लिखा लिया; जो कि सिंगाही से २८ मील के फासले पर है। सिंगाही में मेरे पिताजी, मेरी बीबी और मेरे भाई-बहिन रहते थे। अलीगढ़ से आने के चन्द ही माह बाद ईद की छुट्टी सनीचर के दिन पड़ी। इतवार की छुट्टी भी शामिल करके दो दिन की छुट्टी थी। मैंने इरादा किया कि ईद घर पर सबके साथ की जावे और शुक्रवार की और छुट्टी लेकर सिंगाही पहुँचा जावे मगर लड़कों ने रोक लिया कि शुक्रवार को सिविल लाइंस से क्रीकिट का मैच है। मगर क्रीकिट से मुझे शौक़ न था और उम्र भर में कभी मैंने सात रन से ज्यादा न बनाये थे। अलबत्ता दौड़ने की

वजह से फील्ड अच्छी कर लेता था। ९ बजे सुबह से मैच शुरू हुआ और एक बजे तक दूसरी पार्टी ६७ रन बनाकर सब खेल चुके। सबसे पहिले मैं और एक साथी खेलने गये और पहिली ही बाउंड्री लगाने की कोशिश की थी कि विकिट गायब हो गये और उसी वक्त वहीं से मैं पैदल क़रीब डेढ़ बजे के सिंगाही के लिए रवाना हो गया। सबने मना किया कि जंगल का रास्ता है, शारदा दरिया बीच में है, नहीं पहुँचोगे। मैंने कहा कि मालिक ने चाहा तो अवश्य पहुँचूँगा और रात का खाना घर खाऊँगा। मैं एक लड़के से छाता छीनकर चल दिया और ९ बजे रात को बेहद थका हुआ, पैरों में छाले पड़े हुए अचानक घर पहुँचा। पिताजी ने आश्चर्य से कहा—सवारी के लिए क्यों नहीं लिखा ? मैंने कहा कि आज ही तीसरे पहर को आने का इरादा किया कि ईद घर पर करें। दूसरे दिन ईद के बाद शाम को अपने पुराने दोस्त अब्दुल रहमान व मंसबअली को साथ लेकर पैदल घर से एक मील के फासले पर एक झील में मुर्गाबी मारने के लिए गये और बजाय मुर्गाबी मारने के दो मोर मारे। मेरे पास वही पुरानी भरनी बन्दूक और झोला बन्दूक भरने के सामान का था। मैंने अपने दोस्तों से कहा कि एक-एक मोर दोनों ले चलो। मगर मसखरे अब्दुल रहमान ने कहा कि यह काम तो मेरे बाप ने भी कभी नहीं किया और यह कहकर तेजी से आगे बढ़ना शुरू किया। अँधेरा होने लगा था, मैंने मन्सबअली से कहा कि इनके हिस्से का मोर फेंक दो, एक ले आओ। हम तुम आधा-आधा ले लेंगे। इस ख्याल से कि फेंकने के उपर शायद अब्दुल रहमान लाद ले मगर इसका भी कुछ असर न हुआ, बड़ा गुस्सा मालूम हुआ और जब हम लोग करीब सौ गज के निकल आये तब मैंने फिर पूछा—हिस्सा लोगे या नहीं ? तो जवाब दिया कि चाहे हिस्सा देना या न देना मगर मैं लादकर नहीं ले जाऊँगा। मजबूर होकर मन्सबअली को भेजा कि उठा लाओ नहीं तो गीदड़ ले जावेगा। बेचारे मन्सबअली वापस गये और दोनों मोर लादकर जब हम घर पहुँचे तो शेख अब्दुल रहमान साहब हमसे बहुत पहिले मेरे मकान पर

बैठे हुए थे, मैंने बात नहीं की; एक मोर घर में भेज दिया, एक मन्सबअली को दे दिया और मैं घर में चला गया। यह दोनों भी चले गये। जब मंसबअली अपने घर के पास पहुँचे तो अब्दुल रहमान ने मन्सबअली के हाथ से झपट्टा मारकर मोर छीन लिया और अपने घर भाग गये। मन्सबअली मायूस होकर रह गये। सुबह होने पर फिर दोनों साहब तशरीफ लाये। तब उस डकैती का हाल मालूम हुआ कि हमारे मन्सबअली ने बिला वजह दोनों मोर इतनी दूर लादे और मजा दूसरों ने उठाया।

कई साल तक ज़माना तालिबइल्मी में जब तक मेरे बीबी-बच्चे सिंगाही में पिताजी के साथ रहे मैं हर साल तीन-चार मर्तबा होली-दिवाली, बड़े दिन, दशहरे और बरसात की छुट्टियों में आया करता था और अपने बचपन के दोस्त अब्दुल रहमान व मंसबअली के साथ हिरन मारने अक्सर दिन-दिन भर के लिए ढखेरवा की तरफ़ सिंगाही से ४-५ मील के फ़ासले पर जाया करता था। दोपहर का खाना किसी झील के किनारे एक या दो हिरन मारने के बाद खाते थे और शाम तक ४-५ नर काले हिरन छाँटकर आसानी से मार लेते थे। इस ज़माना में हिरनों के सैकड़ों के गोल दिखलाई देते थे और मैंने कम-से-कम सौ हिरन उस ज़माना में अच्छे से और पैदल मारे होंगे। एक नया तरीक़ा मैंने यह निकाला था कि एक छोटी हल्की घास और पत्तों की टट्टी बनाकर उसको बायें हाथ में लेकर उसकी आड़ से हिरनों की तरफ़ आहिस्ता-आहिस्ता जाने से जब वह ६०-७० गज़ रह जाते थे तो सब सिमट कर मेरी तरफ़ आते थे। उस वक्त मैं बैठ जाता था। थोड़ी देर में वह दुम उठाते अगले पैर ज़मीन पर मारते हुए और ख़तरे की आवाज़ करते हुए खुद आते थे और जब ४०-५० क़दम का फ़ासला रह जाता था तो छाँटकर बड़ा नर आसानी से मार लेता था। जाड़ों के दिनों में इसी क़िस्म की टट्टी से मुर्ग़ाबियाँ व सवन वग़ैरा भी आसानी से मारते थे। सवन यानी क़ास मारने का एक और भी आसान तरीक़ा यह स्तेमाल करते थे कि जब एक या दो

सवन मार लेते तो उनको किसी धान के कटे हुए खेत में बिठा देते थे और उसके क़रीब किसी झाड़ी या कटे हुए धान के ढेर के अन्दर बैठ जाते थे। थोड़ी देर में जब सवन के ग़ोल इस तरफ़ से उड़ते हुए निकलते थे, तो उनको बैठे हुए देखकर वह भी आ बैठते थे और आसानी से मार लेते थे।

हर शिकार के दिन जब पहला हिरन मारा जाता था तो सब लोग उसको उठाने या पकड़ने दौड़ते थे। चन्द क़दम तक अब्दुल रहमान भी हम सबको धोखा देने को दौड़ जाते थे और फ़ौरन लौटकर सबके कोटों का झाड़ा लेकर सिगरेट, पान, मिठाई वग़ैरा जो कुछ उनको मिलता था सब निकालकर अपनी जेबों में भर कर फिर शामिल हो जाते थे और जब हिरन अद्धे में लाद लिया जाता था और इतमीनान से सब लोग बैठ जाते थे, तब निकाल-निकालकर खाना और बाँटना शुरू करते थे। लोग अपनी-अपनी चीजें बड़ी-बड़ी होशियारी से रखते थे, मगर शेख़ जी किसी-न-किसी तरह से उन पर कब्ज़ा कर ही लेते थे। गरज़ कि दिन भर बड़े लुत्फ़ से हँसते गुज़रता था। दोपहर का खाना जहाँ खाया जाता था वहाँ-वहाँ शेख़ जी खाना तक़सीम करते थे और अपने लिए सबसे अच्छा और ज्यादा हिस्सा लगाने में सबसे तेज रहते थे। मगर काम के वक्त़ बिलकुल कन्धा टेक देते थे। मैं फुटबाल और हाकी काफी अच्छी खेलता था और लम्बी दौड़ों में यानी चौथाई मील, आधे मील और एक मील की दौड़ों में बराबर अव्वल, दोम इनाम लेता था। लखीमपुर के छोटे स्कूल में छै महीने के अन्दर ही मुझे फुटबाल और हाकी का कप्तान चुन लिया और पुलिस की हाकी की टीम में भी मुझे ले लिया। लखनऊ कमिश्नरी के सालाना रिपोर्ट में चौथाई मील, आधे मील और एक मील की दौड़ों में मैं अव्वल आया और एक मील की दौड़ में मैं दूसरे नम्बरवाले को सौ क़दम से ज्यादा पीछे छोड़कर जीता। खेल-कूद की वजह से मुझे जिला के कुल अफ़सरान अच्छी तरह से जानते थे; क्योंकि स्कूल से और पुलिस व सिविल लाइन टीम से हर हफ्ता में दो मैच खेले

जाते थे। मिस्टर फ्रिमेन्टल उस वक़्त ज़िला के मजिस्ट्रेट थे, जुमला स्पोर्ट के बहुत शौक़ीन थे। उन्होंने मेरी तेज़ दौड़ने की वजह से हाकी में अपने दाहिने तरफ़ लायन पर रखकर प्रैक्टिस कराई और थोड़े ही दिनों में सिर्फ़ हम दो जिस वक़्त कोशिश करते फ़ौरन दूसरी तरफ़ गोल कर देते और ग़ैर ज़िलों से अक्सर जीत कर आते। खेल-कूद के शौक़ की वजह से शाम को देर तक मेरे कमरे में लड़कों का जमाव रहता और मुझे सिवाय क्लासरूम के बोर्डिङ्ग में पढ़ने का बिलकुल वक़्त नहीं मिलता था। मसल मशहूर है अंधों में काने राजा! उस छोटे से शहर में और स्कूल के चन्द लड़कों में खेल-कूद और शिकार के मामले पर लोग मेरी बात मानते थे। इन सब फ़िज़ूलियात में वक़्त ज़ाया करने से नतीजा यह हुआ कि लखीमपुर के २ बरस के कयाम में, तालीम में बमुकाबिले पहिले के कमज़ोर होता गया और ख़ासकर हिसाब में बहुत कमज़ोर हो गया।

एक रोज़ घर से हिसाब निकालकर न लाने पर हेडमास्टर साहब इंट्रेंस के सालाना इम्तहान से दो माह पहिले बहुत ख़फ़ा हुए और कहा—कि अगर तुम पास हो जाओगे तो कुल क्लास पास हो जायगा। मुझे यह जुमला सुनकर बहुत नाउम्मीदी-सी होने लगी। तब मैंने तालीम की तरफ ज़्यादा तवज्जह देना शुरू की; मगर बोर्डिङ्ग में मेरा कमरा शाम को गप्पबाजी का क्लब बन जाता था। लड़के निकालने से भी नहीं जाते थे। रात को पढ़ने का वक्त ज़ाया हो जाता था। लिहाजा बावजूद फिकर और कोशिश के मैं कोई खास तरक्की अपनी तालीमी हालत में न कर सका। करीब एक माह के बाद हमारे हमदर्द हेडमास्टर पं० सूर्यनारायण एम्० ए० एक रोज घर से पूरा काम हिसाब का करके न लाने पर बहुत-से लड़कों पर ख़फ़ा हुए और कहा—कि लड़को, मैं तुमसे एक सवाल पूछता हूँ, सोचकर जवाब देना। यह इंट्रेंस का आखिरी इम्तहान है, फिर मैट्रिक हो जावेगा। लिहाजा तुमको इमसाल इंट्रेंस पास करना चाहिए था—किसी ने कोई जवाब नहीं दिया। उन्होंने दुबारा और ज़्यादा जोर से फिर वही

सवाल किया; मगर फिर भी किसी ने जवाब न दिया। इस पर हेडमास्टर साहब और खफ़ा हुए और मेज को जोर से पीटकर कहा—लड़को, मैं फिर तीसरी और आख़िरी बार वही सवाल तुम से फिर करता हूँ कि इस साल तुम लोगों को इंट्रेंस पास करना चाहिए नहीं तो........। मैंने कहा कि मर जाना चाहिए। हेडमास्टर साहब ने कहा—यही जवाब मैं चाहता था। अब अगर मैं पास न होऊँ तो मेरी लाश बोर्डिङ्ग के कुएँ से निकलवा लीजिएगा। यह कहकर मैं किताबें लेकर अपने कमरे को चला गया और खेल-कूद, फुटबाल और हाकी का कुल सरकारी सामान निकालकर अपने कमरे के सामने बरामदे में फेंक दिया। कमरे को साफ किया, मेज पर किताबें तरतीब से लगा कर और कमरा बन्द करके ध्यान लगाकर पढ़ना शुरू कर दिया, और सिवाय जरूरियात काम के या जब खाना आता तो कमरा खोलता, नहीं तो हर वक्त अन्दर से बन्द रखता। सिर्फ चार-पाँच घण्टे सोता और बाकी वक्त पढ़ता रहता। जब एक हफ्ता इस तरीके पर गुजरा, तो एक दिन आधी रात के बाद हेडमास्टर साहब ने जो कि बोर्डिङ्ग के सुपरिन्टेन्डेन्ट भी थे, आकर दरवाजा खड़खड़ाया। मैंने पूछा कौन? जवाब दिया—हेडमास्टर। मैंने दरवाजा खोल दिया। उन्होंने कहा कि अगर तुम एक हफ्ते खाना न खाओ और सात दिन का खाना एक ही दिन में खा लो तो क्या हजम कर लोगे? मैंने हाथ जोड़कर अर्ज किया कि बोर्डिङ्ग के कुएँ में डूबने से यह ज्यादा बेहतर है और अब मुझे अपने रास्ते पर छोड़ दीजिए। वे यह कहकर चले गये कि अगर तुमको कुछ पूछना या शक़ रफ़ा करना हुआ करे तो मेरे पास हर वक्त आ सकते हो। दो दिन के बाद लखनऊ में जहाँ इम्तहान देने जाना था, प्लेग की ज्यादती की वजह से इम्तहान खुदा की मेहरबानी से तीन हफ्ते के लिए और हट गया। इससे मुझे बहुत मदद मिली। मैंने तीन मर्तबा कुल कोर्स को अच्छी तरह दोहरा लिया और हिम्मत पास होने की और बोर्डिङ्ग के कुएँ से बचने की हो चली। इम्तहान शुरू हुआ

और मैंने कुल मजमूनों के पर्चे काफी अच्छे किये, सिवाय हिसाब के।

इम्तहान से वापस आकर मैंने दाढ़ी बढ़ा ली। पाँच मर्तबा नुमाजें पढ़ने लगा और खुदा से दुआएँ माँगने लगा कि कुएँ की मौत से बचा दें। मैं आगरे में था जब मेरी किस्मत के फैसले का दिन आया। मेरे तीन बच्चे थे और मैं धड़कते हुए दिल के साथ नतीजा देखने गया। खुदा की मेहरबानी से तीसरे डिवीज़न में पास हो गया। जान बची लाखों पाये। खुशी-खुशी घर आया। नुमाज पढ़ी, खुदा का शुक्र अदा किया और अपनी हैसियत के मुताबिक मिठाई बाँटी। पिताजी को तार दिया और हेडमास्टर साहब को शुक्रिया का कार्ड लिखा कि उनकी सख्ती और मलामत ने मुझे बोर्डिङ्ग के कुएँ से बचाया और आइन्दा बहबूदी का दरवाजा खोल दिया।

इसके बाद सवाल यह पैदा हुआ कि क्या करना चाहिये। मेरी शादी हो गई थी, तीन बच्चे थे। बीबी-बच्चों का भार पिताजी के ऊपर ही था जो हाल में पेंशन लेनेवाले थे। और कोई सरमाया या जरिया खाने-पीने का न था। अगर मैं नौकरी करता तो उस वक्त १५ से ३० रुपये माहवार से ज्यादा की नौकरी न मिल सकती थी। मेरे अरमान और इरादे बहुत ही ऊँचे थे—बन्दूक, राइफल, घोड़ा, शेर का शिकार वगैरा-वगैरा और न मालूम क्या-क्या। मेरे पिता ने एक रोज पूछा कि मेरा क्या इरादा है और कहा कि मैं उनका बड़ा लड़का हूँ और घर की जिम्मेदारियों का भार मेरे ऊपर जल्द आनेवाला है। मैं न कुछ तय ही कर सका और न जवाब दे सका। उन्होंने कहा कि अगर आगे पढ़ना है तो लखनऊ जाकर F. S. C. पास करो और लाहौर से बड़ी डाक्टरी पास करो; क्योंकि उस वक्त लखनऊ मेडिकल कालिज बना नहीं था और मेरे पिता आगरा की छोटी डाक्टरी पास थे। तजवीज अच्छी थी; क्योंकि मुझको डाक्टरी में सरजरी से दिलचस्पी थी। मगर दो वर्ष एफ० एस-सी० के लिये और पाँच बरस डाक्टरी के लिये पहाड़ मालूम होते थे। लोगों के समझाने

पर मैं लखनऊ में एफ० एस-सी० के दाखिले के लिये रवाना हुआ और लखीमपुर रेल पकड़ने के लिये पहुँचा, वहाँ पुराने दोस्तों ने रोक लिया। दूसरे दिन शाम को पुलिस-क्लब में चला गया, वहाँ जिला के करीब सब अंग्रेज अफसरान खेल रहे थे। उन्होंने मालूम किया कि मैं क्या कर रहा हूँ। मैंने कहा कि मैं सोच रहा हूँ कि आगे पढ़ूँ या किसी मोहकमा के ट्रेनिंग स्कूल में दाखिले की कोशिश करूँ। चूँकि वह सब मुझे अच्छी तरह जानते थे सबने वादा किया कि वह अपने मोहकमा में खुशी से नामजदगी कर देंगे। और चन्द ही रोज में मेरी नामजदगी इम्पीरियल फारेस्ट कालिज देहरादून के लिए, जराअत कालिज कानपुर के लिए, पुलिस ट्रेनिंग स्कूल मुरादाबाद के लिए और डाकखाना की इन्सपेक्टरी के लिये हो गई।

अब मैं इन नामजदगियों के नतीजे के लिए लगभग एक माह लखीमपुर पड़ा रहा और पिताजी को अपना इरादा बदलने की इत्तिला दी। इस दरम्यान में लखनऊ पी० एम० जी० के दफ्तर से हुकुम अस्थाई उम्मीदवारान में बामुशायरा तीस रुपया माहवार आ गया कि तीन माह बाद इन्स्पेक्टरी का इम्तिहान देना होगा। अगर पास हो गये तो बामुशायरा साठ रुपया माहवार तनख्वाह और दो रुपया रोज भत्ता मिलेगा। लेकिन यह मोहकमा ऐसा था कि जो मुझे बहुत कम पसंद था। मैंने कोई जवाब नहीं दिया कि इसी दरम्यान में कानपुर एग्रीकल्चर कालिज से भी दाखिला की मंजूरी आ गई। इसका भी जवाब मैंने नहीं दिया। पुलिस और जंगलात का इंतजार करता रहा। जहाँ हथियारों के लाइसेंस से मुस्तसना होने का मौका था। पुलिस से इंतखाब के बोर्ड ने लखनऊ बुलाया। मगर मैं एक साल उमर में और आध इञ्च लम्बाई में कम होने की वजह से नहीं लिया गया। गो मेरे खेल-कूद और दौड़ों के मेडिल व सार्टीफिकेट देखकर काफी बहस के बाद मुझे हुकुम दिया गया कि आयंदा साल फिर नामजदगी कराओ, तब लिये जाओगे। वापसी पर मोहकमा डाकखाना और कानपुर से आये हुए कार्ड मिले कि एक-एक हफ्ता की और मोहलत दी जाती है। अगर इसमें हाजिर

न हुए तो नाम फेहरिस्त से खारिज कर दिया जावेगा। मैं जंगलात के नतीजे का इंतजार करता रहा और पुलिस क्लब में खेलता रहा कि एक रोज कल्टर वक साहब डिवीजनल फारेस्ट अफसर ने बतलाया कि रेंजरी में कोई जगह खाली न होने से मैं इस साल नहीं लिया गया हूँ। इस पर मुझे नाउम्मीदी का सख्त धक्का लगा। अफसरान जानते थे कि मैंने जंगलात के शौक़ में दो मौक़े खो दिये। उन्होंने कहा कि कल मेरे दफ्तर में आओ। जब मैं दूसरे दिन दफ्तर में पहुँचा तो मुझे हुकुम दिखलाया जिसमें आयंदा साल फिर नामजदगी के लिए हिदायत थी।

जंगल के साहब ने हेड क्लर्क के नाम मुझे एक सिलिप दिया और मेरा तक़र्रुर पन्द्रह रुपया माहवार पर टेम्परेरी क्लर्की पर कर दिया और कहा कि मुस्तक़िल क्लर्क की जगह तीस रुपया माहवार पर जिस वक्त खाली होगी, दी जावेगी, इस दरमियान में तुम काम सीखोगे और हम तुम्हारे काम की बावत मालूम करेंगे और आयंदा साल और ज़्यादा सिफारिश से नामज़द करेंगे। मैं बेदिली से काम करता रहा। एक माह के अन्दर ही मुझको मुस्तक़िल क्लर्की पर बमुशायरा तीस रुपया माहवार पर मुकर्रर कर दिया। क़रीब छै माह के बाद कल्टर वक साहब कनसरवेटर होकर नैनीताल चले गये और उनकी जगह पर मिस्टर केनिंग जो कि पहिले दो बरस लखीमपुर ही में मिस्टर कल्टर वक के असिस्टेंट थे, विलायत से रुखसत ख़तम होने पर वापस आये और खीरी फारेस्ट डिवीज़न का चार्ज लिया। इन नौ-उमर साहब को मैं सबसे ज़्यादा जानता था और दो बरस तक साथ हाकी-फुटबाल खेला था। यह कभी-कभी हमारे स्कूल की फील्ड में फुटबाल खेलने को भी आते थे--जहाँ खूब धक्का-मुक्की रहती थी--मैं उनकी आमद पर खुश हुआ और उनके चार्ज लेने के दूसरे ही दिन पहिले की तरह आजादी से मिलने गया और चपरासी से इत्तिला कराई जो कि थोड़ी देर बाद मुँह लटकाये हुए वापस आकर बरामदा में अपनी चटाई पर बैठ गया। जब मैंने दरयाफ्त किया तो कहा कि साहब ने कोई जवाब नहीं दिया। मैं बरामदे के बाहर ऊपर-नीचे क़रीब

आध घन्टा तक मायूसी से जमुहाइयाँ लेता रहा और टहलता रहा। जब इरादा वापस जाने का कर रहा था यह न ख्याल किया कि अब वह बड़े साहब हैं कि साहब बहादुर पाइप जलाते हुए नये लिबास में कुछ मुस्कुराहट के साथ निकल पड़े। मैंने सलाम किया तो पूछा तुम यहाँ क्या कर रहे हो? मैंने कहा कि आपके दफ्तर में बउम्मीद नामजदगी रेंजर क्लास देहरादून क्लर्क हूँ। उन्होंने बहुत शान से जवाब दिया—हाँ मिस्टर कल्टर वक मुझसे तुम्हारी बाबत सब कह गये हैं। अब तुम अपने काम पर ध्यान दो और जब वक्त नामजदगी का आवे तब मेरे पास आना; गोया इस दरम्यान में शक्ल न दिखलाना। यह कहकर साहब बहादुर ने सर हिलाया और अन्दर चले गये। मैं इस रूखी मुलाकात से बहुत मायूस होकर वापस दफ्तर में आ बैठा और अपनी ग़ल्ती पर अफ़सोस करने लगा कि एग्रीकल्चर कालेज में क्यों न दाखिल हो गया तो एक साल जाया न होता। दिन गुजरते गये मैं अपना काम करता रहा और हफ्ता में दो मर्तबा पुलिस क्लब में हाकी खेलने जाता रहा। सब अफसरान खन्दाँ पेशानी से पेश आते थे, मगर हमारे साहब बहादुर बहुत रिजर्व रहते और कभी न मुस्कराते। गो मुझे इस तबदीली से बहुत रंज होता था और मुझे यह न मालूम था कि किस्मत मुझे ऐसी ही जगह पर काम करने के लिए सबक़ सिखा रही है।

आखीरकार नामजदगी का वक्त भी आ गया; जिसके लिये दिन गिन-गिन कर काटे थे मैंने अपनी अर्जी बड़े शौक से टाइप कराई और कुल जरूरी सार्टीफ़िकेट हासिल करके बड़ी उम्मीद लेकर अपने साहब बहादुर के कमरे के सामने पहुँचा और चपरासी से इत्तिला कराई। साहब ने बुला तो लिया मगर काम में ऐसे मसरूफ़ थे कि मेरी तरफ़ देखा भी नहीं। मैं दिल धड़कता हुआ खड़ा रहा। थोड़ी देर के बाद सर उठाया और कहा—हाँ, क्या है? मैंने अपनी अर्जी पेश की। पाइप जलाते हुये अर्जी ग़ौर से पढ़ी, सार्टीफ़िकेट देखे और सब कागजात मेरी तरफ़ फेंककर कहा कि मुझे अफ़सोस है कि तुम क्लर्क हो।

तुमको कोई हक़ अफ़सरी लाइन में जाने का नहीं है। यह सुनकर मेरे होश उड़ गये। तमाम उम्मीदों और शेर मारने के अरमानों पर पानी पड़ गया। मुझे एक साल जाया करने का सख्त ही मलाल हुआ। मैं इस बर्ताव और सवाल के लिये तैयार होकर नहीं आया था। थोड़ी देर ख़ामोश रहा और जब होश आया तो मैंने कहा कि मैं उम्र भर क्लर्क रहने के लिए जंगलात नहीं आया था। साहब बहादुर ने फ़ौरन तेजी से फ़रमाया--फिर किसने बुलाया था? उन्होंने फ़ौरन तेजी से घन्टी बजाई। चपरासी बरामद हुआ, हुक्म हुआ बड़ा बाबू को बुलाओ। जरा देर में बाबू गुरसहाय अपने क़दीमी काले कोट में गिरते-पड़ते हाजिर हुए। हुकुम हुआ कि इनका परसनल फाइल लाओ। जब वह फाइल लाये तो कहा इनकी पहिली अर्जी निकालो। •बाबूजी ने तमाम फाइल लोट-पोट डाला मगर मेरी दरख्वास्त क्लर्की के लिये न मिली। साहब ने गुस्सा से फाइल लेकर सब कागज लौट दिये। सबसे पहिले वही सिलिप सुर्खी से लिखा हुआ कल्टरबक साहब का था। मैंने कहा यह ही पहिला सिलिप मेरी तकुर्ररी का है। हेड क्लर्क ने भी ताईद की। साहब बहादुर ने सिलिप पढ़ा और फाइल को मेरी तरफ फेंक कर कहा कि अगर उम्र भर क्लर्क रहना नहीं चाहते तो फिर इस्तीफा दे दो। मैंने भी उसी वक्त साहब की मेज से कलम और कागज लेकर फौरन वहीं खड़े-खड़े इस्तीफा लिखकर पेश कर दिया। साहब ने पढ़कर उस पर नीली पेंसिल से बड़े-बडे हर्फ़ों में पूरी अर्जी में आड़े रुख पर 'मंजूर है' लिख दिया और मुझसे कहा कि अच्छा सलाम। हेड क्लर्क अपने कमरे में चले गये। मैंने परेशानी, नाउम्मीदी और गुस्सा में कहा कि आपसे मुझे ज्यादा उम्मीदें थीं। मैंने जंगलात के शौक़ में दो मौका इतने ही अच्छे मुहकमा एग्रीकल्चर और डाकखाना के खोये और एक साल खराब किया। साहब ने खुश्क जवाब दिया -"मुझे अफ़-सोस है"। मैं भी चला आया और हेड क्लर्क बाबू से कहा—अभी मुझसे चार्ज लेने का इन्तजाम कीजिए। उन्होंने कहा--मैं आज कोई इन्तजाम नहीं कर सकता। मैंने कहा—जनाब अभी फौरन चार्ज लीजिए

और हिसाब कीजिए। तमाम क्लर्क हमदर्दी से जमा हो गये और वजह इस्तीफा देने की पूछने लगे। मैंने कहा—बे इन्साफी। आखिरकार मेरे नजदीक बैठनेवाले बाबू को चार्ज दिलाया गया। यह बाबू साहब मोटे और बुजदिल थे। उनको मैं छेड़ा करता था और अक्सर उनकी पान की डिबिया में जबर्दस्ती हिस्सा लगाया करता था जो कि उनको पसन्द नहीं था। उस वक्त उनको बदला लेने की सूझी। वे बड़े ग़ौर से काग़जात देखने और नुक्ताचीनी करने और एतराज करने लगे। मैंने कहा कि अगर बिला वजह के एतराज किये तो पछताओगे। मुझे इस वक्त गुस्सा आ रहा है। इस पर मेरे दोस्त ने आधे घण्टे के अन्दर चार्ज ले लिया और मैं दफ्तर से सब साथियों से हाथ मिलाकर रुखसत हुआ बरामदा में होता हुआ साहब बहादुर के कमरे के सामने से गुजर गया। जब मैं जंगलात के आहाते में करीब पचास कदम के जा चुका था तो एक चपरासी दौड़ता हुआ आया, कि साहब बुला रहे हैं। चूँकि मैं बहुत ही मायूस जा रहा था, मैंने चपरासी से कहा चले जाओ; लेकिन वह मेरे पीछे आता रहा और जब मैं आहाता के फाटक पर पहुँचा तब उसने फिर कहा कि मैं साहब को क्या जवाब दूँगा। मैंने सोचा और वापस आया। साहब के कमरे के दरवाजे पर पहुँचकर मैंने कहा कि मैं आ सकता हूँ? जवाब मिला कि हाँ! मैं कमरे के अन्दर जाकर मेज के सामने खड़ा हो गया। साहब बहादुर टाइप करने में मशगूल थे; मगर कुर्सी की तरफ इशारा करके कहा कि बैठ जाओ। अब तुम क्लर्क नहीं हो। मैं बैठकर इस तबदीली बर्ताव पर ग़ौर करने लगा। इतने में साहब ने टाइप खतम करके काग़ज़ निकाला और उस पर दस्तखत करके मुझे दिया और पूछा कि यह ठीक होगा? मैंने देखा तो वह मेरी अर्जी थी जिस पर यह रिमार्क लिखा था—"मैं सायल को तीन वर्ष से जानता हूँ और मैंने जो राय इनकी बाबत पहिले कायम की थी उसको मुस्तकिल करता हूँ। यह तेज उम्मीदों से भरा हुआ होनहार नौ उमर है और इसमें बहुत अच्छा फारेस्ट अफसर बनने के आसार हैं। मैं इनकी बहुत जोर से सिफारिश गवर्नमेंट

वजीफादार तालिबइल्म होने की दो उम्मीदवारों के ऊपर करता हूँ; *जिनकी नामजदगी मैं हाल में कर चुका हूँ।"* मैंने इस रिमार्क को पढ़ कर अँग्रेज की जहीनत पर बहुत ताज्जुब किया और जब सर उठाकर देखा तो साहब बहादुर मुझे बहुत गौर से मुस्कराते हुए देख रहे थे। उन्होंने फिर पूछा कि ठीक है? मैंने शुक्रिया अदा किया और कहा कि उम्मीद से ज्यादा बेहतर है। साहब ने फिर कहा कि तुमको इसके जवाब का एक हफ्ता इन्तजार करना चाहिए; मगर मेरे दफ्तर के नजदीक न आना। खेल में आ सकते हो, मैं वहीं तुमको इसका जवाब जब आवेगा, बता दूँगा। मैं सलाम करके रुखसत हो गया। पुलिस क्लब की फील्ड में हफ्ता में दो मर्तबा साहब बहादुर के दर्शन होते थे। करीब दस रोज के बाद साहब बहादुर ने फील्ड में आते ही कहा कि मुझे अफसोस है तुम फिर नहीं लिये गये। और अफसरान भी अफसोस की नजर से देखने लगे। मुझे बहुत ही सख्त धक्का नाउम्मीदी का लगा और जहाँ चल रहा था वहीं खड़ा साहब बहादुर की तरफ देखता रह गया और हाकी, स्टिक फेंक दी। उन्होंने कहा कि इमसाल भी गवर्नमेंट वजीफादार तालिबइल्म के लिए कोई जगह खाली नहीं है; लेकिन वह तुमको प्राइवेट तालिबइल्म के तौर पर लेने को तैयार है। क्या तुम ६०) माहवार अपने पास से खर्च करने को तैयार हो? मैंने कहा—मैं जाऊँगा। साहब ने जवाब दिया तो कल दफ्तर में आओ। जब मैं दफ्तर में गया तो मुझे एक हुक्म दिया कि फौरन ३½ माह की प्रेक्टीकल ट्रेनिंग पर ब हैसियत प्रोवेशनर के बमुशायरा २५) माहवार पर रवाना हो और खीरी फारेस्ट डिवीजन की चार रेंजों के कामों का प्रोग्राम दिया कि वहाँ जाकर काम देखो। हफ्तावार जो-जो काम देखो उनकी रिपोर्ट बजरिये रेंज अफसरान के मेरे पास भेजो और एक छोलदारी देकर रवाना किया। मेरा पहला पड़ाव मैलानी रेंज का था। मुझे जंगलों से इश्क था। कभी ऐसे लक़दक़ घने और हरे-भरे जंगल न देखे थे, जिनमें तरह-तरह के जानवर और परिंद थे। मैं उनको देखकर बहुत खुश हुआ। पहिली ही रात से तरह-तरह की बोलियाँ जंगली जानवरों और परिंदों

की सुनना शुरू कीं; जो कभी न सुनी थीं और रोजबरोज उनकी मामूली और खतरे की आवाजों का फर्क भी समझने लगा शेर, गुलदार रीछ, जंगली कुत्ते, साँभर, चीतल, बारहसिंगा के पैरों के निशान भी सड़कों पर और नदी-नालों और झील के किनारे देखने और पहि-चानने लगा। आमतौर पर छोटे अहेलकार जंगलात तेज कुल्हाड़ी या हलका भाला रखते हैं। मैंने भी एक हल्की तेज कुल्हाड़ी खरीद ली फिर उसके बल पर उन तमाम जंगलों में जहाँ चाहता घूमता और काम व जंगल के मंजर और जानवरों व परिंदों की सोहबत से लुत्फ उठाता। तमाम कारआमद दरख्तों के नाम और उनके स्तेमाल से भी वकफियत होने लगी। तरीका कटान, फरोख्तगी, निकासी, घास के रक़बों की फुँकाई, मरम्मत सड़क व पुल, इमारत सब काम देखता रहा और हफ्तावार रिपोर्टें भेजता रहा बड़े लुत्फ़ से साढ़े तीन माह पूरे डिवीजन की चारों रेंजों में गुजार कर शाह गोरी के किला पर प्रेक्टिकल ट्रेनिंग खतम करके उम्दा सार्टीफिकेट लेकर सिंगाही आया। दो दिन घर पर ठहरने के बाद मैं देहरादून फारेस्ट कालेज में दाखिला के लिये १ अप्रैल सन् १९०८ ई० को पहुँचा।

देहरादून पहुँचकर हिन्दुस्तान के हर सूबा और बर्मा व अन्डमन्स स्थान के तालिबइल्मों से मुलाकात हुई। हर सूबा की जबान मुख-तलिफ थी और बात-चीत अंग्रेजी में होती थी। ५२ तुल्बा में से सिर्फ हम ७ तालिबइल्म मेट्रिक पास थे। बाकी सब एफ० ए०, बी० ए० और एक एम० ए० भी थे। आठ लड़के योरेशियन के सीनियर कैम्ब्रिज पास थे। चन्द ही रोज में मैंने महसूस किया कि मेरी इल्मी लियाकत कम है मगर तमाम प्रेक्टिकल कामों में मैं सबसे आगे रहता था। देहरादून पहुँचने के पन्द्रह दिन के अन्दर दौरे का कुल सामान खरीदा और तैयार किया गया। मसलन वर्दियाँ, जूते, पट्टी, डेरा, कुल्हाड़ी, खुकरी, औजारात, किताबें, नोटबुकें वगैरा-वगैरा। इस दरमियान काम सिर्फ सुबह दो घंटे होता था। एक दिन लेक्चर और एक दिन कालिज के पार्क में मुख्तलिफ़ जंगली दरख्तों के नाम व स्तेमाल वगैरा बताये

जाते थे। जब सब सामान तैयार हो गया तो देहरादून से चकराता फारेस्ट डिवीजन के ढाई माह के दौरे के लिये एक अंग्रेज और दो हिन्दुस्तानी अफसरान के मातहत पैदल रवाना हुए। असबाब खच्चरों के ऊपर रवाना हुआ और ढाई महीने जंगलों, १० हजार फीट की बुलंदी तक के पहाड़ों, पानी, आँधी, ओला और तूफान में हर चौथे-पाँचवें दिन कूच करते हुए बहुत मजबूत जफाकश और जंगल का इनजीनरिंग का, सर्वे का व इल्म वनास्पती का काफी तजुर्बा लेकर देहरादून आखीर हफ्ता जून में वापस आये। यहाँ बरसात के चार महीने, ६ घंटे रोजाना क्लास रूम में मुख्तलिफ मज़मूनों, मसलन सिलवीकल्चर, ड्रायंग, इनजीनरिंग, सर्वे, बॉटनी, ज्वालोजी, हिसाब, एकाउन्ट, साइंस और यूटीलाइजेशन पढ़ाये जाने लगे और माहवारी इम्तिहान होने लगा। बदकिस्मती से मैंने इन्ट्रेंस में साइंस नहीं पढ़ी थी और हिसाब में कमजोर था। लिहाजा पहिले महीने के इम्तिहान में साइंस और हिसाब में फेल हो गया और मेरा नम्बर नीचे से तीसरा था। हम नीचे के ४-५ लड़कों को प्रेसीडेन्ट साहब ने तलब किया यानी कोर्ट मार्शल हो गया। आखिरी लड़का सबसे पहले बुलाया गया और हम बाकी कमरे में बैठे रहे। थोड़ी देर के बाद वह लड़का आँसू पोंछता हुआ सर झुकाये सीधा बाहर चला गया फिर उससे ऊपर का लड़का बुलाया गया और वह भी इसी तरह से रंजीदा चला गया। अब मैं बुलाया गया और मुझसे सवाल किया कि तुम दो मज़मून में बुरी तरह से और बॉटनी में थोड़े नम्बर से फेल हो। क्या वजह है ? मैंने कहा कि मैंने काफी मेहनत नहीं की। हुकुम हुआ कि अगर अगले महीने के इम्तिहान में काफी तरक्की न दिखलाई तो वापस कर दिये जाओगे। बोर्डिङ्ग पहुँचकर मालूम हुआ कि आखिरी लड़का जो किसी मरहठा रियासत से आया था, निकाल दिया गया।

इसके बाद से मैंने बड़ी सख्त मेहनत करना शुरू की। रात को मुश्किल से ४-५ घन्टे सोता और तमाम दिन और रात के १-२ बजे तक पढ़ता रहता। जब नींद आने लगती तो सर धोकर और खड़े

होकर पढ़ता ताकि नींद न आवे। मैंने एक हफ्ता से ज्यादा इस तरह से मेहनत की और ज्यादातर वक्त हिसाब और साइंस में खर्च किया मगर मेरे दिमाग में यह दोनों खुश्क मजमून न घुसे; क्योंकि मैंने साइंस स्कूल में नहीं ली थी और यहाँ एफ० एस-सी० के कोर्स का मजमून पढ़ना शुरू किया था। हिसाब में मैं साइंस की तरह बिलकुल कोरा न था, बल्कि मनसूरेशन और उक़लीदस में काफी अच्छा था।

मेरा एक मद्रासी सीनियर क्लास का बी० एस-सी० दोस्त था; जो कि बराबर बहुत अच्छे नम्बर इम्तिहानों में ले रहा था। जब उसने सुना कि मैं रात-दिन पढ़ता हूँ और सिर्फ ४ घन्टे सोता हूँ तो उसने मेरे पिछले इम्तिहान के नम्बर और मेरी नोट बुकें देखीं और पूछा कि तुम्हारी दिक्कत क्या है? मैंने कहा कि साइंस मैं बिलकुल नहीं जानता और हिसाब में बहुत कमजोर हूँ। उसने लापरवाही से कहा--यह दोनों गैर जरूरी मजमून हैं। जरूरी मजमूनों में क्या दिक्कत है? मैंने कहा--इनमें मुझे कोई दिक्कत नहीं मालूम होती बल्कि दिलचस्पी है और अगर इनमें मैं इससे आधा वक्त सर्फ करूँ तो बहुत अच्छी तरक्की कर लूँ। उसने कहा--हिसाब और साइंस को बिलकुल छोड़ दो और छै घन्टा कम-से-कम जरूर सोया करो। अगर तुम जरूरी मजमूनों में ७० फीसदी नम्बर लिया करो तो पास हो जाओगे; क्योंकि पास होने के लिए कुल मजमूनों का औसत ६० फीसदी होना चाहिये। मैंने उसकी नसीहत पर अमल किया और दूसरे महीने के इम्तिहान के नतीजा में मुझे कुल मजमूनों का औसत ६० से ८० फीसदी नम्बर मिले और मेरा नम्बर नीचे से चौथा था। लिहाजा फिर हम ४-५ लड़कों की पेशी हो गयी। इनमें से एक जो कि क्लास में आखीर था और निकाल दिया गया और बाकी सबको हिदायत कर दी गई। शुरू अक्तूबर सन् १९०८ ई० से सर्वे का दौरा शुरू हुआ। इसके साथ जंगल के और भी काम शामिल थे। बमुकाबिले क्लास के काम के मुझे दौरा और अमली काम मसलन सड़क, पुल और इमारतों का बनाना और उनकी मरम्मत, ईंट बनाना, पकाना, कोयले

के भट्टे लगाना व फूँकना, दरख्तों का काटना और सोखता बनाना वगैरा हर एक लड़के को अलग-अलग दो-दो जरीब मुरब्बा का रक़बा घने जंगल का दिया गया जिसमें मुख्तलिफ नसलों के छोटे-बड़े दरख्त थे। इनमें सब दरख्त जमीन के बराबर काटना और इनके ढाई-ढाई फुट के टुकड़े करके चट्टा लगाना था इस काम के लिये एक हफ्ता दिया गया। यह काम बहुत सख्त था खासकर कालिज के तुल्बा के लिये। हमारे हाथों में छालों पर छाले पड़ गये और खून निकलने लगा। किसी ने रूमाल लपेटे, किसी ने दस्ताने पहिने मगर अपना-अपना काम खतम करना था कोई बहाना न चला। यह काम जरूरी भी था ताकि हम अपने हाथों से काटकर हर किस्म की लकड़ी की सख्ती-नर्मी, मजबूती रंग-रेशे से खूब वाकिफ हो जावें और कभी न भूलें जिनके ऊपर इनके मुख्तलिफ स्तेमाल का दार-मदार था। मैंने अपना काम एक दिन पहले खतम कर लिया और मद्रास के एक लड़के हार्ट की मदद करने पर लगाया गया। थोड़ी देर काम करने के बाद हार्ट ने मुझसे पन्द्रह रुपया उधार माँगे और कहा कि वजीफ़ा मिलने पर दे दूँगा। मैंने कहा कि अपनी एक नाली १२ बोर की बन्दूक जो तुमने हाल में २५) में खरीदी है वह मुझे दे दो, मैं १५) दे दूँगा। उसने जवाब दिया कि जहन्नुम में जाओ। मैंने कहा—तो १५) भी नहीं मिलते। उसने कहा कि अच्छा अगर अभी इसी वक्त रुपया दे दो तो बन्दूक दे दूँगा। मैंने फौरन रुपया निकाल कर दे दिया जिसकी उसको उम्मीद न थी। मैंने कहा कि बन्दूक पड़ाव पर चलकर आज ही देनी होगी और उसने दो और लड़कों के सामने वादा किया और शाम को बन्दूक मै ५ कारतूस के दे दी। हार्ट यूरेशियन और वालंटियर था और लाइसेंस से मुस्तसना था। उस रात को मैं बहुत खुश था और बहुत देर तक ख़याली मंसूबे आने वाले इतवार के लिए सोचता रहा। इतवार भी आखीरकार बहुत इंतजार के बाद आ गया मगर मैं बगैर लाइसेंस की बन्दूक बाहर ले जाते हुए और सरकारी जंगल में शिकार

खेलते हुए झिझका जो बग़ैर पास लिये हुए जुर्म था। मगर जंगलात के गज़टेड अफसरान खेल सकते थे बशर्ते कि वह जंगल में ड्यूटी पर हों। लिहाज़ा मैं सोचता हुआ अपने डेरे के सामने शाम को टहल रहा था कि एक तालिब इल्म टरनर नाम का अपने डेरे से बन्दूक को तौलिया में लपेटे हुए निकला और जंगल में ग़ायब हो गया। मैंने भी बन्दूक़ ली और उसके पीछे चल दिया और थोड़ी दूर के बाद मैं भी जा मिला। अब हम दोनों चोर शिकारी एक साथ रवाना हुए। जंगल हिमालिया के दामन में ऊँचा-नीचा, नदी नालेवाला था। गाँव के नज़दीक ज़िला देहरादून में था। थोड़ी दूर चलकर हम एक खुश्क़ चौड़े नाले में उतर गये जिसमें दूर-दूर दरख्त और ज्यादा-तर घास और झाड़ियाँ थीं। हम दोनों आहिस्ता-आहिस्ता क़रीब दो फर्लांग गये होंगे कि एकाएक क़रीब एक दर्जन के मोर सामने से शोर मचाते हुए ऊँचे किनारे की तरफ उड़ेटरनर ने दो और मैंने एक फायर किया और एक मोर गिरा हम खुश होकर उसको पकड़ने दोड़े ही थे कि चौथा फायर ऊँचे किनारे से हुआ और एक मोर और गिरा। हमने किनारे की ओर देखा तो मिस्टर राफटर हमारे असिस्टेंट इन्स्ट्रक्टर सफेद टोप और नीली पट्टी बाँधे हुए और पीछे उनका अरदली नजर आये। हम देखते ही पिछले पैर भागे और सीधे कैम्प में जाकर दम लिया हमने अपने मोर को भी न उठाया; क्योंकि प्रेसीडेंट फारेस्ट कालिज का हुकुम था कि अगर कोई तालिब इल्म चोरी से सरकारी जंगल में शिकार खेलता हुआ पाया जायगा तो निकाल दिया जावेगा। टरनर ने कहा कि अगर राफटर साहब ने मिस्टर खान अफसर इन्चार्ज से रिपोर्ट कर दी तो वह नहीं छोड़ेगा और अब मुझको बहुत फिकर हुई। करीब एक घन्टा के बाद मिस्टर राफटर का चपरासी टरनर के डेरे पर आया और कहा कि राफटर साहब बुलाते हैं। टरनर अरदली को मेरे पास लाया और कहा कि इसको एक-एक रुपया हम दोनों दे दें और कह दें कि जब इससे पूछा जावे तो वह यह कहे कि मैंने पहिचाना नहीं कि कौन शिकार खेल रहे थे।

मैंने चुपके से एक रुपया दे दिया और अपने डेरे पर ठहर गया; क्योंकि मुझे नहीं बुलाया था। मगर टरनर की वापसी का फिकर से इंतजार करता रहा मैं अपनी बन्दूक हार्ट के पास ले गया और उससे कहा कि बन्दूक रख लो और अगर पूछा जावे तो अपनी बतला दे; क्योंकि वह वालंटियर था और उसको लाइसेंस की जरूरत न थी। उसने कहा कि मैं नक़द ५) लूँगा। मैंने उसको भी ५) दिये। इतने में टरनर मोर को लिये हुए हँसता हुआ आया और कहा कि आओ आधा-आधा कर लें। मैंने पूछा कि मामला कैसे तय हुआ। उसने कहा कि खुशक़िस्मती से वह नाला सरकारी जंगल की सरहद के बाहर था। मगर आयंदा के लिए हिदायत कर दी गयी है और शायद तुमको नहीं पहचाना। इस तरह उसी बन्दूक से पहली फैर दाग़ने का ६) का नुक़सान उठाना पड़ा। इसके बाद से मैं बहुत एहतियात करने लगा और गवर्नमेंट फारेस्ट में तालिब इल्मी की हालत में कभी बन्दूक नहीं दागी। जहाँ कभी जिमींदारी जंगल दौरों में करीब मिलता वहाँ मोर, मुर्गी, हिरन वग़ैरा कभी-कभी मार लेता। बन्दूक की मार व निशाना बहुत अच्छे थे और क़ीमत भी १५)+६)=२१) में बहुत अच्छी थी।

दूसरे यानी आखिरी साल बरसात के चार महीने बवजे साइंस व हिसाब की कमजोरी के भारू थे; क्योंकि इन घन्टों में मुझे प्रोफेसरों की निगाह से छुपना पड़ता था और क्लास की आखीरी लाइन में यूरेशियन लड़कों के साथ बैठता था कि उनको हिन्दुस्तानी प्रोफेसरान कुछ आजादी भी देते थे। क्लास का कमरा करीब ६० फुट लंबा और २५ फुट चौड़ा था। प्रोफेसर की मेज से सामने के फाटक तक तीन फुट चौड़ा रास्ता था और दोनों तरफ ५-५ मेज व कुर्सियाँ तालिब इल्मों की थीं।

एक दिन हिसाब के घंटे में रायबहादुर नन्दमल साहब एक्स्ट्रा डिप्टी कन्सरवेटर अपनी मेज पर बहुत शान से सुरमई सूट पहिने मिस्ल हाई कोर्ट जज के बैठे थे और मैं यूरेशियन तालिब इल्मों के साथ आखीरी लाइन में दरवाजा के पास रास्ता से तीसरी कुर्सी पर

बैठा वक्त गुजार रहा था। हमारे उस्ताद भी हिसाब में कमजोर थे; जो कि उनके पढ़ाने के तरीका से मालूम होता रहता था। मगर रोब-दाब में सख्त थे और मोहकमा में बहुत नेक-नाम थे। उन्होंने दो मद्रासी हिसाब के बी० एस-सी० तुल्बा को छाँट लिया था और जब कभी हिसाब की कोई कठिन गिरह पड़ती या कोई तालिब इल्म कोई सवाल पूछता तो बड़ी शान और हिकमत अमली से उन दो लड़कों में से एक को हुकुम देते कि जाओ बोर्ड पर क्लास को समझा दो और इस तरह से अपनी काबिलियत जाहिर न होने देते। मैंने बजाय हिसाब के कापी पर कुछ फूल बनाये और एक शेर दाँत व नाखून निकाले हुए ओहारा तालिब इल्म की तरफ दौड़ता हुआ बनाकर ओहारा को दिखला रहा था। जो कि मेरे पास बैठा हुआ था और बहुत ही शरीर था। वह ब्रह्मा से आया था। शकल उसकी बन्दर से मिलती हुई थी। गालों पर घने बाल थे; जो कि वह दाढ़ी बनाते वक्त छोड़ देता था और लोग उसको अक्सर बन्दर कहते भी थे। उसने अपना कार्टून देखकर मेरी तरफ बन्दर की तरह मुँह बनाया। नन्दमल साहब ने शायद यह तमाशा देख लिया और सीधे मेरे पास आये। गो और लड़के भी उस लाइन में कुछ न कर रहे थे। मगर मुझसे कहा कि अपनी कापी मुझे दो। मैं खामोशी से खड़ा हो गया। कापी दिखाने के काबिल न थी, जो देता। इस पर उन्होंने बहुत जोर से डाँटा कि कापी इधर दो। मैं चौंक पड़ा और लड़के भी हिल गये। मैंने कापी पेश की। उन्होंने एक-दो वर्क लोटे-पोटे और कापी को मोड़ कर दरवाजा के बाहर फेंक दिया और मुझसे कहा कि तुम भी इसके साथ जाओ और करते भी क्या। मैं खामोशी से मुजरिम की तरह सर झुकाये निकलने लगा। मगर ओहारा बन्दर ने अपनी टाँगें फैला दीं। जिससे मेरा जल्दी निकलना और मुश्किल हो गया। नन्दमल साहब ने दूसरी डाँट दिलाई ही थी कि घन्टा बज गया। मेरी जान बच गई। सब लड़के उठ खड़े हुए और नन्दमल साहब भी अपनी मेज की तरफ चले गये। सब लड़कों के साथ मैं भी निकला

और बरसाती में झुककर अपनी कार्टून की नोट बुक झुककर उठा रहा था कि ओहारा बन्दर ने एक धक्का दे दिया और भाग गया। लड़के मजाक उड़ाने लगे। शर्मिन्दगी में मेरे मुँह से एकाएक यह निकल गया कि अगर मैं कभी इस कालिज में प्रोफेसर होकर आया तो लड़कों से इस तरह का बर्ताव न करूँगा। फिर क्या था लड़कों ने खूब मजाक उड़ाया। किसी ने कहा कि तमाम तुल्बा में तुम ही छाँटकर यहाँ पढ़ाने के लिए भेजे जाओगे। मैंने जब क्लास में अपनी कमजोरी पर गौर किया तो बहुत शर्न्मिदा हुआ। कई रोज तक लड़कों ने प्रोफेसर साहब का खिताब देकर चिढ़ाया। आखिरकार बरसात के चार माह और क्लास रूम की पढ़ाई खतम हुई और दौरा और अमली काम शुरू हुए। जहाँ मैं बी० एस-सी० और आला तालीम याफ्ता लड़कों के ऊपर हर तरह से अमली कामों में हावी रहता था और खासकर सर्वे और इनजीनरिंग के औजारात के स्तेमाल में उनसे बहुत आगे रहता था।

मुझे डर है कि मेरी शिकार की किताब पढ़नेवाले मेरी बिला वजह की बकवास से घबरा न जावें। मगर मुझे उम्मीद है कि वह मुझे इजाजत देगें कि मैं अपने बचपन व नौ उमरी के कुछ हालात बयान करूँ। जिनकी वजह से मुझे शिकार का शौक हुआ; यहाँ पर मैं अपने फारेस्ट कालिज देहरादून के दो साथियों का जिक्र करना चाहता हूँ, जिनसे कमरे और खाने में मेरी शिरकत थी। इनमें से एक मिस्टर डी० एल०, यू० पी० के निहायत शरीफ और सच्चे दोस्त थे। बजुज रंगत के वह रहन-सहन में बिलकुल साहब थे। यूरेशियन तालिब इल्म इनको कैप्टेन वेब भी कहते थे और अगर दोस्तों में से इनको कोई सिर्फ वेब कहता तो वह टाल जाते थे गोया सुना ही नहीं और जब मिस्टर वेब कहते थे फौरन खानदाँ पेशानी से जबाव देते थे। दूसरे सय्यद इब्राहीम एल० बीज थे; जो कि सूबा मद्रास से आये थे। पहिले वह सब इन्स्पेक्टर पुलिस थे लेकिन बाद को उन्होंने मोहकमा जंगलात में तबदीली करा ली थी। वह मद्रास के गर्म मुल्क से उत्तरी हिन्दुस्तान में आये थे; जहाँ पहाड़ी इलाकों का जाड़ा उनको बहुत सताता था और

जाड़ों भर वह जरूरत से ज्यादा कपड़े लादे रहते थे। जाड़ों में देहरादून से हल्द्वानी तक और गर्मियों में चकरावता के पहाड़ों में दस हजार फीट की बुलन्दी तक दौरा होता था, जहाँ पर गर्मियों में जाड़ों की तरह जाड़ा होता था। हमारे दोस्त सय्यद इब्राहीम एल० बीज जिनको मैं कभी-कभी सय्यद इब्राहीम इबलीस भी मजाक में कह देता था और लड़के उनको प्रिन्स ऑफ आरकोट भी कहते थे; क्योंकि वह अपना रिश्ता टीपू सुलतान से मिलाते थे और सुनहरे हर्फों में अपना शिजरा भी छपवा रक्खा था और जिसको वह हर बड़े मौका और महफिल में साथ ले जाते थे, बहुत जिंदाँदिल और हम लोगों से बहुत तजुर्बेकार नौजवान आदमी थे।

---

२. हमारी शेर से पहली मुलाक़ात

देहरादून की तालीम के आखिरी साल में बड़े दिन की छुट्टियों के बाद आख़िरी दौरे में हमको हुकुम मिला कि २ जनवरी सन् १९११ ई० को मुक़ाम अमानगढ़, रामनगर फ़ारेस्ट डिवीजन, जिला नैनीताल में क्लास जमा हो। हमारा असबाब चालीस ऊँटों पर देहरादून से मै नौकरों के बड़े दिन से पहले रवाना कर दिया गया था। २ जनवरी को हम सब तालिबइल्म काशीपुर रेलवे स्टेशन पर सुबह उतर कर १२ मील मुक़ाम अमानगढ़ पहुँचे; जो कि रेंज का हेड कार्टर था। जहाँ जंगलात का बंगला, रेंज का कार्टर और चंद अहेलकारान के कार्टर थे और चारों तरफ़ जंगल, बड़ी-बड़ी घास के रकबे, नाले, नदियाँ थीं। यहाँ हमारे क़रीब २५ डेरे, २० छोलदारियाँ और लेक्चर का बड़ा शामियाना बीच में लगा हुआ था। हमारे दो प्रोफेसरान सामने बँगला में ठहरे थे। बँगला और हमारे कैम्प के दरम्यान डाक्टर, नाई, धोबी और मेहतरों के कैम्प थे। गोया बियाबान जंगल में एक पूरा गाँव बस गया था। जगह-जगह आग जल रही थी। यह मुक़ाम पहाड़ के दामन में था। जनवरी की सख्त सर्दी पड़ रही थी। हम लोगों की हाजिरी लेकर

सुबह से काम का प्रोग्राम बतला दिया गया। हम लोग थके हुए अपने डेरों में सामान वग़ैरा ठीक करके खाना खाकर आराम करने लगे। अँधेरा होने के बाद ही से तरह-तरह के जानवर और कभी-कभी शेर की आवाजें सुनाई देने लगीं। सुबह नाश्ता करने के बाद कुल क्लास तैयार हुआ। घण्टी बजी और हम लोग बँगले के सामने जमा हो गये। हाजिरी के बाद रेंज अफसर और फ़ारेस्ट गार्ड के साथ जंगल को दरख़्तान का छपान करने को रवाना हुए। जो कि आइन्दा साल फरोख़्त होने और कटने वाले थे।

हम लोग करीब आध मील जंगल की सड़क पर जाने के बाद एक चौड़े नाले में उतरे जिसमें कहीं-कहीं पानी के तालाब थे, और ज्यादा-तर खुश्क था। कहीं-कहीं घास, वरना ज्यादातर रेत थी; जिस पर कई एक शेरों के आमदरफ्त के ताजा निशानात बने हुए थे जो कि रात में घूमे-फिरे थे। नाले का दक्षिणी किनारा क़रीब १० फ़ीट के ऊँचा था और उत्तरी किनारा सिर्फ़ २ या ३ फ़ीट ऊँचा था। दोनों तरफ घने साल के शानदार जंगल और उनके नीचे झाड़ियाँ थीं। हमारे इन्स्ट्रक्टर मिस्टर पार्कर जो कि क्लास के इंचार्ज थे, और जो कि पंजाब के सूबा से आये थे। उन्होंने रेंजर से दरयाफ्त किया कि क्या यहाँ शेर बहुत हैं। रेंजर ने जवाब दिया काफ़ी हैं। फिर पूछा कि क्या यह ब्लाक ख़ाली है या किसी के नाम बुक है। रेंजर ने जवाब दिया कि खाली है। पारकर साहब ने कहा कि हमारे सूबा पंजाब में शेर नहीं होता है। और मैंने अभी तक शेर सिवाय अजायबघर के जंगल में नहीं देखा है। यहाँ शेर किस तरह मारते हैं--मचान से या हकवे से। रेंजर ने कहा कि ज्यादातर मचान से मारते हैं। या जिनके पास हाथी होते हैं, वह हाथी पर से मारते हैं या हकुवा भी करा लेते हैं, मगर इसका इन्तजाम यहाँ मुश्किल है। साहब बहादुर ने कहा - एक पड़वा यानी भैंस का बच्चा इस नाले में मुनासिब जगह पर आज रात को बँधवा दो और जब मारा जावे मुझे इत्तिला देना। रिंजर ने कहा बहुत अच्छा। १० बजे से चार बजे शाम तक हम लोगों ने छपान

किया, हाथों में छाले पड़ गये। प्रिंस आफ अरकोट मय और चन्द लड़कों के अमली काम से जी चुराते थे। जिनको मिस्टर राफ़टर हमारे असिस्टेंट इन्स्ट्रक्टर ने अपने सामने रक्खा।

दूसरे दिन सुबह हाजिरी के बाद रिंजर ने कहा कि शेर ने पड्डा मार लिया है। मैंने दो आदमी देखने को भेजे थे और शेर लाश पर मौजूद था। पारकर साहब बहुत खुश हुए और कहा कि अब क्या करना चाहिए। रिंजर ने कहा कि मैं मचान बँधवा रक्खूँगा। अब आप काम से जल्द वापस आकर ३॥ बजे से पहले मचान पर बैठ जाइयेगा। करीब १२ बजे तक पारकर साहब हमारे साथ काम पर रहे और बाद को क्लास मिस्टर राफटर के सिपुर्द कर के चल दिये। शायद हम लोगों की आमदरफ्त की जगह से और आगे पड्डा बाँधा गया था। जब हम लोग शाम को करीब ४॥ बजे वापस हो रहे थे और नाले का आधा रास्ता गुजर चुके थे तब राइफल की दो फ़ायरें हमसे करीब २ फर्लांग पीछे हुई। हमने ख्याल किया पारकर साहब ने शेर मार लिया। करीब एक घन्टा के बाद जब पूरा चाँद निकल रहा था, पारकर साहब का चपरासी हँसता हुआ आया और कहा कि साहब ने मानीटर लोगों को सलाम दिया है और कहा है कि एक दर्जन नौकरों को मै दो बाँस और रस्सियों के भेज दें। ताकि शेर को उठा लावें। किसी ने पूछा— साहब कहाँ हैं? चपरासी ने जवाब दिया कि साहब नाले के ऊँचे किनारे पर शेर के सामने बैठा है और वाकया यह था कि साहब बँगला पर वापस आ गया था। चपरासी ने शायद यह झूठ इसलिये बोला ताकि नौकरों को जल्द भेज दें। मानीटरों ने करीब एक दर्जन नौकर जमा कर मै रस्सी व बाँस के भेज दिया। चन्द यूरेशियन तालिबइल्म भी साथ हुए कि शेर को जंगल में मौके पर देखें और साहब बहादुर को मुबारकबाद दें। क्योंकि साहब बहादुर फाइनल इम्तहान में इस दौरे के बाद ही इम्तहान लेने वाले बोर्ड के मेम्बर थे। मैं भी साथ हो लिया और मेरे साथी प्रिन्स आफ अरकोट भी मै ओवर कोट, मफ़लर और कन्टोप के चल दिये। हमको जाते हुए देखकर और भी तुलबा

आने लगा और काफी मिकदार होती गयी। सब तुलवा शाम के लिबास में ज्यादातर ओवर कोट पहने बैठे थे, वैसे ही चल दिये। गो चाँदनी रात थी; मगर लड़के काफी लालटेनें भी लटका ले गये और चाँदनी भी खूब तेज होती गई।

हम क़रीब ३० तालिबइल्म मय एक दर्जन नौकरों के तीन की लाइन में आगे-पीछे चलते रहे और साहब का अरदली सबसे आगे चलता रहा। उसके पीछे करीब आधा दर्जन यूरेशियन लड़के कोरस में गाते हुए जा रहे थे। मैं इनके पीछे था और ओवर कोट और सिलीपर पहने हुए चल रहा था। जब हम उस रोज नाले में उतरे, जिसमें कहीं-कहीं पानी के तालाब और कहीं घास थी और कुछ दूर गये होंगे तब अरदली ने एकाएक घबराकर कहा कि वह शेर है। गाना एकदम बन्द हो गया और हम सब लोग ठहर गये। करीब ३०-४० कदम के फासले पर हमने देखा कि एक शेर कुत्ते की तरह हमारी तरफ मुँह किये हुए बैठा है, आँखें चमक रही हैं; मगर हिलता-डुलता बिलकुल नहीं है। किसी ने अरदली से पूछा कि क्या यह मरा हुआ है फौरन बदमाश ने जवाब दिया कि हाँ, साहब ने इसके ऊपर हाथ फेरा था और यह मरा हुआ है। फिर पूछा—साहब कहाँ हैं? फौरन् ही जवाब दिया कि नाले के ऊँचे किनारे पर होंगे। इस साफ और बिला सुबहा जवाब पर लड़के धीरे-धीरे शौक़ के साथ बढ़ना शुरू हुए। मैंने शेर की हालत देखकर कहा—यहाँ दर्जनों शेर हैं। वह मरा हुआ शेर शायद आगे होगा और यह जिन्दा शेर है। हमारी लालटेनें देखकर तमाशा देख रहा है, नहीं तो मरा हुआ जानवर इस तरह से नहीं बैठता है। मरा हुआ जानवर एक बगल से पड़ा होता है और मेरे शिकारी दोस्त टरनर ने भी यही कहा; मगर इस पर कोई हँसा और कहा कि इसी हालत में यह मर गया है और फिर साहब ने तो इसकी पीठ पर हाथ फेरा है और अर्दली ने फिर भी यही कहा। इस पर लोग आगे बढ़े और चारों तरफ से शेर को चन्द फिट के फासले से घेर लिया, लेकिन मेरा शक़ मजबूत रहा और मैं सामने के

बजाय शेर के पीछे से गया और इसके पेट की तरफ गौर से देखा तो वह साँस ले रहा था। दुम की नोक आहिस्ता-आहिस्ता हिल रही थी, मैं चिल्लाया कि यह जिन्दा है और मैं नाले में ऊपर की तरफ भागा। मेरे साथ चन्द और बुजदिल भी भाग खड़े हुए। जब शेर उसी तरह खामोश बैठा रहा था तो लोगों ने ताने देकर कहा कि भगोड़े भाग रहे हैं। मैंने नाले के ऊँचे किनारे पर चढ़ने के लिए एक जगह तलाश की और चढ़ने की कोशिश कर रहा था कि किसी लड़के ने पीछे से मेरा ओवर कोट सहारे के लिए पकड़ लिया और हम दोनों फिर लुढ़क कर नीचे आ पहुँचे। किसी ने कहा कि शेर मरा हुआ है। इसलिए इसमें कोई हरकत नहीं है और आधे से ज्यादा लड़के फिर इसके चारों तरफ जमा हो गये। लेकिन मैं उसको साँस लेते और उसकी दुम हिलते देख आया था। लिहाजा मैं नहीं गया और हम दोनों किनारे पर चढ़ने की कोशिश कर रहे थे। बहुत लड़के फिर वापस होकर शेर के चारों तरफ जमा हो रहे थे और हमारे प्रिंस आफ अरकोट पहुँचते ही शेर को बेहिस व हरकत देखकर और मरा हुआ ख्याल करके उसकी पीठ पर एकदम से कूदकर बैठ गये। शेर ने बड़े जोर से एक दहाड़ मारी और उसके सामने जो था उसको पकड़ लिया। बाकी सब लड़के गिरते - पड़ते जिसकी जिधर समझ में आया लालटेन, ओवर कोट, सिलीपर व जूते छोड़कर भाग गये। हम दो-चार लड़के इस दरम्यान में नाले के ऊँचे किनारे पर चढ़ गये। शेर गुस्सा से गुर्रा रहा था और जिसको पकड़ा था वह शोर मचा रहा था कि खा लिया, दौड़ो खा लिया। शेर के पास ही दो-तीन लालटेनें जो लड़के फेंककर भाग गये थे उलट गई थीं और उनमें आग लग गयी थी, शेर के नजदीक ही खूब जल रही थी। शेर की कमर टूटी हुई थी और एक टाँग कूले से टूटकर लोट गई थी। हमारा डाकवाला जो कि उस झूठे अर्दली का छोटा भाई था, उसकी रान शेर मुँह से पकड़े हुए था और अगले पैर के नाखून से डाकवाले के पैरों का गोश्त छील रहा था। वह आगे झुका हुआ अपने दोनों हाथ शेर के

सर पर मार रहा था और दौड़ो-दौड़ो पुकार रहा था। जब शेर की हालत हमने खूब अच्छी तरह देख ली तो खूब शोर मचाया और शेर के ऊपर पत्थर फेंके; जिनसे बजाय छोड़ने के लड़के की रान मुँह में दबाये हुए उसने हमारी तरफ सर घुमाकर बड़े जोर की धाड़ मारी। ऐसा करने से लड़का शेर के मुँह से छूटकर हाथों के भल आगे गिरा। शेर ने एक मुँह लड़के के चूतड़ पर मारा और ख़ाली पाजामा उसके अन्दर धोती और गोश्त का काफ़ी टुकड़ा नोच लिया। लड़के ने पीछे देखा और हाथों के और एक पैर के बल करीब २० कदम आगे घिसट कर गिर गया और बेहोश हो गया। अब शेर ने हमारी तरफ देखा। बहुत मुँह बनाया, गुर्राया और खड़े होने और हमारी तरफ आने की कोशिश की, मगर गिर पड़ा। उसके नीचे काफी खून जमा हुआ था और उसकी कोशिश से हमको पूरा यक़ीन हो गया कि वह उठ नहीं सकता है। सिवाय कुहनियों के बल आहिस्ता-आहिस्ता लड़के की तरफ़ घसिटने के, जब हमने देख लिया कि वह हम तक नहीं पहुँच सकता है, तो हमने मुज़फ़र हुसेन व हवलदार दलीपसिंह को ज़ोर-जोर से आवाज देना शुरू की। ये पंजाबी लड़के क्लास में तगड़े थे। उन्होंने भी आकर शेर की हालत पहले नाले के ऊँचे किनारे से खूब देखी। और किनारे-किनारे लड़के के सामने जाकर बहादुरी से नाले में कूदे। फ़ौरन् लड़के को उठाया और नाले-नाले कैम्प की तरफ भागे। हम भी कई लड़के कैम्प की तरफ नाले के किनारे-किनारे घास व झाड़ियों में होते हुए कैम्प पहुँचे। हाजिरी ली गई और दो लड़के कम निकले। मिस्टर पारकर और मिस्टर राफटर दोनों रात के कपड़ों में शोर-गुल सुनकर बाहर डाक्टर के डेरे पर आ गये। डाक्टर ने लड़के का पैर रान पर से जहाँ पर बहुत बुरी तरह से चूर कर दिया गया था, और जो कुछ थोड़ी-बहुत खाल व गोश्त लगा हुआ था, काट दिया और जख्मों को धोकर पट्टियाँ बाँधकर काशीपुर शफ़ाख़ाना में १२ मील रात को ही चारपाई पर लिटाकर कन्धों के ऊपर ले गये।

जब मैं अपने डेरे पर पहुँचा, तो प्रिन्स आफ़ अरकोट को देखा

कि बुख़ार चढ़ा हुआ है और गफ़लत में कराह रहे हैं। पाजामा काँटों से फट गया, टखने में मोच आ गई। कपड़े शेर के खून से भरे हुए थे। हम लोग सोने की तैयारी कर रहे थे कि घण्टी बजी। उस वक्त करीब १ बजे रात के था। करीब-करीब हम सब लोग जमा हुए, चार ढूँढ़नेवाली पार्टियाँ बनाई गईं और दो खोये हुए लड़कों की तलाश में रवाना हुईं। उस तरफ जहाँ जख्मी शेर पड़ा था और सख्त जाड़ा था; जब हम नाले के किनारे पर पहुँचे, तो आवाजें दीं और जवाब मिला। दोनों लड़के शेर से दूर जंगल में एक दरख़्त पर थे। दोनों को कैम्प में लाकर दो बजे के बाद हम सोये। दूसरे दिन सुबह एक नोटिस पारकर साहब का आया, कि आज के दिन कोई क्लास का काम नहीं होगा। मगर चन्द लड़के जिनके पास बन्दूकें हैं, वह अगर चाहें तो अपनी खुशी से शेर को ढूँढ़ने आ सकते हैं। लिहाज़ा एक दर्जन के करीब लड़के पहले गये और फिर बाद को भी शामिल होते रहे। नाले पर पहुँचने के बाद हम सब लोग उसके ऊँचे किनारे पर चढ़ गये। पारकर साहब ने अपनी दुर्बीन करनौल को दी, जो कि क्लास में बहुत अच्छा और फुर्तीला तालिबइल्म था और कहा कि दरख्त पर चढ़कर देखे कि कहीं शेर दिखायी पड़ रहा है। क़ब्ल इसके कि हम आगे बढ़ें कारनौल ने दरख़्त पर चढ़कर देखा और कहा कि शेर अब मर गया है। मैंने दरयाफ्त किया कि क्या वह फिर रात की तरह बैठा है या एक बगल पर पड़ा है? कारनौल ने कहा कि वह बगल से पड़ा है, पेट फूल गया है और मक्खियाँ लग रही हैं। तब हम सब लोग ऊँचे किनारे - किनारे शेर के सामने गये, तो देखा कि शेर मरा हुआ पड़ा है। चन्द लालटेनें भी उस वक्त तक इधर-उधर पड़ी हुई जल रही थीं और बड़े कोट और स्लीपर भी जगह ब जगह पड़े थे। हम लोग नीचे नाले में उतरे थे कि मिस्टर पारकर ने कहा कि शेर धीरे-धीरे नाले के किनारे-किनारे मेरे दाहिने तरफ पीछे से आया और जब करीब चालीस कदम के था तो मैंने पहली गोली ५७७ बोर रायफल की चलायी। जो कि शेर के दाहिने कूले में लगी। शेर

चक्कर खाकर मचान की तरफ मुँह किये हुए गिरा। दूसरी गोली उसके सीने में लगी और शेर लुढ़क कर नाले में गिरा। हम मचान से उतरे और नाले के किनारे खड़े होकर देखा कि शेर बिला हरकत मरा हुआ पड़ा है। लिहाजा हम दोनों कैम्प चले गये। मालूम होता है कि इसके बाद शेर होश में आकर बैठ गया। जब तुम लोग आये, तो यह अफसोस नाक हादशा पेश हुआ, जो कि अरसा तक न भूलूँगा।

मिस्टर पारकर ने कहा कि हम लोग काफ़ी हैं और सड़क नाले के पास ही है। यदि दो बल्ली काटकर और घास की रस्सी बनायें, तो सब मिलकर शेर को सड़क तक ले जावें। जहाँ से गाड़ी पर कैम्प में ले जावेंगे। हम लोग दौड़े। दो बल्लियाँ काटीं, रस्सी बनायी और शेर के पैर बाँधने की गरज से दूसरी तरफ लौटे। पेट चूँकि फूला हुआ था, दबाकर मुँह से हवा निकली, जिससे गुर्राहट की आवाज भी निकली और सब घबड़ा कर इधर-उधर भागे। क्योंकि रात का हवलनाक मंजर अभी दिल व दिमागों में ताजा था। मिस्टर पारकर ने अपना रायफल सँभाला और मिस्टर राफटर अपनी २० बोर बन्दूक का कुंदा अपने जूते के ऊपर नीली पट्टियों से मिली हुई रक्खे खड़े थे। घबराहट में वह फिसल गयी और इनका सफेद टोप भी गिर गया। लेकिन शेर बेहरकत पड़ा रहा। सब लोग फिर वापस आये और शेर को लादकर सड़क तक लाये। वहाँ से वह गाड़ी पर कैम्प में लाया गया। यह निहायत तन्दुरुस्त ९ फीट १० इञ्च का नर शेर था। इस तरह हमारी पहली मुलाकात शेर से हुई; जिसका हवलनाक मंजर मैं पूरी तरह से कागज पर नहीं बयान कर सकता।

हमारे प्रिन्स ऑफ अरकोट दो-तीन दिन बाद बुखार और शेर की सवारी के धक्के से होश में आये। जब शेर की खाल सूख चुकी थी और उसको देखने गये और निहायत फखर से कहा कि मैंने जिन्दा शेर पर जंगल में सवारी की, जो तुमको किसी को भी नसीब न हुई, न होगी।

हमने अमानगढ़ के टुकड़े का छपान १० योम में खत्म किया और फिर रफ़्ता-रफ़्ता कैम्प से कैम्प ७५ मील का सफर रामनगनर,

कालागढ़, लेव्स-डावश्रन डिवीजनों में से होते हुए बडे-बड़े खुशनुमा और रौनकदार जंगलों में होते हुए दो माह में देहरादून शुरू मार्च १९११ में फ़ाईनल इम्तहान के लिए पहुँचे। हमारा तहरीरी इम्तहान एक पर्चा रोजाना से शुरू होकर १० दिन में खत्म हुआ। ३ दिन के बाद से जबानी इम्तहान शुरू हुए और यह भी १० दिन में खत्म हुए। इस २३ दिन की सख्त मेहनत और जागने ने मुझे चूरकर दिया। मैंने इरादा किया था कि कुल इम्तहान खत्म होने के बाद मैं पूरे २४ घंटा सोऊँगा और उस वक्त का बड़ी बैचैनी से इंतजार कर रहा था। आखिरकार पूरे २३ दिन के बाद एक दिन दोपहर को मेरे कुल इम्तहानात खत्म हुए। मैंने आकर गुसुल किया, खुदा से दुआ माँगी। खाना खाकर २४ घंटा सोने की गरज से लेट गया। लेकिन नींद बिलकुल गायब हो गयी और नींद के बजाय यह ख्यालात आने लगे कि अगर पास न हुए तो लाइसेन्स से मुस्तस्ना न होंगे। मैं बन्दूक को जो कि मेरी चारपाई के नीचे रक्खी थी, बड़ी हसरत से देखने लगा। बन्दूक लेकर हाट के कमरे में गया, जिससे बन्दूक खरीदी थी। वह इस वक्त नहा-धोकर बहुत अच्छा सूट पहिनकर जूते पर पालिश कर रहा था और खुशी से गा रहा था। वह अपने योरोपियन दोस्त और लड़कों और लड़कियों से मिलने जा रहा था। उसको मेरी तरह से फ़ेल होने का डर न था और बड़ी जल्दी में था। मुझे देखकर पूछा कि यह बन्दूक क्यों लाये हो? मैंने कहा कि इसको तुम वापस खरीद लो। उसने कहा—कितने में? मैंने कहा २० रु० में; जो कि मैंने दिये हैं। उसने लापरवाही से जबाव दिया—५ रु० तो तुमने मुझको नाजायज शिकार खेलने से बचाने के लिए दिये थे, मेरे पास पैसा कम है। मैं सिर्फ १०) दूँगा। लिहाजा उसने मुझको १०) दिया। मैं रु० लेकर चला आया और चारपाई पर लेट गया, मगर नींद किसी तरह न आयी। इससे ज्यादा तो इम्तहान के जमाना में सो लेता था, तरह-तरह के ख्यालात फेल और पास होने की बाबत घेरे रहे। जिसके ऊपर आयन्दा जिन्दगी पर दारोमदार था। नतीजा इम्तहान का चार

दिन बाद निकलने वाला था। मेरा यह वक्त भी बहुत ही बेचैनी से गुजरा। आखिरकार फैसला का दिन आ पहुँचा। तालिबइल्म नहा-धोकर नयी वरदियाँ पहिनकर सेन्ट्रल हाल जाने लगे; जहाँ ११ बजे दिन को नतीजा बोर्ड पर लगनेवाला था। मैं चारपाई पर ही पड़ा सो रहा था, कि एक तालिबइल्म ने आकर कहा कि तुम पास हो, दूसरे ने भी उसकी ताईद की। अब मैंने भी वरदी पहनी और जाकर बोर्ड पर देखा और खुदा का शुक्र अदा किया पोस्ट आफिस जाकर पिताजी को पास होने का तार दिया। वहाँ से सीधा अपने क्लास फेलो हार्ट के पास गया और बन्दूक वापस माँगी, मगर उसने जबाव दिया कि ३०) से कम नहीं लूँगा, जो कि मैं नहीं दे सका और मायूस होकर वापस आया। नौकरी पर खाली हाथ बग़ैर बन्दूक के जाना पड़ेगा। देहरादून में सार्टीफिकेट तीन किस्म के मिलते थे। अव्वल आनर्स, दोयम हायर स्टैन्ड्ंस, सोम लोवर स्टैन्ड्ंस और जो फेल हो जाते थे, उनको दूसरा मौका किसी हालत में भी नहीं मिलता था। आखिरकार मैं बहुत खुश था, कि हायर स्टैन्ड्ंस का सार्टीफिकेट तो मिला, जिससे तरक्की के सब दरवाजे खुले थे। खुशी में और लड़कों की तरह मैंने भी कुल पुराना सामान बरतन कपड़े और छोलदारी वगैरा नौकरों को इनाम में दे दिया। लेकिन अफ़सोस यह था, कि प्रिन्स ऑफ अरकोट लोवर स्टैन्ड्ंस में पास हुए थे, जिसमें डिप्टी रिंजर की जगह मिलती थी और रिंजरी से आगे तरक्की नहीं मिलती थी। तीन-चार दिन के अन्दर हुक्म तयनाती सार्टीफिकेट और इनामात तकसीम करने का जलसा और हिसाबात का समझौता खत्म कर माह मार्च का वजीफा लेकर १ अप्रैल को हम लोग अपने-अपने घरों को रवाना हुए। मेरी तयनाती हल्द्वानी फारेस्ट डिवीजन जिला नैनीताल में हुई। जहाँ मुझे ७ अप्रैल तक पहुँचना था। मैं अपने पिताजी और बीबी-बच्चों से मिलने सिंगाही, जिला खीरी रवाना हुआ और सिंगाही पहुँचकर मैंने रोडा कम्पनी कलकत्ता से २२ बोर का रायफल, ५०० कारतूस कुल २५) में हल्द्वानी के पता पर बजरिये

वी० पी० मँगाया। चार दिन क़याम करके हल्द्वानी पहुँचा। मिस्टर टी० कार० ई० एफ० एस० डिवीजनल फारेस्ट आफीसर थे। वे दौरे में थे। मगर उन्होंने अपने दफ्तर हल्द्वानी में मेरे लिए हिदायत भेज दी थी, कि मुझे मिलने आने की जरूरत नहीं, फौरन फतेहपुर रिंग में छपान करने रवाना हो जाओ। जरूरी हिदायत व औजार रिंज आफीसर फतेहपुर से मिलेगा। बरसात के कब्ल छपान खत्म करना है।

दूसरे रोज मैं नौकर के साथ किराया के टट्टू लेकर सात मील फ़तेहपुर पहुँचा। रात को वहाँ कयाम करके दूसरे रोज मैं कुल सामान लेकर मुकाम चौंसला पाँच मील और आगे बियावान जंगल में दोपहर के वक्त पहुँचा। यहाँ कच्ची गाड़ी की सड़क के किनारे हिमालिया पहाड़ के दामन में फारेस्ट गार्ड की दोमंजिली चौकी से करीब ५० कदम पूरब और पहाड़ से भी करीब ४० कदम दक्खिन घास पर मैंने अपना हलका तम्बू लगाया और बावरचीखानों की छोलदारी अपने डेरे और फारेस्ट गार्ड की चौकी के बीच में लगायी। अपने ११ कुलियों को अपने डेरे के पीछे पहाड़ की जड़ पर जगह बताई, कि यहाँ अपना पड़ाव करो। मेरे डेरे के सामने करीब १५ फीट पर सड़क थी और पूरब में कुछ फासिले पर एक बड़ा पीपल का सायादार दरख्त था। उसके ५०-६० कदम पूरब पानी की एक पतली नाली थी, जिसमें पानी एक मील से नदी से आता था। उसके किनारे बहुत घनी झाड़ियाँ थीं और उन पर तरह-तरह की बेल और चमेली फैली हुई फूलों से लदी थीं। डेरे के दक्खिन में सड़क और सड़क के किनारे झाड़ियों की बाढ़ थी और उसके बाद चन्द खेत दक्खिन में थे, जो कि खाली थे। उनके मालिक ठंडे पहाड़ी इलाका से अक्टूबर में हर साल यहाँ आ जाते थे और मार्च आखीर तक गेहूँ बोकर और काटकर और मेहनत-मजदूरी से भी कुछ कमाकर चले जाते थे, लिहाजा खेती में सिवाय चन्द झोंपड़ों के और ४०-५० जानवरों के और दो रखवालों के और कोई न था। पानी की नाली खेतों में से गुजर कर दक्खिन तरफ एक सूखे नाले के किनारे एक गड्ढे में खत्म हो जाती

थी, जिससे जानवर पानी पीते और लोटते थे। इसके तीन तरफ़ घनी झाड़ियाँ थीं और चारों तरफ़ मीलों घने जंगल थे। सड़क के साथ-साथ उत्तर तरफ हिमालय पहाड़ जंगलों से ढका हुआ था। मुझे यह पहला इत्तफ़ाक जंगल में अकेले कैम्प करने का था। अब तक फारेस्ट कालिज के दो साल के दौरान में बड़े कैम्प में रहते थे। मगर मुझे यह कैम्प और जंगल बहुत पसन्द आया। मैंने असबाब खोलकर डेरे में लगाया फिर कुर्सी लेकर पीपल के दरख़्त की साया में बैठ कर सिगरेट पीता रहा और हरियलों का गाना और पीपल की एक शाख से दूसरी शाख पर जाना देखता रहा कि डिप्टी रेंजर उमरावसिंह और फारेस्ट गार्ड गंगासिंह मय एक दर्जन कुलियों के जंगल से छपान करके वापस आये और अपनी चौकी खोली। मुँह-हाथ धोये और सबने एक बाल्टी पानी पिया और फिर मेरे पास आये। मैं इस जंगल में इतने आदमियों को देखकर बहुत खुश हुआ और उनको बतलाया कि मैं भी छपान करने के लिए आया हूँ। खूब साथ रहेगा, कम-से-कम दो आदमी तो बातचीत करने को हैं। थोड़ी देर बातचीत करके वह लोग अपने खाने वगैरह का इंतजाम करने को चले गये और मैं सड़क पर काला डोंगी की तरफ करीब एक मील के टहलने चला गया। सड़क के दोनों तरफ दर्जनों मोर-मुर्गियाँ, एक जोड़ा काँकड़ का और करीब ५०-६० चीतल देखे, कि बहुत घबड़ाये। वे पहाड़ी की तरफ से मेरी तरफ बहुत नजदीक से गुज़रे और उनके पीछे करीब आधे दर्जन जंगली कुत्ते दौड़ते हुए गये, साँभर भी थोड़ी देर के बाद उसी तरफ बोलने लगे, शायद कुत्तों को देखकर दूसरे जानवरों को खतरे की इत्तिला देने लगे। मैं सूरज डूबते वक्त अपने दोस्त हार्ट को बन्दूक वापस न देने की मलामत करता हुआ वापस आया। मैंने डिप्टी रेंजर से जो देखा था, वह बतलाया। उन्होंने कहा कि यहाँ जंगली कुत्ते काफ़ी हैं और मुहकमा की तरफ से कुत्ते मारने के शिकारी नौकर हैं और फी कुत्ता मारने पर पचास रु० इनाम मुकर्रर है। उसने यह भी पूछा कि क्या आपके पास

बंदूक है ? मैंने कहा—नहीं, मगर मेरी छोटी बन्दूक कलकत्ता से जल्द आनेवाली है। अँधेरा होने के एक घंटा बाद जंगल में बिलकुल सुनसान हो गया। सिवा छपका चिड़िया के जो कि उल्लू की कौम से है रात भर खुट-खुट की आवाज़ करती रहती है। मैं खाना खाकर थोड़ी देर इन लोगों से बातचीत करके अपने डेरे के बरामदा में चारपाई बिछाकर सो रहा। मगर छिपके चिड़ियों ने चारों तरफ़ से खुट-खुट की आवाज से रात भर परेशान किया और काफी नींद नहीं आयी। सुबह होते हम सब साथ छपान को गये। मेरा छपान का टुकड़ा डिप्टी रिंजर उमरावसिंह के टुकडे के बाद कैम्प से करीब तीन मील के फैसले पर था। सड़क पर हमने करीब जंगल के कुल जानवरों के पैरों के निशानात देखे। साँभर, चीतल, काँकड़, सुअर, गुलदार, शेर, गीदड़ जो कि रात को सड़क पर इधर-उधर घूमे थे।

बुड्ढे तजुर्बेकार डिप्टी रेंजर वगैरह और फारेस्ट गार्ड से बहुत कुछ इन जानवरों के पैर के निशान पहिचानने और उनकी आदतों की बाबत मालूम किया। मैं जंगल से काम करके ठीक दोपहर को लौटा और कपड़े बदलकर सीधा पानी की नाली पर तौलिया और साबुन लेकर पहुँचा और एक जगह ऐसी तलाश की जहाँ नाली के दोनों तरफ़ खूब घनी झाड़ियाँ थीं। उनके ऊपर चमेली की बेल इस तरह झुकी हुई थी कि इसके नीचे धूप बिलकुल नहीं आती थी। मैंने इसके नीचे पत्ती, झाड़ी व बेलों को साफ़ किया और नाली को थोड़ा गहरा और चौड़ा किया। फिर एक फिट गहरे हौज में १५ मिनट लेटा रहा और फिर गुसुल करके वापस आया और खाना खा रहा था तब दूसरी पार्टी भी वापस आ गयी। खाना खाकर मैं अपनी चारपाई पीपल के दरख़्त की साया में बिछाकर खूब सोया। करीब शाम को मेरी आँख काले मुँह के लंगूर बंदरों के शोर-गुल से खुलीं; जो कि मेरे कुलियों के पड़ाव के पीछे पहाड़ के दरख़्तों पर बैठे काफी शोर-गुल मचा रहे थे। वे उस वक्त शोर मचाते हैं जब कि कोई खतरनाक जानवर मसलन शेर या गुलदार को देखते

हैं। सब कुली खड़ें हुए पहाड़ की तरफ देख रहे थे। मैंने पूछा—क्या है ? एक कुली मेरे पास आया और कहने लगा कि मेरे पड़ाव के पीछे एक गुलदार बैठा। है मुझे यकीन नहीं हुआ कि दिन में गुलदार आदमी के इस कदर नजदीक आ जावेगा।

लंगूर खतरे की आवाजें बड़े जोर से दे रहे थे, जो कि वह सिर्फ खतरनाक जानवर को देखकर ही देते हैं। लिहाज़ा मैं भी कुलियों के पास गया। उनमें से एक ने इशारे से बताया कि करीब ४० कदम पर पहाड़ की ढाल पर एक बड़े पत्थर के सहारे एक गुलदार बैठा है। मैंने देखा कि वाकई बैठा है। और हम लोगों की तरफ़ और दरख्तों पर बन्दरों की तरफ़ देख रहा है बन्दर शोर मचा रहे हैं। डिप्टी रिंजर उमरावसिंह बन्दरों का शोर इस कदर नज़दीक से सुनकर क्वार्टर से बाहर आये और हम सबको बाहर जमा देखकर आगे बढ़े और पूछा कि क्या बात है ? मैंने इशारे से बुलाया। जब उन्होंने गुलदार को देखा, तब मुसकराते हुए कहा कि वह बन्दरों के शिकार पर लगा है। गुलदार ने जब हमारी तवज्जह बहुत ज्यादा अपनी तरफ देखी तो आहिस्ता - आहिस्ता पूरब नाला की तरफ ढाल पर चला ; जहाँ से पानी की नाली आती थी। मैंने कुली के हाथ से कुल्हाड़ी ले ली और आहिस्ता-आहिस्ता पहाड़ की जड़ के साथ करीब ५० कदम गया। डिप्टी रिंजर ने आवाज दी कि बस अब वापस चले आओ, उससे बहुत ज्यादा दोस्ती अच्छी नहीं। जब मैं लौटा तो देखा कि एक तगड़ा एक आँख का कुली हाथ में कुल्हाड़ी लिये हुए बिलकुल मेरे पीछे खामोशी से आ रहा है। मैंने उससे पूछा—तुम क्यों आ रहे हो ? उसने फौरन जवाब दिया—तुम्हारी हिफ़ाजत के लिए। मैंने कहा—अगर गुलदार हमला करता, तो तुम क्या करते ? उसने कहा – मैं अपनी तेज कुल्हाड़ी उसके सर पर मारकर फौरन खत्म कर देता। मुझे उसकी यह हमदर्दी बहुत पसन्द आयी। मैं उसको अपने डेरे पर लाया, चार आना पैसा और दो केले खाने को दिये और पीठ ठोंक कर शाबाश कहा। जिससे वह बहुत खुश हुआ और उस रोज से वह मेरा

वफादार बाडी गॉर्ड बन गया। चाय पीने के बाद मैंने नेकर, बूट पहना और अपने वफादार बाडी गार्ड धाँगड़िया को आवाज दी, जो कि उस वक्त लकड़ी काट रहा था। वह फौरन दौड़ता हुआ आया। मैंने कहा— मेरे साथ टहलने चलोगे? उसने कहा, हाँ–और हम दोनों फतेहपुर वाली गाड़ी की सड़क पर करीब एक मील गये। इस सड़क पर भी ऐसे किस्म के सब जानवर मोर, मुर्गी देखे; और वापसी पर ताज़े निशानात चीत, साँप यानी पाईत्थन के देखे जो कि काफी मोटा मालूम होता था। चीत साँप ज्यादातर पानी के पास घास व घनी झाड़ियों में या टूटी हुई चट्टानों में नालों के किनारे रहता है। मैंने धाँगड़िया से पूछा–यह कितना मोटा होगा? उसने बताया–मेरी रान के बराबर, और यह छोटे चीतल व हिरन को साबित निगल जायगा। रात भर छिपका चिड़ियाँ बोला कीं और एक दूसरे का जवाब देती रहीं। सिवाय चौसला कैम्प में नाली के ५ मील तक पूरब में और काला डोंगी तक १० मील पच्छिम में और कहीं पानी न था। सब नाले व चश्मे गर्मियों में सूख जाते थे। मैंने कैम्प के पूरब व पच्छिम काफी दूर तक देख लिया था, लिहाजा तीसरे दिन शाम को मैंने धाँगड़िया वफादार काने कुली से कहा कि आज पानी की नाली के साथ-साथ उस नाले तक चलेंगे कि जहाँ से हमारी नाली में पानी आता है। उसने कहा–अच्छा, और दो कुल्हाड़ियाँ लाया, एक मुझे दी और एक खुद ली और कहा कि बजाय लकड़ी के कुल्हाड़ी लेकर चलिए। मैंने कहा—किसलिए? उसने जवाब दिया—यदि कोई जंगली जानवर हमला करेगा तो हम दोनों इन कुल्हाड़ियों से उसको मार डालेंगे। मैंने कहा–अगर शेर हमला करे, जिसका ख्वाब मैं रोज देखता रहता था और उसके मारने का बहुत बड़ा अरमान था। तो क्या करेगा! वह मुस्कराकर बोला—हम दोनों उसके भी टुकड़े कर देंगे। मैं उसके हम ख्याल होने और दिलेरी पर बहुत खुश हुआ, क्योंकि जितना ज़्यादा खतरा होता था मुझे उतना ज़्यादा मज़ा आता था। मेरी उम्र उस वक्त क़रीब २१ साल के और क़द करीब ५½ फीट के और तन्दुरुस्ती निहायत अच्छी थी। मेरे साथी की उम्र करीब २५

साल, क़द ५ फीट ८ इंच और जिस्म मुझसे भारी था। हम दोनों को खतरे में लुत्फ हासिल होने से साथ बहुत अच्छा मिल गया। दूसरे कुली और खासकर कुलियों का जमादार धाँगड़िया को बहुत हसद से देखने लगे। हम दोनों तेज कुल्हाड़ियाँ लेकर पानी की नाली के साथ-साथ पहाड़ की तरफ रवाना हुए और जानवरों के पैरों के निशानात देखते हुए जा रहे थे, जो कि रात में पानी पीने के लिए आते थे। मैं अपने साथी से इन जानवरों के पैरों के निशानात पूछता जा रहा था; जिनको कि मैं नहीं पहिचानता था। इतने में मेंढक की खतरे की तेज आवाज थोड़ी दूर आगे सुनायी दी, जो कि वह साँप के पकड़ने पर करता है। हम दोनों ग़ौर से उस तरफ देखने लगे। नाली के आस-पास दोनों तरफ हरी घास ६ इंच लम्बी थी, कुछ हिलती नजर आयी। पास जाकर देखा तो एक साँप करीब ५-६ फीट लम्बा मुँह में मेंढक पकड़े हुए तेजी से पत्थरों और पहाड़ की तरफ भागा; जो कि करीब ५० कदम के पच्छिम तरफ थे और फिर घना जंगल शुरू हो गया था। उसी तेजी से धाँगड़िया उसके पीछे कुल्हाड़ी लिये दौड़ा और एक हाथ कुल्हाड़ी का मारा। मगर साँप बच गया और मेंढक को छोड़कर पत्थरों को बचाते हुए जंगल की तरफ भागना शुरू किया। मैंने डाँटा कि मत मारो, क्योंकि मैं उसको जिन्दा पकड़ना चाहता था; जिसमें मुझे काफी प्रेक्टिस थी। मगर उसने दूसरा हाथ मारा और सर से एक फीट के फासले पर साँप के दो टुकड़े कर दिये और फ़ौरन ही सर को उल्टी कुल्हाड़ी से कुचल दिया। मैंने जाकर देखा तो बे-जहरीला साँप था जिसको धामन कहते हैं और जो कि अक्सर दरख्तों पर चिड़ियों के अंडे-बच्चे खाता है या पानी के किनारे मेंढक पर गुजर करता है। धाँगड़िया अपनी कामयाबी पर बहुत खुश हुआ। मैंने कहा—तुमने बिला वजह बेगुनाह जानवर को मार डाला। अब अगर आइन्दा तुम कहीं साँप देखो तो तुम मुझे बुला लेना। मैं जिन्दा पकड़कर तुम्हें उसका तमाशा दिखाऊँगा। हम फिर नाली के किनारे-किनारे आगे बढ़े और उस जगह पहुँचे जहाँ बाँध व पुस्ता बनाकर

पानी को रोका और उस नाली में डाला था; जो हमारे कैम्प के पास से गुजरती थी। वहाँ नाले की रेत में करीब-करीब उन सब जानवरों के ताजे पैरों के निशानात बने हुए थे, जो उस जंगल में नाले के पास जाते थे यानी काँकड़, चीतल, साँभर, सुअर, रीछ, गुलदार व शेर। सूरज डूब रहा था और मेरी बड़ी ख्वाहिश थी कि नाले को कुछ और दूर ऊपर देखा जाय जिसके दोनों तरफ ऊँचे-ऊँचे पहाड़ घने जंगलों से ढके हुए थे। मगर धाँगड़िया ने कहा कि अगर हम अब भी वापस हों तो अँधेरे में पड़ाव पर पहुँचेंगे और रीछ व सुअर आकर बिला वजह हमला कर देते हैं। लिहाजा हम करीब ५० कदम और आगे गये और फिर लौट पड़े। क्योंकि उस जमाने में बिजली की टार्च नहीं थी जो कि आजकल आम है। उस वक्त मोर, मुर्गियाँ खास आवाज कर रही थीं; जो कि वह शाम के वक्त रात को बसेरा करने के लिए दरख्तों पर बैठते वक्त करती हैं लौटते वक्त मोर, मुर्गियाँ बहुत नजदीक इधर से उधर जाती हुई नजर पड़ीं। मुँह में पानी भर आया। कई रोज से आलू और दाल पर गुजर हो रही थी; जिसकी आदत नहीं थी।

मैंने अपने क्लासफेलो हार्ट जो कि मद्रास का था, मलामत करना शुरू की कि मेरी बन्दूक उसने मुनासिब कीमत पर वापस नहीं की और धाँगड़िया से कहा कि दो-चार दिन में मेरी बन्दूक आजावेगी तब मुरगी और मोर मारा करेंगे। उसने कहा कि अगर मुरगी चाहिए तो मैं कल या परसों तक जरूर पकड़ दूँगा। अगर आप मुझे मछली का एक या दो छोटा काँटा कहीं से ला दें। फारिस्ट गार्ड के पास जरूर होगा। मैंने कहा—वह तो शायद मेरे पास ही होंगे। पड़ाव पहुँच कर मैंने उसको दो छोटे काँटे मछली के दिये। उसने कहा—कल शाम को मुरगी जरूर खिलाऊँगा। रात भर चिड़ियाँ छत पर खुट-खुट की आवाज से परेशान करती रहीं। सुबह रोज की तरह काम पर गये और जब आधे से ज्यादा वक्त काम पर गुजर चुका, तो जंगल में किसी सड़े हुए जानवर की बदबू आने लगी। जैसे-जैसे हमारी लाइन दरख्त छापती हुई बढ़ती गयी, वैसे ही बदबू भी बढ़ती गई और बाद

में नाकाबिल बरदाश्त हो गयी और हम लाश के बहुत नजदीक पहुँच गये। एक खुश्क नाले में जिसके दोनों तरफ़ चट्टानें और घने दरख्त और झाड़ियाँ थीं; शेर की आमदरफ्त के पैर के निशानात खूब साफ़ बने हुए थे। सब कुली बहुत खुश होने लगे कि शेर ने कोई जानवर मार कर खाया है। आगे बढ़े तो देखा कि नाले के किनारे एक दरख्त के नीचे जिस पर घनी बेल फैली हुई थी, एक साँभर तीन-चार दिन का मारा और आधे से ज्यादा खाया हुआ पड़ा था। उसमें कीड़े हजारों की तादाद में पैदा हो गये थे और ढेरों मक्खियाँ उस पर बैठी हुई थीं। मैं देखकर फौरन बग़ैर साँस लिये पीछे भाग आया; क्योंकि बदबू नाकाबिल बरदाश्त थी। मैंने सब कुलियों को बुलाया, मगर वह नहीं आये। मेट ने आकर कहा कि दो आदमियों को छुट्टी दे दो। ताकि वह थोड़ा-सा गोश्त खाने के लिए ले जावें। मैंने कहा—गरमी का मौसम है जो उसे खायेगा उसे हैजा हो जायगा। मैंने हुकुम दिया कि खबरदार जो इसको छुआ।

मैंने सबको लेकर काम शुरू कर दिया। जब काम खत्म करके रजिस्टर पर छपे हुए दरख्तों का जोड़ लगाकर मेट को दिया और थोड़ी दूर हम लोग सड़क की तरफ गये, तो मैंने देखा कि आधे आदमी गायब थे। मैंने फिर हिदायत की कि अगर इसको खाया तो मर जाओगे। कैम्प में पहुँच कर मैंने कपड़े बदले और धाँगड़िया को मय कुल्हाड़ी के लेकर नहाने की जगह जाकर बेल और डालें कुछ तो बँधवा दीं और कुछ कटवा दीं। एक हौज ६ फीट, ४ फीट और १½ फीट खोदकर सब पत्थर निकालकर फेंक दिये। जगह को भी साफ़ करा कर उसको वापस किया। अब यह मेरा कुदरती निहायत अच्छा और ठंडा गुसुलखाना बन गया। खूब आराम से गुसुल करके मैं लौटा, तो देखा कि कुली गोश्त काट रहे हैं और तमाम कैम्प में नाकाबिल बर्दाश्त बदबू फैली हुई है। मैं खफ़ा हो रहा था कि डिप्टी रेंजर फारेस्ट गार्ड भी आ गये और देख कर कहने लगे—यह कोई भी नहीं मरेंगे। यह लोग इसके आदी हैं। तब मैंने कहा कि अच्छा, पानी

की नाली पर ले जाओ और वहीं पकाकर खाओ और वापस आओ। वाक़ई उनको कुछ नहीं हुआ। शाम को जब मैं टहलने जाने को तैयार हो रहा था धाँगड़िया वह दोनों मछली के काँटे लिये हुए आया, जो मैंने उसे अगली शाम को दिये थे। वह उनमें एक-एक हाथ का डोरा बाँधे हुए था। काँटों को उसने आटे की गोलियों से ढक दिया था और कहने लगा कि पहले हम खेतों के दक्खिन तरफ जायँगे, जहाँ पानी की नाली एक १५ फीट चौड़े तालाब में सूखे नाले के पास घनी झाड़ियों में खत्म हो जाती है। वहाँ काँटों को बाँधकर फिर टहलने चलेंगे। मैं उसकी तजवीज समझ गया और हम दोनों पहले तालाब पर गये। वहाँ पहले ही से चन्द मुर्गियाँ पानी पी रही थीं। वे हमको देखकर उड़ गयीं। धाँगड़िया ने तालाब के बिलकुल पास ही दो खूँटियाँ गाड़कर दोनों काँटे की डोरियाँ उनमें खुली हुई जगह में बाँध दी। हम दोनों सूखे नाले के नीचे की तरफ चल दिये। नाले की सतह चिकने सफेद छोटे-बड़े पत्थरों से भरी हुई थी; जो कि जंगल के सूखे पत्तों से ढके हुए थे। मेरे बूट में मोटी कीलें लगी हुई थीं; जिनकी वजह से चलना मुश्किल था। हम करीब एक फर्लाङ्ग के गये होंगे; जहाँ से नाले में तेज ढाल शुरू हुआ और नाले के किनारे करीब आदमी के बराबर ऊँचे थे। उत्तर की तरफ काँटेदार झाड़ियाँ थीं, फिर खेत और हमारा कैम्प था। दक्खिन की तरफ ऊँचे दरख्तों का कम घना जंगल था। मगर बड़ी-बड़ी पुरानी बेलें अक्सर दरख्तों पर फैली हुई थीं। जिनकी साया में चीतल जगह-ब-जगह बैठकर दिन गुजारते थे। सूखे पत्तों और पत्थरों पर हमारे चलने की आवाज सुनकर एक चीतों का गोल जो कि नाले के किनारे नजदीक ही बैठा हुआ था, एकदम से खतरे की आवाजें देता हुआ भागा। मैं उनकी तरफ देखने लगा और मेरा पैर फिसला। मैं एक पत्थर पर कमर के बल गिर पड़ा; जिससे दाहिने टखने और कमर में सख्त मोच आयी। फिर मैं बड़ी मुश्किल से उठकर आहिस्ता-आहिस्ता उसी रास्ते एहतियात से वापस लौटा। हम लोग करीब आधे रास्ता के वापस आये होंगे कि तालाब की तरफ

मुर्गियों ने कुट-कुट का शोर मचाना शुरू किया। धाँगड़िया ने कहा कि मुर्गी हमारे काँटे में फँस गई है और वह तेजी से आगे बढ़ा कि एक बाज़ तालाब के किनारे उड़कर नजदीक के दरख्त पर जा बैठा और बाद को चन्द मुर्गियाँ भी खतरे का शोर मचाती हुई उड़ीं। जब मैं वहाँ पहुँचा तो देखा कि धाँगड़िया खड़ा हुआ मुस्करा रहा था। एक काँटे में एक मुर्गी फँसी हुई उछल रही थी और दूसरी में एक मुर्गी फँसी हुई मरी पड़ी थी; जिसका आधा सीना बाज ने खा लिया था; जो कि पास ही दरख्त पर बैठा हसरत की निगाह से देख रहा था और मलामत कर रहा था कि हम लोगों ने उसका शिकार छीन लिया। मैंने मरी हुई मुर्गी अपने वफादार साथी को दे दी और जिन्दा को पकड़कर पड़ाव को वापस गये; क्योंकि चोट की वजह से अब चलने की हिम्मत नहीं थी। बावरची को बुलाकर मुर्गी दी और कहा कि इसे अच्छी तरह पकाओ; क्योंकि कई रोज से आलू और दाल खा रहे थे। लिहाजा मुर्गी के मिलने से उस दिन पेट भर खाने की उम्मीद थी। रात को हस्ब मामूल छपका चिड़ियों की खुट-खुट की आवाज ने अच्छी तरह सोने नहीं दिया और अब उनकी आवाज़ चारों तरफ सून-सान जंगल में बहुत बुरी मालूम होने लगी। सुबह रोज़ की तरह काम पर गये। दोपहर को वापस आकर अपने खुशनुमा गुसुलखाना में गये जहाँ पर चमेली के फूलों का फर्श और निहायत उम्दा खुशबू आती थी। पहुँचने पर मैंने कपड़े उतारकर डालों में टाँग दिये और लापरवाही से पानी में पैर रखा ही था कि कोई चीज नर्म-सी पैर में लगी और एकदम से पानी में जलजला आ गया। यहाँ तक कि पानी किनारों से बाहर निकल गया। मैं घबड़ाकर इधर-उधर देखने लगा, मगर खलबल से पानी गँदला हो गया। पानी किनारों से बाहर निकल गया। मैं घबड़ाकर कूदकर बाहर खड़ा होकर देखने लगा, मगर खल-बल से पादी गँदला हो गया और चमेली के बेल की घनी साया में साफ दिखलायी भी न दिया, मगर ताजुब से खड़ा देखता रहा। जब पानी कुछ साफ हुआ तो मैंने देखा कि किनारे पर थोड़ा-सा मुँह निकाले कोई

जानवर मेरी तरफ देख रहा है। थोड़ी देर में और मुँह बाहर निकाला तब मैंने पहिचाना कि यह तो बड़े किस्म के चीत साँप यानी पाईथन का मुँह है। मैं नेकर पहिनकर गुसुलखाना के बाहर आया। धाँगड़िया को बड़े जोर से आवाज़ देकर कहा कि जल्दी आओ। वह फौरन दौड़ता हुआ कुल्हाड़ी लिये आया और पूछा कि क्या है? मैं इसको गुसुलखाना में ले गया। उस वक्त तक पानी भी बिलकुल साफ हो गया था और मुँह भी काफी बाहर निकल आया था। पानी के अन्दर भी उसकी चित्तियाँ दिखाई दे रही थीं। धाँगड़िया ने पहले तो गौर से देखा और जब पहिचाना तो कुल्हाड़ी उसके सर पर उठाई। मैंने उसकी कुल्हाड़ी पकड़ ली और कहा कि पहाड़ के ऊपर से एक दस फीट लंबा बाँस काट लाओ। जब वह बाँस लाया तो उसकी पतली नोक पर एक लकड़ी का टुकड़ा बाँधकर हुक की तरह बनाया और साँप के पेट में फँसाकर पानी की हौज से खींचकर बाहर निकाला। वह एक मन से ज्यादा वज़न का मालूम होता था। बाहर आने पर उसने आहिस्ता-आहिस्ता पहाड़ की तरफ रेंगना शुरू किया। हम उसको बाँस से छूते रहे और हटाकर पहाड़ व बाँस की चट्टानों व झाड़ियों में कर आये। धाँगड़िया मायूस होकर वापस आया, क्योंकि वह उसको मारना चाहता था। मैंने कहा—अब जाओ। उसने कहा कि तुम नहा लो मैं बैठा हूँ। कहीं वह फिर ठंडे पानी की लालच में न आ जाये। मैंने मुश्किल से उसे वापस किया और जल्दी से गुसल करके मैं चला आया और खाना खा कर चारपाई पर पीपल के दरख्त की साया में सो रहा, तब फतेहपुर रिंग दफ्तर के एक कुली ने जगाया और मेरी कई दिन की डाक दी, जिसमें २५।।।=) का २२ बोर रायफल की बिल्टी के वी० पी० का नोटिस भी था।

अब मैं बहुत खुश हुआ। डिप्टी रिंजर अमरावसिंह को बुलाया, जिनसे अब खूब जान-पहिचान हो गई थी और रोज रात को घंटा-दो घंटा खाने के बाद डिप्टी रिंजर व फारेस्ट गार्ड अपने लम्बी मुलाज़मत के मुख़तलिफ तजुरबों की बातें किया करते थे; जिसमें शेरों के शिकार का

जिक्र जरूर होता था। मैंने कहा कि आप अपना कोई एतबार वाला कुली मेहरबानी करके दीजिए और एक खत हल्द्वानी के फारिस्ट स्टोर कीपर को लिखकर भेज दो कि वह मेरी बन्दूक का पारसल छुटाकर भेज दें। मैंने उनको २८) वी० पी० छुड़ाने और महसूल रेल के लिये दिया। कुली को हल्द्वानी भेजने के बाद मैं तैयार होकर धाँगड़िया को लेकर मुर्गियों के लिए तालाब पर काँटे बाँधने चला गया। एक काँटे में आँटे की गोली लगा दी और दूसरे काँटे में धाँगड़िया ने सुर्ख मिर्च को भिगोकर उसमें घास भरकर लगा दी ताकि वह ताज़ा मालूम हो। उसने कहा कि मोर सुर्ख मिर्च के खेतों में दूर-दूर से मिर्च खाने के लिए आते हैं। मुझे यह नहीं मालूम था। मैं रोज़ एक नया सबक़ और नया तजुरबा जानवरों और चिड़ियों की तरह-तरह की नई बोलियाँ सीखता था; जो कि ऐसे शिकारी के लिये जो अपनी ही जुस्तजू और मेहनत पर शिकार खेलना चाहता हो, निहायत जरूरी है। हमने एक कुली को तालाब के पास झाड़ियों में बिठा दिया और समझा दिया कि अगर कुछ फँसे तो उसे जिन्दा मेरे बावरची के पास ले जाओ और हम दोनों पानी-वाले नाले की तरफ़ चले गये, जहाँ से पानी की नाली हमारे पड़ाव को आती थी। इस तरफ़ सब्ज ज्यादा था। चलना आसान था और काँटे-वाली झाड़ियाँ भी कम थीं। हर किस्म के जानवर भी ज्यादा थे; जो कि २४ घंटा में एक बार पानी पीने वहाँ जरूर आते थे। हम वहाँ से काफी दूर आगे गये। नाले के करीब-करीब सभी क़िस्म के जानवरों के पैरों के निशानात थे; जो कि हमारे उत्तरी भारत में काफी पाये जाते हैं। धाँगड़िया ने एक पत्थर पर खुश्क खून देखा। मैं बहुत खुश हुआ कि अब कुछ तमाशा देखने को मिलेगा। उसने आहिस्ते से कहा कि आज यहाँ कुछ मारा गया है। थोड़ी दूर आगे चलकर घसीटने का निशान और उस पर गुलदार के पैरों के निशानात दिखाई दिये। धाँगड़िया भी बहुत खुश हुआ और कहने लगा कि चीतल या काँकड़ कोई छोटा जानवर मारा है और मेरा

हिस्सा जरूर छोड़ा होगा। हम दोनों घसीटने के निशान पर चल रहे थे कि एक मोड़ पर करीब ३० कदम के फैसले पर चन्द साँभर पानी पी रहे थे। उन्होंने हमको देखकर बहुत जोर से खतरे की आवाजें दीं और नाले के दूसरी तरफ पहाड़ पर दुमें उठाये हुए भाग गये। इनकी आवाज सुनकर करीब के चीतल और काँकड़ों ने भी हमदर्दी में जवाब दिया। थोड़ी दूर और आगे बढ़े तो देखा कि एक लंगूर बन्दर एक पत्थर के नीचे करीब आधा खाया हुआ पड़ा है। उसके पेट की सब आलायश भी खाली है। यह आदत गुलदार की होती है कि सीने से खाना शुरू करता है और शेर हमेशा पिछली रानों से खाना शुरू करता है।

धाँगड़िया बन्दर की लाश देखकर मायूस हुआ। मक्खियाँ बन्दर की लाश पर बहुत बैठी हुई थीं और ऐसा मालूम होता था कि गुलदार ने सुबह के वक्त मारा और खाया था। शेर और गुलदार अमूमन दो मर्तबा सुबह और शाम खाना खाते हैं। अगर मिले नहीं तो कई दिन नहीं खाते हैं। मैंने धाँगड़िया से पूछा कि अब गुलदार खाने को आवेगा। उसने कहा कि हाँ जरूर आवेगा, अगर हमको न देखा। नहीं तो रात में आवेगा, उस वक्त करीब एक घंटा के अंधेरा होने में था। वहाँ पर करीब ५० कदम तक सिवाय छोटे-बड़े पत्थरों के कोई दरख्त न था। लिहाजा हम दोनों ने एक बड़े पत्थर पर बैठने को तय किया जो कि लाश से करीब २५ कदम के फासले पर हमारे पड़ाव की तरफ था। ताकि अगर भागने की जरूरत हो तो हमारे भागने में आसानी हो।

हम दोनों खामोशी से बैठे रहे और चीतल, साँभर, मोर और मुर्गियों को आते - जाते और पानी पीते देखते रहे। हम करीब आधे घंटे के बैठे होंगे कि मक्खियाँ और मच्छड़ों ने परेशान कर दिया और छोटे-छोटे कीड़े सीधे आँखों में घुसते और तेज जलन पैदा करते थे, बैठना मुश्किल हो गया। उसी वक्त पच्छिम वाले पहाड़ के ढाल पर चीतलों ने खतरे की चन्द आवाजें दीं और फिर थोड़ा

उसके नीचे एक काँकड़ भी बोला कि थोड़ी देर के बाद पहाड़ की जड़ से जहाँ घनी झाड़ियाँ थीं कई एक मुर्गियाँ एकाएक शोर मचाती हुई नाले के दूसरी तरफ़ उड़ गईं। फिर करीब १५ मिनट के लिए बिलकुल खामोशी के बाद करीब ५० कदम पर गुलदार की झलक पत्थरों में होते हुए लाश की तरफ आते हुए नज़र आई और वह पत्थरों में गायब हो गया। हमारे दिल धड़कने लगे। हथियार सिवाय कुल्हाड़ियों के और कुछ न थे। अब वह फिर करीब पर दिखलाई पड़ा। मक्खी और भुनगे उसको भी परेशान कर रहे थे और वह बैठकर इधर-उधर देखने लगा। सूरज डूब रहा था। नाले के दोनों तरफ ऊँचे पहाड़ होने की वजह से रोशनी और जल्द कम होने लगी। मच्छड़ों ने बमुकाबिला पहले के ज्यादा सताना शुरू कर दिया; जिसकी वजह से शायद हम हिल गये और गुलदार ने हमको देख लिया। हम बिलकुल खुले हुए पत्थर पर बैठे थे। मैंने धाँगड़िया से बहुत आहिस्ता से कहा कि उसने हमको देख लिया है और मैं कुछ सिकुड़ा। इतने में गुलदार ने एक आवाज़ की और पहाड़ की तरफ भाग गया और हम अपने पड़ाव की तरफ़ भागे।

हम लोग जब कैम्प में पहुँचे तब बिलकुल अँधेरा हो गया था। डिप्टी रिंजर ने कहा कि इतनी रात तक बगैर हथियार के बाहर जंगल में नहीं रहना चाहिए। हमने उनको बतलाया कि किस वजह से देर हुई। उन्होंने हँस कर कहा कि शेर गुलदार तो बग़ैर जख्मी किये हमला नहीं करते, मगर रीछ व सुअर अक्सर बग़ैर छेड़े भी हमला कर देते हैं। खासकर रात में जानवर बमुकाबिला दिन के आदमी से ज्यादा निडर हो जाते हैं और कहा कि तुम्हारा कुली काँटे से पकड़कर एक पुराना नर मोर लाया था। वह तुम्हारे और मेरे यहाँ पक रहा है, लेकिन चूँकि सख्त है, लिहाजा देर लगेगी। धाँगड़िया की तरकीब से बग़ैर बन्दूक के रोज़ गोश्त मिलने लगा। उस दिन खाना देर से खाया और थोड़ी देर बातचीत के बाद, चीतल, साँभर और छिपके चिड़िया की आवाजों में चारपाई

पर जा लेटा। मैंने थोड़ी देर शाम के गुलदार की बाबत गौर किया और फिर सोचता रहा कि सुबह मेरी २२ बोर बंदूक आ जावेगी। दूसरे दिन इतवार था। काम की छुट्टी थी। कुली लोग सुबह से नहाने और कपड़ा धोने नाली पर चले गये। मैं बेचैनी से पीपल की साया में बैठा हुआ फतेहपुर और हल्द्वानी वाली सड़क पर देखता रहा कि कुली रायफल का पारसल लेकर आता होगा। वक्त गुजरता गया और दोपहर के करीब जंगली कुत्ते मारनेवाला शिकारी फतेहपुर रिंज दफ्तर से ३२ बोर का रायफल कन्धे पर रखे हुए पहुँचा। उसने हमारी डाक दी और रेंज अफ़सर का एक सिलिप दिया, जिसमें लिखा था कि वह शाम को राह देखने आवेंगे कि कितना छपान बाकी रह गया है। क्योंकि डिवीज़नल अफ़सर का हुक्म आया है कि आखिर तक कुल छपान खत्म करके पहली जून को छपान का नतीजा भेज दिया जावे, ताकि पहले हफ्ता जून में कुल डिवीजन की फेहरिस्त छपने भेज दी जावे; क्योंकि सालाना नीलाम जुलाई में होगा। मैंने अपने कुली की बाबत दरियाफ्त किया तो मालूम हुआ कि पहली रात को वह फतेहपुर रिंज में रहा और उसी दिन सुबह हल्द्वानी गया है।

मैं नाउम्मीद होकर उठा और फिर नहाने-धोने चला गया। चमेली की साया के नीचे जल्दी से कपड़े उतारकर हौज की तरफ बढ़ा, तो पिछले दिन के चीत साँप का ख्याल आ गया, और देखा तो वह हौज के एक किनारे पर मुँह निकाले हुए बैठा है और बाकी कुल जिस्म पानी के अन्दर है; जो कि साफ़ पानी में दिखलायी देता था। मैं पिछले पैरों फौरन वापस हुआ। मैंने फिर अपने दोस्त धाँगड़िया को आवाज दी, वह फिर कुल्हाड़ी लिये हुए फौरन दौड़ता हुआ आया और पूछा कि क्या वह फिर आ गया। मैंने कहा, हाँ। वह यह कहता हुआ आगे बढ़ा, कि मैं बदमाश को आज मार डालूँगा। मैंने कहा—नहीं, वह ही कलवाला बाँस लाओ और एक जलती हुई लकड़ी कैम्प से लाओ, ताकि मैं उसको आग से दाग दूँ, ताकि उसको उम्र भर याद रहे और फिर किसी दूसरे की जगह में न आये। वह जाकर दोनों चीजें ले आया।

फिर हम दोनों ने उसको पानी के बाहर मुश्किल से घसीटा ; क्योंकि वह रुकने के वास्ते बहुत जोर लगा रहा था और बिलकुल निडर था।

जब हम उसको पानी से बाहर निकाल लाये तो उसने बे दिली से पहाड़ की तरफ़ रेंगना शुरू किया। तब मैंने जलती हुई लकड़ी दो-तीन जगह उसकी दुम पर लगायी, जिससे वह एकदम गफलत व काहली से चौंक पड़ा और समझ में आया कि यह पहले दिन की तरह मजाक नहीं है और अपनी दुम को घसीटकर तेजी से पहाड़ की तरफ चला। मैं भी उसके पीछे उसी तेजी से गया और दो-तीन जगह उसके जिस्म से जलती हुई लकड़ी लगायी। इस पर वह लौट पड़ा और खुले हुए मुँह से हमला किया। हम लोग पीछे भाग आये। उसने अपना कुल जिस्म करीब १५ फीट लम्बाई के समेट लिया और मुँह उठाये हुए मुक़ाबिला करने को तैयार हो गया। धाँगड़िया ने जिसके पास लम्बा बाँस था पूरी ताकत से १ बाँस मारा; जो उसके सर पर तो लगा नहीं मगर जिस्म पर पूरी ताक़त से लगा और साँप फिर बहुत तेजी से चूने की चट्टानों और झाड़ियों में चला गया और फिर कभी मेरे गुसुलखाना में कब्जा नहीं किया।

३. फ़ारेस्ट रेन्ज ऑफ़ीसर और उनकी अकड़

वापसी पर मैंने खाना खाया और पीपल के दरख्त के नीचे चारपाई पर लेट कर रेन्ज ऑफ़ीसर का इन्तजार करता रहा, जो कि शाम के करीब अपनी दरमियाने कद की तेज घोड़ी पर खाकी नेकर सफेद कमीज पहने हुए, आस्तीन उल्टी हुई और एक सफेद रूमाल पेटी से बँधा हुआ और टोप लगाये हुए तशरीफ लाये। वे घोड़ी से बड़ी तेजी से हाथ में बेंत लिये हुए कूदे और जोर से फारेस्ट गॉर्ड को आवाज़ दी। उन्होंने घोड़ी को शिकारी के सिपुर्द करके मुझसे हाथ मिलाया, सब लोगों का सलाम लिया और कुरसी पर बैठ गये।

मैं चारपाई पर बैठ गया। इतने में डिप्टी रेन्जर, फारेस्ट गॉर्ड और कुली लोग भी सब आ गये। रेन्ज आफीसर ने अंग्रेजोंवाली हिंदुस्तानी में अपने मातहतान से गुफ्तगू की। जिस तरह एक नया अंग्रेज हिन्दुस्तान में आकर टूटी-फूटी उर्दू बोलता है। मुझको उनका यह अमल देखकर ताज्जुब हुआ और मैं उनको सिगरेट दे रहा था, उनका अर्दली १२ बोर दुनाली बन्दूक लिये हुए पूरी वर्दी पहिने हुए पहुँचा, जिससे उनकी कद्र और बढ़ गई। सब कुली आकर चारों तरफ खड़े हो गये और मेरी कीमत कमीज व पाजामे में घट गई। वह मुझसे चन्द माह सीनियर थे और हम दोनों रेन्जरी के आखिरी ग्रेड में थे। वह हाल ही में डिप्टी रेन्जरी से तरक्की पाकर रेन्जर हुए थे, और फॉरेस्ट क्लास को उन्होंने करीब ८ वर्ष पहिले पास किया था। मैंने उनको खुश करने के लिए उनकी सफाई की तारीफ की, कि आपके अर्दली की वर्दी, घोड़ी की हालत और उसका साज-सामान बहुत साफ़-सुथरा मिस्ल अंग्रेजों के हैं। वह हँसकर बोले कि हाँ, हिन्दुस्तानी अफ़सरान ज्यादातर इस बात की परवाह नहीं करते हैं।

रेन्ज आफीसर ने काम की बाबत दरयाफ्त किया, कि किस कद्र काम खत्म हो चुका है और कितना और करने को बाकी है। उन्होंने नक़शा पर जिस क़द्र रकबा अभी छापने को बाकी था, उसको हम दोनों के रोजाना काम के औसत से तकसीम किया, और इससे यह अन्दाज लगाया कि हम दोनों करीब १० जून तक बाकी रकबा को छाप सकेंगे। उन्होंने कहा कि इससे काम नहीं चलेगा, क्योंकि पहिली जून तक कुल काम खत्म करके आखिरी मई में छपान का नतीजा भेजना है। मैंने कहा—मेरे औसत में ५ एकड़ रोजाना और लगा लीजिए। मगर डिप्टी रेन्जर ने कहा कि मेरे औसत में ५ एकड़ रोजाना घटा दीजिये। क्योंकि मैं बुड्ढा आदमी हूँ और गर्मी रोज़ बरोज़ बढ़ती जाती है। इन दोनों में गर्म बहस हुई। मैंने कहा कि अच्छा कुल बकाया रकबा का छपान १ जून तक हम दोनों खत्म कर देंगे, मैं और ज्यादा देर तक काम कर लूँगा और डिप्टी रेन्जर के

हिस्से का भी खत्म कर लूँगा। मेरी तन्दुरुस्ती उस वक्त बहुत ही अच्छी थी और मुझे हमेशा मेहनत में लुत्फ आया, और मामिला खत्म हुआ। थोड़ी देर खामोशी के बाद मैंने पूछा कि क्या रास्ता में आपको मुर्गियाँ सड़क पर नहीं मिलीं। उन्होंने जवाब दिया—हाँ! मैंने कहा तो फिर क्यों नहीं मारीं। जवाब दिया कि मुर्गियाँ फतेहपुर में रेन्ज कार्टर ही के पास मुझे काफी मिल जाती हैं और अर्दली बन्दूक लिये घोड़ी के बहुत पीछे था। मैंने पूछा—आपके पास यहाँ कौन नंबर के कारतूस हैं? उन्होंने जवाब दिया—कि एक गोली, दो गर्राब और तीन कारतूस नम्बर ४ के। मैंने कहा—कि अगर आप मुझे २ कारतूस नम्बर ४ के वापसी में दे दें, तो मैं कुछ दूर आपके साथ चलूँगा और एक-दो मुर्गियाँ मार दूँगा, क्योंकि दाल और आलू से दिल हट गया है। वह राजी हो गये और थोड़ी देर में फॉरेस्ट गॉर्ड की चौकी के पच्छिम सूखे नाले में चीतल बोलने लगे, और फॉरेस्ट गॉर्ड बोला, कि वह नाले के किनारे नमकीन मिट्टी खा रहे हैं। मैंने पूछा, कि यहाँ से कितनी दूर पर। जबाब दिया कि करीब २ फरलाँग पर। मैं एक गोली, एक गर्राब और एक नम्बर ४ का कारतूस लेकर कुत्ते मारनेवाले शिकारी के साथ रवाना हुआ, और उससे मैंने कहा कि जहाँ चीतल बोल रहे थे, वहाँ ले चलो। जब हम नाले पर पहुँचे चीतल ने एक-दो आवाजें दी। जिससे मुझे पूरा अन्दाज हो गया कि वह कहाँ पर हैं और मैंने शिकारी से कहा कि अब तुम मुझसे २५ कदम पीछे-पीछे आहिस्ता-आहिस्ता आओ। उसको यह बात पसंद नहीं आयी। मैं आहिस्ता-आहिस्ता पंजों के बल झाड़ियाँ और सूखी पत्तियाँ व पत्थर वगैरह बचाता हुआ करीब १०० कदम के नाले में गया। तब मुझे एक मादीन चीतल नज़र पड़ी, कि वह नाले के पच्छिम ढाल पर मुझसे करीब ५० क़दम पर खड़ी है। मैंने अपने जूते वहीं छोड़ दिये और एक झाड़ी की आड़ लेकर बहुत आहिस्ता से करीब दस कदम और आगे बढ़ा, तो करीब २ दर्जन मादीन और ३ नर काफी बड़े दिखाई दिये। मैंने जैसे ही बन्दूक उठाई, चीतलों ने मुझे देख लिया

और दुम उठाये हुए नाले के किनारे पहाड़ पर थोड़ी दूर चढ़कर कुछ तो ठहरकर देखने लगे और बाकी भागे चले गये। इनमें एक नर भी था। मैंने इस पर गोली चलाई और इत्तिफाक से उसकी बगल में लग गई। वह लुढ़कता हुआ नाले में आ गिरा। कुत्ते मारनेवाला शिकारी मेरी तरह बहुत खुश होकर दौड़ता हुआ आया। मैंने पूछा कि चाकू है? उसने अपनी छोटी खुकुरी निकाल कर दी, जिससे मैंने चीतल की गर्दन काटी। इतने ही में हमारे चन्द कुली बन्दूक की आवाज़ सुनकर दौड़ते हुए आ गये। मैंने उनसे कहा कि चीतल को पड़ाव में ले आओ, और मैं भी आध घंटे के अन्दर ही चीतल मारकर पड़ाव में वापस आ गया। तमाम कैम्प चीतल देखकर और शाम को गोश्त खाने की उम्मीद पर बहुत खुश था। जब चीतल कैम्प में आया तो रेन्ज ऑफ़ीसर ने सींग नापे, जो ३२ इन्च निकले। उन्होंने मुझसे पूछा, कि तुम सींग और खाल का क्या करोगे। मैंने कहा कि आप ले जाइये और उन्होंने शुक्रिया अदा किया। मगर डिप्टी रेन्जर ने कहा कि आपके पास तो बन्दूक है, जब चाहें मार सकते हैं लिहाजा खाल मुझे दीजिए। हम लोग बातचीत करते रहे और फॉरेस्ट गॉर्ड और कुलियों ने खाल निकाली, सींग मय सर के और एक टाँग के रेन्ज आफ़ीसर को दी गई। एक टाँग और थोड़ी सी गर्दन मुझे दी, और बाकी सबने बाँट लिया। रेन्ज आफीसर ने कहा कि अब कैम्प में बहुत गोश्त मिलेगा; क्योंकि दो-एक दिन में दो शिकारी पास लेकर आ रहे हैं। डिप्टी रेन्जर रेन्ज ऑफ़ीसर के लिए चाय लाये और वह चाय व सिगरेट पीकर फतेहपुर रवाना हुए उनके पीछे उनका अर्दली एक बाँस में एक तरफ चीतल का सर और दूसरी तरफ टाँग लटकाये हुये गोऑन साहेब को गालियाँ देता हुआ रवाना हुआ। मैंने दरियाफ्त किया कि यह गोऑन साहब कौन हैं। सब लोग हँसने लगे। डिप्टी रेन्जर ने कहा कि हमारे रेन्ज ऑफीसर हमारे डिवीज़नल ऑफीसर मिस्टर कार की नकल करते हैं। जो कि खाकी नेकर, खाकी मोजे, सफेद कमीज़ हमेशा जंगल में पहनते हैं और एक सफेद रूमाल एक तरफ पट्टी में लटकाये

रहते हैं हाथ में एक बेत लिये रहते हैं। अफ़सर और खास कर जब किसी के ऊपर ख़फ़ा होते हैं, तो गोआन कहते हैं और बिलकुल उसी तरह से हमारे रेन्ज आफ़ीसर उनकी पूरी-पूरी नकल करते हैं। सिर्फ रंगत और क़द में फर्क है। हिन्दुस्तानी भी बिलकुल नये अंग्रेज की तरह टूटी-फूटी हिन्दुस्तानी बोलते हैं। मसलन हम नहीं जाने सकता है। तुम उल्लू के मुवाफिक आदमी है और चूँकि गोऑन का लफ्ज़ बहुत ज्यादा इस्तेमाल करते हैं। इसलिए इनका नाम डिवीज़न भर में गोऑन साहब पड़ गया है और इनके नाम भवानीदत्त से इनको कोई भी नहीं जानता है। मैंने पूछा कि क्या कार साहब के सामने भी यह ही लिबास पहनते हैं, जबाब दिया कि नहीं, उनके सामने तो पूरी वर्दी, पट्टी और साफा लगाकर जाते हैं। नहीं तो कार बहुत सख्त आदमी हैं। वह कच्चा खा जावें। एक मर्तबा रेन्ज ऑफ़ीसर गोऑन साहब अपनी रेन्ज में सड़क की मरम्मत का मुआइना इसी अंग्रेगी लिबास में कर रहे थे और बेत को बहुत ज्यादा चमका रहे थे और कुलियों और सड़क के ठेकेदार पर बहुत गरम होकर गोऑन, डैम-फूल कर रहे थे, कि इतने में कार साहब भी बेउम्मीद इस तरफ से अपने बड़े घोड़े पर पड़पड़ाते हुए आ गये। उनको दूर ही से देखकर हमारे नकली गोआन साहब ने झपट कर अपना रोब तो एक झाड़ी में छिपा दिया और लटकता हुआ सफेद रूमाल जल्दी से जेब में खोंस लिया और कुलियों से सादी हिन्दुस्तानी ज़बान में कहने लगे, मेहनत से काम करो। कार साहब आ गया। इसका बयान अगर सड़क के ठेकेदार से सुनते, तो पूरा मजा आता, कि किस तरह से कार साहब से गोआन साहब ने गुफ्तगू की और किस तरह से उसके जाने के बाद रोब झाड़ी से निकालकर रूमाल से झाड़ा और रूमाल को फिर लटका लिया और अपनी घोड़ी पर बैठकर चले गये और फिर कुलियों ने क्या-क्या मज़ाक उड़ाया। हम उस शाम को कहीं टहलने नहीं गये और कार साहब की बददिमाग़ी और गोआन साहब की वैसी ही नकल अपने मातहतान के साथ के किस्से सुनते रहे। मेरा बावर्ची एक टाँग और एक गोश्त का

टुकड़ा लेकर आया और पूछने लगा कि क्या पकाऊँ। डिप्टी रेन्जर ने कहा कि इस वक्त छोटा टुकड़ा कलेजी व गुर्दे पकाओ। टाँग को डेरे और अपनी छोलदारी के बीच में दरख्त पर हवा में लटका दो। कल दोनों वक्त अच्छे-अच्छे खाने कोरमा, पोलाव और कबाब खिलाना। मैंने कहा कि बिलकुल ठीक है और वह चला गया।

मैंने डिप्टी रेन्जर से कहा कि हमको छपान अगले महीने के आखिर में ख़त्म करना है। लिहाजा कल से आधा घन्टा जल्दी चला करें और बजाय १२ बजे के १ बजे लौटा करें। उन्होंने मुँह बनाकर जवाब दिया कि मैं अब इस उमर में अपने आपको हलाल नहीं करना चाहता। अगले साल मुझे पेन्शन लेना है। तुम नौ उम्र हो, मेहनत करके उसका इनाम भी पा सकते हो, लेकिन मुझे अब क्या इनाम मिलेगा? लिहाजा तुम जल्दी जाओ और देर में आओ। मगर मैं तो अपना वक्त नहीं बदलूँगा। मैंने अपने मेट, कुलियों और बाबरची से कहा कि कल से मैं आधा घंटा पहले काम पर जाया करूँगा। लिहाजा इसी हिसाब से सब लोग तैयार हुआ करें।

दूसरे दिन मैं जल्दी से काम पर रवाना हो गया और जब एक मील निकल गया हूँगा, तब दिन निकलना शुरू हुआ, मैंने सामने रास्ते पर देखा कि धूल बहुत उड़ रही है और आगे बढ़े तो करीब ५० कदम पर देखा कि दो जानवर सड़क की धूल में खूब लोट-पोट रहे हैं। हम सब खड़े हो गये और मेरे मेट ने खाँसा तो दो जानवर कुत्तों की तरह हमारी तरफ मुँह करके बैठ गये और थोड़ी देर बाद उठकर जंगल में घुस गये। जब हम यहाँ पहुँचे, तो गुलदार के जोड़े के पैरों के निशान देखे, जो कि धूल का गुसुल कर रहे थे और यह निशान हमारे कैम्प की तरफ से आने के लगे हुए थे। मैंने एक हरी डाल तोड़कर वहाँ गाड़ दी और पैरों के निशानों पर चक्कर खींच दिये ताकि डिप्टी रेन्जर और फारेस्ट गॉर्ड आते हुए देखें। अब यह अप्रैल का आखिरी हफ्ता था और पानी सिवाय हमारे वाले नाले के आस-पास में और सब जगह सूख गया था। लिहाजा जानवर पानी पीने

के लिए चारों तरफ से इस नाली के इर्द-गिर्द आने लगे, जो कि इनके रात के पैरों के निशानात से मालूम होता था और रात में जानवरों की खतरे की आवाजें बमुकाबिले पहले के ज्यादा सुनाई देने लगीं। मैं दोपहर को १ बजे काम से वापस आया और गुसुल करके खाना खाने बैठा। भूख भी खूब लगी थी और उम्मीद थी कि बावरची ने कम-से-कम दो अच्छी चीजें पकाई होंगी, मगर वह एक क़िस्म का थोड़ा सा गोश्त लाया। मैंने पूछा कि बस, सुबह से अभी तक यही पकाया है। उसने कहा कि दरख्त से चीतल की टाँग कोई ले गया, और सब लोग कहते हैं, कि गुलदार ले गया और करीब ही सड़क पर उसके पैरों के निशान भी हैं, जो कि दरख्त तक आने के नजर आते हैं। डिप्टी रेन्जर ने थोड़ा-सा गोश्त दिया था, वह ही पकाया है। मुझे यक़ीन नहीं आया। मगर डिप्टी रेन्जर और फ़ारेस्ट गार्ड ने भी वही कहा।

---

४. मेरी २२ बोर रायफल

खाना खाकर मैं पीपल के दरख्त के नीचे रायफल के पारसल के इन्तजार में लेटा हुआ था, जो कि आखिरकार शाम के करीब सख्त इन्तजार में पहुँचा। मैंने धाँगड़िया को आवाज दी, कि अपनी कुल्हाड़ी और मेरी खुकरी बावरचीखाना से ला दे। फ़ौरन बक्स को खोला और रायफल और कारतूस निकाले। रायफल से तेल वगैरह पोंछकर एक छोटे नम्बर का कारतूस लगाकर इधर-उधर कोई चीज निशाना लगाने के वास्ते देख रहा था, कि एक फाख्ता आकर सड़क के किनारे खेत की बाढ़ पर करीब २५ फ़ुट पर बैठकर बोलने लगी। मैंने उसी पर निशाना लेकर आहिस्ता-आहिस्ता लबलबी खींची। रायफल दागते ही फाख्ता गिर पड़ी, रायफल की आवाज सुनकर डिप्टी रेन्जर, फॉरेस्ट

गॉर्ड और कुली सब आ गये। मैं अपने रायफल के पहले निशाने की कामयाबी पर बहुत खुश हुआ और वह फ़ाख्ता धाँगड़िया को दी। मैंने ५ फाख्ता और मारी। एक मैंने अपने बावरचीखाना में दी और बाकी और लोगों को बाँटी। थोड़ी देर बाद बाहर घूमने गये और आधा दर्जन फैर चलती हुई मुर्गियों पर चलाये और जो फासिला दूर होने की वजह से खाली गये। एक मोर जख्मी होकर पैर लटकाये हुए बोलता हुआ दूर उड़ गया। ४ कारतूस मैंने २० से ४० कदम के फासिले पर निशाना पर लगाये, जिनका नतीजा बुरा नहीं रहा। सुबह काम पर जाते हुए मैं रायफल और आधा दर्जन कारतूस ले गया। दिन निकलने पर सड़क के दोनों तरफ देखता गया और करीब ही एक जगह पर एक मुर्गा और दो मुर्गियाँ दीमक खा रही थीं। इनमें से मैंने मुर्गा मारा और काम पर पहुँचने तक रास्ता में दो मुर्गियाँ और मारीं उनमें से एक अपने लिए रखी और एक-एक डिप्टी रेन्जर और फ़ॉरेस्ट गॉर्ड को दी। छपान करते वक्त एक हरियल पेड़ पर से मारा। अब क्या था, गोश्त की तकलीफ जाती रही। शाम को डिप्टी रेन्जर और फ़ॉरेस्ट गॉर्ड भी हमारे साथ घूमने तालाब की तरफ जा रहे थे कि फॉरेस्ट गॉर्ड ने एक खरगोश खेत के किनारे बैठा हुआ दिखलाया। मैंने एक पेड़ की आड़ लेकर करीब ४० कदम से उस पर इतमिनान से दरख्त का सहारा लेकर गोली मारी, जोकि उसके बगल में पड़ी। वह कई फीट उछल कर भागा और थोड़ी दूर पर गिर गया। यह धाँगड़िया को मैंने दिया। वह बहुत खुश हुआ और कहने लगा कि इसे दो रोज़ खाऊँगा। इसके बाद हम तालाब के किनारे से १५ फिट के फासिले पर झाड़ियों के पीछे बैठ गये। थोड़ी देर में एक मुर्गा और ३ मुर्गियाँ पानी पीने को आये। मुर्गे को मैंने मार लिया और बाकी उड़ गयीं। यह जगह ऐसी यकीनी थी कि अगर कहीं कुछ न मिले तो थोड़ी देर यहाँ बैठने से जरूर कुछ-न-कुछ मिल जाता था। इसके बाद सुबह सड़क के दोनों तरफ अच्छे मौके नज़दीक से मुर्गी मारने के मिल जाते थे। रायफल आ जाने पर वक्त बहुत लुत्फ़ से गुजरने लगा।

मैंने रोजाना करीब ६ कारतूस के, निशाने पर खर्च करना शुरू किये। अलावा चिड़िया मारने के जिससे मेरा निशाना चन्द ही दिन में बहुत अच्छा हो गया और एक हफ्ता में कोई निशाना ३० कदम के अन्दर खाली न जाता था। मैं करीब-करीब एक फाख्ता रोज़मर्रा हर कुली को देने लगा और खूब दबाकर काम लेता था। वे लोग भी बहुत खुश थे। एक-दो मुर्गी हम अपने लिए रोजमर्रा मार लेते थे। तजुर्बे से मालूम हुआ कि मोर का मारना शाम को बसेरे के वक्त जब वह अँधेरे से पहले खास बोली बोलकर दरख्तों पर बैठते हैं, बहुत आसान है। लिहाजा जिस दिन मोर मारना चाहते थे सड़क पर अँधेरा होते वक्त घूमते थे और जहाँ मोरों के दरख्तों पर बैठने की आवाज आती थी, आहिस्ता-आहिस्ता दरख्तों और झाड़ियों की आड़ लेकर काफी नजदीक पहुँचकर आसानी से एक-दो मोर मार लेते थे। जिससे पूरे कैम्प की दावत हो जाती थी। गर्मियों में नर मुर्गा और नर मोर बहुत दुबला और खाने में अच्छा नहीं होता है। शुरू जाड़ों में इनके नौउम्र पट्ठे बहुत अच्छे होते हैं। जिस कदर पानी गर्मी की वजह से सूखता गया उसी कदर गुलदार और शेर के पैरों के निशान पानी के आस-पास ज़्यादा दिखलायी देने लगे।

५. दो नौ उम्र शिकारी और उनके दो शेर

महीने के बिलकुल आखिर में दो नौ उम्र अंग्रेज शिकारी आये। एक फौज में डाक्टर था और दूसरा लेफ्टीनेन्ट था। उनके साथ दो नौकर, चार कुली, २ भैंस के बच्चे जिनको पड्डे या कटेर कहते हैं, २ बकरियाँ, और ६ खच्चर असबाब के लिए थे। जंगलात का कुत्तेमार शिकारी उनका सख्त इन्तज़ार कर रहा था जैसे मैं रायफल आने का करता था। उसके पास कई-एक सार्टीफिकेट थे और रेन्ज ऑफीसर गोआन साहेब ने भी शिफारिस की थी। लिहाज़ा उसने बे सर-पैर की बातें

इन नातजुर्बेकार शिकारियों से करना शुरू कीं। इनका कैम्प यानी एक छोटा डेरा और एक छोलदारी नौकरों के लिए पानी की नाली के पास करीब ४० कदम मेरे चमेली से ढके हुए गुसुलखाना से दूर लगाया गया और कैम्प लगाकर वह शिकारी के साथ मौका देखने चले गये। काम से वापसी पर जब मैं गुसुल करने गया तो मैंने इनका कैम्प देखा।

दूसरे दिन मैंने काम से वापसी पर सुना कि रात को शिकारियों ने एक पड्डा और एक बकरी बाँधा था, जोकि दोनों मारे गये। बकरी की लाश का पता नहीं लगा, लेकिन पड्डे की लाश थोड़ी दूर पर मिल गयी। पिछली दो टाँगें हस्ब मामूल शेर खा गया है और शिकारी लोग गाँव की एक चारपाई लेकर मचान बाँधने और बैठने दोपहर ही से गये हैं। शाम को अँधेरा होने के बाद वे वापस आये और मेरे कैम्प से गुज़रे। मुलाकात होने पर मैंने पूछा कि क्या हुआ? उन्होंने ऊपर का वाक़या बताया और कहा कि हम लोग वापस आकर खाना खाकर और गाँव से एक चारपाई लेकर गये, तो जाकर देखा कि पड्डे की लाश को शेर वहाँ से और आगे घसीट ले गया और ऐसी झाड़ियों में ले गया, जहाँ कोई मुनासिब दरख्त नज़दीक में मचान के लायक न था। लिहाज़ा वह लाश को एक मचान बाँधने के लायक दरख़्त के सामने घसीट लाये और चारपाई बाँधकर इस पर मय कुत्तेमार शिकारी के तीनों आदमी बैठे, जैसा कि शिकारी ने बतलाया। मगर शेर नहीं आया और आखिर को जब अँधेरा हो गया तब उतर आये।

उन्होंने कहा कि वह सिर्फ ३ योम और ठहरेंगे और अगर शेर नहीं मिलेगा तो कुत्तेमार शिकारी की खाल निकाल कर ले जावेंगे। मैंने शिकारी को इसका तर्जुमा करके समझा दिया। शिकारी ने फौरन जवाब दिया कि अगर मैंने शेर दिलवा दिया तो १००) इनाम लूँगा। इस पर दोनों शिकारियों ने हँसकर कहा कि अच्छा जरूर दूँगा। वे अपने पड़ाव पर यह कहते चले गये कि हम आज दूसरा पड्डा नहीं बाँधेंगे। क्योंकि शेर पूरे पड्डे को आज भी नहीं खा सकता। लिहाज़ा आज शाम को इसी पर फिर बैठने का इरादा है।

दूसरे दिन सुबह इन्होंने जाकर देखा कि शेर लाश को करीब आधा मील और आगे घसीट ले गया और सर, कुछ हिस्सा गर्दन का और टाँगों का और खाल छोड़ गया। उन लोगों ने मचान खोल-कर उस नई जगह पर लाश के पास बाँधा और फिर तीनों एक साथ बैठे। शेर फिर नहीं आया। क्योंकि वह यह सब तमाशे छिपा हुआ दूर से देखता रहता था। शिकारी लोग नाउम्मीद होकर अँधेरा होने पर वापस आये। अब तक उन्होंने एक फैर भी शेर के लालच में किसी पर नहीं चलाई थी। क्योंकि उनसे किसी ने कह रखा था, कि बन्दूक की आवाज सुनने से शेर भड़क जावेगा।

ये लोग टीन की अँग्रेजी गिजा खाते और रात-दिन सख्त मेहनत करते थे। सुबह जाकर फिर देखा तो लाश का कोई हिस्सा बाकी नहीं रह गया था। इसका मतलब यह हुआ कि शेर बराबर इनकी आमदो-रफ्त, तीन आदमियों का मचान में बैठना और फिर वापस जाने से वाकिफ़ रहता था। जब यह उतर कर चले आते थे, तब लाश को और आगे घसीट ले जाता और इतमीनान से दावत खाता था और शिकारियों को बेवकूफ़ बनाता था। हर चालाक शेर ऐसा ही बल्कि इससे भी ज्यादा चालाकी करता है। सब शिकारी रात-दिन की मेहनत से बहुत थक गये थे और नींद से भी बेचैन थे, जैसा कि उन्होंने बयान किया; जब कि मैं काम से वापसी पर अपने चमेली से ढके हुए गुसुलखाने को नहाने के लिए गया। इन दोनों अँग्रेजों ने तीन दिन से न हजामत बनाई थी, न गुसुल ही किया था और न जरूरी आराम करने तक को वक्त ही मिला था। उन्होंने कहा कि शेर बहुत चालाक है और पूरी तरह से मालूम करता रहता है, कि हम क्या कर रहे हैं और हमको बड़ी काबिलियत से धोखा दिया है। मैंने कहा कि आप तालीमयाफ्ता इन्सान हैं, और वह बे तालीमयाफ्ता जानवर है। अब सवाल यह है कि धोखा देने में कौन ज्यादा काबिल है। वह हँसे और पूछा कि क्या करना चाहिए। मैंने कहा कि मैं बिलकुल नातजुर्बेकार हूँ और शिकारी हमसे ज्यादा बेवकूफ़ मगर बातूनी ज्यादा है।

मैंने कहा कि इतनी मेहनत व परेशानी बेकार है। हजामत बनाइये मेरे गुसुलखाने में गुसुल कीजिए, और कपड़े बदलिए, खाना खाकर खूब सो जाइए। शाम को एक चीतल मारिए, सब को बाँटिये और खुद भी खाइये; बजाय टीन की विलायती गिजा के। फिर इतमीनान से खाना खाकर किसी मुनासिब जगह मचान बाँधकर सिर्फ आप ही दोनों बैठिए। सामने जिन्दा बकरी या पड्डा बाँधकर रात भर बारी-बारी एक आदमी सोये और दूसरा देखता रहे। किसी-न-किसी वक्त शेर या गुलदार जरूर पानी पर आवेगा। जब वह मारने लगे या खाने लगे तो दोनों आदमी एक साथ गोली चलाकर आप उसको मार डालिए। कुछ देर सोचने के बाद वह यह कहते हुए उठे कि अच्छा मालूम तो ठीक होता है। तब मैं अपने गुसुलखाने में नहाने चला गया और वापस आकर खाना खाकर पीपल के दरख़्त के नीचे हवा में सो रहा। करीब शाम के वक्त दोनों साहेब नहाये-धोये, साफ़ कपड़े पहने हुए मय कुत्तेमार शिकारी, दो कुली और एक चारपाई के आये, और कहने लगे कि बताओ कहाँ मचान बाँधें। मैंने कहा कि ज़्यादातर तो पैरों के निशान पानी की नाली के मेढ़े के पास नाले में दिखाई देते हैं और उसके बाद खेतों के दक्षिण इस छोटे तालाब में नज़दीक ही दिखलाई देते हैं। जहाँ पानी की नाली ख़त्म होती है, बेहतर है, लाइट्री डाल लीजिए। जहाँ की लाइट्री निकले वहाँ मचान बाँधिए। लाइट्री में नजदीक वाला तालाब निकला और ये सब लोग वहाँ चले गये और एक दरख्त पर नाले के किनारे मचान बाँधकर और उस पर मच्छरदानी लगा कर वापस आये और कहा कि अब खाना खाकर बैठेंगे।

करीब आठ बजे वह मय बकरी के फिर गये और बकरी को खुले हुए नाले में बाँधकर मचान पर बैठ गये। क़रीब दस बजे रात तक बकरी की आवाज़ हमको भी सुनाई देती रही। जब कि चाँद निकल रहा था, हम लोग भी सो गये और कोई बन्दूक का फैर रात में नहीं सुनायी दिया। दूसरे दिन काम से वापस आकर जब मैं

नाली पर गुसुल करने गया तो मैंने पूछा कि क्या हुआ? उन्होंने कहा कि आधी रात तक हम लोग जागते रहे, कुछ नहीं आया और जब चाँदनी खूब फैल गयी तो हमने तय किया कि अब बारीवार जागें। लेकिन ऐसा मालूम होता है कि हम दोनों सो गये और सुबह देखा तो बकरी गायब थी। न कोई खून का और न घसीटने का निशान था। लेकिन रस्सी टूटी हुई थी। खुली हुई नहीं थीं। मैंने पूछा कि क्या बकरी रस्सी को तोड़ सकती थी। उन्होंने जवाब दिया, हरगिज़ नहीं। तब मैंने कहा कि फिर यह भी यकीन के काबिल है कि बकरी को शेर या गुलदार ले गया। जैसे कि बिल्ली चूहे को मुँह में दबाकर ले जाती है, बगैर जगह पर मारे हुए। उन्होंने कहा कि अब आज क्या करें? हमारे पास सिर्फ एक पड्डा और एक रात व एक दिन और रह गया है और हम थककर नाउम्मीद हो गये हैं। मैंने कुत्तेमार शिकारी से पूछा कि आज क्या करना चाहिए। उसने भी कोई माकूल राय नहीं दी। मैंने कहा कि अब शाम तक आप लोग खूब सो लीजिए और शाम को पड्डा, मचान लेकर पानीवाले नाले के किनारे पुश्ते के बाद किसी दरख़्त में मचान बाँधकर और पड्डे को खुले हुए जगह पर नाले में बाँधकर बारीवार रात भर बैठिए और किस्मत आजमाई कीजिए। उन्होंने नाउम्मीदी से कहा कि यह ही शायद बेहतर मालूम होता है, क्योंकि हमारे पास वक्त भी नहीं है।

उन्होंने ऐसा ही किया और मचान में अँधेरे से पहले बैठ गये। दूसरे दिन मुलाकात होने पर उन्होंने बतलाया कि आधी रात तक कोई जानवर नहीं आया। बजुज चीतलों और साबरों के जिन्होंने पानी पिया और पड्डे को देखकर सबने खतरे की आवाज़ें दीं। चन्द ने पड्डे के बहुत नज़दीक आकर उसको ग़ौर से देखा। चाँदनी काफी साफ थी मगर हम रोज की तरह मायूस होकर लेट गये और पैर फैलाये जोकि दर्द करने लगे थे। थोड़ी देर में नींद आ गई। कुछ देर के बाद हमको शेरों की गुर्राहट और बजरी में घसीटने की आवाज सुनाई दी। हम उठ बैठे। लेकिन बावजूद पत्थरों और घास

के कुछ नज़र न आया। वह पड्डे को बड़े पत्थरों में से होकर पहाड़ और जंगल की तरफ ले गये। हम सिर्फ उनकी गुर्राहट, हड्डियों का तोड़ना और अक्सर कुत्तों की तरह जोर से लड़ने की आवाज़ करीब एक घण्टे के सुनते रहे। तब ऐसा मालूम हुआ कि वह नाले की तरफ पानी पीने गये। कुछ देर जानवरों के पीछे दौड़ते रहे और फिर खामोशी हो गई। हमने खूब तमाशा देखा और तरह-तरह की आवाजें सुनीं, लेकिन बदकिस्मती से मार न सके और करीब तीन बजे के नाउम्मीद होकर सो गये।

सूरज निकलते वक्त लाश की तरफ शेरों की गुर्राहट से हमारी आँखें फिर खुलीं और खाने और हड्डी तोड़ने की आवाज फिर मालूम हुई। हम उठकर बैठ गये। और रायफलों को संभाल लिया। इस उम्मीद पर कि शायद कहीं नजर पड़ें, तो वह हमसे ५० से ७५ कदम पर उत्तर की तरफ थे। मगर दिखाई नहीं देते थे। थोड़ी देर के बाद फिर खामोशी हो गई। हमारा कुत्तेमार शिकारी करीब १०० कदम पर दक्षिण की तरफ सीटी दे रहा था, कि इतने ही में दो शेर आगे-पीछे उत्तर की तरफ से दक्षिण की तरफ हमारे सामने से करीब ४० कदम पर पानी की तरफ जाते हुए नजर आये। हम दोनों ने फायर किये। मैं उत्तर की तरफ बैठा हुआ था। लिहाजा मैंने पीछे वाले शेर को गिराया, जिसकी बगल में गोली पड़ी और मेरे दोस्त ने आगे वाले शेर पर गोली चलाई। जिसने पिछले पैर फेंके और बोलता हुआ दक्षिण की तरफ जिधर शिकारी था उधर चला गया। शिकारी और कुली हमारे फैर सुनते ही एक बड़े पत्थर पर चढ़ गये। जब यह जख्मी शेर उनसे करीब १५ कदम पर निकला तो शिकारी ने दोनों गर्राब के कारतूस १२ बोर बन्दूक से दाग दिये, जो कि मैंने उसको दे रखे थे। हमने देखा कि तीसरा शेर उनसे कुछ बड़ा भागता हुआ उत्तर की तरफ नाले में गया। हमने शिकारी को आवाज दी, मगर वह नहीं आया, और जवाब दिया, कि उसने एक शेर मार लिया है। हमने कहा कि हमने भी एक शेर मारा

है। हम दोनों अपनी बेउम्मीद कामयाबी पर बहुत खुश हुए कि सब मेहनत और खर्चा वसूल हो गया, हमने दोनों शेरों की खालें नहीं निकालीं और अभी बड़ी मुश्किल से कुली और शिकारी पर लादकर लाये हैं, क्योंकि इन दोनों का पड़ाव तक पहुँचना बहुत मुश्किल था। मैंने उनकी नाप दरियाफ्त की, मगर फीता नहीं ले गये थे। खालों की नाप ८-९ फुट के अन्दर थी। वह दोनों बच्चे थे; जिनके दूध के दाँत गिर कर असली बड़े दाँत निकल रहे थे और माँ उनको अब शिकार मारना सिखलाने के लिए बाहर ले जाने लगी थी। कुत्ते-मार शिकारी को २००) का चेक नैनीताल बैङ्क पर दिया गया और दोनों साहबान दूसरे दिन सुबह नैनीताल को बगैर एक फैर भी और किसी चीज पर दागे हुए रवाना हो गये।

६. मेरी दूसरी मुलाकात ५ शेरों से

वक्त गुजरता गया। रोज सुबह से १ बजे दिन तक काम में गुजरता था और दोपहर को ३-४ घंटे आराम करने के बाद रोज शाम को डिप्टी रेन्जर, फारेस्ट गॉर्ड और धाँगड़िया को साथ लेकर घूमने जाते। मेरा निशाना इस छोटे रायफल से खूब सही होता गया, यहाँ तक कि मैं फाख्ताओं के सिर्फ सर में गोली मारता था और सत्तर फ़ीसदी तक क़ामयाबी हो जाती थी। किसी-किसी दिन मुर्गी नहीं मिलती थी तो फाख्ताओं ही पर गुजर होती थी। आधा मई गुजर गया, और नाली में पानी भी आधे से कम आने लगा। गर्मी बहुत सख्त पड़ने लगी। शेर और गुलदार के पैरों के निशानात पानी के आस-पास और ज्यादा दिखलाई देने लगे। शाम को रोजमर्रा जानवरों के ख़तरे की आवाज सुनाई देती और इसके बाद २-३-४ तक शेर चारों तरफ से जवाब देते। मैं शाम का खाना शेर की आवाज़ सुनने के बाद खाता था और उनको ग्रामोफोन कहता था।

पानी की कमी की वजह से एक खानदान ५ शेरों का कहीं से वहाँ आ गया और हम उनके पैरों के निशानात साथ-साथ सड़कों और नालों में अकसर देखते, जिनमें २ पूरे कद के और ३ पट्ठे मालूम होते थे। मैं रोज दोपहर को काम से बगैर छाते या टोप के २-२½ मील मई की धूप में आते ही ठंडे पानी के हौज में दस-पन्द्रह मिनट लेटता था। या तो इसकी वजह से या मच्छड़ों की वजह से जुकाम, खाँसी और मलेरिया बुखार से २-३ दिन बहुत परेशान रहा और एक खत में पिताजी को इसकी बाबत कुछ इशारा दे दिया, जिन्होंने हाल ही में डाक्टरी से पेन्शन ली थी। मैं चार-पाँच दिन में अच्छा होकर फिर काम पर जाने लगा। एक दिन काम से वापसी पर मैंने देखा कि पिताजी चारपाई पर सो रहे हैं। मुझे बड़ा ताज्जुब और अफसोस हुआ कि मैंने बिला वजह लिखकर इनको इस गर्मी में जंगल में आने की बुढ़ापे में तकलीफ दी और खास कर हल्द्वानी से १२ मील का रास्ता चौसला मेरे पड़ाव तक आने में किराये के टट्टू पर तो बहुत ही तकलीफ हुई होगी। मैंने ख़ामोशी से गरम पानी से डेरे के गुसुलखाने में गुसुल किया और जब बाहर निकला तो वह मुझे देखकर बहुत खुश हुए। हमने खाना खाया और शाम को डिप्टी रेन्जर और फॉरेस्ट गॉर्ड भी हस्ब मामूल आकर बैठ गये, और बातें करते रहे। मैंने कहा कि आज एक मुर्गी जरूर मारना है। उन्होंने कहा तो फिर चलिए अपनी पोल्टरी फारम से एक मुर्गी ले आवें यानी तालाब से जो कि करीब एक फर्लाङ्ग के था। मैं खाकी नेकर, सफ़ेद कमीज़ और सिलीपट पहने बैठा था। वैसे ही रायफल लेकर चल दिया। तालाब के किनारे गीली मिट्टी में हमने शेरों के पैरों के निशान और दिन से बहुत ज्यादा देखे। मैंने कहा कि आज रात में यहाँ शेरों का पूरा खानदान आ गया। डिप्टी रेन्जर और फॉरेस्ट गॉर्ड ने देखते ही कहा कि यह वह ही खानदान मालूम होता है, जिनके पैरों के निशान हम रोज़ सुबह काम पर जाते हुए देखते हैं। मैं एक पत्थर की आड़ में तालाब के उत्तरी किनारे से

करीब पन्द्रह फीट पर बैठ गया और वे लोग मेरे दाहिने बेर की झाड़ी में ३-४ कदम पीछे बैठ गये।

तालाब में भी पानी करीब आधे के सूख गया था और मुश्किल से २०-२५ फीट लम्बा-चौड़ा रह गया था। थोड़ी देर के बाद चन्द मुर्गियाँ और एक सुर्ख मुर्गा पानी पीने आये। गो नर का गोश्त सख़्त और खाने में अच्छा नहीं होता है, मगर चूँकि बहुत खूबसूरत होता है, मैंने पिताजी को दिखलाने की गरज से उसको मारा। बाकी सब मुर्गियाँ उड़ गईं। मैंने मुर्गे को धाँगड़िया के हाथ बावर्चीखाने में भेजा कि शाम के लिए पकावे। बन्दूक दागने के बाद कम-से-कम १५ मिनट के बाद दूसरी टोली मुर्गियों की आने की उम्मीद की जा सकती थी। मगर चन्द ही मिनट के अन्दर एक बहुत खूबसूरत नीली फाख्ता, जिसके पैर और चोंच बिलकुल सुर्ख होते हैं, उड़कर आई और पानी पीने लगी। यह सिर्फ हिमालिया की तराई में पाई जाती है और बहुत चालाक होती है। मैं इसके मारने की फिकर में अरसा से था, मगर मौका नहीं मिलता था। लिहाज़ा मैंने उसके ऊपर फैर किया, उसका एक बाजू टूट गया और कुछ सीना भी जख़्मी हो गया। यह वहीं पड़ी हुई अपना दूसरा बाज़ू फटफटा रही थी। मैंने उसको वहीं पड़ा रहने दिया, इस उम्मीद पर कि उसके उठाने में आती हुई मुर्गियाँ आदमी को देखकर भड़क जावेंगी। थोड़ी देर में तालाब के दक्खिनी किनारे सामने की झाड़ियाँ, एक के बाद दूसरी हिलना शुरू हुईं। मैंने ख़्याल किया कि काँकड़ा आ रहा है, लिहाज़ा बजाय छोटे कारतूस के बड़ा कारतूस लगाकर हिलती हुई झाड़ियों की तरफ देखा तो एक शेर का सर झाड़ी से निकला हुआ मेरी तरफ बहुत गौर से मुझे देख रहा था। मेरा आधा जिस्म सफेद कमीज़ की वजह से पत्थर के ऊपर काफी चमक रहा था, लिहाज़ा मैंने पत्थर के पीछे झुकना शुरू किया। उसी वक्त नीली फाख्ता ने पर को फटफटाया और शेर ने उसको गौर से देखा। शेर झाड़ी से आधे से ज़्यादा निकल आया। डिप्टी रेन्जर जो कि मेरे एक गज पीछे बैठे थे मेरी यह हालत देखकर आहिस्ता

से पूछा कि क्या है। शेर ने फिर हमारी तरफ बहुत गौर से देखा और मैं और झुकने लगा। डिप्टी रेन्जर और फारेस्ट गॉर्ड ने मेरी यह नयी हरकत देखकर थोड़ा उठकर देखा कि क्या है और एक बड़े नर शेर को मुश्किल से ३० व ३५ फीट पर खुले में देखकर मेरी तरह से झाड़ी में गोता लगाया। मैं भी दम साधे हुए दिल धड़कता हुआ ख्वाब की तरह देख रहा था, कि फाख्ता ने फिर बड़े जोर से पर फटफटाया और उछली। अब शेर झाड़ी से पूरा निकल आया और फाख्ता की तरफ बढ़कर उसको सूँघा और इतमीनान से बैठ गया। उसने अपने पंजे से फाख्ता के करीब बगैर उसको छुए हुए बजरी खुरचना शुरू की और करीब एक फुट गहरा गढ़ा कर लिया, जिसमें पानी निकल आया। उसने हमारी मौजूदगी की बिलकुल परवा नहीं की, जो कि उसने खूब देख लिया था। वह अब फाख्ता के बार - बार पर फटफटाने में मदू था। मैंने अपनी तरफ से उसकी लापरवाही देखकर डिप्टी रेन्जर की तरफ देखा। वह हँस रहे थे और आहिस्ता से कहा कि यह तमाशा राजा-महाराजों को भी इतने नज़दीक से जमीन पर शेर देखने को नसीब नहीं होता है। खूब देख लो, मेरा डर भी कम हो गया और मैं रायफल को इतमीनान से उसकी आँख पर ताकने लगा। डिप्टी रेंजर ने कहा कि यह अपना खिलौना रायफल कहीं दाग न देना। मैंने कहा कि नहीं। अगर जरा और ताकतवर रायफल होता तो खोपड़ी यकीनी उड़ा देता। गो रेंजरों को सरकारी जंगल में शिकार खेलने की इजाजत नहीं है, सिर्फ गजटेड अफसरान को है। करीब दस-पंद्रह मिनट के हमने यह तमाशा देखा होगा कि शेर के पीछे फिर झाड़ियाँ हिलीं और तीन बच्चे गुलदार की बराबर और उनकी माँ और निकल आये। अब जितनी जगह झाड़ियों और पानी के दरम्यान खाली थी, उसमें शेर ही शेर खुले हुए इस कदर नजदीक करीब-करीब बराबर ही की जमीन पर नजर आने लगे। थोड़ी देर के लिए मेरा दिल व दिमाग़ चक्कर खा गया और समझता था कि ख्वाब देख रहा हूँ। मेरी सफेद कमीज़ पर उन सब की आँखें लगी हुई थीं। मैं पत्थर के नीचे

और सिकुड़ता चला जाता था कि इतने में नीली फाख्ता ने फिर उछलना-कूदना शुरू किया और सब उसकी तरफ मुतवजेह हुए; मगर एक पट्ठे ने आहिस्ता-आहिस्ता मेरी तरफ़ पत्थरों में छिपता हुआ आना शुरू किया। मैंने घबराकर कहा कि मैं भागता हूँ, क्योंकि मुझे अपने दौड़ने पर फख़र था कि हमेशा लंबी दौड़ों में इनाम लेता रहा था और फारेस्ट कालेज देहरादून में पिछले ही साल १४ मील की दौड़ में फस्ट आया था; मगर फारेस्ट गार्ड ने मना किया और फौरन खड़े होकर उसने एक पत्थर पानी में जोर से फेंका; जिससे पानी उछलकर शेरों तक गया और खूब शोर मचाया। इसमें हम लोग भी शामिल हो गये और सब शेर दुम दबाये हुए कुत्तों की तरह जिधर से आये थे भागे चले गये। फॉरेस्ट गॉर्ड ने फाख्ता को जाकर उठाया और कहने लगा कि सब तमाशा तूने ही दिखाया है। फॉरेस्ट गॉर्ड ने कहा कि सब शेरों के पेट खूब भरे हुए थे और अगले पैर और मुँह में खून लगा हुआ था। मक्खियाँ उनके साथ बहुत आई हुई थीं। उन्होंने कोई जानवर जरूर मारा है। हम थोड़ी दूर नाले में बोलते और खाँसते हुए गये, तो दक्खिन के जंगल में कौए बोल रहे थे और अपनी कौम के लोगों को दावत दे रहे थे। वहाँ गये तो देखा कि मादीन साँभर ताजा मारा हुआ और आधा खाया हुआ पड़ा है। यह वह जगह थी कि जहाँ से एक महीना पहले एक रोज चीतल उठकर भागे थे और मैं नाले में गिर पड़ा था। उसी रोज पहली मुर्गी मछली के काँटे में धाँगड़िया ने पकड़ी थी। हम पड़ाव में लौटकर आये और अपने कुलियों को बतलाया, जो कि बाकी पूरा साँभर उठा लाये और खूब खाया। मैंने डिप्टी रेंजर व फारेस्ट गार्ड से कहा कि शेरों की बाबत मेरे पिताजी से कोई जिक्र न करें, क्योंकि उनको बिला वजह की फिकर होगी और मेरे लिए तो ऐसे मौके ख़ास दिलचस्पी और लुत्फ का बाअिस होते थे। उसी रात को मैं और पिताजी अपने छोटे डेरे के सामने सड़क से ३ व ४ कदम पर सोये। सुबह होते ही मैं रोज की तरह तैयार हुआ और नाश्ता करके काम को रवाना

हुआ। उस रोज देर हो गयी थी और दिन निकल आया था। जैसे ही हम सड़क पर चलने लगे, मेरे मेट ने सड़क पर शेर के पैर के निशान चारपाई के करीब ही दिखलाये, जो कि रात को पानी की नाली की तरफ गया था। उस दिन तक शेर के पैर हमारे डेरे के सामने सड़क पर नहीं दिखलाई दिये थे, वह हमारे कैम्प के पचास कदम तक दोनों तरफ़ नहीं आते थे। जब हम लोग सड़क पर देख रहे थे तो मेरे पिताजी ने भी आकर देखा और परेशान होकर कहने लगे कि तुम यहाँ अकेले रोज सोते हो और सब कुली उतनी दूर डेरे के पीछे सोते हैं। उस दरम्यान में डिप्टी रेंजर व फॉरेस्ट गॉड भी आ गये और शेर के पैरों के निशान चारपाई से दस कदम के अंदर देखकर कहने लगे कि आज से आप हमारी दोमंजिली चौकी पर सोया कीजिए। मुझे मातहतान के साथ सोना पसंद न था। खैर काम पर चले गये और मेरा बावर्ची, जो कि पहले का हम मुलाजिम था और जिसने रात को डिप्टी रेंजर व फॉरेस्ट गॉर्ड से उसी रोज के ५ शेरों का किस्सा सुना था, वह सब और अपनी तरफ से बढ़ाकर सुना दिया। काम से वापस आकर जब हम खाना खा रहे थे, पिताजी ने कहा कि मुझे तुम्हारी जंगल की नौकरी जहाँ बियावान जंगल और चारों तरफ शेर और जंगली जानवर हों, बिलकुल पसन्द नहीं है। मैंने कहा—यह स्पेशल ड्यूटी साल-दो-साल की है। जब रेंज का चार्ज मिलेगा तब उम्दा कार्टर मिलेगा। मेरा अपना अमला और हलका होगा। इसके लिए तो मैंने और नौकरियाँ नहीं की और बड़ी मेहनत व मुसीबत से यह रेंजरी हासिल की है। मुझे यह जिंदगी बहुत पसन्द है और ये जंगली जानवर किसी को नुकसान भी नहीं पहुँचाते हैं। हाँ, जब कोई इनको छेड़े या माँ छोटे बच्चों के साथ हो तो जरूर नुक्सान पहुँचाते हैं।

शाम को मैंने दो मुर्गियाँ और करीब एक दर्जन के फाख्ता मारी और बाँटी। उस रात को सोने के लिए बड़े-बड़े इंतजाम मेरे

पिताजी ने औलाद की कुदरती मुहब्बत की वजह से किये। हमारी चारपाइयों के सामने सड़क पर लकड़ी और कंडों का ढेर लगा कर आग जलाई गई। धाँगड़िया अपनी तेज़ कुल्हाड़ी और खाली टीन का पीपा लेकर सड़क और हमारी चारपाइयों के दरमियान में सोया, ताकि अगर कोई जानवर आवे, तो पीपा बजा कर भगा दे। रात अच्छी तरह गुज़र गई और मेरे पिताजी बहुत कुछ हिदायतें करके सुबह चले गये।

दूसरी रात को करीब दो टोकरी के सूखा हुआ जानवरों का गोबर, जिसको कंडे कहते हैं, धाँगड़िया ने बमौजिब वालिद साहब की हिदायत के चारपाई के सामने सड़क पर जलाया और वह खुद मेरी चारपाई के पास जमीन पर अपनी कुल्हाड़ी और पीपा लेकर सोया, जिसके लिए उसको पिताजी एक रुपया भी दे गये थे। हम अभी जाग ही रहे थे कि धाँगड़िया एकदम से कूद पड़ा और कहा कि एक साँप मेरे पैर के ऊपर से गुज़र गया। मैंने लालटेन तेज़ की तो देखा कि एक साँप उसके बिस्तर से थोड़ी दूर पर जा रहा है। मैं लालटेन लेकर उसके पास देखने को गया कि कौन किस्म का साँप है। मेरे नज़दीक पहुँचने पर वह सिमिट कर बैठ गया। मैंने देखा कि वह गड़ाड़ जिसको अंग्रेजी में क्रेट कहते हैं, ज़हरीले किस्म का साँप है। जब मैंने छड़ी से उसको छुआ, तो उसने काटने के लिये उस पर मुँह मारा और चलता हुआ। मैं पूरे सिलीपर पहने हुए था और जैसे ही दाहना पैर मैंने उसके जिस्म पर रक्खा, वह फ़ौरन मुड़ा। मैंने भी तेज़ी से दूसरा पैर उसकी गरदन के पास रख कर दबा लिया और सर के पास गरदन पकड़ कर उठा लिया। वह मेरे हाथ में अपनी पूरी ताकत से लिपट गया। अब मैंने डिप्टी रेंजर को और फ़ॉरेस्ट गॉर्ड को आवाज़ दी कि आओ तमाशा देखो। डिप्टी रेंजर अपना छोटा पीतल का हुक्का मुँह से लगाये हुए आये। मैंने एक सींक उठा कर उनके हुक्के में से जहाँ पर चिलम रक्खी जाती है, तम्बाकू का कीट जिस को अंग्रेजी में निकोटीन कहते हैं, लगा कर साँप के मुँह के

अंदर अच्छी तरह लगा दिया। साँप ने बेचैन होकर अपनी लपेट मेरे हाथ से छुड़ाना शुरू की और मैंने साँप को जोर से जमीन पर फेंक दिया। वह मुश्किल से एक गज़ दौडा और फिर आहिस्ता होकर पीठ के भल लोट कर फौरन मर गया। वह चन्द मिनट के अंदर ही सख्त हो गया। मैंने कहा कि यह भी साँप के काटे की बहुत कारगर दवा है। क्योंकि मैंने बचपन में देखा था, कि पिताजी मटर के बराबर निकोटीन हुक्का से लेकर साँप के काटे हुए ज़ख्म को खूब पानी से धोकर लगाते थे और मटर से दुगनी मिकदार पानी में घोल कर मरीज़ को पिला देते थे, तो ज़्यादातर बच जाता था। बाद को हम इस रात अच्छी तरह इतमीनान से सोये, मगर शेर बावजूद आग जलने के सड़क के दूसरे किनारे के पास से निकल गया। शाम को डिप्टी रेंजर ने हमारी चारपाई से करीब ५० कदम सड़क के दोनों तरफ़ रस्सी बाँध कर सफेद कपड़े लटकवा दिये और धाँगड़िया से कह दिया कि रोज़ शाम को इसी तरह कर दिया करे। उस दिन से शेर की हिम्मत इस कपड़े की रोक को गुज़रने की न पड़ी।

७. मेरा दूसरा चीत साँप

मई के आखीर में एक दिन मैं शाम को टहलने जाने वाला था कि एक ग्वाला दौड़ता हुआ आया, कि मेरी एक गाय को चीत साँप ने जिसको अंग्रेजी में पाईथन कहते हैं, पकड़ कर जकड़ दिया है, उसको चलकर मार दीजिए। मैं उसके साथ हो लिया। कोई डेढ़ मील जाने के बाद वह मुझको पहाड़ के ढाल पर ले गया। एक जगह काफ़ी सब्ज़ घास, थोड़ा-सा पानी जिसमें जानवर लोटे थे और उसके ऊपर से थोड़ा-थोड़ा पानी पहाड़ से निकल रहा था, उसके पास एक सफ़ेद रंग की तन्दुरुस्त गाय को चारों तरफ से चीत साँप ने इस क़दर जोर से लपेट रखा था, कि उसके पेट से बच्चा निकल पड़ा

था और नाक, कान और मुँह से खून निकल रहा था। मालूम होता था कि हाथ, पैर और पसलियाँ सब कसकर तोड़ दी हैं और साँप ने तरह-तरह के लपेट और बल दे रखे थे। जब हम पहुँचे तो वह हमारी तरफ मुँह मोड़कर देखने लगा। मैंने दरयाफ्त किया कि इसने किस तरह से इतनी बड़ी गाय को पकड़ा। चरवाहे ने कहा कि मैं तो यहाँ से थोड़ी दूर पर एक पेड़ के नीचे सो रहा था। गायें यहाँ चर रही थीं। मैंने सुना कि एक गाय बुरी तरह से चिल्लाने लगी और बाकी सब गायें उसकी हमदर्दी में चारों तरफ़ से घेरे हुए खड़ी थीं। मैंने समझा कि एक गाय को शेर या गुलदार ने पकड़ लिया है और शोर मचाता हुआ डर के मारे आहिस्ता-आहिस्ता जब नज़दीक गया तो देखा कि एक गाय जमीन पर पड़ी हुई हाथ-पैर मार रही थी। वह बुरी तरह से घर्राटे से साँस ले रही थी और पहाड़ के ढाल पर थोड़ा-थोड़ा नीचे लुढ़क रही थी। चीत साँप ने उसको चारों तरफ से खूब ज़ोर से कसकर लपेट रखा था। मैंने पत्थर मारे, शोर मचाया, मगर साँप ने नहीं छोड़ा और ऐसा मालूम होने लगा कि गाय करीब-करीब मर गई है, सिर्फ नाक से खून के झाग निकल रहे थे। तब मैं आपके पास गया। मैंने कहा, अब तुम्हारी गाय तो मर ही गई है। लोग कहते हैं कि चीत साँप के मारने से मुसीबत आती है, लिहाज़ा आग जला कर जलती हुई लकड़ी से इस को खूब दाग दें, ताकि उमर भर याद रखे और फिर कभी यह गाय को न मारे। लिहाज़ा आग जलाई गयी और जलती हुई लकड़ी से मैंने उसको खूब अच्छी तरह कई जगह दागना शुरू किया। साँप ने भी फौरन अपनी जकड़ को खोलना शुरू किया और जल्द गाय को छोड़कर भागा। मेरे ख़्याल में वह साँप गो काफ़ी बड़ा और मोटा था, मगर उस गाय को निगलने के काबिल न था। मेरी समझ में नहीं आया कि फिर उसने इतने बड़े जानवर को बिला वजेह क्यों मार डाला। चीत साँप सिर्फ़ निगलता है, जानवर को काट कर नहीं खाता है। ग्वाला कह रहा था कि वह गाय को निगल जाता और

इसी जगह पर हफ्तों बल्कि महीना भर तक हजम करने को पड़ा रहता।

६ जून को आखिर काम बड़ी मेहनत के बाद खत्म हुआ और हम सबने चौंसला कैम्प को छोड़ा; जहाँ दो महीने बड़े तमाशे और दिल हिलनेवाले वाकियात देखे और जंगली जानवरों का बहुत तजुरबा हासिल किया। गो अब ४० बरस से ज्यादा हो गये हैं, मगर अब भी ख़्याल करते हुए दिल धड़कने लगता है।

जानवरों की बोलियाँ और उनकी आदतों से काफ़ी जानकारी हो गई, जोकि एक ऐसे शिकारी के लिए जो अपने शिकार का बन्दोबस्त बखुद ही करता हो, निहायत जरूरी और कार आमद हैं।

---

८. मेरा पहला साझे का गुलदार

करीब डेढ़ साल के बाद मेरा तबादला हल्द्वानी से रामनगर (यू० पी०) फॉरेस्ट ट्रेनिंग स्कूल को बतौर असिस्टेंट इन्स्ट्रक्टर के हो गया। रायबहादुर मथुराप्रसाद भोला एक्स्ट्रा असिस्टेंट कंसरवेटर स्कूल के प्रिंसिपल थे। हम लोग हर साल ८ महीना तराई और पहाड़ के ६ व ७ फारेस्ट डिवीजनों में करीब ४५ विद्यार्थियों के और इसी कदर नौकर, अरदली, खलासी, डाकवाले, मेहतर, धोबी वगैरह के ३५ ऊँटों के ऊपर सामान लिये हुए दौरा करते थे और जहाँ पहुँचते थे, करीब ५०-६० डेरे छोलदारियाँ और लेक्चर का बहुत बड़ा डेरा लग जाता था। जंगल में मिस्ल एक गाँव के आबाद हो जाता था। मुझे यह काम और जिन्दगी और भी ज्यादा पसंद आई, कि हर हफ्ते नये जंगल, नये काम और नये शिकार के मौके सूबा भर में देखने को मिलते थे। पड़ाव से पड़ाव हम विद्यार्थियों को काम दिखलाते हुए पैदल चलते थे और बमुकाबला और अपने साथी अफ़सरान के बहुत बड़ा मौका तजुरबा हासिल करने का मिलता था।

हम फरवरी सन् १९१२ ई० में मुकाम महोफ़ पीलीभीत डिवीजन

तराई के जङ्गल में पहुँचे। बँगला में मिस्टर गुलाबराय डिवीज़नल फारेस्ट अफसर ठहरे हुए थे। उन्होंने हमारे पहुँचते ही शाम की चाय पर हमको बुलाया। हमारे ऊँट और सामान हमसे पहले पहुँचकर डेरे वगैरह सब लग चुके थे। मिस्टर भोला बँगला के आधे हिस्से में ठहरे। मैं अपने डेरे में चला गया और मुँह हाथ-धोकर चाय पीने के लिए चला गया। हम तीनों कमरे में चाय पी रहे थे कि बँगला के दक्खिन तरफ आहाता के नजदीक दो गुलदारों ने एक दूसरे से करीब दो फर्लाङ्ग के फासले पर जंगल में बोलना शुरू किया। मिस्टर गुलाबराय ने रेंज अफसर को बुलाकर कहा—दोनों जगह जहाँ गुलदार बोल रहे हैं मचान बँधवा दो और दो बकरियाँ भी गाँव से मँगाकर इत्तला दो और हाथीवाले से कह दो कि हाथी तैयार करके लावे। आधे घंटे के अन्दर हुक्म की तामील हो गयी। एक मचान चौराहे पर बँगला से करीब दो फर्लाङ्ग पूरब तरफ और दूसरा मचान बँगला से एक फर्लाङ्ग दक्खिन तरफ नौकरों के कार्टर के नजदीक बँधवा दिया गया। मिस्टर गुलाबराय चौराहेवाले मचान पर चले गये, जो कि मौका अच्छा था और कह गये कि मैं फौरन हाथी वापस भेजूँगा। आप लोग दूसरे मचान पर चले जाइयेगा। मिस्टर भोला को यह नागवार हुआ कि बँगला के नजदीक वाली जगह उनको दी, जहाँ कैम्प का शोर हो रहा था और उम्मीद कामयाबी की कम थी। हाथी जब वापस आया तो वक्त भी कम रह गया था। मिस्टर भोला ने जाने से इनकार किया। मैंने कहा—हमारा हर्ज ही क्या है, न मिलेगा वापस चले आयेंगे। हम लोग मचान पर मुश्किल से १५ मिनट बैठे होंगे कि दूसरे मचान पर से एक के बाद दूसरा चार फैर हुए। हमने ख्याल किया कि शायद दोनों गुलदार मार लिये। हम दोनों मचान से उतरकर बकरी को लेकर मिस्टर गुलाबराय के मचान की तरफ चौराहे पर पहुँचे तो देखा कि मिस्टर गुलाबराय, उनका अरदली और उनका कुत्तेमार शिकारी बन्दूकें लिये हुए जमीन पर खून के निशानात देख रहे हैं। इतने में हाथी भी आ गया। हम

तीनों आदमी हाथी पर बैठकर गुलदार को तलाश करने जंगल की तरफ चले। मैं हाथी की दुम के पास ढालदार गद्दी पर रस्सा पकड़े हुए मुश्किल से बैठा था, ताकि फिसल कर गिर न पड़ूँ।

हम लोग करीब २५ ही कदम गये होंगे कि मैंने देखा कि गुलदार एक पेड़ की जड़ के सहारे आँखें बन्द किये हुए आखिरी साँस ले रहा है और तमाम जिस्म खून से भरा हुआ है। मैंने इशारा किया, मगर चूँकि उनके सामने पेड़ की घनी साखें थीं, वह न देख सके और मुझसे कहा फि अगर दिखाई देता है तो फ़ायर करो। मैंने रस्सा छोड़ कर १२ बोर की गोली दागी। मैं फिसल कर जमीन पर आ गया और फौरन ही भागकर मैदान में चौराहे पर खड़ा हुआ। इतने में दो फैर और हुए। जब गुलदार को उठाकर चौराहे में लाये, तो देखा कि यह मादीन थी और खाल के चिथड़े उड़ गये थे; क्योंकि कई फैर नज़दीक से गर्राब के दागे गये थे। दूसरे गुलदार ने बोलना बन्द कर दिया था। मिस्टर गुलाबराय ने पूछा कि आप लोग अपने मचान पर बैठेंगे या मैं जाऊँ? मैंने कहा—नहीं जनाब हम जाते हैं। मिस्टर भोला को कह सुनकर ले गया। हम लोग आधे घंटे से कम बैठे होंगे, बकरी सामने बेर की झाड़ियों में बँधी खूब बोल रही थी। हमने देखा कि पहलेवाले से बहुत बड़ा गुलदार झाड़ियों की आड़ लेता हुआ बकरी की तरफ आ रहा है। जब बकरी से करीब १५ फीट रह गया, मैंने इशारा किया कि दागिए। मिस्टर भोला ने ३५० बोर का राइफ़ल दागा और साथ ही मैंने १२ बोर की गोली दागी। दोनों गोलियाँ बाज़ू पर दो इञ्च के अन्दर लगीं। गुलदार वहीं गिर गया और थोड़ी देर तड़प कर मर गया। बँगला से हमारे अरदली फैर सुनकर दौड़ आये। हम मचान से उतरे और बहुत ही खुश हुए कि हमारा गुलदार पहलेवाले से कहीं बड़ा और निहायत तन्दुरुस्त था। जब बँगला के सामने दोनों रखे गये और नापे गये तो उनका ६' ८ इञ्च और हमारा ८' २ इञ्च निकला। मैंने इतना बड़ा गुलदार न अपने ५-६ गुलदारों में और न दूसरे के मारे हुए में अब तक देखा

था। मिस्टर गुलाबराय ने कहा कि गो मैंने अच्छी जगह ली थी मगर जानवर आप लोगों को अच्छा मिला। मैं मिस्टर भोला की असिस्टेंटी में दो वर्ष रहा और कम-से-कम डेढ़ दर्जन मर्तबा गुलदार और शेर के लिए बकरी और जानवरों की लाशों पर हम दोनों बैठे होंगे। मगर एक मर्तबा भी किसी ने किसी को न देखा। वजह यह थी कि नातजुरबेकारी थी। अव्वल तो हम बकरी के और लाश के बहुत करीब मचान बाँधते थे। दूसरे मचान को ढकते नहीं थे। तीसरे मचान पर खामोश नहीं बैठते थे। लिहाज़ा शेर व गुलदार मचान के ५०-६० गज तक तो जरूर आते थे, जो कि जानवरों और चिड़ियों की खतरे की आवाज से मालूम हो जाता था; मगर ये लोग हमारी मौजूदगी को बकरी और लाश के आस-पास बैठकर मालूम कर लेते थे और वापस चले जाते थे। यही गल्तियाँ हर नातजुरबाकार शिकारी करते हैं और नाकामयाब रहते हैं।

दो बरस के बाद मिस्टर भोला से मिस्टर काँजीलाल ने चार्ज लिया। यह नौउमर एक्स्ट्रा असिस्टेंट कंसरवेटर थे और फ़ॉरेस्ट कॉलिज देहरादून में मेरे एक साल सीनियर थे। इनको बॉटनी यानी इल्म बनास्पती से बहुत दिलचस्पी थी और ज्यादातर उसी में वक्त सर्फा करते थे। उन्होंने कोशिश की कि मेरे दिल, दिमाग़ में बॉटनी ठूँस दें और मैंने उनको इस्पोर्ट्समैन बनाने की कोशिश की। शायद दोनों ही नाकामयाब रहे। फालतू वक्त में उनके सामने पत्ती, फूल, फल का और बॉटनी की किताबों का ढेर रहता था। मुझे जो वक्त मिलता था उसमें मैं राइफल के साथ जंगल में जङ्गली जानवरों का लुत्फ उठाता था। बहरहाल मैंने अपनी जिंदगी के बेहतरीन दो बरस उनकी खुशमिजाजी कम्पनी में गुजारे और उनके साथ चन्द शिकार के भी दिल हिलानेवाले वाकियात पेश आये, जिनका जिक्र आगे होगा। वे अब अपनी पेंशन का जमाना अपने खुशनुमा बँगला और छोटे-से बहिस्तनुमा बाग में, जिसमें सैकड़ों किस्म के फूल और तरह-तरह के नायाब पौधे लगा रखे हैं, बिताते हैं। अब भी यू० पी० का फिलौरा

जो उन्होंने अरसा हुआ छपवाया था, फिर से लखनऊ में लिख रहे हैं। उनसे अब भी मिलकर इन्तहाई खुशी होती है। उनकी महमान-नवाज़ी का हम अब भी लुत्फ उठाते हैं और पुराने दिल हिलानेवाले नातजुरबेकारी के वाक़ियात का अक्सर जिक्र करके अपनी गल्तियों पर हँसते हैं। मुझे उम्मीद है कि हमारे पुराने दोस्त और खास कर मिस्टर काँजीलाल को पुराने वाक़ियात और मुस्तरका मटरगश्त की याददहानी जरूर दिलचस्प होगी। अगर ईश्वर ने मेरी यह किताब मेरी जिंदगी में छपवा दी तो मैं उम्मीद करता हूँ कि मिस्टर काँजीलाल व मेरे दीगर दोस्त और अफसरान जिनका जिक्र मैंने इस किताब में किया है, मुझे माफ़ करेंगे। अगर मैंने कहीं मुबालगा से काम लिया हो जो कि मैं पूरी उम्मीद करता हूँ कि वजुज़ चन्द खास दोस्तों के जिकर के, जिसमें दो फीसदी से ज्यादा मुबालगा न होगा; जो कि उनके खुश करने या चिढ़ाने के लिए किया गया है; मगर वाक़ियात में कोई तबदीली नहीं की गयी है।

६. मेरा दूसरा गुलदार पैदल खतरनाक हालत में

मिस्टर काँजीलाल अच्छे खाने के शौकीन थे। लिहाजा उनको तीतर, मुर्गी, मोर से बमुकाबला बड़े जानवरों के ज्यादा दिलचस्पी थी और बरखिलाफ इसके मुझे बड़े जानवरों से ज्यादा दिलचस्पी थी। वह बग़ैर ठीक निशाना लगाये हुए दूर ही से ऊपर की चिड़ियों को देखते ही हमेशा दो फैर किया करते थे, चाहे लगे या न लगे। इससे कुछ मतलब नहीं। मैं दुम पकड़कर गोली चलाने का शौकीन था। कारतूस उस जमाने में ८ व १० रुपया सैकड़ा मिलते थे। फरवरी सन् १९१४ ई० में एक रोज सुबह के वक्त हम लोग ट्रेनिंग क्लास को लिये हुए मुकाम छीनी से जोरासाल हल्द्वानी फॉरिस्ट डिवीज़न में कूच कर रहे थे। हमारे ऊँट और नौकर वग़ैरह आगे जा चुके थे। हम

विद्यार्थियों को साथ लिये हुए तरह-तरह के काम दिखाते हुए आ रहे थे। करीब चार मील के बाद हमको अपने ऊँट जाते हुए सड़क पर दिखलायी देने लगे। तब हमने क्लास को डिसमिस कर दिया, ताकि लड़के अपनी मरजी के मुताबिक जावें और ऊँटों की धूल से बचें। जब वह हमसे काफी दूर चले गये और धूल कम हो गयी तो हम भी चल दिये। थोड़ी दूर जाने के बाद हमने देखा कि एक सूखे हुए तालाब के सब्जाज़ार में चन्द मुर्गियाँ चर रही हैं; जिसके किनारे घने पेड़ और बाँस थे। पोटरी फार्म देखकर मिस्टर काँजीलाल के मुँह में पानी भर आया। फौरन अरदली से बन्दूक व कारतूस लेकर तालाब की तरफ चले। मैंने भी अपनी २२ बोर राइफल ली और मिस्टर काँजीलाल के सामनेवाले पेड़ों के नीचे जाकर खड़ा हो गया; इस उम्मीद पर कि जब इनकी दोनों फैरें दग जावेंगी, तब चंद मुर्गियाँ जरूर सामने वाले पेड़ों पर जा बैठेंगी। दोनों फैर दगते ही मुर्गियाँ उड़ीं और दो मेरे सामने एक बाँस की शाख पर बैठ गयीं। मैंने उनमें से एक गिरा ली और फौरन सड़क की तरफ बढ़ा, जोकि जली हुई घास के रक़बे में से गुज़रती थी और जहाँ काले तीतर बोल रहे थे। मैंने सोचा कि एक काला तीतर और मार लूँ, नहीं तो एक चिड़िया को आधा-आधा बाँटना पड़ेगा। मिस्टर काँजीलाल अरदली को लिये हुए अपनी जख़्मी मुर्गी ढूँढते रहे। मैं सड़क पर थोड़ी दूर गया था और एक छोटे से लकड़ी के पुल पर से गुजर रहा था कि मेरी निगाह पुल के बाद ही दाहिनी तरफ सड़क के किनारे एक पेड़ की जड़ के पास करीब १० व १२ फीट पर एक पूरे कद के गुलदार पर पड़ी, जोकि दुबका हुआ बैठा था। यह घास का रक़बा हाल ही में जला था। गुलदार के पीछे उत्तर की तरफ करीब १०० कदम पर घना साल का जंगल था और सामने सड़क और उसके बाद घास का जला हुआ बड़ा रकबा था, जिसमें नई हरी घास निकल रही थी। करीब १०० कदम पर ५०-६० गायें और कुछ बच्चे चर रहे थे। गुलदार इनकी ताक में बैठा हुआ था कि मौक़ा पाकर एक बच्चे को दबा ले। गुलदार को बे-

उम्मीद देखते ही मैं झिझका और ठहर गया। उसने अपना सर आहिस्ता - आहिस्ता झुकाना और सिकुड़ना शुरू किया। मैंने सामने सड़क पर देखा कि तमाम विद्यार्थी और ऊँट करीब सौ-डेढ़ सौ कदम पर जा रहे हैं। सोचा कि जब वह इतना बड़ा काफिला यहाँ से गुज़रा होगा, तब भी यह गुलदार यक़ीनी यहाँ पर बैठा होगा और किसी से नहीं बोला तो फिर मुझसे क्यों बोलेगा। मैं थोड़ा सड़क के बायीं तरफ होता हुआ गुजर गया और १५ - २० कदम पर जाकर मुड़कर देखा तो गुलदार फिर आहिस्ता-आहिस्ता अपना सर उठा रहा था। मैं सोचता हुआ आगे चला गया कि किस तरह से इसको मारा जावे। बड़ा राइफ़ल साथ न था। ख्याल किया कि मिस्टर काँजीलाल के पास शायद १२ नम्बर की गोलियाँ हों। लिहाजा मैं वापस लौटा और इस मर्तबा अपने राइफ़ल में बड़ा कारतूस लगा लिया और गुलदारवाले किनारे पर होता हुआ वापस आया। जब मैं फिर उसके करीब पहुँचने लगा, जोकि गायों की तरफ देख रहा था उसने मेरी तरफ आहिस्ता-आहिस्ता मुँह मोड़ा और फिर सर झुकाकर दबकने लगा। मैंने इरादा किया कि जब मेरा राइफ़ल इसके सर के ऊपर से गुजरेगा तो इसकी खोपड़ी पर लबलबी दबा दूँगा। उस वक्त मिस्टर काँजीलाल भी जंगल से मय अरदली के निकले और मेरी तरफ सड़क पर आने लगे। मैंने सोचा कि बेहतर होगा कि उनके पुल पर पहुँचने से पहले मैं पुल के पार हो जाऊँ। राइफ़ल का मुँह लटकाये हुए गुलदार के सर से एक या दो इंच ऊपर से नाल गुजरती हुई चली गयी, मगर मैं घबराहट में या डर के मारे दागना भूल गया। जब मैं पुल के आखिरी हिस्से पर था, तो मिस्टर काँजीलाल भी वहाँ आ चुके थे। मैंने उनके सीने पर हाथ रखकर आहिस्ता से कहा कि वापस चलिए। उनको मेरी यह आजादी नागवार हुई और अफसराना लहजा में कहा कि यह क्या हिमाकत है। मैंने कहा—हिमाकत नहीं जनाब शेर बैठा हुआ है। फिर क्या था; हवा सरक गयी और मिस्टर काँजीलाल खामोशी से लौट पड़े। दूर जाकर जब गुलदार आड़ में हो गया, मैंने

कहा—आपके झोले में गोली के कारतूस भी हैं। उन्होंने कहा—मालूम नहीं। मैंने अरदली से झोला लेकर जमीन पर सब कारतूस लौट दिये। दो गोली और एक गराब के कारतूस निकले। बाकी सब छर्रे के थे। मैंने यह तीनों कारतूस ले लिये और गोली को दाहिनी नाल में और गराब बायीं में लगाकर फिर वापिस हुए। जब हम पुल पर आये तो गुलदार ने फिर सर झुकाना और छिपना शुरू किया। मैंने मिस्टर काँजीलाल को इशारे से गुलदार दिखाया। मगर वह पचास कदम आगे अपनी मोटी ऐनक लगाये देख रहे थे। तब अरदली ने कहा कि साहब यह है। इस पर उन्होंने कहा कि मैं मारूँगा। मैंने बन्दूक दे दी। गुलदार मुश्किल से १०-१२ फीट के फासले पर था, मिस्टर काँजीलाल ने बन्दूक तो सीधी की, मगर लंबे और भारी साँस लेने लगे और निशाना भी गैरमामूली देर तक इस जानवर पर लेते रहे। नहीं तो गरीब चिड़ियों पर तो वह इतनी देर में एक दर्जन कारतूस फूँक देते। गुलदार हम सबको अपनी तरफ मुतवज्जेह देखकर चौकन्ना होकर उठने लगा। मैंने कहा कि जल्दी दागिए, नहीं तो यह जाता है, या हमला करेगा। अगर इतने नजदीक से ऐसा अच्छा मौक़ा देकर भी भाग गया, तो बहुत ही अफसोस होगा। उन्होंने कहा कि यहाँ से दागना खतरनाक है। मैंने कहा—तो मुझे दीजिए, उन्होंने बन्दूक मुझे दे दी। मैंने फौरन ही जब गुलदार खड़ा हो चुका था और सर झुकाये हुए कान पीछे किये हुए हमारी तरफ देख रहा था, उसके सर पर बन्दूक सीधी करके दाग दिया। गुलदार ने आवाज दी और हमने काली बारूद के धुएँ में उसे गिरते देखा। अपने निशाना के घमंड में और यह ख्याल करते हुए कि उसका भेजा उड़ गया होगा, मैंने बन्दूक को कंधे पर रख लिया। जब धुआँ साफ हुआ तो मैंने देखा कि वह फिर खड़ा हुआ सर नीचा किये, कान पीछे की तरफ मोड़े हुए, गुस्सा का मुँह बनाये गुर्रा रहा है। अब वह जख्मी होकर बमुकाबला पहले के ज्यादा खतरनाक था। अरदली और डाकवाला भाग गये थे। मैं और मिस्टर काँजीलाल पहली फैर का नतीजा

देखने को खड़े थे। यह हमला करनेवाली हालत देखकर मैं घबराकर कंधे से बन्दूक उतार रहा था कि गर्राबवाली नाल भी घबराहट में ऊपर ही हवा में दग गयी। खैर बन्दूक की आवाज से गुलदार लँगड़ाता हुआ और ढौंकता हुआ जंगल की तरफ भागा। मैंने जल्दी से दाहिनी नाल में गोली और बायीं नाल में ४ नम्बर का छर्रा भरा और आगे बढ़ा कि एक फैर और चलाऊँ। अभी गुलदार २० ही कदम गया होगा। यह सब चन्द सेकेन्ड ही में हो गया। मिस्टर काँजीलाल ने कहा कि अब हम दागेंगे। मैंने बन्दूक दे दी। बजाय वहाँ से दुम की तरफ फैर करने के उन्होंने ठीक कहा कि मैं थोड़ी दूर सड़क पर जाकर फिर दाहिनी तरफ घास में जाकर गुलदार की बगल पर गोली चलाऊँगा। यह मुनासिब ही मालूम हुआ। गुलदार ने मिस्टर काँजीलाल को सड़क छोड़कर घास में अपनी तरफ आते हुए देखकर अपना रुख और दाहिनी तरफ पुलवाले नाले की तरफ कर दिया; जिसके किनारे बेजली हुई आदमी के बराबर ऊँची हरी घास खड़ी हुई थी। मुझे ख्याल हुआ कि अगर यह जख्मी गुलदार बेजली हुई ऊँची घास में नाले के किनारे घुस गया, तो फिर इसको पैदल निकालना या ढूँढ़ना बग़ैर हाथी के मुश्किल व खतरनाक होगा। लिहाज़ा मैं अपनी २२ बोर राइफल में बड़ा कारतूस लगाकर नाले के किनारे बड़ी घास में होता हुआ गुलदार के दाहिनी तरफ से जाने लगा। घास में कीचड़ व पानी था। लिहाज़ा उसकी आवाज से गुलदार को शक हुआ कि इसमें भी कोई दुश्मन है। लिहाजा खड़ा होकर कभी बायीं तरफ मिस्टर काँजीलाल को और कभी पुल की तरफ देखता रहा। फिर आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ना शुरू किया और मैं भी आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ता रहा। हम दोनों करीब-करीब गुलदार से ४० कदम के फासले पर तीनों एक ही लाइन में थे।

गुलदार के सामने करीब २०-२५ कदम पर एक सेमल का पेड़ जली और बेजली घास के मिलान पर था। मैं चाहता था कि उसकी आड़ में गुलदार से पहले पहुँच जाऊँ; और इस ख्याल को लिये हुए

आगे बढ़ता रहा। गुलदार खड़ा हुआ दोनों तरफ शक़ की निगाह से देख रहा था। मैं बड़ी घास में छिपा हुआ था; मगर मिस्टर काँजीलाल जली हुई घास में साफ दिखाई दे रहे थे। सच तो यह है कि जख्मी गुलदार ने बड़ी शराफ़त बरती और हम नातजुरबाकारों पर, जिनके पास ढंग से हथियार भी न थे। हमला नहीं किया; नहीं तो छट्ठी का दूध याद आ जाता। उसको खड़ा देखकर मैं झुके-झुके चोर की तरह आखीर पेड़ की आड़ में पहुँच ही गया और गुलदार को पेड़ की बगल से देखा तो वह मुझसे १०-१२ कदम पर खड़ा हुआ मिस्टर काँजीलाल को देख रहा था। मैंने मिस्टर काँजीलाल को इशारा किया कि दागो। उन्होंने जोर से कहा कि तुम सामने पड़ते हो। मैंने थोड़ा और पेड़ की आड़ लेकर फिर इशारा किया कि फैर करो। मैं गुलदार के पिछले हिस्से को देखता रहा कि किस तरफ जाता है। मिस्टर काँजीलाल ने फैर किया और गुलदार तेजी से आगे बढ़कर पेड़ के बिलकुल करीब आकर खड़ा हो गया। आखिरी गोली भी नहीं लगी। मैं गुलदार के पिछले हिस्से को निगाह में रखे हुए था। मेरा दिल बाँसों उछल रहा था, वल्कि मैं काँप रहा था। मेरा राइफल काबिल इतमीनान न था, मैं सिर्फ गुलदार की दुम और पिछले पैर पेड़ से मिले हुए देख रहा था। मुझे नहीं मालूम था कि उसको मेरी इस कदर नजदीक मौजूदगी की खबर है या नहीं और वह किस तरफ देख रहा है। मैंने धीरे-धीरे राइफल को बढ़ाकर पेड़ के उत्तर ओर निकाला और छाती पर लगाकर आगे झुक कर देखा तो गुलदार मेरी ही तरफ सर घुमाये हुए देख रहा था। मैंने जल्दी से उसकी आँख पर गोली मारी और पुल की तरफ बगैर नतीजा देखे हुए भागा।

मुझे ख्याल होता है कि जिस वक्त मैंने आँख पर गोली चलायी गुलदार गिरता हुआ-सा मालूम हुआ। मगर यकीन न था। जब मैं पुल पर पहुँचा तो मिस्टर काँजीलाल और अरदली भी आ गये और पूछा कि क्या हुआ? मैं कोई जवाब काबिल इतमीनान न दे सका।

हम लोग सेमल की जड़ की तरफ और उसके आगे देखते रहे, मगर कहीं गुलदार नजर न आया। अब किसी की हिम्मत न थी और न १२ बोर की कोई गोली या गरीब का कारतूस ही था, जो सेमल के पेड़ के पास जाते। थोड़ी देर में एक कौआ आया और सेमल की सबसे नीचे की डाल पर बैठकर और जमीन की तरफ देखकर बोलने लगा। वह अपनी कौम के लोगों को बुलाने लगा। थोड़ी देर में और कौए आ गये और सब नीचे देखकर शोर मचाने लगे। इससे पूरा यक़ीन हो गया कि गुलदार वहाँ है, चाहे जिंदा हो या मरा हो। मगर चूँकि कौए जमीन पर नहीं उतर रहे थे, इससे शक था कि शायद गुलदार जिंदा है। मैंने १२ बोर बन्दूक में दो कारतूस चार नम्बर के लगाये और मेरा राइफ़ल काँजीलाल साहब ने लिया। हम सब जले हुए ऊँचे रकबे की तरफ से आहिस्ता-आहिस्ता गये। जब सेमल का पेड़ थोड़ी दूर रह गया तो गुलदार का जिस्म दिखलायी दिया। हमने पत्थर मारे और शोर मचाया; मगर वह नहीं हिला। पास गये तो देखा कि २२ बोर की गोली उसकी आँख में पड़ी हुई थी और उसका अगला दाहिना हाथ उसके मुँह में था, जिसको उसने चबा डाला था। बायाँ हाथ ऊपर से पहली गोली से टूटा हुआ था। दोनों हाथों के बीच में सीने के नीचे के हिस्से में भी गोली का निशान था। न मालूम यह पहली ही गोली हाथ तोड़कर सीने में लगी थी, या मिस्टर काँजीलाल की गोली थी। अन्दाज होना मुश्किल था। गुलदार नर और पूरे कद का खूब तन्दुरुस्त था। इसके मिलने पर हमारी खुशी की कोई हद न थी। अरदली को दौड़ाकर एक ऊँट मँगाकर और उस पर उसे लादकर हम जोरासाल पड़ाव पर पहुँचे। वहाँ उसे नापा तो वह ७ फीट ७ इंच निकला। वह खूब तन्दुरुस्त था।

१०. शेर व गुलदार की बाबत जरूरी तजुरबे

जोरासाल रेन्ज के बुड्ढे तजुरबेकार आदमियों ने जब कुल वाक़या सुना तो कहने लगे कि आप बड़े खुशक़िस्मत हैं जो उसने हमला नहीं किया, नहीं तो जख्मी शेर व गुलदार दूसरी मर्तबा उसके पास जाने पर जरूर हमला करता है। नौउमर शिकारियों को यह नोट करना चाहिए कि यू० पी० का शेर, गुलदार नब्बे फीसदी बग़ैर जख्मी किये हमला नहीं करता है। या जब माँ अपने बच्चों के साथ हो, तब ही बहुत खूँख्वार होती है, या जब चारों तरफ से घिर जावे। जख्मी शेर व गुलदार का उसी वक्त पीछा हमारी तरह हरगिज न करना चाहिए। क्योंकि जख्मी शेर और गुलदार भूत की तरह अपनी और दूसरे की जान की परवा नहीं करता है। अगर जख्मी करने के बाद ही उसका पीछा किया जाय। इसीलिए जब ये जख्मी हो जावें, तो दूसरे दिन ढूँढना कम खतरनाक होता है। या फिर किसी वजह से आदमखोर हो जावे और इंसान का कुदरती खौफ व इज्जत उसके दिल से निकल जावे। नहीं तो वह इंसान से उतना ही डरता है जितना कि इन्सान इससे डरता है।

आदमखोर होने की कई वजह होती हैं। मसलन बुढ़ापा, कमजोरी, या कच्चे शिकारी जब बेतुकी गोली या गराब चलाकर हाथ-पैर या दाँत तोड़ देते हैं या रात के शिकारी बिजली की रोशनी से जल्दी में जख्मी कर देते हैं, तब गुस्से में, भूख में और मजबूरी में व अचानक किसी आदमी या औरत के घास व लकड़ी की तलाश में आ जाने से उसके ऊपर हमला कर देता है। जब उसे यह मालूम हो जाता है कि आदमी जिससे वह अब तक इतना डरता रहता था, उसका मारना जानवरों के मारने से बहुत आसान है, तब हिम्मत और बढ़ जाती है। और जब उसके गोश्त का भी मजा चख लेता है क्योंकि मनुष्य

बजाय घास-पात के लजीज गिजाओं से बना है, तो फिर वह लागू हो जाता है। इसके अलावा मेरा जाती तजुरबा और यक़ीन यह भी बतलाता है कि आदमखोर शेर या शेरनी के बच्चों में दूध व ख़ून के जरिये भी यह असर जरूर आ जाता है और उनकी नसल में से कोई न कोई जरूर आदमख़ोर होता रहता है। नहीं तो क्या वजह है कि ख़ास-ख़ास मुक़ाम और ख़ित्तों में बराबर आदमख़ोर पैदा होते रहते हैं? जैसे गढ़वाल में करन प्रयाग और कई एक दूसरी जगहों में बराबर आदमख़ोर एक मारा जाय दूसरा पैदा हो जाता है। वरना बुड्ढे; कमजोर और जख्मी शेर तो और भी सब जगह पाये जाते हैं। मगर आदमख़ोर नहीं हो जाते। शेर व गुलदार अपने शिकार को दौड़ाकर नहीं पकड़ते हैं, बल्कि या तो अपने शिकार के पास आहिस्ता-आहिस्ता छिप-छिप कर पहुँचते हैं और जब वह चार क़दम रह जाता है, उस वक्त अचानक उसको दबोच लेते हैं, या रास्ता में पानी पर नमकीन मिट्टी के पास उनकी घात में घंटों छिपे बैठे रहते हैं और जब कोई हिरन वगैरह वहाँ से निकलता है तो उसके ऊपर अचानक कूदकर उसको उसी तरह पकड़ लेते हैं जैसे बिल्ली चूहे पकड़ती है। उनकी आदत है कि जब वे कहीं अपने शिकार की घात में छिपे बैठे हों या उनको यह ख्याल हो जावे कि उनको किसी ने देखा नहीं है, तब वे आदमी व गाड़ियों की परवा नहीं करते, चाहे बिलकुल उनके पास से मिली हुई निकल जावें। वे न तो हमला करते हैं और न दूसरे जंगली जानवरों की तरह भागते ही हैं, बल्कि दुबके हुए छिपे रहते हैं और जब आदमी व गाड़ियाँ निकल जाती हैं तब फिर अपने शिकार की तरफ ध्यान देते हैं। आमतौर पर इन्सान को मारने और खाने की उसकी आदत नहीं होती, बल्कि वह इन्सान को देखकर डरकर या तो छिप जाता है या भाग जाता है।

लगातार खतरे की आवाज देना, जो कि कौए और बहुत-सी चिड़ियाँ, चीतल, साँभर, काँकर, नीलगाय, बारहसिंगा, घूरल और बन्दर वग़ैरह सब ही जानवर देते हैं, और मैं उनको चौकीदार कहा

करता था, जो कि उनकी रोजाना की मामूली आवाजों से बिलकुल मुख्तलिफ होती हैं, उनसे यकीनी तौर पर उनके दुश्मनों का पता लग जाता है, जो कि शेर, गुलदार, लकड़बग्घा, जंगली कुत्ते व रीछ हैं। जङ्गल के मुख्तलिफ जानवरों और चिड़ियों की खतरनाक आवाजों के जानने से शिकारी को बहुत बड़ी मदद शेर व गुलदार के तलाश करने, उनके चलने के रुख और उनके हमले से बचने में मिलती है। इन जानवरों का जख्मी होने के फौरन बाद ही पीछा करना या तलाश करना, जब उनका गुस्सा और बदला लेने का ख्याल ताजा हो और वह काफी कमजोर व मजबूर न हो गये हों, बहुत ही बड़ी गलती है। लिहाजा बेहतर यह होता है कि इन जानवरों को जख्मी करने के १२ घंटे बाद या दूसरे दिन तलाश किया जावे, जब वह या तो मरे मिलते हैं, या वहाँ से दूर चले जाते हैं और खतरा कम हो जाता है। खास-कर पैदल शिकारी के लिए यह अहतियात बहुत जरूरी है। शेर, गुल-दार, रीछ, सुअर जो कि हमला करते हैं उनके ऊपर गोली तभी चलानी चाहिए जबकि यक़ीन हो जाय कि पचास कदम से गोली जहाँ चाहें वहाँ मार सकते हैं। गोली इनके सर में, गरदन में, बगल में या कमर की हड्डी में मारनी चाहिए। बाकी और किसी जगह इनके गोली मारना या गर्राब चलाना मुसीबत मोल लेना है। पचास कदम से कम ही से इनके ऊपर गोली चलानी चाहिए, ताकि निशाना पर ठीक लगे, और कारगर हो। नहीं तो अगर अच्छा मौक़ा इतमीनान से गोली चलाने का न मिले तो जाने देना चाहिए। यही मेरा वसूल था।

मेरे पचास साल से ज्यादा शिकार के तजुरबे में जिसमें मैंने ६५ गुलदार, २१ शेर, ४ भालू, एक आदमखोर शेर और एक मस्त व खूँख्वार हाथी मारा है। मैंने देखा है कि हर जानवर गोली लगने पर अगर फौरन न गिरा तो सीधा अपनी नाक की सीध में आवाज देकर भागता है। अगर उस वक्त कोई उनके सामने पड़ जाय तो जरूर हमला करता है। नहीं तो यह जख्मी जानवर अगर हल्की चोट लगी हो तो मीलों चले जाते हैं। शेर और गुलदार के अगर सर में या

गरदन की हड्डी में गोली लगे तो फौरन ही मर जाता है। अगर दिल में यानी बगल में गोली लगे तो सौ-पचास क़दम के अन्दर ही गिरकर मर जाता है। अगर कमर टूट जाती है तो बहुत शोर मचाता है, तड़पता है और बहुत देर में मरता है। अगर फेफड़े में गोली लगे तो मील, दो-मील जाकर घंटे, दो घंटे तक में मर जाता है; मगर पेट व टाँग वग़ैरह में गोली लगने से हफ्तों जिन्दा रहता है और उसके पास जाना बहुत ही ख़तरनाक होता है।

११. शेर, गुलदार और रीछ के लिए मुनासिब रायफल

ताक़त के ख्याल से रायफल के बोर मेरी राय में कोई रायफल ३०० से ४०० बोर तक का, जिसकी ताकत ३ हजार पौंड के करीब हो और उसका निशाना सही हो, उत्तरी भारत के कुल जानवरों के लिए काफी है।

३०० बोर रिपरिंग फील्ड, ३५० व ४०५ बोर वेंचेस्टर, ३७५ व ३६६ बोर माजा, यह सब रायफल सब जानवरों के लिए बहुत अच्छे और काफी ताक़तवाले हैं। मुझे इन सब रायफलों में माज़ा, जो कि निहायत खूबसूरत हल्का निशाने का सच्चा होता है मुझे बहुत पसन्द था। उसको मैंने १७ वर्ष स्तेमाल किया और करीब आधे जानवर उसी से मारे। मुझे उस पर बहुत भरोसा था। सौ कदम के अन्दर इस रायफल से जिसने किसी जानवर पर यह दागा उसकी खैरियत न थी और २०० कदम के अन्दर भी ९० फीसदी जानवरों पर इससे कामयाबी होती थी। अगर नाउमर नातजुरबेकार शिकारी मेरे तजुरबों को ग़ौर से पढ़ेंगे तो कारआमद पावेंगे और आगे इस किताब में भी इन बातों की तसदीक होती जावेगी।

१२. गुलदार के मारने में हम दोनों की नाकामयाब कोशिश

हम लोग हल्द्वानी फॉरेस्ट डिवीजन के बहुत-से कैम्पों में दो-दो, चार-चार दिन ठहरते हुए और रोजमर्रा शाम को २ घंटा सड़कों, नालों में घूमते हुए मार्च के आखीर में मुकाम पावलगढ़ रामनगर फॉरेस्ट डिवीजन में पहुँचे। जंगलात का बँगला पहाड़ के दामन में वाकै था। इसका तिकोनिया बड़ा आहाता, जिसके उत्तर व दक्खिन तरफ छोटी नदी बह रही थी, दोनों तरफ सड़क थी और उत्तर में सड़क के बाद ५०, १०० फीट घना जंगल और फिर हिमालय पहाड़ था; जिसके ऊपर घना साल का जंगल था। पच्छिम में करीब एक फर्लाङ्ग तक हल्का जंगल था और फिर चौड़ी दाबका नदी थी; जिसमें कहीं-कहीं पानी था और ज्यादा खुश्क थी। दाबका नदी के किनारे करीब दो मील उत्तर में एक दलदली मुकाम है, जिसमें बड़े-बड़े सदियों के पुराने पेड़ बेलों से ढके हुए हैं। नीचे काँटेदार झाड़ियाँ और बेंत हैं। पूरब में ऊँचे पहाड़ से जगह-जगह पर चश्मे और पानी की धारें निकल रही हैं। यह ३ व ४ वर्ग मील का घना शादाब जंगल शेर, गुलदार, रीछ, सुअर, साँभर और चीत साँपों के लिए सेनीटोरियम था, जहाँ सिवाय किनारे-किनारे के उसके अन्दर काँटों की घनावट की वजह से कोई नहीं जा सकता था और जहाँ ये जानवर हिफाज़त से रहते, बच्चे देते और फैलते थे। मुझे यह जगह बहुत ही पसन्द थी, जहाँ इंसान के कदम सिर्फ कभी-कभी जाते थे।

एक दिन काम के वापसी पर हम बँगले के बरामदे में शाम को चाय पी रहे थे। सामने हमारे स्कूल का कैम्प करीब ५० डेरे छोलदारियों के और करीब ८० आदमियों के लगा हुआ था। काफी शोरगुल हो रहा था; फिर भी एक गुलदार बँगले के उत्तर पहाड़ के किनारे

बोला और दूसरे ने दाबका नदी के पच्छिम के पहाड़ के नीचे घनी झाड़ियों में से जवाब दिया। हमने जल्दी से चाय खत्म की। अरदलियों से कहा कि मचान और बकरी लाओ जो हम कैम्प में साथ रखते थे। मैं दौड़कर अपने डेरे से ३५० बोर वेन्चेस्टर रायफल लाया और मिस्टर काँजीलाल अपनी १२ बोर बन्दूक लाये। हमने बँगले से पूरब करीब सौ कदम जाकर सड़क के दक्खिनी किनारे के एक पेड़ पर एक मचान बाँधा और बकरी को उत्तरी किनारे पर बाँधकर बैठ गये। सड़क के दोनों तरफ बहुत घनी झाड़ियाँ और जंगल थे। सड़क से एक गज बाद कुछ नहीं दिखलायी देता था। बकरी बाँधकर जैसे ही आदमी गये बकरी ने चिल्लाना शुरू किया। हम अपने आपको मचान पर एक घंटा बैठने के लिए ठीक-ठाक कर रहे थे और पहाड़ की तरफ पत्तीवाली शाखें लटकाकर ढककर जिधर गुलदार बोल रहा था इतमीनान से बैठकर बन्दूक और रायफल भरने लगे। तब मालूम हुआ कि जल्दी में मैं रायफल के कारतूस लाना भूल गया। लिहाजा खाली बन्दूक लेकर बैठा रहा और मिस्टर काँजीलाल से कहा कि जब गुलदार बकरी को मारकर इतमीनान से बैठ जावे तब खूब ठीक निशाना लेकर दागना। बकरी थोड़ी ही देर बोली होगी तो मैंने देखा कि गुलदार पहाड़ के ढाल पर से बड़ी होशियारी से आहिस्ता-आहिस्ता उतर रहा है। फिर थोड़ी देर के बाद एक दो मर्तबा झाड़ियों में और झलक देखी। मैंने काँजीलाल से कहा कि तैयार रहिए, गुलदार आ रहा है। मुश्किल से १५ मिनट के बाद बकरी ने बोलना बंद कर दिया और सिकुड़ी हुई जंगल की तरफ देखने लगी। शायद उसको गुलदार की खुशबू आ गयी। इतने में बिजली की तरह से गुलदार झाड़ियों से बकरी पर झपटा और बकरी पूरी ताकत से पतली रस्सी तोड़कर सीधे बँगले की तरफ भागी। मिस्टर काँजीलाल ने भी बड़ी फुर्ती से काम लिया कि जिस वक्त गुलदार झपटा उसी वक्त दोनों फैर एक गोली और दूसरे गराब का चला दिया। गुलदार पिछले पाँव लौट गया। अरदली दो फैर सुनकर और बकरी को आते

देखकर फौरन आये। हम उतरे, मचान खोला और कैम्प से पाँच कार-तूस और बकरी लेकर फिर पच्छिम तरफ जहाँ पहाड़ की जड़ में दाबका के किनारे दूसरा गुलदार बोल रहा था, गये। दाबका नदी की चौड़ाई पार करके हम उसके ७ व ८ फीट ऊँचे किनारे पर चढ़े; जहाँ बहुत घनी झाड़ियाँ और सीधे साल के पेड़ थे। हम कोई मुनासिब पेड़ मचान बाँधने के लायक ढूँढ रहे थे, कि इतने ही में बन्दर जो कि हमारे ऊपर ऊँचे पेड़ों पर थे, बहुत जोर से खतरे की आवाजें देने लगे। कोई मुनासिब पेड़ न मिला। गुलदार पचास कदम के अन्दर ही बाँस की घनी झाड़ियों में था, जोकि बन्दरों के मुँह के और आँखों के रुख से अन्दाज होता था। सूरज डूबने के करीब आ चुका था लिहाजा मजबूर होकर हमने मचान को एक रोहिनी के छोटे पेड़ पर जमीन से ५ फिट ऊँचाई पर बाँधना शुरू किया। हमारे दो आदमी मचान बाँध रहे थे और हम बकरी, कपड़े, रायफल व बन्दूक लिये खड़े थे कि इतने में चुट से पतली सड़ी हुई लकड़ी टूटने की नजदीक ही में आवाज हुई। मैंने बैठकर गौर से देखा तो गुलदार के पैर झाड़ियों में हमसे २५ व ३० कदम पर नजर आये। मैंने मिस्टर काँजीलाल से कहा कि गुलदार बहुत नजदीक है। जल्दी बैठ जावें और इधर सूरज भी डूब रहा है। हम अँधेरा होने तक करीब एक घंटा बैठे रहे। बकरी भी खूब बोली और गुलदार भी हमारे इर्द-गिर्द बराबर घूमता रहा। बन्दर भी बराबर नीचे देख-देखकर बोलते रहे; मगर गुलदार बकरी पर नहीं आया। शायद उसने हमको मचान बाँधते और बैठते देख लिया। जब अँधेरा हो गया, चाँद निकलने लगा और छपका चिड़ियाँ खुट-खुट बोलने लगीं तो उधर बँगले की तरफ वाले पहाड़ पर गुलदार बोल रहा था। हमने मचान खोला और दाबका नदी के ६ व ७ फीट ऊँचे किनारे पर आगे-पीछे बँगले की तरफ रवाना हुए। मिस्टर काँजीलाल आगे थे। उनके पीछे मैं था और फिर अरदली व खलासी मचान व बकरी लिये आ रहे थे कि एकाएक घनी झाड़ियों में से बकरी पर गुलदार ने हमला किया, और

बकरी सूखी नदी में कूद गयी। उसकी झपट में वह आदमी भी जो बकरी को ला रहा था, शोर मचाता हुआ गिर पड़ा। हम दो-चार कदम आगे बाँस की घनी झाड़ियों के साथ आगे चल रहे थे। यह शोर सुनकर पीछे लौटे तो गुलदार की एक झलक झाड़ियों में गायब होते देखी। खैरियत से किसी के चोट नहीं लगी और फिर तब जमा होकर रवाना हुए। उस जमाने में टार्च नहीं आयी थी, मगर चाँदनी की काफी रोशनी थी। गुलदार फिर दाबका नदी के किनारे बोलने लगे। दाबका नदी में पानी बहुत कम था, मगर पूरी चौड़ाई में नदी की बालू और बजरी खूब साफ दूर तक दिखलायी दे रही थी। जब हम करीब १०० कदम के उस जगह से निकल आये, जहाँ पर गुलदार बकरी पर झपटा था, जंगल हलका हो गया। वहाँ पर एक खैर का पेड़ काफी बड़ा नदी के किनारे पर था, उस पर जल्दी से मचान बाँध कर और बकरी को दरिया की बालू में एक झाड़ी से बाँधकर फिर बैठ गये। पेड़ काँटेदार था और मचान भी ढंग से न बँधा था। मेरे सामने एक मोटी डाल की आड़ पड़ रही थी और मुझे बकरी नहीं दिखायी दे रही थी। मिस्टर काँजीलाल आगे बैठे थे। बकरी खूब बोल रही थी। इतने में उन्होंने कहा कि एक लंगूर बन्दर बकरी की तरफ आ रहा है। मैंने कहा कि बन्दर रात में जमीन पर नहीं चलते हैं। अगर लंगूर बन्दर बकरी को मार डाले तो आप भी अच्छा निशाना लेकर उसको मार दीजिए। मैंने यह बात खत्म ही की थी कि मिस्टर काँजीलाल ने बन्दूक उठायी और लंबी साँस लेकर फौरन ही दो फैर अपनी आदत के मुताबिक कर दिये। मैंने मचान पर खड़े होकर देखा तो गुलदार बकरी से करीब ३० कदम पर भागा जा रहा था। मैंने भी अनाड़ी की तरह से जैसे हम लोग उस वक्त नातजुरबेकार थे एक गोली रायफल की फेंक दी। तमाम जंगल और पहाड़ गूँज गये और हम लोग उतरकर जैसे खाली हाथ गये थे वैसे ही नाउम्मीद होकर वापिस आ गये।

मैंने खाना बेदिली से खाया और देर तक अपनी शाम की

हिमाकतों पर गौर करता रहा। जब सुबह क्लास लेकर काम पर रवाना हुए तो देखा कि दोनों गुलदारों के पैर के निशान बँगले के चारों तरफ बने हैं, जिससे मालूम हुआ कि रात भर यह दोनों हमारी बकरी और कुत्तों की तलाश में वहीं घूमते रहे थे।

१३. हमारी नाकामयाब कोशिश

दिसम्बर सन् १९१५ ई० में हम भंडार पानी कैम्प रामनगर फॉरेस्ट डिवीज़न में पड़ाव किये हुए थे। यहाँ बँगला नहीं था और हम सब डेरों में थे। यह घास का मैदान पहाड़ के सामने है, जिसके चारों तरफ पहाड़, नाले और घने जंगल हैं। हम रोज शाम को जब टहलने जाते थे, तो एक बड़े शेर के पैर के निशान अपने कैम्प के पच्छिम की तरफ गरजिया वाली सड़क पर देखते थे। हमने एक पड्डा आठ रुपये का खरीदा और उसको सड़क और एक सूखे नाले के मिलान पर एक शाम को बाँध आये। सड़क के दक्खिन तरफ हल्के पहाड़ थे, जहाँ से शेर नाले में उतरता था। सड़क के उत्तर में करीब एक फर्लाङ्ग चौड़ी घने जंगल की पट्टी थी; जिसमें कई एक छोटे-छोटे नाले थे। उसके बाद एक बड़ा पानी का नाला था और उसके बाद बहुत ऊँचा पहाड़ था।

शेर व गुलदार २४ घंटे में अगर मिले और कोई छेड़े नहीं तो सुबह-शाम दो मर्तबा खाना खाते हैं। अगर खाना न मिले तो कई दिनों तक भूखे ही रहते हैं। बाज़ तो २४ घंटे में अकसर बुढ़ापे में और गर्मियों में एक ही मर्तबा खाते हैं। हमारे आदमी सुबह पड्डे को देखने गये। हमारी हिदायत उनको यह थी कि अगर न मारा गया हो तो वापस ले आओ। अगर मारा गया हो तो आकर हमें खबर कर दो और वहाँ किसी किस्म का खटका और शोर न मचाओ। उसके बाद यह हमारा काम था कि हम लाश की तलाश करें। मचान को मुनासिब फासले पर और मुनासिब तरफ और मुनासिब पेड़ पर बिलकुल

खामोशी से बहुत जल्द बँधवा आवें; क्योंकि कामयाबी का दारमदार बहुत कुछ इन्हीं बातों पर होता है। पहले हम शाम को ही लाश को ढूँढ़कर, मचान बाँधकर बैठ जाया करते थे; मगर बाद को तजुरबा ने बतलाया कि सुबह मचान बाँधकर छोड़ आना और शाम को चुपके से तीन घंटा अँधेरे से पहले बैठने से शेर को धोखा देने का ज्यादा मौका मिलता है।

मचान पर जाड़ों में तीन बजे और गर्मियों में ४ बजे से अँधेरे तक बैठना मुनासिब होता है। शेर व गुलदार हमेशा अपने मारे हुए जानवर की लाश के पास ही किसी झाड़ी में या घास में छिपा हुआ लेटा और सोता रहता है। वह शिकारियों का आना-जाना, मचान बाँधना और हर किस्म के खटके को सुनता और देखता रहता है। जब तक शिकारी मचान पर रहता है, तब तक वह नहीं आता है और जब वह उतर कर चला जाता है, तब आकर खा जाता है। इस तरह से चालाक शेर व गुलदार शिकारियों के पड्डे खाते रहते हैं और उनको बेवकूफ बनाते रहते हैं। इस तरह वे नये-नये तजुरबे हर शिकारी से हासिल करते रहते हैं।

दूसरे दिन सुबह जब मैं लेक्चर के डेरे में ७½ बजे गया, उसी वक्त दो आदमी पड्डे को देखने गये और थोड़ी देर बाद मैंने देखा कि वह खाली हाथ वापस आये। लेक्चर के बाद मैंने आकर उनसे पूछा, तो उन्होंने कहा कि शेर पड्डे को मारकर उत्तर की तरफ घनी झाड़ियों में ले गया है और पैर के निशानों से मालूम होता है कि शेर पुराना है। मैंने सोचा कि शाम को कुछ लुत्फ आयेगा। हम वहाँ क्लास को दो टुकड़ों में अलग-अलग छपान और थिनिंग करने १०½ बजे ले जाते थे और करीब ४ बजे के वापस आते थे। मैंने मिस्टर काँजीलाल से कहा कि आज क्लास को थोड़ा जल्दी यानी ३ या ३½ बजे वापस ले आइयेगा और मैं भी उसी वक्त आ जाऊँगा। मैं ४ बजे वापस आ गया; मगर मिस्टर काँजीलाल ने उस रोज खास देर लगा दी। मैं चाय पीकर आदमी, मचान, रस्सी, कुल्हाड़ी वगैरह लेकर उनका इंतजार करता

रहा और वह ४½ बजे आये। हम ५ बजे के बाद रवाना हो सके, चूँकि काफी देर हो चुकी थी। जब हम आहिस्ता-आहिस्ता घसीटन पर गये और लाश के करीब पहुँचे तो देखा कि शेर लाश को खा रहा था; जो कि हमको बन्दरों की और चिड़ियों की खतरे वाली आवाजों से मालूम हुआ और हमारी आहट से वह हट गया। हमको लाश तक पहुँचने, मुनासिब दरख्त छाँटने और मचान बाँधने में करीब ४५ मिनट के लग गये। बावजूद इन्तहाई जल्दी करने के हम अहतियातन एक कम्बल और बड़े कोट ले गये थे। और चूँकि देर हो चुकी थी इसलिए इरादा था कि कम-से-कम ३ घंटा यानी करीब नौ बजे रात तक बैठेंगे। लेकिन नातजुरबेकारी की वजह से हमने मचान को लाश के बहुत करीब यानी दस कदम के अन्दर ही बाँधा, जो कि २५ से ४० कदम पर होना चाहिए था और उस सीध में हरगिज न होना चाहिए जिधर शेर गया है; जो कि पैरों के निशान से मालूम हो सकता है, क्योंकि उसी रास्ते वह वापस भी आता है। और चूँकि रुक - रुक कर और आहट लेकर बहुत होशियारी से आहिस्ता-आहिस्ता आता है। इसलिए अकसर वह शिकारी को देख लेता है। हमारे आदमी हमको मचान पर बिठाकर बोलते हुए चले गये और इसके करीब एक घंटे के बाद शेर की आमद करीब ५० कदम तक गीदड़ और बंदरों की खतरेवाली आवाज से मालूम पड़ी। लेकिन उसने हमको जरूर देख लिया; क्योंकि हम मचान को चारों तरफ से पत्तीदार शाखों से ढकना जल्दी में भूल गये थे। वह इधर-उधर मचान के गिर्द घूमता रहा; मगर लाश पर नहीं आया। हमारे आदमी हिदायत के मुताबिक ९ बजे आये और हमसे कोई जवाब न मिलने पर वापस चले गये। चूँकि शेर इर्द-गिर्द ही घूम रहा था इससे हमको उम्मीद हुई कि वह देर-अबेर से रात में आवेगा। लिहाजा हमने रात भर बैठने का इरादा किया। दस बजे के बाद हमको जाड़ा लगना शुरू हुआ और तंग मचान में सिकुड़े हुए बैठने से तकलीफ भी होने लगी। आखिरकार रात के १२ बजे के बाद से मिस्टर काँजीलाल ने मेरे शेर के शिकार के शौक की ऐसी तकलीफ

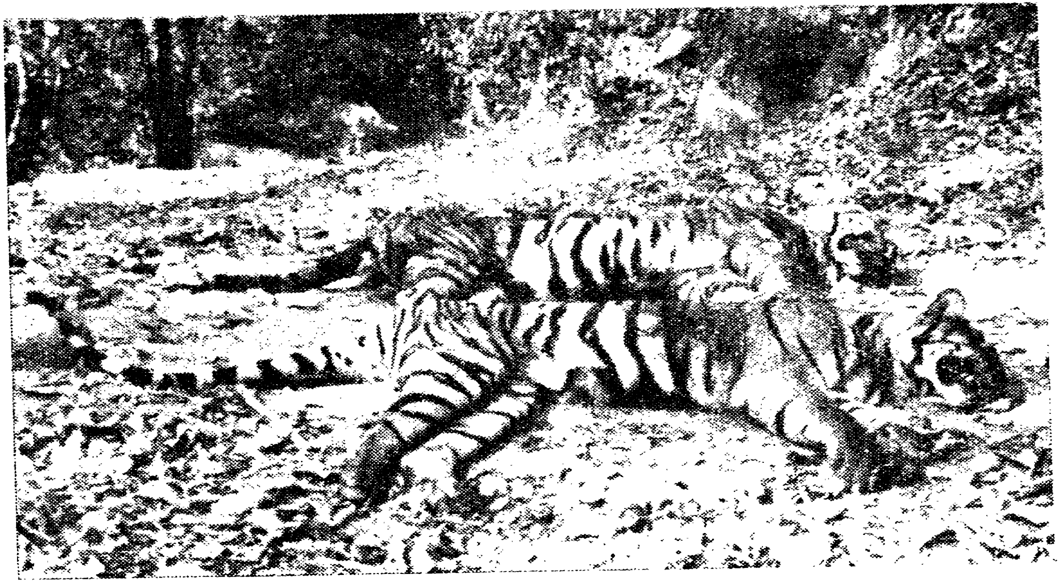
वाली हालत में मलामत करना शुरू की। रात के पिछले पहर सर्दी नाकाबिल बर्दाश्त हो गयी। हमारी गर्दन व हाथ-पैर जकड़ गये और हम अपनी उँगलियाँ और हाथ तक न स्तेमाल कर सके। मचान छोटा होने से पैरों को भी न फैला सके। सुबह होने तक हम बहुत ही परेशान हो गये और मैं अपनी रात भर बैठने की राय पर बहुत शरमिंदा था।

जब सूरज निकल रहा था हमारे आदमियों ने सीटी दी और हमने जवाब दिया—आओ। उनके आने पर हम मचान से सर्दी से जमे हुए हाथ-पैरों से मुश्किल से उतरे और कैम्प में दर्द सर, जुकाम, गले में खराश लेकर आये; जिससे एक हफ्ता के बाद आराम हुआ।

हमने दूसरे दिन यह देखने भी किसी को न भेजा कि शेर ने रात में पड्डे को खाया है या नहीं और आयंदा मार्च सन् १९१५ तक शेर के लिए कोई कोशिश नहीं की।

मार्च सन् १९१५ में हम ट्रेनिंग स्कूल को पातलीदून कालागढ़ फ़ॉरेस्ट डिवीज़न में विद्यार्थियों से आयंदा साल बिक्री व कटान के लिए एक कूप छपवाने के लिए ले गये। पातलीदून हिमालिया और सिवालिक पहाड़ों के बीच में क़रीब १२ मील लम्बा और १ से ३ मील चौड़ा मैदानी इलाका रामगंगा नदी के किनारे-किनारे है। इस मैदानी इलाके में जंगल, ऊँची-ऊँची घास के रक़बे और जगह-ब-जगह नाले व चश्मे हैं, जिनका पानी रामगंगा में गिरता है। ये नाले जाड़े व गर्मी में अधिकतर खुश्क रहते हैं और चंद में थोड़ा-बहुत पानी हमेशा जारी रहता है। इनके किनारे घने जंगल व झाड़ियाँ हैं। इस पातलीदून के इलाके में हर तरह का शिकार, चिड़ियों और तरह-तरह के जानवरों का कसरत से पाया जाता है। रेलवे से दूर होने की वजह से और नज़दीक में आबादी न होने की वजह से यहाँ शिकारी कम पहुँचते हैं। सिवाय बड़े लोगों के जो हर तरह का सामान अपने ही साथ ले जा सकें। कालागढ़ फ़ॉरेस्ट डिवीज़न का यह इलाका हर क़िस्म के शिकार और महाशेर मछली के लिए रामगंगा नदी इस प्रांत

Plate No. III.



Two male tigers shot by a friend in an hour from the same machan

में मशहूर हैं, जहाँ गवर्नर और वायसराय भी करीब-करीब हर साल शिकार के लिए आते रहते थे और लार्ड लिनलिथगो वायसराय को मुक़ाम ढिकाला का दोमंज़िला बँगला रामगंगा के किनारे बहुत पसंद था, जहाँ वह काम से परेशान होकर अक्सर महाशेर मछली के शिकार में तफरीह के लिए हर साल चन्द दिनों के लिए आते थे। अब वहाँ हेली पार्क के नाम से इस सूबे में करीब ५० वर्गमील के रक़बे को हर किस्म के शिकार से बन्द कर दिया है ताकि जानवर और चिड़ियाँ यहाँ हिफ़ाज़त से रहें, तादाद में बढ़ें और आसपास के जंगलों में फैलें। उस समय सन् १९१५ में वहाँ शिकार खेलना बंद न था और शेर, गुलदार, रीछ, चीतल, साँभर, काँकड़, सुअर, चीत व मोर-मुरगी वग़ैरह हर किस्म का शिकार कसरत से पाया जाता था। घास के रक़बे जनवरी में जला दिये जाते हैं और फरवरी से जून तक नयी घास खाने के लिए हर रोज़ शाम को इस पातलीदून में जगह-ब-जगह सैकड़ों के गोल चीतलों के और इनके साथ दरजनों दीगर किस्म के जानवर चरते नज़र आते थे और इनकी ख़्वाहिश में शेर व गुलदार भी जगह-ब-जगह पीछे लगे रहते थे। कभी-कभी जंगली हाथी भी दिखलायी पड़ते थे। चन्द चीतल फ़ोटो में दिखलायी देते हैं; जोकि मेरे दोस्त मुंजीर अहमद व सराजुद्दीन अहमद ने लिये थे। एक दिन शाम को एक ही मचान से उन्होंने दो नर शेर १० फुट से ऊपर मारे, जिनका भी फ़ोटो दिया हुआ है। पातलीदून में पहुँचकर हमने अपना कैम्प एक साल बनी में सड़क के उत्तर लगाया और सड़क के दक्खिन में मिस्टर पूरी एक्स्ट्रा असिस्टेंट कंसरवेटर कैम्प किये हुए थे। वे भी छपान कर रहे थे। हमारे दोनों कैम्प बियाबान जंगल में थे; जहाँ १५-२० मील तक चारों तरफ कोई आबादी नहीं थी, सिवा ढिकाला रेंज कार्टर और बँगला के; जोकि ४ मील पश्चिम तरफ इसी सड़क पर था और जहाँ करीब १ दर्जन के अहलकारान रहते थे। हर रोज़ शाम से सुबह तक किस्म-किस्म की बोलियाँ, जानवरों, चिड़ियों और बंदरों की मामूली और खतरों की सुनायी

देतीं। जिनको हम चौकीदार कहा करते थे और जिनकी आवाजों से हमको शेर व गुलदारों के चलने-फिरने का अन्दाज होता था। दिन में उनके पैरों के निशान देखकर पूरा यकीन होता था। इसी तरह से कई दिन गुजरे। कभी-कभी शेर, गुलदार हम दोनों के कैम्प के बीच से सड़क पर रात को गुजर जाते थे। मैं इस बियाबान जंगल में जंगली जानवरों की चारों तरफ मौजूदगी से बहुत खुश था; जितना कि मुझे कलकत्ता, बंबई वग़ैरह बड़े शहरों में भी खुशी न होती थी।

---

१४. हमारा पहला दिलचस्प मुक़ाबिला रीछ से

एक दिन शाम को मैं राइफल, बन्दूक और अरदली को लेकर सड़क-सड़क ढिकाला की तरफ मुरगी मारने और शेर के लिए पड्डा बाँधने की मुनासिब जगह तलाश करने की गरज़ से चला गया। करीब आध मील हम गये होंगे तो चीतलों का एक गोल जंगल से निकल कर हमसे सौ कदम पर सड़क के किनारे खुले हुए रक़बे में फ़ायर लाइन पर चरने लगा। थोड़ा और आगे बढ़कर मैंने इसमें से एक नर राइफल से मारा, बाकी सब भाग गये, हम आधा मील और आगे गये--और एक पहाड़ी मुर्ग और मारकर वापस आये। चूँकि चीतल को ले जाना मुश्किल था इसलिए हमने उसको घसीट कर जंगल में पत्तों से छिपा दिया और सड़क पर उसके सामने एक साख जगह पहचानने के लिए डाल दी और कैम्प में वापस आकर अरदली से कहा कि सुबह चन्द आदमी ले जाकर चीतल को उठा लाना। कैम्प के आदमी गोश्त की लालच में हमारे उठने से पहले ही बग़ैर कहे जा चुके थे और खाली हाथ वापस आकर बतलाया कि चीतल को ६० व ७० कदम पर जंगल में कोई घसीट ले गया है और पीछे की तरफ से काफी खा गया है। पीछे से शेर और सीना से गुलदार खाता है।

Plate No. II.



Chitals (spotted deer) in their forest home.

लिहाज़ा ख्याल हुआ शेर ने खाया है। मैं मिस्टर काँजीलाल के डेरे में गया और उनको कुल वाक़िया बतलाने के बाद मैंने कहा कि आज शाम को मचान बाँधकर बैठेंगे। उन्होंने कहा कि हम शेर के लिए नहीं बैठते और कहा कि आज तो मिस्टर पूरी ने हम दोनों की शाम को दावत भी की है। मैंने कहा कि घंटा दो-घंटा बैठकर आप दावत खाने चले आइयेगा और मैं रात भर बैठूँगा। उस जमाने में रात को शिकार मना नहीं था।

काम पर जाने से पहले मैंने मिस्टर पूरी से कहा कि मैं आपकी दावत में शरीक न हो सकूँगा और मिस्टर काँजीलाल देर से आवेंगे। मैंने उसकी वजह भी बतलायी। उन्होंने कहा कि हमारे पड़ाव में रेन्ज का कुत्तेमार शिकारी आज आया हुआ है। उससे तुमको मदद मिलेगी। शाम को काम से वापस आकर चाय पीकर मैं और मिस्टर काँजीलाल मय मचान, रस्सियाँ, बन्दूक, रायफल कुल्हाड़ी और दो अरदलियों के रवाना हुए और कुत्तेमार शिकारी को भी बतौर रहनुमा के ले लिया। उसकी सलाह पर पड्डे को भी ले लिया। उसने कहा कि पड्डे को चीतल की लाश के पास बाँध देना, ताकि जब शेर आवे तो पड्डे को जिंदा देखकर उसकी तरफ मुतवजेह हो जावे, तुम को न देखे।

शेर के पिछले नाकामयाब तजुरबों से मुझे शिकारी की यह तजवीज़ बहुत पसंद आयी। हमको घास और पत्तों की वजह से कोई पैर का निशान लाश के पास नहीं दिखलायी दिया। गो सड़क पर पुराने शेर के और रीछ के निशानात थे; जोकि मैंने शाम को भी देखे थे। हमने सबकी राय से एक बहुत बड़ा बरगद का दरख्त चीतल की लाश से १५ व २० कदम पर छाँटा और एक चारपाई उस पर जमीन से करीब १० व १२ फिट ऊँचाई पर बाँधी। पड्डे को चीतल की लाश के पास बाँध दिया और हम दोनों चारपाई पर डेरे की पुरानी दरी चौहरी बिछाकर बैठ गये। सब आदमियों को कैम्प भेज दिया और कह दिया कि अगर फायर सुनें तो आ जावें, नहीं तो अँधेरा होने

तक आवें। रात चाँदनी थी। मगर उस दिन बदक़िस्मती से बादल घिरे हुए थे। हम करीब आधे घंटे से बैठे हुए थे कि दक्खिन की तरफ से पहाड़ी ऊँचे-नीचे रकबे से किसी जानवर के आने की आवाज सूखे पत्तों में सुनायी दी और रफ्ता-रफ्ता ज्यादा तेज और हमारी तरफ आती हुई मालूम हुई। मैंने कहा कि चीतल या साँभर आ रहा है; क्योंकि शेर के चलने की आवाज पत्तों में भी बहुत कम होती है। वह आवाज करीब ४० कदम पर रुक गयी और ऐसा अन्दाजा हुआ कि कोई जानवर बैठ गया, जोकि चीतल, साँभर की आदत के खिलाफ था। उसने जमीन को खोदना और मिट्टी व पत्थर पहाड़ की ढाल से नीचे सूखे पत्तों पर गिराना शुरू किया। हम बवजह घनी झाड़ियों के उसको देख न सके। थोड़ी देर वह खोदना जारी रहा, फिर इधर-उधर चलने की और लंबे साँस लेने की भी आवाज सुनायी देती रही। करीब १५ मिनट बहुत मेहनत से खोदने के बाद बड़े जोर-जोर उल्टे साँस लेने की आवाज शुरू हुई। इस तरह पर कभी खोदना कभी उल्टी साँस लेना, जिससे खास किस्म की आवाज निकलती थी, करीब आध घंटे के जारी रहा। हम दोनों बहुत हैरत में थे। कभी हँसी आती थी। कभी सोचते थे, कि क्या जानवर होगा। थोड़ी देर खामोशी के बाद उसने हमारी तरफ आना शुरू किया। हम दोनों ने रायफल और बन्दूक उसकी तरफ धड़कते हुए दिल से उठाना शुरू किया तो देखा कि एक बुड्ढा रीछ जिसके बाल जगह-जगह से गिरे हुए थे लापरवाही से बेवकूफ की तरह सीधा चीतल की लाश की तरफ जा रहा है। हमारा पड्डा कान खड़े किये हुए रीछ की तरफ गौर से देखता हुआ जिस कदर रस्सी ने इजाजत दी, आहिस्ता-आहिस्ता पीछे हटता गया। पड्डे के करीब एक बालिश्त लम्बे सींग थे और बहुत तन्दुरुस्त था। जिस तरह के पड्डे शेर के बाँधे जाते हैं उनसे बड़ा था। रीछ ऐसा बेवकूफ और लापरवा था कि उसने सिवाय चीतल के और किसी तरफ न देखा और पड्डे की मौजूदगी से बिल्कुल बे खबर था। जब रीछ लाश से करीब २० कदम होगा,

पड्डा पीछे हटकर खामोश खड़ा हुआ रीछ की तरफ घूड़ रहा था। मिस्टर काँजीलाल ने आहिस्ता से पूछा कि मारूँ। मैंने कहा—नहीं। शेर का इन्तजार करेंगे। जैसे ही रीछ लाश के पास पहुँचा और एक तरफ मुड़ा था कि पड्डे ने अपनी पूरी ताकत से सर की एक ठोकर रीछ के पुट्ठे पर इस जोर से मारी कि रीछ उसके धक्के से गिर गया और पड्डा रस्सी के झटके से कलाबाजी खाकर रीछ ही के ऊपर पूरे बोझ से गिरा। रीछ को क्या खबर थी कि मरे हुए चीतल से यह आफत टूट पड़ेगी। उसने एक जोर की चीख़ मारी कि हम चौंक पड़े और अपना पिछला धड़ घसीटता हुआ और चीखता हुआ हमारे ही दरख्त पर चढ़ गया, इसका हमको भी मुतलक खयाल व गुमान न था और हम अब तक तमाशा देख रहे थे। हम हँसी को बहुत मुश्किल से रोक रहे थे। यह देखकर कि रीछ आ पहुँचा, हम दोनों भी बिजली की तरह मचान पर खड़े हो गये। हमारी हँसी अब कुछ और हालत में बदल गयी। मिस्टर काँजीलाल ने कहा कि वह आ गया। उनका टोप घबराहट और उस रोज की गैर मामूली फुरती से नीचे गिर पड़ा। चारपाई पर डेरे पर की दरी चार पर्त की बिछी हुई थी और चारों तरफ लटक रही थी। मैं घबराकर नीचे देखने लगा कि जैसे ही वह सर चारपाई के ऊपर निकाले तो मैं बन्दूक की दोनों फैर सर पर दाग दूँ। दरी की वजह से न रीछ हमको देख सकता था और न हम रीछ को देख सकते थे। रीछ को हमारे खड़े होने से चारपाई हिलने और बोलने से और टोप के गिरने से यकीन हो गया कि दरख्त पर भी कोई भूत है। जमीन पर पड्डा उसकी तरफ सर झुकाये हुए जोर से फुंकार रहा था और दूसरी टक्कर देने को तैयार खड़ा था। लिहाजा रीछ मचान के नीचे ही देर तक जहाँ था वहीं लटका रह गया और हम दोनों नातजुरबेकार शिकारी मचान पर खड़े घबड़ा रहे थे। मुझे जो कुछ याद है वह यह है—मिस्टर काँजीलाल अपनी ऐनक सँभालते हुए कह रहे थे कि बहुत बड़ा है। थोड़ी देर के बाद मैंने ख्याल किया कि इस तरह से कब तक खड़े रहेंगे। लिहाजा पैर से दरी को हटाना शुरू

किया, ताकि चारपाई के सूराखों से रीछ के सर में गोली मारूँ। मगर चूँकि बूट पहने हुए था दरी को न हटा सका। बेचारा रीछ यह सब हरकतें सिर्फ पड्डे के डर से बरदाश्त कर रहा था जिसने अपनी पहली ठोकर से उसको जमीन पर गिराकर कमर टेढ़ी कर दी थी और फिर दूसरे हमले के लिए बिल्कुल तैयार खड़ा था। मैंने झुककर जैसे ही दरी को उसके सर के करीब से घसीटना शुरू किया उसने ख्याल किया कि शायद ऊपर से कुछ और नयी मुसीबत आनेवाली है। उसने जोर से एक और चीख मारी कि हम दोनों डर गये। वह जमीन पर कूदते ही पिछले धड़ को घसीटता और शोर मचाता हुआ भागा और एक दरख्त से टकराता हुआ फिर गिरा। फिर दूर तक शोर मचाता हुआ ही जंगल में गायब हो गया। हम दोनों फिर लम्बी साँस लेते हुए मचान पर बैठ गये और जब खतरा जाता रहा तो एक दूसरे की बहादुरी की तारीफ करते हुए और इल्जाम देते हुए खूब हँसे। खुशकिस्मती से वहाँ कोई और हमारी शकलें देखने को और इस वाक़िया को दूसरों से बयान करने को न था। मुझे यकीन है कि अगर कोई आदमी हमारे और पड्डे की सीध में मूवी केमरा लिये हुए दूसरे पेड़ से तस्वीरें खींच लेता तो सिनेमा के लिए बहुत ही कीमती तस्वीरें होतीं। मिस्टर काँजीलाल ने कहा कि अब सब मामला खतम हो गया। इसी बदमाश ने चीतल को खाया था। अब वापस चलना चाहिए। मैंने कहा—नहीं। मैं तो शेर का इन्तजार करूँगा। थोड़ी देर बाद अँधेरा होते ही हमारे आदमी आ गये और काँजीलाल उतर कर जाने लगे। उन्होंने कहा कि बादल घिरे आ रहे हैं। रात अँधेरी होगी। कहीं भंडार पानी की तरह रात काटना मुश्किल न हो जाय। मैंने कहा—तब जाड़े थे और अब गर्मियाँ हैं। अगर बादल हट गये और चाँद निकल आया तो शायद मुझे इससे भी ज्यादा तमाशा देखने को मिले; जोकि अभी हम देख चुके हैं, लिहाजा मैं ठहरूँगा। उन्होंने थोड़ी दूर जाकर फिर कहा कि सोच लो। कहीं अकेले में बहुत बड़ा तमाशा न हो जाय? मैंने कहा—आप जायँ। मैंने राइफल और बन्दूक दोनों

रख लीं। क्योंकि बन्दूक से कम रोशनी में भी ब-मुक़ाबले राइफल के निशाना लगाना आसान होता है। मैंने दरी को ठीक किया और पैर फैलाकर लेट गया, ज्यादातर इस ख़याल से कि रात भर में कुछ-न-कुछ और तमाशा देखने को जरूर मिलेगा। १२ बोर को शेर पर चलाने का कतई इरादा न था। थोड़ी देर में बादल बहुत गहरे आ गये और इस कदर अँधेरा हो गया कि अपने हाथ भी नहीं दिखलायी देते थे। आँधी चलने लगी। बिजली कौंदने लगी और फिर करीब एक घंटे के बाद सख्त तूफान आया कि पेड़ झूमने लगे और आस-पास में गिरने लगे। मेरा पेड़ तो बहुत बड़ा और मजबूत था, मगर आस-पास के पेड़ों का मेरे ऊपर गिरने का डर लगने लगा। मैं उठकर बैठ गया और अपनी हिमाकत पर पछताने लगा कि बड़ा-बड़ा ओला गिरना शुरू हो गया। ओला काफी देर तक गिरा। मैंने सर बचाने के लिए दरी ओढ़ ली, जब ओला गिरना बन्द हुआ तो दो घंटा खूब जोर की बारिश हुई। दरी और मेरे कपड़े बिलकुल भीग गये। करीब ११ बजे के बारिश तो बन्द हो गयी मगर तेज हवा और बिजली कूँदती रही और जाड़ा नाकाबिल बर्दाश्त बढ़ने लगा। सब उम्मीदों पर पानी पड़ गया। मैंने मायूस होकर कैम्प जाने का इरादा किया। बन्दूक के बीच में रूमाल बाँधकर दाँतों से पकड़ कर नीचे उतरा, जो कि बहुत ऊँचा न था। जैसे ही मैं जमीन पर कूदा, पड्डा जो कि शायद बैठा हुआ था खड़ा हो गया और पत्तों में मुझे चलने की आवाज सुनायी दी। मैं पड्डे की बाबत भूल गया और ख्याल हुआ कि शायद शेर आ गया है। चूँकि मैं जमीन पर था, मैंने अपनी पूरी ताक़त से लुहा-लुहा की आवाज दी और सड़क की तरफ आहिस्ता-आहिस्ता टटोलता हुआ रवाना हुआ। अँधेरे में बिलकुल दिखायी न देता था और मेरा पैर एक गड्ढे में पड़ गया। मैं मुँह के बल बुरी तरह गिरा। मेरा सर एक पेड़ से टकराया और बन्दूक हाथ से छूटकर आगे गिरी; जिसको मुश्किल से ढूँढ़ सका। ख्याल था कि कुंदा टूट गया होगा; मगर बच गया। डर के मारे बावजूद काफी चोट लगने के जल्दी उठकर फायर

लाइन पर मुश्किल से आया। कैम्प इस जगह से डेढ़ मील पर था। मैं आहिस्ता-आहिस्ता कभी बिजली की चमक की मदद से पड़ाव पर बारह बजे के बाद पहुँचा। सब सो गये थे। मैं अपने डेरे में जाकर बगैर खाये सो रहा। यह दूसरी हिमाकत थी; जोकि भंडारपानी के तजुरबे के बाद की।

१५. एक रात जंगल में

एक हफ्ता के अन्दर मैंने आस-पास की तमाम सड़क फायर लाइन और नाले को देख लिया। हर रात को एक नर शेर हमारे कैम्प के एक मील पूरब तरफ एक नाले में होकर साल के जंगल से निकलता और सड़क के उत्तर तरफ रामगंगा नदी में पानी पीने जाता था। मैंने भैंस के पड्डे को उसी जगह बाँधने का इरादा किया। वैसे तो वहाँ आस-पास कई शेरों के पैर के निशान मिलते थे, मगर यह उस क्षेत्र का सबसे बड़ा नर शेर था; लेकिन मिस्टर काँजीलाल को जुकाम व खाँसी हो गयी। इसलिए पड्डे का बाँधना बन्द कर दिया; मगर वहाँ का कैम्प खतम होने से पहले मैं एक रात को बगैर पड्डे के दो नाली बंदूक लेकर मचान को नाले और सड़क के मिलान पर बाँधकर ९ बजे रात से बैठ गया, ताकि चाँदनी रात में उस बड़े नर शेर को देखूँ; जो कि उस रास्ते से रोज पानी पीने जाता था। मैंने पूरी चारपाई बाँधी थी और एक कम्बल ले गया था। मैंने अपने आदमियों से कह दिया कि कैम्प चले जाओ और मैं सुबह आऊँगा। चारों तरफ जंगल में खामोशी थी, सिवाय छपका चिड़ियों की खुट-खुट की आवाज के या राम गंगा के पानी के बहने की सनसनाहट के शोर के, जो कि उत्तर तरफ में पीछे दो फर्लाङ्ग पर ऊँचे पहाड़ की जड़ में बह रहा था। हलकी ठंडी हवा चल रही थी। चाँद निकलना शुरू हुआ और रोशनी फैलनी शुरू हुई। करीब १५ चीतल फायर लाइन पर पच्छिम की तरफ से

यानी हमारे कैम्प की तरफ से आये। वह नाला, जिससे शेर के आने की उम्मीद थी, मेरे दाहिने हाथ की तरफ बीस कदम पर था। जब चीतल नाले को पार करके मेरी तरफ़ आये तो एकाएक सब खतरे की आवाज देते हुए पूरब तरफ फायर लाइन और सड़क पर भाग गये। मैं ग़ौर से देखता रहा। मगर चूँकि चाँद अभी पहाड़ से ऊपर नहीं निकला था, रोशनी कम थी, कुछ न दिखायी दिया। करीब ५ मिनट के बाद नाले में बजरी, बालू पर कुछ चलने की आवाज सुनायी दी कि कोई जानवर नीचे रामगंगा की तरफ जा रहा है; मगर दिखायी न दिया। मुझे ख्याल हुआ कि शायद वह शेर जिसके देखने के लिए मैं बैठा था, निकल गया। धीरे-धीरे चाँद पहाड़ के ऊपर निकल आया और अब चाँदनी काफ़ी फैल गयी। नाला भी साफ दिखायी देने लगा। करीब १० बजे के एक गोल १०-१२ छोटे-बड़े सुअर का आया और इतमीनान से फायर लाइन पर जड़ें खोदते और खाते हुए सामने साल के जंगल में चला गया। वहाँ भी वे सूखे पत्तों में खड़-बड़ करते रहे और आपस में लड़ते रहे; मगर अब दिखलायी नहीं देते थे। इसके बाद एक जोड़ा सियाही का आगे-पीछे सड़क पर धीरे-धीरे पच्छिम से पूरब की तरफ आता रहा। वे दोनों एकदम से डर गये और सर उठाकर पूरब की तरफ देखा। वे मेरे मचान के नीचे से ढाल में राम-गंगा की तरफ उतर गये। मैं उनके खौफ़ की वजह न समझ सका। सुअर अभी तक सूखी पत्तियों में साल के जंगल के अन्दर करीब ५० कदम पर शोर मचा रहे थे। थोड़ी देर के बाद एक सुअर ने जोर से चीखना शुरू किया और बाकी सब इधर-उधर शोर मचाते हुए भागे। चन्द मिनट तक शोर और पत्तों में काफी खड़बड़ हुई। बाद को गर्राहट की हलकी आवाज आना शुरू हुई; जिससे अन्दाज हुआ कि इनमें से एक को शेर ने पकड़ लिया; जो कि पूरब से आ रहा था और जिसको देखकर सियाही का जोड़ा भागा था। थोड़ी देर भारी साँस और खामोशी के बाद घसीटने की आवाज सूखी पत्तियों में फायर लाइन और सड़क से गुजरते हुए रामगंगा की तरफ ढाल और ऊँची

घास में मचान से करीब ५० कदम पूरब मालूम हुई। फिर करीब आध घंटे तक साफ़ आवाज़ खाने की और हड्डियाँ चबाने की आती रही। बाद इसके फिर शेर शायद शीशम की घनी बोझी में होता हुआ रामगंगा में पानी पीने गया और वहाँ से ५-६ मर्तबा बोला, जिस पर दो तरफ़ से दूसरे शेरों ने करीब आध मील पर जवाब दिया और फिर करीब दो घंटा के खामोशी रही। सर्दी भी बढ़ती गयी और कोई उम्मीद शेर के देखने की नज़र न आयी। मैं लेट गया और कम्बल ओढ़ लिया। मगर सर्दी की वजह से नींद न आयी और सोचा कि बाकी रात अपने डेरे में जाकर आराम से सोना चाहिए। चाँद बहुत ऊँचा निकल आया था। करीब १ बजे के मैं उठ पड़ा। कम्बल लपेटा और दिल धड़कते हुए मचान से उतरा। बन्दूक में एक गोली और एक गर्राब लगा कर कैम्प की तरफ रवाना हुआ। मैं १० व १५ ही कदम गया हूँगा कि मुझे खतरा महसूस हुआ। बाल खड़े हो गये। आगे देखा तो कोई जानवर कैम्प की तरफ से नाले के उस पार करीब ४० व ५० कदम पर आ रहा था। मैंने इरादा किया कि फिर मचान पर वापस जाऊँ। यह सोचते हुए हम दोनों एक दूसरे की तरफ चल रहे थे कि जानवर भी साल के जंगल के साये से खुले हुए नाले में उतर आया। अब मैं उसकी चाल-ढाल देखकर घबराया कि शेर जैसा मालूम पड़ता था। वापस जंगल में भागना बेकार था, जिससे उसको और हिम्मत होती। अब फ़ासला मुश्किल से करीब ३० कदम के रह गया। मेरे पैरों में ब्रेक लग गया। शोर मचाना चाहता था मगर आवाज़ न निकली। मैंने बन्दूक कन्धे से नीचे उतारी कि एक फ़ैर मैं डराने के लिए करूँ, शेर भी खड़ा हो गया। एक हलकी आवाज़ हाऊँ की करके पहाड़ की तरफ़ नौ उमर शीशम की बोझी में घुस गया; जो कि आदमी के बराबर ऊँचे थे। मैंने रास्ता साफ देखकर फिर आगे चलना शुरू किया और जहाँ वह जंगल में घुसा था वहाँ देखा तो शेर किनारे से चार-पाँच कदम पर खड़ा हुआ था। जब मैं करीब से गुज़र गया और मेरे हवास ठीक हुए तो मैंने नाला पार

करने के बाद पीछे मुड़कर देखा तो शेर फिर सड़क पर पूरब तरफ जा रहा था। मैं तेज कदम कैम्प में पहुँचा और सीधा विस्तर पर जा लेटा। सुबह जब हम काम पर जा रहे थे तो देखा कि बराबर शेर के पैर के निशान सड़क पर लगे हुए थे ; सिवाय नाले के, जहाँ वह थोड़ी देर के लिए जंगल में घुस गया था। शेर और गुलदार सड़क पर दूसरी तरफ से आते हुए जब मिलता है तो अक्सर इसी तरह जब वह ३०-४० कदम रह जाता है, तो एक तरफ जंगल में चला जाता है और थोड़ी ही दूर पर घूम कर खड़ा होकर रास्ते की तरफ छिपा हुआ देखता रहता है। इस तरह बहुत अच्छा मौका इतमीनान से १० फीट से गोली चलाने का देता है, बशर्ते कि शिकारी में हिम्मत हो और निशाना सच्चा हो।

सन् १९१५ ई० में दो वष की निहायत ही खुशगवार कम्पनी के बाद मैं और मिस्टर काँजीलाल जुदा हुए। पहली लड़ाई की किफायतशारी की वजह से गवर्नमेंट ने २ वर्ष के लिए फॉरिस्ट ट्रेनिंग स्कूल बन्द कर दिया। मिस्टर काँजीलाल का तबादला इम्पीरियल फारेस्ट कालिज देहरादून रेन्जर क्लास के असिस्टेंट इंस्ट्रक्टर होकर और मेरा तबादला रेन्ज अफसर फोर्ट रेन्ज नार्थ खीरी फारेस्ट डिवीजन का, बावजूद मेरे उजर करने के हो गया ; जोकि मेरी जन्म-भूमि सिंगाही से सिर्फ ६ मील की दूरी पर था।

१६. मेरा पहला रीछ

मेरा नया रेन्ज कार्टर मुकाम बिलरायाँ पर रेलवे स्टेशन के करीब १ फरलाँग पच्छिम और गवर्नमेंट फारेस्ट के करीब १ मील पूरब था। चारों तरफ खेती और कहीं-कहीं वीरान था। सरकारी जंगल की सरहद से मिला हुआ रियासत सिंगाही का जंगल और कहीं-कहीं खेती थी। मुझे यह जगह बहुत पसन्द आयी। मेरे चार्ज लेने के बाद

बरसात में सिंगाही रियासत के एक काश्तकार ने जंगलात की कुछ जमीन सरहद पर दबा ली, जिसके मुआइने के लिए एक दिन सुबह हम दोनों तरफ के अफसरान रियासत के हाथी पर गये। बरसात का जमाना था। जंगलात के काम बन्द थे और सड़कों पर घास खड़ी हुई थी। वापसी में सरहद के किनारे-किनारे आ रहे थे। कुछ दूर पर मिट्टी उड़ती दिखलायी दी। नजदीक पहुँचकर देखा कि एक रीछ दीमक की बामी खोद रहा है। हाथी की आहट पाकर रीछ ने गढ़े से मुँह निकालकर देखना शुरू किया। मेरे पास ३५० बोर वेन्चेस्टर रायफल था। मैंने उसकी बगल में गोली मारी। रीछ उसी जगह गिर गया। यह औसत दरजे का नर और मेरा पहला रीछ था। मगर इसके मारने में कोई लुत्फ नहीं आया; जैसा कि शेर व गुलदार के मारने में आता है और न इसकी खाल ही किसी काम की थी।

१७. मेरा तीसरा बिला शिरकत गुलदार

एक रोज एक पागल कुत्ता मेरे आहाते में आ गया और मेरे एक कुत्ते को काट खाया। मैंने उसको मारकर रियासत और सरकारी जंगल की सरहद पर शाम को रखवा दिया; जहाँ अक्सर गुलदार के पैरों के निशान दिखायी देते थे। दूसरे दिन सुबह देखा कि वह कुत्ते की लाश को रियासत की एक घनी झाड़ी में घसीट ले गया और आधा खा गया। शाम को मैं उसके नजदीक एक पेड़ पर कुरसी बाँधकर बैठ गया। करीब एक घंटे के बाद वह सरकारी जंगल से आहिस्ता-आहिस्ता आकर सरहदी सड़क के किनारे खड़ा हो गया और इधर-उधर देखकर आहिस्ता-आहिस्ता सड़क पर से गुजरता हुआ रियासत के जंगल में लाश से करीब १० कदम, मुझसे करीब बीस कदम, मेरी और लाश की एक ही सीध में खड़ा होकर इधर-उधर फिर देखने लगा। चूँकि मैं बेढके हुए सामने बैठा था, उसने मुझे देख

लिया। मैंने अपनी १२ बोर बन्दूक का निशाना उसकी आँख पर पहले ही से ताक लिया था। जैसे ही उसने मुझे देखा, मैंने लिबलिबी दबा दी और वह आवाज ही के साथ गिर पड़ा। यह मादीन ७ फीट की थी। उस रोज मैंने महसूस किया कि अकेले बैठने में कामयाबी का कितना ज्यादा और दो-तीन मिलकर बैठने में कामयाबी का कितना कम मौका मिलता है।

दूसरी गलती जो मैंने की थी वह यह थी कि मचान, आनेवाले गुलदार से, लाश से और मुझसे एक ही लाइन में था। मचान को एक बगल से होना चाहिए था, ताकि आनेवाले जानवर की निगाह के सामने न पड़ता। तीसरी गलती यह की कि मचान बहुत नजदीक बाँधा; जोकि कम-से-कम २५ से ४० कदम पर बाँधना चाहिए और ऊँचाई ८ व १० फीट काफी है। चौथे, मचान को पत्तीदार शाखों से अच्छी तरह ढक लेना चाहिए, ताकि शिकारी को जानवर जल्दी न देख सके, मगर शिकारी आनेवाले जानवर को जरूर देख ले। नौ उमर और नातजुरबेकार शिकारी मचान से शेर, गुलदार के शिकार में अगर ऊपर लिखी हुई अहतियात करेंगे तो कामयाबी ज्यादा होगी। आम ख्याल यह है कि शेर-गुलदार दूसरे का मारा हुआ या मरा हुआ जानवर नहीं खाते हैं। यह बिलकुल गलत है। जैसा कि मेरे तजुरबे में आया है और आगे इस किताब में भी जिकर है।

१८. मेरा पहला दाँतवाला नर सुअर

बारिश के खतम पर एक दिन दो गाँववाले आये और कहा कि हम दो-तीन दिन से अपना जुवार का खेत काट रहे हैं। उसमें एक बड़ेला यानी दाँतवाला सुअर रहता है और जो कोई उसके नजदीक जाता है वह उस पर हमला करता है। अगर आप उसको मार देंगे तो बड़ी मेहरबानी होगी और हम अपना खेत काट सकेंगे; नहीं तो

सब बरबाद हो जावेगा। यह सुनते ही कि सुअर हमला करता है मैंने अपना ३५० बोर वेन्चेस्टर रायफल लिया और उनके साथ उनके खेत को चल दिया। यह जंगल की सरहद पर एक नया खेत जंगल और झाड़ियाँ काटकर बनाया गया था और जुवार बोयी गयी थी। उसमें कहीं-कहीं बेर और दूसरे किस्म की घनी झाड़ियाँ जगह-ब-जगह बढ़ गयी थीं। मैं आधे खेत में गया हूँगा कि बगैर छेड़े हुए एक झाड़ी से गुर्राहट की आवाज आयी और उसके साथ ही एक बड़ा सुअर हमारी तरफ बोलता हुआ दौड़ा। दोनों गाँववाले जोकि एक मेरे आगे और एक पीछे था, मय मेरे अरदली के भागे। खुशकिस्मती से मैंने रायफल को खेत में घुसते ही भर लिया था। फौरन कंधे से सीने पर लाकर जल्दी से सुअर के सर पर निशाना लेकर, जोकि करीब १५ कदम पर था, फैर किया। गोली बजाय सर में लगने के सीने के दाहनी तरफ लगी और सुअर कलाबाजी खाता हुआ मेरे सामने आकर गिरा। मैंने ख्याल किया कि मेरी गोली सर में लगी होगी, लिहाजा दूसरा फैर नहीं किया। बाद को देखा कि सर बच गया मगर गोली ने दाहने कंधे को तोड़कर अन्दर के हिस्से दिल वगैरा को चूर कर दिया। गाँववाले भी खुश होकर जमा हो गये और आठ आदमी उसको बाँस में लटकाकर गाँव में ले गये। इसके दाँत काफी बड़े और जानवर बहुत भारी था।

१६. मेरा चौथा गुलदार कुत्ते के ऊपर

मार्च सन् १९१७ ई० में मिस्टर सरताज बहादुर हमारे असिस्टेंट डिवीजनल फारेस्ट अफसर ने, जिनको शिकार का बिलकुल शौक न था, मेरे कमरे में गुलदार की खाल देखकर गुलदार मारने का शौक जाहिर किया। वे गजटेड अफसर होने की वजह से गवर्नमेंट फॉरेस्ट में शिकार खेलने के अधिकारी थे। मैंने उसी रोज शाम को अपने रेंज

क्वार्टर से एक मील दक्खिन तरफ रेलवे लाइन और सड़क के मिलान पर गाँव के एक कुत्ते को बँधवा दिया; जहाँ मैं अक्सर बड़े गुलदार के पैरों के निशान देखता था। दूसरे दिन सुबह देखा गया कि वह कुत्ते को मारकर जंगल में घसीट ले गया। हम दोनों शाम को गये। लाश को तलाश करके दो पेड़ों पर अलग-अलग मचान लाश से करीब २० कदम पर बाँधकर बैठ गये और आदमियों को वापस कर दिया। बैठने के बाद मैंने गौर किया कि हमने फिर वह ही दो गलतियाँ कीं। अव्वल तो मचान गुलदार के आने के रास्ते की सीध में बाँधा, दूसरे मचानों को बिलकुल नहीं ढका। जंगल घना था और आधे घंटे के अन्दर ही गुलदार बिलकुल खामोशी से आकर लाश के पास एक लट्ठे के पीछे खड़ा होकर चारों तरफ देखने लगा। मिस्टर सरताज बहादुर किसी ख्याल में पड़े थे और मैं भी लापरवाई से बैठा हुआ था। इतने में एक पतली सड़ी हुई सूखी साख गुलदार के पैर के नीचे दबकर टूटी। मैंने उस तरफ सर घुमाकर देखा तो गुलदार मुझे देख रहा था। मैंने ३५० बोर वेन्चेस्टर रायफल उठायी और वह भागने ही वाला था कि मैंने उसकी बगल में गोली मार दी। वह गिरा और फौरन ही उठकर तेजी से उसी तरफ भागा जिधर से आया था। मैं दूसरी गोली न चला सका। यह सब एक या दो सेकेंड में खत्म हो गया। वह थोड़ा दूर जाकर गिरा। पत्तों में हाथ-पैर फटकने की और गुरगुराहट की आवाज भी सुनायी दी; जिससे अन्दाज़ यह होता था कि शायद मर गया। अगरचे उस वक्त काफी दिन था, मगर हम चले आये और सुबह उसको देखने का इरादा किया।

रेन्ज क्वार्टर पहुँचने पर पुराने आदमियों ने कहा कि सिंगाही रियासत से हाथी मँगाकर कल इसको ढूँढ़ो; क्योंकि जख्मी गुलदार के पास पैदल जाना मुनासिब नहीं है। मैंने दूसरे दिन सुबह सिंगाही जोकि ६ मील था, एक आदमी मैनेजर रियासत के पास भेजा और आधे दिन के लिए एक हाथी माँगा। आदमी जवाब लेकर दोपहर के बाद वापस आया कि हाथी सब अफसरान के शिकार में माँगे गये हैं।

कोई मौजूद नहीं है। शाम को मैं अपने दो कुत्ते और आधा दर्जन आदमी लेकर गया। कुत्ते बेसिखे हुए थे और जंगल में चारों तरफ पहुँचते ही दौड़ने लगे। जिस तरफ गुलदार गया था उस तरफ जाकर वे भूँकने लगे। जब हम वहाँ गये तो देखा कि गुलदार का पेट फूल गया था और मक्खियाँ बहुत बैठी हुई थीं। ऐसा मालूम होता था कि वह उसी वक्त गिरते ही मर गया था। वह निहायत अच्छा साढ़े सात फोट का नर गुलदार था और मिस्टर सरताज बहादुर के नजर कर दिया गया।

२०. मेरा पाँचवाँ गुलदार पेड़ पर से

जून का महीना था। काम सब ख़त्म हो गये थे। बारिश शुरू हो गयी थी और चारों तरफ धान के लिए लोग खेत तय्यार कर रहे थे। मैं सुबह के वक्त अपने क्लर्क और फ़ॉरिस्ट्रान के साथ अपने बरामदे में बैठा साल तमाम के कागज़ात बना रहा था कि एक काश्तकार अपना हल और बैल करीब दो सौ कदम पर रेंज क्वार्टर के सामने छोड़कर दौड़ता व बहुत घबराया हुआ आया। वह कहने लगा कि एक गुलदार उस हल्दू के पेड़ पर उसके खेत में बैठा है। मुझे यकीन नहीं आया कि गुलदार दिन में पेड़ पर खुले खेत में आराम करेगा, जबकि दो फरलाँग पर पच्छिम में घना जंगल हो और न इसका यकीन ही आया कि गुलदार पेड़ पर चढ़ सकता है। लेकिन एक पुराने फ़ारेस्ट गॉर्ड ने कहा कि उसने गुलदारों को बड़े-बड़े ऊँचे सेमल, हल्दू व दीगर पेड़ों के ऊपर देखा है और वे दिन-दिन भर दरख़्तों पर साये और हवा में आराम करते हैं, खास कर बरसात के मौसम में जब ज़मीन गीली होती है और मच्छर व मक्खियाँ उनको सताते हैं। वे पेड़ों पर से चीतल व दीगर जानवरों को भी कूद कर पकड़ लेते हैं। अगर कभी कोई जानवर बारिश से बचने के लिए उस दरख़्त के नीचे आकर

खड़ा हो जावे या उसके नीचे से निकले, तब भी वे उसे कूद कर पकड़ लेते हैं। यह सुनकर मैं अपना ३५० बोर वेन्चेस्टर राइफल और पाँच कारतूस लेकर जैसे बैठा था वैसे ही सिलीपर, कमीज, पाजामा पहने चल दिया। मेरे दो कुत्ते और चन्द अहलकार भी जो साथ काम कर रहे थे, मेरे साथ हो लिये। जब हम उस हल्दू के पेड़ के नीचे पहुँचे, हमको गुलदार नहीं दिखलायी दिया। पेड़ बहुत बड़ा करीब १० फ़ीट के मोटा और काफी ऊँचा था। उसकी शाखें व पत्तियाँ बहुत घनी थीं। ये खेत रियासत सिंगाही का जंगल काटकर हाल ही में काश्त किये गये थे। जगह-जगह बड़े-बड़े पेड़ अब भी खड़े थे। हम सब पेड़ की घनी शाखों और पत्तियों में गुलदार को देख रहे थे। मेरे कुत्ते खुशबू पाकर इधर-उधर दौड़ने लगे और खेत की मेंड़ पर एक झाड़ी और घास पर भौंकने लगे। मैं दौड़कर उस तरफ गया, इस ख्याल से कि शायद गुलदार वहाँ छिपा हुआ है। वहाँ ताज़ा आधा खाया हुआ बन्दर मिला। इस दरमियान में खेतवाले ने और मेरे आदमियों ने पेड़ के ऊपर के हिस्से में गुलदार को और ऊँचा चढ़ते हुए देख लिया और मुझे आवाज़ दी। मैं आया और मैंने मुश्किल से गुलदार की लटकती हुई दुम देखी। पत्तों में कुछ काला ढेर-सा करीब ७० व ८० फ़ीट ऊँचे पर अपने दुश्मनों से छिपा हुआ दिखलायी पड़ा। नज़दीक के खेतों से उस वक्त तक काफ़ी आदमी और कुत्ते आकर बेपैसे-कौड़ी का तमाशा देखने जमा हो गये थे। मैंने पेड़ के चारों तरफ़ घूमकर गुलदार का कोई अच्छा हिस्सा देखने की कोशिश की, ताकि गोली मारूँ। मगर सिवाय दुम के और घनी पत्तियों में एक काले ढेर के और कुछ नहीं दिखलायी दिया। और वह भी सिर्फ़ पेड़ की जड़ के पास से सीधा ऊपर दिखलायी पड़ता था। ऐसी हालत में सीधा सर के ऊपर सही निशाना लगाना मुझे बहुत मुश्किल मालूम होता था। सब आदमी कह रहे थे कि आप दागिये। जब वह नीचे कूदेगा तो हम सब लोग उसे कुल्हाड़ियों से मारेंगे। वे यह नहीं समझते थे कि ज़ख्मी गुलदार क्या मुसीबत पैदा कर सकता है। उनके बार-बार कहने और

हँसने पर मुझे ख्याल हुआ कि वे लोग यह समझते हैं कि मैं डरता हूँ ; जो मुझे नागवार हुआ। मैंने कहा कि अच्छा, लो, मैं फैर करता हूँ। तुम सब लोग आकर मेरे पीछे खड़े हो जाओ, ताकि जब वह कूदे या गिरे जो कि यक़ीनी है तो मैं फ़ौरन दूसरी फैर उसके ऊपर तुमको बचा कर दाग सकूँ। जब सब आदमियों को मैंने अपने पीछे खड़ा कर लिया, तब जिस क़दर इतमीनान से और अन्दाज़ से मैं निशाना लेकर दाग सकता था, मैंने फैर किया। गुलदार ने फैर होते ही एक आवाज़ दी और पेड़ में अटकता हुआ मेरे सामने पिछले धड़ के बल गिरा। अलावा गोली पूरे जिस्म से गुजरने के, उसकी कमर गिरने से टूट गयी और जिस जगह गिरा वहीं थोड़ी देर गुर्राया और अगला धड़ हिलाकर मर गया। यह मुफ्त का तमाशा और बिला ख़र्चा और वक्त ज़ाया करने के मेरे कार्टर के सामने गुलदार के मिलने से बहुत खुशी हुई। यह औसत दरजे की मादीन ६ फ़ीट ५ इंच की थी। उसने शायद सुबह के वक्त बन्दर को मारा था और खेत की मेंड पर घास और झाड़ी में बैठा खा रहा था। हलवाले को आते देखकर नज़दीक में दरख्त पर छिपने के लिए चढ़ गया, कि जब वह निकल जावेगा तब फिर अपने शिकार को खावेगा। मगर आदमी की चालाकी से खुद शिकार हो गया। मैं गुलदार और तेंदुए में कोई फ़र्क़ सिवाय क़द के छोटा और बड़ा होने के और नहीं पाता। ये दोनों हर किस्म के दरख्तों पर बिल्ली बल्कि बन्दर की तरह चढ़ जाते हैं। सिर्फ़ एक शाख से दूसरी शाख पर नहीं कूद सकते, जब बन्दर दरख्त पर इसको देखकर चढ़ जाते हैं तब पहले तो यह नीचे से इधर-उधर दौड़कर उछल कर और गुर्रा कर डराता है, जिससे घबड़ाकर एक डाल से दूसरी डाल पर कूदने में ही अक्सर कोई-न-कोई गिर पड़ता है और यह फौरन उसको पकड़ लेता है। अगर इसमें नाकामयाब रहा तो फिर यह दरख्त पर चढ़ जाता है और मोटी डालों पर उनके नज़दीक खड़ा होकर धमकी देता और गुर्राता है। इस हरकत पर कोई-न-कोई घबराहट और जल्दी में एक डाल से दूसरी डाल पर कूदने में

जरूर गिर पड़ता है। यह फ़ौरन बिजली की तरह कूद कर उसको जमीन पर पकड़ लेता है। मैंने कई रोज़ एक पुलीस के दारोगाजी के पले हुए दो वर्ष के गुलदार से बुन्देलखण्ड में मुकाम मंडौरा (सी० पी०) की सरहद पर बन्दरों का शिकार रोज शाम को करते हुए देखा है। दारोगाजी ने इस गुलदार की बदौलत कलक्टर और सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलीस को खूब खुश कर रखा था; जिससे उनके बहुत से ऐब भी माफ़ कर दिये जाते थे। मैं मंडौरा के डाक बँगले में ठहरा हुआ था और दो रोज़ उस गुलदार से शाम को बन्दरों का शिकार खूब देखा। थाना डाक बँगले से एक फ़रलाँग पर था। गुलदार ने दो रोज़ बराबर शाम को दारोगाजी के साथ आकर मेरा स्पेशल कुत्ता देख लिया था। गर्मी के दिन थे। मैं खाना खाकर रात को बँगले के सामने करीब १० बजे के मच्छरदानी लगाये सो रहा था और मेरा कुत्ता मेरे पलँग से बँधा हुआ था। मेरे नौकर बँगला के पीछे सागर पेशा में मुझसे काफी दूर थे। मैं शाम के शिकार का ख्याल कर रहा था और चूँकि गुलदार बिलकुल खुला रहता था, यह भी ख्याल कर रहा था कि वह मेरे कुत्ते को देख गया है; कहीं आ न जावे। इतने में ही मेरे कुत्ते ने भूँकना शुरू किया। मैंने सर निकाल कर देखा तो गुलदार दस कदम पर खड़ा था। मैं घबराया कि नामालूम जंगली गुलदार है या पालतू। मेरे पास बन्दूक और एक डंडा चारपाई पर थे। मैंने ज़ोर से नौकरों को आवाज़ दी और डंडा लेकर गुलदार को धमकाया, मगर वह नहीं भागा। वह सिर्फ़ कुत्ते की तरफ़ पैंतरा बदलता रहा। जब आदमी आये तो मैंने कहा कि दौड़ कर थाने पर जाओ और कहो कि अपना गुलदार बुला लें। पन्द्रह मिनट तक बड़ी मुश्किल से मैं अपने कुत्ते को बचा सका। तब दो कांस्टेबिल आये और गुलदार को पकड़ कर बड़ी मुश्किल से ले गये। अक्सर मैंने यह भी देखा है कि गुलदार अपने शिकार को गीदड़ और गीधों से बचाने के लिए ऊँचे दरख्तों पर ले जाकर छिपाता है। गर्मी व ख़ासकर बरसात में अक्सर दिन में बजाय जमीन पर आराम करने के बड़े दरख्तों की मोटी डालों पर आराम

करता है। ताकि मक्खियों से और ज़मीन की नमी से बचे और अगर कोई जानवर उस दरख़्त के नीचे से निकले या खड़ा हो तो उसके ही ऊपर कूद कर पकड़ लेता है। आख़िरकार दारोगाजी के गुलदार ने गाँव की बकरियों, गायों और घोड़ी के बच्चों को हफ़्ते में दो-दो, तीन-तीन मारना शुरू किया। एक-दो लड़कों पर भी हमला किया और फिर एक दिन दारोगाजी की भी ख़बर ली और उसको मारना पड़ा।

२१. शेर का ज़ख़्मी होकर मचान पर चढ़ना

शेर गुलदार से बड़ा और भारी जानवर होता है। इसलिए शायद आसानी से दरख़्तों पर गुलदार की तरह नहीं चढ़ सकता है। गो अक्सर खड़ा होकर बड़े दरख़्तों के तने पर अपने नाख़ूनों से छाल को फाड़ता या नाख़ूनों को तेज़ करता है; जो अक्सर दरख़्तों पर देखने में आते हैं। ज़ख्मी होकर और शिकारी को देखकर भी शेर व गुलदार दरख़्त पर नहीं चढ़ता है। सिर्फ़ मैंने अपनी उमर में एक शेर व तीन गुलदार को जख्मी होकर दरख़्त पर चढ़कर शिकारी पर हमला करते सुना है; जोकि बिलकुल सच है। क्योंकि मैं उसी इलाके में मौजूद था। एक अंग्रेज डिवीज़न फ़ॉरेस्ट अफ़सर हल्द्वानी फ़ॉरेस्ट डिवीज़न में शेर मारने के लिए एक छोटे घास के रक़बे के किनारे मचान बाँधकर बैठे और उनसे पचास क़दम के फ़ासले पर उनकी मेम साहबा दूसरे मचान पर बैठीं। घास के रक़बे का हँकुवा उन्होंने अपने दो हाथियों से कराया। शेर तेजी से निकला। साहब ने गोली मारी। वह और तेजी से हूँकता हुआ मेम साहबा के सामने से गुजरा और उन्होंने भी अपने २५६ बोर राइफ़ल की एक गोली मारी। दोनों गोलियाँ शायद अच्छे मुक़ाम पर नहीं लगीं। शेर ने मेम साहबा को देख लिया और सीधा उनके दरख़्त पर चढ़कर मचान के ऊपर हाथ और सर निकाला। मेम साहबा घबराकर खड़ी हो गयीं और अपने राइफ़ल को गुर्राते हुए शेर के मुँह में देकर दूसरी फैर चलायी। मगर कारतूस ऐसे

ख़तरनाक मौक़े पर धोखा दे गया। शेर ने मचान के ऊपर चढ़ने की कोशिश की। मेम साहबा ने बेवश होकर एक कदम पीछे लिया, जोकि मचान के बाहर पड़ा और वह दरख्त के नीचे गिर कर बेहोश हो गयीं।

साहब यह ख़तरनाक हालत देखकर जल्दी से अपने मचान पर दाहिनी तरफ़ मुड़े और ऐसा करने में तीन कारतूस, जोकि उन्होंने आसानी के ख्याल से अपनी गोद में रख लिये थे, जमीन पर मचान के नीचे गिर पड़े। अब सिर्फ़ एक कारतूस उनकी बायीं नाल में रह गया; जिसको उन्होंने इतमीनान का निशाना लेकर शेर के दिल पर दागा। शेर भी गोली खाकर मचान के नीचे मेम साहबा के पास गिरा। उस वक्त एक महावत हाथी लेकर घास के बाहर आ चुका था और यह हालत देखकर तेजी से हाथी को लाया। उसने मेम साहबा को उठा लिया। मेम साहबा की राइफल की नाल शेर ने दाँतों से दबाकर टेढ़ी कर दी; जोकि उन्होंने याददहानी के लिए बतौर अजायबात के रख छोड़ी थी।

इसके अलावा मैंने तीन वाक़िया और सुने हैं; जिनमें गुलदार ज़ख्मी होकर उन दरख़्तों पर चढ़ गये हैं जिन पर शिकारी बैठे थे। नहीं तो आम आदत इन जानवरों की यही है कि गोली खाकर सीधे अपने मुँह के सामने भागते हैं। •

जब ज़ख्मी शेर या गुलदार जाकर कहीं झाड़ी में बैठ जाता है और अगर फिर उसी वक्त कोई ख्वाह आदमी हो या हाथी उसके पास जाता है तो ९५ प्रतिशत वह ज़रूर जान तोड़कर हमला करता है। फिर उस वक्त यह बिरझाया हुआ भूत होता है; जो न अपनी जान और न दूसरे की जान की परवा करता है। अक्सर ऐसे ही मौकों पर शिकारियों की जान ज़ाया होती है। मैं फिर नातजुरबेकार नये शिकारियों को आगाह करता हूँ कि ज़ख्मी शेर या गुलदार के पीछे फौरन उसी वक्त हरगिज न जावें; बल्कि कम-से-कम १२ घंटे के बाद या दूसरे दिन होशियारी से खून देखते हुए या तो हाथी पर और अगर हाथी न हो तो पैदल कुत्तों और चन्द आदमियों के साथ जावें।

२२. मेरा छठा गुलदार अचानक ताज़ुब-अंगेज हालत में

आख़िर जून सन् १९१७ ई० में मैंने एक फ़ॉरेस्टर के साथ एक मेमार और चन्द कुली फोर्ट के बँगले और रेंज क्वार्टर की छत की मरम्मत करने को बिलरायाँ से भेजे, जोकि टपक रही थी। मुकाम बिलरायाँ मेरे हेड क्वार्टर से १० मील के फ़ासले पर था। पढ़नेवालों को ख्याल होगा कि यह वह ही मुकाम था जहाँ करीब १८ वर्ष पहले लड़कपन में मैं अपने दोस्त अब्दुल रहमान व मंसबअली के साथ किला शाह गोरी का मेला देखने गया था और जहाँ उस वक्त के सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलीस ज़िला खीरी ने एक शेर और एक रीछ मार रखा था। मेला से गाँववाले उनको देखने किला के अन्दर जंगलात के बँगले पर गये, मगर भगा दिये गये थे और मेरे मुँह से यह निकल गया था कि मैं अब अपना ही मारा हुआ शेर देखूँगा। मेरे दोनों दोस्तों ने मुझको खूब चिढ़ाया था। जिससे हम में लड़ाई हो गयी और मैंने अपना इरादा और पुख्ता किया कि इनको शेर मार कर दिखाना है।

राज-मज़दूर भेजने के दो-तीन दिन बाद मैं खुद किला पर अपने बैल के अद्धे में मय बाबरचीखाना और सामान के गया; ताकि अपने सामने काबिल इतमीनान मरम्मत करा दूँ। मैं तीसरे पहर पहुँचा। रास्ते में मैंने एक तीतर मारा था। फ़ॉरेस्टर, फ़ॉरेस्ट गॉर्ड व कुलियों ने मेरे पास बन्दूक और राइफ़ल देखकर कहा कि आज एक चीतल मार दें; बहुत दिनों से गोश्त नहीं खाया है। मैंने कहा कि चीतल तब मिलेगा जब कि तुम दो रोज़ में मेरे सामने अच्छी तरह काम ख़त्म कर दो। काम देखने के बाद जो कुछ उन्होंने किया था और आयन्दा के लिए हिदायत देकर मैंने गुसल किया और क्वार्टर के सामने शाम को

बेल का शरबत पीकर हुक्का पी रहा था। गर्मी बहुत सख्त थी। उसी वक्त सिंगाही रियासत के जंगल में करीब २ फर्लांग पर चीतल बहुत शोर मचाने लगे। फ़ॉरेस्टर दौड़कर आया और कहने लगा कि अगर बैल के अद्धे में अभी चले चलें तो आध घंटे के अन्दर चीतल मार कर ले आवें। मुझे भी शौक चर्राया और खाकी कोट पहनकर राइ-फल और पाँच कारतूस लेकर अद्धे में फ़ॉरेस्टर को, जो कि दो वर्ष पहले फ़ॉरेस्ट ट्रेनिंग स्कूल में मेरा विद्यार्थी भी रह चुका था, साथ बिठाकर चल दिया। हम एक फरलाँग गये होंगे कि चीतलों की तेज़ आवाज़ एक ही जगह से आने लगी। मैंने राइफल भर लिया और अद्धा तेजी से ले गया। मैंने कहा कि इस आवाज़ से मालूम होता है कि वहाँ शेर या गुलदार हैं। फॉरेस्टर ने कहा कि यह तो दिन भर हर किसी को देखकर बोलते रहते हैं। मगर मैंने अहतियातन दो कार-तूस और राइफल की मेकज़ीन में रख दिये। आगे चलकर हमने करीब ५० चीतलों का गोल एक ही जगह खड़ा देखा; जिसमें चन्द नर भी थे और हमसे करीब १०० कदम पर सब अपनी दुम उठाये हुए पूरब की तरफ देखकर बोल रहे थे। मैंने कहा कि जरूर कोई खतरा है।

अद्धा चलता रहा और जब हम काफी नजदीक पहुँचे तो उन्होंने हमको लापरवाई से देखा और जमीन पर पैर मार कर उसी तरफ देखकर बोलते रहे। जब हम करीब ४० कदम पर पहुँचे तो फारेस्टर ने एक बड़े सींगवाले चीतल की तरफ इशारा किया और कहा कि बस, अब इस बड़े सींगवाले को मार लीजिए और वापस चलें। मगर मैं आगे देख रहा था कि उनके इस क़दर शोर मचाने की वजह क्या है। अद्धा चलता रहा। चीतलों ने एक बार फिर मुड़कर हमको देखा और सब एकदम से भागे। ये मुश्किल से २० कदम गये होंगे कि हमने देखा कि एक पूरे कद का गुलदार दरख्त पर से एक चीतल पर कूद पड़ा और उसको गिरा कर दबा लिया। वह मुँह मोड़कर हमारी तरफ गुर्राया कि बस, अब आगे न बढ़ना। मैंने अद्धा रोक कर जब उसने

चीतल की गर्दन पकड़ी ही थी और हमारे बैल भड़क रहे थे, जल्दी और घबराहट में गोली बगल में मारी। वह एक आवाज़ देकर भागा और करीब ६० कदम पर बेर की झाड़ी के पीछे खड़ा होकर गुर्राने लगा। फ़ारेस्टर कूदने के लिए और चीतल को पकड़ने के लिए खड़ा हो गया, जोकि उछल-कूद रहा था। मगर मैंने उसको घसीट कर बिठा दिया और अद्धे वाले से कहा—आगे बढ़ाओ। जब गुलदार पूरा दिखलायी देने लगा तब मैंने इतमीनान का निशाना लेकर एक फायर और दागा और गुलदार उसी जगह गिर गया। तब मैंने अद्धे को जख्मी चीतल की तरफ वापस किया और जब वहाँ पहुँचे तो ताजुब हुआ कि चीतल गायब था, जो कि उसकी हालत देखते हुए ग़ैरमुमकिन था। आस-पास बहुत ढूँढ़ा, मगर कहीं पता न चला। फ़ॉरेस्टर बहुत मायूस होकर कहने लगा कि अगर आप उस वक्त मुझे उतर जाने देते तो मैं उसको जरूर पकड़ लेता और आप गुलदार भी मार लेते। दोनों काम बन जाते। मैंने कहा कि चलो, अब गुलदार को देखें। कहीं वह भी इस तवारीखी मुकाम पर जहाँ मन्दिर, मसजिदें और कबरें गोरी बादशाह के जमाने की टूटी हुई पड़ी हैं, गायब न हो जावे। लिहाजा गुलदार की तरफ गये और उसको मरा पाया। पहली गोली उसके पेट में लगी थी और दूसरी बगल पर। वह नर था। उसकी लम्बाई ७ फीट ८ इंच थी और हालत तन्दुरुस्ती और खाल की बहुत अच्छी थी। मैंने उसको अपने क्वार्टर के बरामदे में रख दिया कि सुबह खाल निकलवायेंगे। फ़ॉरेस्टर ने मुझसे वादा लिया कि दूसरे दिन चीतल मार दूँगा।

दूसरे दिन गुलदार की खाल निकलवाने और गुसल करने के बाद मैंने सबको अलग-अलग काम बाँट दिया और हिदायत कर दी कि दो रोज़ के अन्दर जरूर खत्म कर दिया जावे। मैं वापस आकर आराम करने लगा कि कुलियों ने उस तरफ जिधर गुलदार मारा था, गिद्ध उड़ते देखे। चन्द कुली गये और दूसरे गुलदार का खाया हुआ आधा चीतल उसी जगह के करीब एक झाड़ी में पाया; जहाँ वह पिछली

शाम को खो गया था। ऐमा मालूम होता था कि नर गुलदार दरख्त पर था और मादीन जमीन पर थी; जोकि चीतल को उठा ले गयी; जब हम जख्मी गुलदार पर दूसरी गोली चलाने के लिए श्रद्धे को आगे बढ़ा ले गये थे। बाकी तमाम दिन मैंने काम की निगरानी की और छतों की काफी मरम्मत हो गयी। शायद किला पर मेरी मौजूदगी की बाबत सुनकर शाम को सिंगाही रियासत का एक महावत हाथी लाया। उसने कहा कि चलिए एक चीतल मार दीजिए। या फॉरेस्टर ने दर परदा बुलवाया होगा। रियासत के हाथी बरसात में चरने और आराम के लिए किले से दो मील के ऊपर एक गाँव में ठहरे हुए थे। एक तो मुझे हाथी का लालच हुआ, दूसरे फॉरेस्टर ने कहा कि हाथी से बमुकाबला अद्धे के शिकार का ज्यादा मौका मिलेगा। क्योंकि हाथी ऐसी जगहों में भी जा सकता है जहाँ अद्धा नहीं जा सकता। बहरहाल फॉरेस्टर को साथ लेकर मैं रवाना हुआ और एक घंटे के अन्दर एक चीतल मारकर वापस आ रहे थे कि मैंने एक सूखे अकेले दरख्त की मोटी शाख पर एक गुलदार की तरह जानवर-सा लेटा देखा। यह दरख्त घास के रक़बे में करीब ६० कदम पर खड़ा था और करीब १ फीट गहरा पानी उसके चारों तरफ भरा हुआ था। हमने हाथी को उस तरफ बढ़ाया, लेकिन हम अभी आधी दूर भी न गये होंगे कि गुलदार दरख्त से कूद कर भागा और उसके करीब से ही दो पाढ़े भी भागे; जिनकी ताक में शायद वह दरख्त की शाख पर छिपा हुआ लेटा था।

२३. सड़क पर एक शेर से मुलाकात

बरसात ख़त्म हुई। डिवीजनल फारेस्ट अफसर ने एक सर्कुलर सब रेन्ज अफ़सरान को भेजा कि १५ अक्टूबर से वह दौरा शुरू करना चाहते हैं। लिहाजा हर रेंज कार्टर से दूसरे रेन्ज कार्टर तक सड़कें मोटर के लायक तय्यार हो जावें। लिहाजा मैं पहले हफ्ते सितम्बर से सड़कों और पुलों की मरम्मत में मशगूल हो गया। अक्टूबर के पहले हफ्ते के बाद बिलरायाँ से छाँगा नाले बँगले तक की सड़क का मुआइना करने अपने बुड्ढे घोड़े पर मय एक अरदली और १२ बोर बन्दूक के गया। शाम को वापसी पर जब बिलरायाँ करीब तीन मील रह गया और सूरज डूब रहा था, सड़क के दोनों तरफ ऊँचे घने साल के जंगल थे और रोशनी कम थी, मैंने क़रीब १०० कदम पर कोई जानवर अपनी तरफ आते देखा। मैंने अपने आदमियों से जोकि अब ४-५ थे, पूछा—यह कौन-सा जानवर आ रहा है? किसी ने कहा कि मादीन साँभर है। किसी ने कहा कि आदमी काम करके लौट रहा है। लेकिन फॉरेस्ट गार्ड ने कहा कि चाल-ढाल से तो शेर मालूम होता है। मैंने कहा कि सब लोग मेरे पीछे चले आओ। देखो क्या करता है। लेकिन सब ठहर गये और मुझसे भी कहा कि ठहर जाइये। लेकिन मैं नहीं रुका और न मेरा दिन भर का थका हुआ घोड़ा ही रुका। जब हम करीब ३० कदम के रह गये तो शेर ठहरा और सर उठाकर देखा। मेरा घोड़ा भी ठहर गया। शेर ने आहिस्ता से गुर्राहट की आवाज दी और कूदकर जंगल में चला गया। घोड़ा फिर खुद चलने लगा, शायद यह देखकर कि दुश्मन चला गया और दिन भर की मेहनत के बाद घर पहुँचकर दाना, घास और आराम के लालच में लापरवाई से जा रहा था। मैंने पीछे मुड़कर देखा तो हमारे पाँचो आदमी जहाँ ठहरे थे वहीं खड़े थे। अब मैं उस तरफ गौर से देखने लगा, जहाँ पर शेर जंगल में घुसा था। मैंने अहतियातन घोड़े को सड़क के दूसरे किनारे की तरफ कर लिया था। जब मैं उस जगह के सामने पहुँचा

तो मैंने देखा कि शेर सड़क के किनारे १ गज़ के फासले पर एक दरख्त के पीछे खड़ा हमको ग़ौर से देख रहा है। घोड़े ने नहीं देखा। मेरे रोंगटे खड़े हो गये और दिल अन्दर से एकदम कूदने लगा। जब हम दो-चार कदम निकल गये तो घोड़े को शायद शेर की बदबू मालूम हुई और वह भड़क कर तेजी से चलने लगा। जब मैं करीब २५ कदम के निकल गया तो मैंने हाथ से आदमियों को इशारा किया कि चले आओ। उन्होंने ख्याल किया कि खतरा निकल गया और बोलते और हँसते हुए लापरवाई से मेरी तरफ आना शुरू किया। जब वे उस जगह पर पहुँचे और जंगल की तरफ देखा तो शेर को इतने नजदीक देखकर घबराये हुए तेजी से मेरे पास पहुँचे और कहने लगे कि हमको आज आपने मरवा दिया था। मैंने कहा—जब उसने मुझको कोई नुकसान नहीं पहुँचाया तो तुमको क्यों नुकसान पहुँचाता? हम मुश्किल से ५० कदम अब जोर-जोर से बहादुरों की तरह बातें करते हुए गये होंगे कि किसी ने पीछे मुड़कर देखा और कहा—देखो वह फिर जा रहा है। हम सबने देर तक देखा कि उसने हमको रास्ता देकर फिर अपना रास्ता अख्तियार किया। यू० पी० का शेर करीब इसी तरह का शरीफ जानवर होता है; जब तक उसको छेड़ा न जाये। दिसम्बर सन् १९१७ में मेरे पिताजी ७५ वर्ष की उमर में सिर्फ ३ दिन की बीमारी से मर गये। जब मैं डिवीजनल फॉरेस्ट अफसर और उनके दोस्तों के साथ बड़े दिन के कैम्प मुकाम छाँग नाला पर था, रात को दो बजे रियासत सिंगाही के सवार ने आकर खबर दी। सुबह होते ही मैंने डिवीजनल अफसर से इजाजत ली और सिंगाही वक्त से पहुँचकर मिट्टी में शरीक हुआ। तब मुझे ख्याल आया कि बावजूद मेरे सख्त उजर के भी मुझको फोर्ट रेंज में घर के नजदीक कुदरत ने क्यों भेजा, ताकि मैं उनके आखिरी दिनों में एक साल साथ रह सकूँ और खानदान का इन्तजाम आसानी से कर सकूँ।

बवजह जर्मन की पहली लड़ाई में लकड़ी की सप्लाई के कामों से मुझे २ वर्ष बहुत सख्त काम करना पड़ा। इसके इनाम में और

आम इन्तजाम की कामयाबी पर मुझे सितंबर सन् १९१८ में १२५ रुपया की रेंजरी से २५० रुपया माहवार पर एक्स्ट्रा असिस्टेंट कंसरवेटर के ओहदे पर तरक्की करके फारेस्ट ट्रेनिंग स्कूल का प्रिंसिपल बनाकर नैनीताल तबादला कर दिया और अलावा ३ रुपया रोजाना भत्ता के ७५ रुपया माहवार एलाउंस दिया। मैं इस तरक्की की उम्मीद पर जान तोड़कर काम कर रहा था कि बगैर इस तरक्की के सरकारी जंगलों में शिकार खेलने और शेर मारने का मुस्तहक नहीं हो सकता था। मैं यह आरजू १८ वर्ष से दिल में लिये हुए था। लिहाजा मुझे बेहद खुशी हुई और जिस रोज गजट हुआ, रात को नींद भी गायब हो गयी। मैं अब आजादी से शेर के शिकार के ख्वाब देखने लगा।

मैं अपने हेड क्वार्टर नैनीताल पर शुरू सितम्बर में पहुँच गया और ट्रेनिंग स्कूल के औजारात, डेरे और सामान जमा करने में मशगूल हुआ, जोकि दो वर्ष से बन्द था। मिस्टर सेवल एम० एस-सी० एक शायस्ता नौ उमर लाहौर से आकर मेरे असिस्टेंट हुए; जिन्होंने उस वक्त से अब तक अपने शरीफाना बरताव से हर सोसायटी में नाम पैदा कर लिया है। कुल सामान वगैरह जमा करके हम अपने पहले कैम्प रामनगर में पहली अक्टूबर सन् १९१८ को पहुँचे; जहाँ पर ४५ विद्यार्थी, यू० पी० पंजाब, कश्मीर और दीगर रियासतों से आकर जमा हुए। बार बरदारी के लिए ३५ ऊँट भी पंजाब से आ गये और क्लास का काम शुरू हुआ। १५ अक्टूबर को हम ६ डिवीजनों में ८ महीने के दौरे के लिए रवाना हुए; जिसमें दो महीने का पहाड़ का दौरा भी शामिल था। ४ वर्ष मैंने यू० पी० के बेहतरीन जंगलों में गोरखपुर से देहरादून तक हर किस्म के काम का बहुत बड़ा तजुरबा और हर किस्म के शिकार और नयी जगहों की सैर का लुत्फ उठाया। बहुत से फारेस्ट अफसर इस खानाबदोश स्कूल के काम को पसन्द नहीं करते थे, मगर मुझे यह काम बहुत ही पसन्द था। अब भी उस अच्छे जमाने का ख्याल करके खुशी की लहर मेरे जिस्म को तरताजा कर देती है।

२४. हमारे कैम्प में दो चीत साँप

मार्च सन् १९१९ में मुकाम ढिकाला रामनगर फॉरेस्ट डिवीजन के पातलीदून में पहुँचे ; जहाँ रीछ हमारे दरख्त पर मिस्टर काँजीलाल की मौजूदगी में चढ़ गया था। इस मरतबा हमने रामगंगा नदी के उस पार उत्तरी किनारे पर घास के जले हुए रकबे में पहाड़ के नीचे काम के नजदीक कैम्प किया। हमारा असबाब ऊँटों से उतारा जा रहा था और सब लोग अपने-अपने डेरे वगैरह लगाने में मशगूल थे। हम एक सायेदार पेड़ के नीचे बैठ गये और अपने आदमियों से कहा कि हमारा इकमिक कुकर, पानी की बोतल और सेट वगैरा दे जाओ। मैं अपनी मुलाजमत को पिकनिक सरविस कहता था। मेरा पहला कुकर जोकि मैंने ७ रुपये का सन् १९१४ ई० में खरीदा था, बहुत ही कारआमद साबित हुआ। इसमें हर जगह खाना पकता हुआ चलता था। चाहे रेल का सफर हो या सड़क पर सफर हो। जहाँ चाहते गरम-गरम खाना मिल जाता। जब हम दरख्त के नीचे खाना खा रहे थे, हमारा निहायत वफ़ादार कुत्ता रोवा बड़ी सरगर्मी से एक बामी की जड़ की तरफ़ मुँह किये हुए मेरे डेरे के गुसलखाने से १५ फीट पर भूँक रहा था। एक खलासी बामी के पास ही खूँटा गाड़कर डेरे की रस्सी बाँध रहा था। मैंने उससे कहा कि देखो कुत्ता क्यों भूँक रहा है। उसने पास जाकर बामी की जड़ में गौर से देखा और कूदकर दूर खड़ा होकर कहने लगा कि इसमें दो चीत साँप हैं। सेवल और मैं गये और देखा कि बामी की जड़ में एक बड़ा सूराख है। उसमें से दो चीत साँप के सर बाहर निकले हुए हैं। मिस्टर सेवल उनकी खाल की लालच से उनको मारना चाहते थे। मैंने कहा—क्यों इनकी जान लो? ये बिचारे अपने मकान में बियाबान जंगल में रह रहे हैं। हम आकर इनके घर में दखल अन्दाज हुए हैं। दूसरे, यह भी कहा जाता है कि

इनका मारना मनहूसियत लाता है। मैंने अरदली और खलासियों से कहा कि इनको जलती हुई लकड़ी से छूकर भगा दो और कैम्प के नौ उमर मुलाजमों ने बतौर खेल व तमाशा के उनको रामगंगा नदी के किनारे की बड़ी घास में भगा दिया ; जोकि एक फरलाँग से ज्यादा दूर थी। जब डेरा व सामान लग गया तो हमने थोड़ी देर डाक का काम और आराम किया। शाम को हम अपने कैम्प से पूरब तरफ पहाड़ की जड़ के साथ-साथ जंगली जानवरों की पगडंडी पर गये ; जिसके उत्तर तरफ पहाड़ और दक्खिन तरफ रामगंगा नदी, यानी करीब दो-तीन फरलाँग तक जली और बेजली घास, शीशम और खैर की बोझियाँ थी और फिर नदी थीं। इस जली हुई घास में जगह-ब-जगह चीतल, साँभर और सुअर के गोल दूर और नजदीक दिखायी दिये। चूँकि घास हाल में ही जलायी गयी थी, लिहाजा हमने उसमें चलना मुनासिब नहीं समझा ; क्योंकि कपड़े काले हो जाते थे। मिस्टर सेवल अपने बढ़िया चाकलेट रंग के सूट में थे। हम लोग लापरवाई से पहाड़ की जड़ पर पगडंडी पर जा रहे थे और कुदरत के करश्मे—पहाड़, मैदान, दरिया और उसमें जानवर देखकर लुत्फ उठा रहे थे। हमने देखा कि दो हाथी हमसे करीब २०० कदम के फासले पर पहाड़ से उतरे और रामगंगा की तरफ जले हुए मैदान में होकर जा रहे थे। हम खामोश खड़े होकर उनको अपनी पुरानी दूरबीन से देखते रहे ; जब तक कि वे घने शीशम की बोझी में गायब न हो गये। इतने ही में पहाड़ पर से कुछ जानवरों के उतरने की आवाज हमारे ऊपर ही सुनायी दी। हमने तय किया कि छिपकर देखें कि क्या हैं ? हमारे सामने करीब में ही एक बहुत मोटा पेड़ आँधी से गिरा हुआ अरसे का पड़ा था। मैं उसकी मोटी शाखों के दरमियान में जाकर खड़ा हो गया। जानवर बहुत करीब आ चुके थे। मैंने सेवल से कहा कि वहीं जमीन पर मेरे सामने दस कदम पर बिलकुल खामोश बैठ जाओ। वह अपनी फेल्ट हेट लगाये हुए मेरी तरफ मुँह करके बैठ गये और एक खानदान साँभरों का उतरा। इत्तिफाक से सेवल उनके

रास्ते की सीध में थे। वह आहिस्ता-आहिस्ता सेवल से एक गज के फासले पर पहुँच गये। इंसान की खुशबू से उनको शक हुआ और सबने अपनी-अपनी दुम उठा ली। चारों तरफ देखा मगर चूँकि हम लोग दस फीट के अन्दर थे, मैं बड़ी शाखों में छिपा हुआ था और सेवल खुले में एक कत्थे रंग के ढेर की तरह बैठे थे और हिल नहीं रहे थे; इसलिए उन्होंने नहीं पहचाना। मगर शक उनको काफी हो गया। आगे के दो-तीन साँभरों ने गरदन लम्बी करके सेवल के फेल्ट हेट को सूँघा। सेवल मेरी तरफ खामोशी से देख रहे थे और मुस्करा रहे थे। सूँघते ही वह खतरे की आवाज देकर कूदे और सब भागकर ३०-४० कदम पर जाकर खड़े हो गये। वे खतरे की आवाजें जोर-जोर से देने लगे। उसमें एक नर औसत दरजे का था। दूसरा छोटा और बाकी आधा दरजन मादीन थीं। मैंने बड़े नर के गोली मारी। वह गिरा और सब भाग गये। कैम्प के कुल आदमियों की दावत हो गयी।

रात को करीब दो बजे के मेरे कुत्ते ने फिर मेरे डेरे के गुसलखाने के पीछे जोर से भूँकना शुरू किया और जब डाँटने और बुलाने पर नहीं आया तो मुझे गुलदार का डर हुआ। लिहाजा मैं लालटेन और बन्दूक लेकर बाहर गया तो ताज्जुब हुआ कि बावजूद आग से दागने के दोनों चीत साँप फिर अपने घर में जोकि बामी की जड़ में थे, आ गये। मैंने आदमियों को आवाज दी, जोकि फौरन आ गये और इस मर्त्तबा इनको खूब आग से दाग कर दूर तक भगा दिया। इनका घर और बामी खोदकर बराबर करवा दिया। फिर वे नहीं आये। मुझे ताज्जुब हुआ कि इन दोनों ने क्यों मेरे कुत्ते को पकड़ कर निगल नहीं लिया।

२५. मेरा सातवाँ गुलदार इत्तफाकिया

दूसरे साल फरवरी सन् १९२० ई० में ट्रेनिंग स्कूल का कैम्प तीसरे पहर को मुकाम डोल पोखरा पहुँचा; जोकि नैनीताल जिले में हल्द्वानी से १० मील पूरब तरफ है। हमारे ऊँटों से असबाब उतर चुका था और सब लोग डेरे लगाने में मसरूफ़ थे। मैं हल्द्वानी वाली सड़क के किनारे एक पेड़ के साये में अखबार पढ़ रहा था। हमारा कैम्प इस सड़क के उत्तर तरफ रेंज कार्टर से सौ कदम पच्छिम पर था। सड़क के दक्खिन में एक बड़ा घास का रकबा था; जिसमें शीशम का प्लान्टेशन था और रेंज कार्टर के सौ कदम पूरब तरफ घना साल का जंगल और उसके नीचे घनी झाड़ियाँ थीं। इस साल के जंगल में बिलकुल किनारे पर चीतलों ने यकायक खतरे की आवाज देना और शोर मचाना शुरू किया। हमारे आदमी सामान लगाने में मसरूफ थे, मैंने ४०५ बोर राइफल और ५ कारतूस बक्स से निकाले और मेहतर से अपनी बकरी मँगवाई। साल के जंगल की सरहद पर जाकर बकरी को एक दरख्त से बाँध दिया और मैं वक्त गुजारने की गरज से करीब २५ कदम पर एक दरख्त की आड़ से खड़ा हो गया, जिस पर घनी बेल चढ़ी हुई थी। करीब १०० कदम पर कैम्प में डेरे के खूँटे गाड़ने और नौकरों का शोर काफी था; जिससे उम्मीद न थी कि गुलदार दिन में इतने आदमियों की नजदीकी पर भी निकल आवेगा। लिहाजा मैं नाउम्मीदी के साथ मुश्किल से १५ मिनट खड़ा हुआ हूँगा और बकरी जोर से बोल रही थी कि चीतलों की आवाज में कमी हुई। मगर बन्दर जोकि मेरी तरफ थे, खतरे की आवाज देने लगे। मैं सरहद की खन्दक के किनारे बकरी के सामने गौर से देखने लगा। उसके और एक दरख्त की आड़ से घनी झाड़ी में मुझे गुलदार का सर नजर आया। वह बकरी की तरफ़ ग़ौर से देख रहा था। मैं तैयार हो गया

और निशाना उसके सर पर लेकर इस इन्तजार में था कि थोड़ा और निकल आवे। जब वह एक कदम और निकल कर कूदने के लिए झुक रहा था, मैंने उसके बगल पर फैर किया और वह खन्दक में उसी जगह गिर गया। राइफल का फैर इस कदर करीब होते ही चन्द विद्यार्थी और मेरा अरदली दौड़ आये। मैंने सबको रोक दिया; क्योंकि खन्दक में गिर जाने से गुलदार की हालत मुझे दिखलायी नहीं दे रही थी। थोड़ी देर इन्तजार करने और पत्थर फेंकने के बाद जब हम गये तो एक नर गुलदार बहुत अच्छी तन्दुरुस्त हालत में ७॥ फीट का बगैर किसी इन्तजाम और मेहनत के पाकर बहुत खुश हुए और उसे सब लोग कैम्प में उठा लाये।

२६. मेरा दूसरा रीछ

दूसरे दिन शाम को मैं अपने नौ उम्र अरदली मधुसूदन को लेकर घूमने गया; जोकि बहुत हिम्मतवाला था। जब कभी मैं उसको अपने साथ ले जाता तो जरूर कुछ-न-कुछ तमाशा देखने को मिलता था। हम कभी खाली हाथ नहीं आते थे। मैं अपने अरदली और खलासी में से सिर्फ एक को बारीबार ले जाता था; जिससे हफ्ते में उनका नम्बर एक या दो मर्त्तबा आता था। हम लोग करीब आध मील के कैम्प से पूरब तरफ गये होंगे कि, हमको बहुत जोर से चीखने व धाड़ने की आवाजें सड़क के दक्खिन तरफ थोड़ी दूर पर सुनायी दीं; जोकि ऐसी मालूम होती थीं कि हाथी लड़ रहे हैं। तमाम जंगल गूँज रहा था। मैंने अरदली से पूछा कि किसकी आवाज है? उसने जवाब दिया कि मालूम नहीं। मैंने ऐसी आवाज कभी नहीं सुनी थी। जंगल घना था और मेरा कभी पहले का देखा हुआ न था।

मैंने उससे कहा कि चलकर देखें, कि क्या है? उसने फौरन जवाब दिया कि हाँ, चलो। मैं जंगली हाथियों से उस वक्त थोड़ा जरूर डरता था।

मैंने बन्दूक देकर राइफल ली और पाँचो कारतूस लगाकर उस आवाज़ की तरफ आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ना शुरू किया। मगर आवाज बन्द हो गयी। फिर भी हम उसी तरफ़ जाते रहे। मैंने मधुसूदन से कहा कि मुझसे २० कदम पीछे चले आओ। अगर मैं ठहरूँ तो तुम भी ठहर जाना और बगैर शोर मचाये आना। हम करीब चौथाई मील आवाज की तरफ गये होंगे कि मधुसूदन ने सीटी दी। मैंने पीछे मुड़कर उसको देखा। उसने बायीं तरफ़ उँगली से इशारा किया। मैंने देखा कि बहुत बड़ा रीछ, जिसके बाल खुजली की वजह से जगह-बजगह से गिरे हुए हैं, करीब २५ कदम पर पूरब तरफ मुँह किये लापरवाई से खड़ा हाँफ रहा है। मैंने बगल का निशाना लेकर फैर किया। रीछ उछला और मुँह की तरफ आगे भागा। वह थोड़ी दूर पर गिर गया। दूसरे दिन उसको दस आदमी कैम्प में लाये और उसकी खाल चरबी की ज्यादती से कई दिनों में सूखी।

२७. एक चालाक शेर से मेरा साबक़ा

एक दिन शाम के वक्त काम से वापसी पर मैं अपने डेरे के सामने डोल पोखरा कैम्प में सड़क के पास चाय पी रहा था कि दो आदमी दौड़ते हुए और घबराये हुए आये। वे कहने लगे कि कैम्प से करीब दो फरलाँग पर एक शेर सड़क पर बैठा हुआ गुर्रा रहा है और करीब आधा दर्जन गाड़ियाँ उसकी वजह से रुकी हुई खड़ी हैं। मैं फौरन उन आदमियों के साथ ४०५ बोर वेन्चेस्टर राइफल, ५ कारतूस और एक अरदली लेकर रवाना हुआ। जब मैं मौके पर पहुँचा तो सब गाड़ीवान शोर मचाते हुए जा रहे थे। उन्होंने बतलाया कि शेर अभी उठ कर जंगल में चला गया है। मैंने उसके पैरों के निशान देखे। जिससे अन्दाज हुआ कि शेर नर और काफी बड़ा है। चूँकि जंगल में झाड़ियाँ घनी थीं और दस-बारह क़दम के बाद कुछ दिखलायी नहीं दे सकता

था, मेरी हिम्मत इस घने जंगल में उसका पीछा करने की नहीं पड़ी। गाड़ीवालों ने बतलाया कि एक महीना नहीं हुआ होगा इसी जंगल में एक शेर ने एक कुली को जोकि जंगल में ढुलान का काम कर रहा था, बिला वजह जख़्मी किया था और उसके बाद से कई मर्तबा वह सड़क पर लोगों को मिला है। वह आदमी से बिलकुल निडर है और अगर वह मारा न गया तो आदमखोर हो जायगा। मैं शाम तक उसी सड़क पर ऊपर-नीचे घूमता रहा, इस उम्मीद पर कि शायद फिर निकल आवे और दिखलायी दे जाय। शाम को उसी सड़क के करीब मैंने एक चीतल मारा और अरदली की मदद से घसीट कर बीच सड़क पर छोड़कर चला आया।

दूसरे दिन सुबह मैंने आधा दरजन आदमी भेजे कि अगर शेर ने चीतल न खाया हो तो ले आवें। आदमी थोड़ी देर में खाली वापस आये और कहा कि वहाँ पर शेर के पैरों के ताजे निशान हैं। चीतल नहीं है और नजदीक ही पेड़ों पर बन्दर जोर-जोर से शोर मचा रहे हैं। मैं खुश हुआ कि शाम को कुछ दिलचस्पी रहेगी। शाम को काम से वापसी पर मैं मचान, दो रस्सियाँ, कुल्हाड़ी और ३ आदमी व राइफल लेकर रवाना हुआ। इन तीन आदमियों में एक हमारा मेहतर भी था; जोकि करीब-करीब हर वक्त शराब के नशे में चूर रहता था। वह बड़ा लड़ाका व झगड़ालू था, मगर काम में होशियार व मुस्तैद था; खासकर ऊँटों के लादने में और असबाब उतारने व डेरे लगाने में। लोगों ने उसको जमादार का ख़िताब दे रखा था। उसने जिद की कि मैं चलूँगा और कहा कि मैं पहले किसी साहब के पास नौकर था और बराबर शिकार खिलाता था। मैंने उस वक्त तक कोई शेर नहीं मारा था और नातजुरबाकार था। लिहाजा उसको भी साथ ले लिया क्योंकि मेरे किसी आदमी को भी शिकार का तजुरबा न था। तमाम रास्ता जमादार अपने शिकार के अजीब-गरीब तजुरबे सुनाता रहा। शायद चलने से पहले उसने और शराब पी ली थी और खूब मस्त था। हम उस जगह पर पहुँचे। सड़क पर शेर के पैरों के निशान और

चीतल के घसीटने के निशान करीब ५० कदम तक मिले और एक नाले के सामने उसने खूब पेट भर कर खाया; जहाँ काफी हड्डियाँ पड़ी हुई थीं। फिर वहाँ से वह चीतल को शायद मुँह में उठाकर चल दिया और कोई निशान किसी किस्म का नहीं मिला। सड़क के उत्तर तरफ हलके पहाड़, बहुत घना जंगल व झाड़ियाँ थीं। दक्खिन तरफ जला हुआ हलका जंगल था। मैंने ख्याल किया कि शेर लाश को पहाड़ पर जंगल और घनी झाड़ियों में ले गया होगा। वहाँ मैंने चारों तरफ खूब दूर तक ढूँढ़ा, मगर कोई निशान लाश का न पाया और न वहाँ कहीं करीब में शेर ही था। वहाँ पेड़ों पर काफी बन्दर कूद रहे थे और अगर शेर करीब में होता तो ये चौकीदार जरूर बतला देते। हमारे घूमने-फिरने से कई एक साँभर और काँकड़ भी भागे और उन्होंने भी कोई खतरे की आवाज न की।

मैं थककर नाउम्मीद हो गया और दो आदमी कैम्प भेजे कि पड्डे को ले आवें, जोकि हाल ही में पाँच रुपये का खरीदा था। जमादार और मैं बिला वजह जंगल में घूमते रहे। जब पड्डा आ गया तो उसको उस सूखे नाले के सामने बाँध दिया, जहाँ शेर ने मेरे मरे चीतल की दावत खायी थी। हम सब कैम्प को चले आये। रास्ते भर जमादार अपनी कुल्हाड़ी को हवा में घुमाता हुआ, हर बड़े पत्थर पर उसको तेज करता हुआ और यह कहता हुआ आया कि शेर की मौत न थी। अगर निकल आता तो उसके सर पर एक ही कुल्हाड़ी मार कर काम तमाम कर देता। उस वक्त वह शराब के नशे में चूर था। सुबह मैंने जमादार को मय उसकी तेज की हुई कुल्हाड़ी के और एक खलासी के साथ भेजा कि पड्डा जिंदा हो तो खोल लाओ। पड्डा कैम्प से १॥ फर-लाँग पर होगा। थोड़ी देर में ये दोनों खाली हाथ वापस आये। मैंने ख्याल किया कि शायद पड्डा भी मार लिया।

लेक्चर टेंट से वापसी पर मैंने जमादार को बुलाया तो मालूम हुआ कि पड्डा को मार कर शेर सड़क के दक्खिन तरफ हलके जले हुए जंगल में घसीट ले गया है और उसी तरफ नजदीक ही में बन्दर व

साँभर बहुत शोर मचा रहे हैं। मुझे अपने पिछले तजुरबे से यकीन नहीं हुआ कि उत्तर तरफ करीब में घने जंगल छोड़कर शेर लाश को खुले हुए जंगल में ले गया होगा। उस रोज हम आधा घंटा जल्दी जंगल के काम को चले गये और ३।। बजे वापस आकर जल्दी से मुँह-हाथ धोकर, चाय पीकर उन्हीं तीन आदमियों को और मचान वग़ैरह लेकर रवाना हुए। मौका पर पहुँचकर लाश को ढूँढने में कोई दिक्कत नहीं हुई; क्योंकि सड़क के दक्खिन वाले जले हुए टुकड़े में घसीटने का निशान बहुत साफ गया था। हम सौ कदम से ऊपर गये होंगे कि एक सूखा नाला करीब १०-१२ फीट चौड़ा और चार-पाँच फीट ऊँचे ढालदार किनारे का मिला। घसीटन अब इस नाले के किनारे-किनारे पच्छिम तरफ बाँस और भट की घनी झाड़ियों की तरफ़ गयी हुई थी और थोड़ी दूर पर चीतल की लाश और उससे आगे एक पेड़ के नीचे पड्डे की लाश आधी खायी हुई मिली। नज़दीक के पेड़ों पर बहुत-से गिद्ध बैठे हुए हसरत से देख रहे थे। मगर जमीन पर कोई नहीं उतरा था। लिहाजा मुझे ख्याल हुआ कि वे शेर को भी कहीं नजदीक ही में देख रहे हैं। मैंने एक दुदूधी का पेड़ लाश के पास तजबीज करके उन दोनों आदमियों से कहा कि तुम इस पर मचान बाँधो। मैं जमादार को लेकर नाले के किनारे-किनारे आहिस्ता-आहिस्ता पच्छिम की घनी झाड़ियों की तरफ बढ़ा। यह रक़बा जला हुआ न था। नाले में थोड़ी-बहुत झाड़ियाँ थीं। हम करीब ५०-६० कदम के गये होंगे कि मुझे नाले में झाड़ियों के अन्दर करीब ३० कदम पर शेर की पीली खाल और काली धारियाँ दिखायी दीं। मैं ठहर गया और मुड़कर जमादार को देखा तो वह मुझसे एक गज पीछे बड़ी-बड़ी सुर्ख़ आँखें निकाले हुए नशे में चूर मेरी तरफ गौर से घूर रहा था। उसकी अदा से मुझे अन्दाज हुआ कि उसने शेर को नहीं देखा है। मैंने उसे इशारा किया कि ठहर जाओ और उसने मुँह बनाकर मुझे इशारा किया कि आगे बढ़ो।

मैं बैठकर पंजों पर आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ा और पीछे मुड़-

कर फिर देखा तो मेरा साथी बिलकुल मेरी तरह नकल कर रहा था और उसने यकीनी अभी तक शेर को नहीं देखा था। मेरा रोंगटा खड़ा हो गया। दिल धड़कने लगा और मैं सोच रहा था कि मैं अपने पहले शेर पर जमीन से पैदल गोली चलाऊँ या न चलाऊँ। उतने फासले पर मुझे अपने निशाना पर कामिल यकीन था कि जहाँ चाहूँ मार सकता था। लेकिन झाड़ियों की वजह से शेर का सर साफ नहीं दिखलायी दे रहा था और मैं निशाना सिर्फ सर पर ही लेना चाहता था। मैंने फिर जमादार की तरफ देखा और इशारा किया कि जहाँ खड़ा है वहीं बैठ जावे। मगर उस अहमक ने लापरवाई से उल्टा मुझे फिर मुँह बनाकर इशारा किया कि आगे बढ़ो और मेरी परवा न करो। मैं चंद कदम और आगे बढ़कर बैठ गया और राइफल से बेख़बर सोते हुए शेर के सर पर इतमीनान का निशाना लेकर लिबलिबी आहिस्ता-आहिस्ता दबाना शुरू की थी कि जमादार ने भी शेर को देख लिया और जोर से कहा कि खबरदार साहब! दागना मत, शेर बहुत बड़ा है। शेर यह आवाज सुनते ही कूदा और गुर्राता हुआ घनी झाड़ियों की तरफ भाग गया। मैं खड़ा हो गया और कहा कि गधे! बोल क्यों दिया। उसने फौरन और जोर से मगर हकलाते हुए और हाथ को शेर की तरफ फेंककर कहा कि मैंने आज आपकी जान बचा दी। जी में तो आया कि एक ठोकर मारूँ मगर वह होश में न था। मैं बेकार शेर की तरफ थोड़ी दूर गया और घनी झाड़ियों के किनारे खड़ा होकर देख रहा था। जमादार अब बिला कहे जहाँ था, वहीं ठहर गया। इतने में हमारे आदमियों ने जोकि मचान बाँध रहे थे, शोर मचाया, शेर-शेर। मैंने उस तरफ देखा तो एक आदमी पेड़ पर था और दूसरा लटकती हुई रस्सी से ऊपर चढ़ रहा था। शेर बिलकुल पास पेड़ के नीचे खड़ा था। मैं दौड़कर उस तरफ़ जाने लगा। शेर हम को आते देखकर पहाड़ की तरफ दुम उठाये हुए भाग गया। हमने जल्दी से मचान बाँधा और मैं उस पर बैठ गया। मैंने आदमियों से कहा कि कैम्प चले जाओ। जब रायफल की आवाज सुनो तब आना;

नहीं तो सुबह आना। रात अँधेरी थी और मैंने एक छोटी टार्च रायफल की नाल पर रुई की गद्दी लगा कर बाँध ली थी, ताकि अपनी जगह पर कायम रहे। जब बिलकुल अँधेरा हो गया, तो मेरे पीछे पूरब की तरफ से बाँस और शाखें तोड़ने की आवाज दूर से मेरी तरफ आती हुई सुनायी दी। मुझे शक हुआ कि जंगली हाथी आ रहा है और परेशानी शुरू हुई; क्योंकि मेरा दुदूधी का पेड़ छोटा और कमजोर था और अगर उसने मुझे देख लिया तो मचान भी हाथी की शरारत के लिए काफी ऊँचा न था। हाथी रफ्ता-रफ्ता मचान के करीब ३० कदम पीछे बाँस उखाड़ता, डालें तोड़ता और रम-फम करता हुआ आ गया। मैं खामोश साँस रोके हुए बैठा था। सबर व बहादुरी जवाब देने लगी। मगर कर ही क्या सकता था? हाथी थोड़ा और आगे बढ़ा तो शेर भी करीब ही में गुर्राने लगा। ऐसा मालूम होता था कि वह वहीं कहीं बैठा हुआ यह सब तमाशे देख रहा था। रात बिलकुल अँधेरी थी। सिवाय आवाज के मुझे कुछ नहीं दिखलायी दे रहा था। कामयाबी की उम्मीद बहुत ही कम और हाथी से खतरे का अन्देशा बहुत ज्यादा था। तमाम रात तकलीफ से सरदी में भूखे बैठने का खयाल जबकि सिर्फ २ फरलाँग पर गरम बिस्तर, मुरगी और खाना मौजूद थे, परेशान करने लगा। मैंने इरादा किया कि अब रात को कभी न बैठूँगा। हाथी देर तक बाँस तोड़-तोड़ कर खाता रहा और रम-फम करता रहा। कभी-कभी शेर गुर्राता रहा। इस कुदरती जंगली सिनेमा में करीब आधे घंटे के गुजर गया और हाथी खुशकिस्मती से पास से बगैर मुझे देखे हुए गुजर गया। जब हाथी करीब ५० कदम निकल गया तो मुझे शेर के आहिस्ता चलने की आवाज मेरे पेड़ के चारों तरफ सुनायी दी। मगर वह लाश पर नहीं आया; जोकि मैंने चीतल और पड्डे की बकाया लाश को इकट्ठा एक जगह पर अपने पेड़ से करीब १५ कदम पर सामने रखवा दिया था। शेर करीब २५ कदम पर पैर की हड्डियाँ चबा रहा था। मेरा सबर जाता रहा और मैंने रायफल को उसकी तरफ सीधा करके टार्च का बटन दबाया। मैंने शेर

की एक झलक बोलकर झाड़ियों में भागती हुई देखी। मैंने जल्दी का बे इतमीनान फैर करना मुनासिब नहीं समझा और बैठा रहा। शेर आधी रात को सुबह होने के पहले फिर आया। मैंने दोनों मर्तबा टार्च की रोशनी डाली। मगर दाग न सका और हर मर्तबा वह तेजी से भाग गया।

दिन निकलने पर या तो वह चला गया या छिपा हुआ करीब में कहीं से देखता रहा। मेरे आदमियों ने सीटी दी और मैंने जवाब दिया। वे खूब बोलते हुए आये। मैं मचान से उतरा और उनमें से एक से कहा कि मचान पर बैठ जाओ; ताकि गिद्ध न पड़ जावे जोकि रात भर पेड़ों पर बैठे रहे थे। आदमी ने कहा कि मैं अपना खाना तैयार छोड़ आया हूँ। अभी खाकर आ जाऊँगा। लिहाजा हमने काँटेदार शाखों से लाश को खूब ढक दिया; ताकि गिद्ध न खा सके और कैम्प चले आये। मेरा आदमी आधे घंटे के अन्दर वापस आ गया और देखा कि शेर खा रहा है। मेरा खलासी नौजवान और हिम्मतवाला गढ़वाली था। उसने शोर मचाया और अपनी कुल्हाड़ी को पेड़ों पर मारा। बड़ी मुश्किल से शेर को भगा कर वह मचान पर बैठ गया। जब मैं साढ़े चार बजे शाम को पहुँचा तो खलासी ने यह सब सुनाया। मैं अँधेरे तक बेकार बैठा रहा और शेर नहीं आया। इस ऊपर के वाकिये से यह अन्दाज यकीनी तौर पर होता है कि चालाक शेर अपने शिकार के करीब ही बैठकर शिकारियों की चालें देखता रहता है और उनको बेवकूफ बनाकर दावतें खाता रहता है।

२८. एक पुराने शेर से नाकामयाब साबक़ा और मेरा तीसरा रीछ

मेरा दो साल का प्रोवेशनरी जमाना एक्स्ट्रा असिस्टेंट कंसरवेटरी का खत्म होनेवाला था। जिसमें मैंने शिकार के मामले में बहुत अहतियात बरता था, इस डर से कि कहीं यह इलजाम न लग जाय कि शिकार की तरफ ज्यादा और काम की तरफ तवज्जे कम है; और वापस रेंजरी पर न भेज दिया जाऊँ। ट्रेनिंग स्कूल मुकाम बिजरानी छपान करके पहाड़ के दौरे पर जानेवाला था। हमारा कैम्प एक दिन तीसरे पहर को रामनगर से १० मील के फासले पर बिजरानी पहुँचा। कमिश्नर मिस्टर विनढम जोकि शिकार के बहुत शौकीन थे, उसी दिन बिजरानी कैम्प से सुबह एक शेर मारकर अगले पड़ाव मैलानी को गये थे। यह मुकाम ज्यादातर पहाड़ी था; जिसमें बहुत-से नाले, नदियाँ और वादियाँ थीं। चारों तरफ घने साल के जंगल थे और पहाड़ों पर चीड़ था। पहाड़ों की ऊँचाई २००० फीट सतह समुद्र से थी। मैं अपने साथ एक पड्डा शेर के शिकार के वास्ते ले गया था, क्योंकि इस इलाके में शेर काफी मिलते थे और उस पड़ाव के बाद पहाड़ का दौरा शुरू होनेवाला था; जहाँ शेर नहीं पाये जाते थे। सुबह रामनगर से आते हुए मैंने शेर के पैर के निशान देखे थे; जोकि औसत दरजे से छोटे थे और मारने के काबिल नहीं थे। शाम को मैं पड्डा लेकर पच्छिम की तरफ ६ मील से ज्यादा फायर लाइन की सड़क पर गया; जोकि गहरे नाले में उतरी थी; जिसमें बहुत कम पानी था और घनी जामुन की पौध थी। मैंने इस नाले में एक बहुत बड़े शेर के पैर के निशान देखे और पड्डा को सड़क और नाले के मिलान पर बाँध दिया। वापसी में जब हम फिर ऊपर चढ़े तो दोनों तरफ घना साल का जंगल था और इस जगह दोनों तरफ जमीन हमवार

थी। मैंने देखा कि एक रीछ दकिखन की तरफ़ से उत्तर की तरफ हम से करीब ५० कदम पर फायर लाइन और सड़क को पार करके जंगल में गया। वह सड़क पर जरा ठहरा, हमारी तरफ देखा और फिर जंगल में घुस गया। जैसे ही वह जंगल में घुसा, मैंने पंजों के भल तेजी से जाना शुरू किया। मिस्टर ओनियाल मेरे असिस्टेंट और फारेस्ट गार्ड भी साथ थे। उन्होंने मना किया कि पैदल इसका पीछा न करो। जब मैं उस जगह पहुँचा जहाँ वह जंगल में घुसा था, सूखे पत्तों पर मेरे पैरों की आवाज सुनकर वह जंगल में मुझसे करीब ३० कदम पर एकदम से लौट पड़ा और सर उठाकर मुझे देखने लगा। मैंने ४०५ बोर वेन्चेस्टर रायफल से इतमीनान का निशाना उसकी दोनों आँखों के बीच में लेकर फायर किया और रीछ आवाज के साथ ही उसी जगह पर गिर पड़ा। मैंने अपने आदमियों की तरफ देखा तो वे वहीं खड़े थे। मैंने उनको आने का इशारा किया और मैं जंगल में रीछ के पास जाकर खड़ा हो गया। मैं अपने आप को बहुत बड़े शिकारियों में शुमार करने लगा। मेरे सब साथी भी आ गये और रीछ के चारों तरफ खड़े हो गये। रीछ खामोश आँखें बन्द किये हुए बहुत जोर-जोर से साँस ले रहा था। पेट के लम्बे बाल खूब हिल रहे थे और उसके माथे से मामूली खून निकल रहा था। मैं समझता था कि खोपड़ी चूर हो गयी होगी, भेजा उड़ गया होगा और फौरन मर गया होगा।

मेरी समझ में नहीं आया कि आँखों के बीच में सर पर ४०५ बोर की वेन्चेस्टर रायफल की गोली पड़े और फिर जानवर पड़ा हुआ साँस लेता रहे। मैंने अरदली से कहा कि उसके ऊपर एक बड़ा पत्थर मारो। जैसे ही अरदली ने एक गोल १०-१५ सेर का पत्थर मारा, वह एक सख्त चीख मार कर पिछले पैरों पर खड़ा हो गया और हम सब लोग इधर-उधर भागे। मगर वह फिर एक पेड़ का सहारा लेकर गिर पड़ा और फिर बेहोशी की हालत में वैसे ही खर्राटे लेने लगा।

मैंने दूसरी गोली उसकी गरदन पर बालों की लंबाई का ख्याल करते हुए ४-५ इंच नीचे दागी। रीछ ने एक झटका लिया और फिर वैसे ही जोर-जोर से साँसें लेता रहा। गोली शायद गोश्त में से बग़ैर गरदन की हड्डी तोड़े हुए गुज़र गयी। मैंने तीसरी गोली उसकी कमर में फिर करीब ५ इंच नीचे उसके लंबे बाल का ख़्याल करते हुए दागी। उसने फिर झटका लिया और पड़ा हुआ साँसें लेता रहा। मैंने ख्याल किया कि अब कमर भी टूट गयी है, थोड़ी देर में मर जावेगा। मगर यह गोली भी पसलियों को तोड़ती हुई निकल गयी। हम सब कैम्प को चले आये और दस-बारह आदमी, कुल्हाड़ी, बाँस, रस्सी अपने अरदली के साथ भेजे कि रीछ को उठा लाओ।

जब वे आदमी पहुँचे तो वह उसी तरह से खर्राटे और लंबे साँस ले रहा था। उन लोगों ने भी एक बड़ा पत्थर उसके ऊपर मारा। वह फिर चीख मार कर खड़ा होकर चन्द कदम चला और फिर गिर गया।

इनमें से एक आदमी ने अपनी तेज़ कुल्हाड़ी पूरी ताक़त से उसकी खोपड़ी पर मारी कि कुल्हाड़ी का पूरा धारदार फल उसके सर के अन्दर भेजे में पहुँच गया और कुल्हाड़ी उस वक्त निकल भी न सकी। यह पहली कारगर चोट उसके लगी और वह थोड़ी देर में मर गया।

वे लोग रीछ को सर के अन्दर कुल्हाड़ी फँसी हुई लाये। मैंने सब गोलियों को खाल निकालने के पहले और बाद में अच्छी तरह गौर से जाँचा और देखा कि मेरी पहली गोली दोनों आँखों के बीच माथे पर खाल में घुसी और चार इंच ऊपर की तरफ सर की हड्डी पर फिसल कर बाहर निकल गयी। लेकिन दिमाग पर सख्त धक्का लगा, जिससे रीछ गिर गया और बाद की भी दोनों गोलियाँ लम्बे बालों के एक-एक इंच नीचे गोश्त और पसली में होकर बगैर कोई खतरनाक नुकसान किये हुए निकल गयीं। यह बड़ी खुशकिस्मती हुई कि रीछ ने हममें से किसी को जख्मी नहीं किया।

बावजूदे कि हम काफी देर तक उसको छेड़ते रहे, वह बहुत बड़ा नर निहायत अच्छी तन्दुरुस्ती और पूरे जिस्म पर घने बालवाला था।

दूसरे दिन सुबह पड्डा जिन्दा वापस आया और शेर उस तरफ नहीं निकला। मैंने अपने आदमियों से कहा कि रीछ का पूरा जिस्म खाल निकालने के बाद रख लें, ताकि शाम को उसी को घसीट कर पड्डे की जगह रख देंगे। दूसरे दिन शाम को हमने देखा कि शेर ने रीछ की दो पिछली टाँगें वहीं खाकर पेट की आलायश वहीं फेंक कर बाकी हिस्से को थोड़ी दूर ले जा कर खाया और फिर लाश का पता न चला। बहुत ढूँढ़ने के बाद मायूस होकर हम लौट आये। तीसरे दिन शाम को हमने पड्डा फिर वहीं बाँधा; जिसको शेर ने मार दिया। फौजी अफ़सर कप्तान गुडविन जोकि हाल ही में पहली जर्मन की लड़ाई खत्म होने पर जंगलात में मुलाज़िम हुए थे, एक दिन पहले हमारे कैम्प में आये थे और आधे बँगले में ठहरे हुए थे, उन्होंने कहा कि मैं भी मचान पर बैठूँगा। लेकिन मैंने कहा कि मैं शिरकत में शेर नहीं मारना चाहता हूँ और वे कुछ नाराज़ भी हो गये। मैं शाम को गया और पड्डे को थोड़ी दूर नाले में जामुन की घनी पौध में चौथाई खाया हुआ पाया। नज़दीक में चारों तरफ़ कोई शाखदार पेड़ मचान बाँधने के काबिल न था। साल के सब पेड़ सीधे थे। लिहाज़ा मजबूरन एक सीधे साल के पेड़ पर जोकि लाश से १० कदम पर था, मुश्किल से मचान बाँधा और लाश से नज़दीक मचान बाँधने की गलती फिर की। सूरज डूबते वक्त मचान पर बैठा, यह दूसरी गलती की। मैंने अपने आदमियों से कहा कि नौ बजे मुझे लेने आना और अगर फैर हो जावे तो दो बाँस और रस्सियाँ शेर को ले जाने के लिए लाना, यह तीसरी गलती घमंड की थी।

करीब ८ बजे के जब बिलकुल अँधेरा हो गया, मैंने महसूस किया कि नरम पैरवाला कोई भारी जानवर पड्डे की घसीट की लाइन पर आ रहा है। वह कुछ देर नाले के किनारे खड़ा रहा और फिर नाले में कूद कर लाश के पास खड़ा हो गया। यह पहला शेर था; जोकि मेरे मचान के पास ७-८ बरस के अरसे में दरजनों लाशों के ऊपर बैठ के बाद आया। मेरा दिल धड़क रहा था और खुशी भी थी कि अरसे

की मेहनत और इन्तज़ार के बाद इस वक्त शेर मुझसे सिर्फ़ १० कदम पर था, जोकि उसके साँस लेने से मालूम हो रहा था। मुझे फिक्र इस बात की थी कि बिलकुल अँधेरा है, कहीं गोली गलत न पड़े और जख्मी होकर भाग न जावे। यह सब बातें मिलकर इन्तहाई लुत्फ़ मचान से शेर के शिकार का आ रहा था। मैं इस इन्तजार में साँस रोके हुए बैठा था कि शेर बैठ कर खाने लगे, तब इतमीनान से टार्च की रोशनी से, जोकि मैंने राइफ़ल पर बाँध रखी थी, निशाना लेकर गोली मारूं। एक बहुत बड़ी ग़लती मैंने यह कर रखी थी कि आगे की मक्खी पर एक चमकदार मोती, जोकि औरतें कान और गले में पहनती हैं, शाम को बाँध दिया था, जोकि हलकी रोशनी में आगे की मक्खी की जगह मालूम करने में मदद देता था। टार्च इस्तेमाल करने से पहले इसको हटाना भूल गया था। मैं यह न समझ सका कि शेर ने तमाम अहतियात के बाद लाश के पास पहुँच कर बैठने में इस कदर देर क्यों की। वह लाश के पास बिलकुल करीब खड़ा था, जोकि मैं उसके साँस की आवाज़ से मालूम कर रहा था। मेरा सबर जाता रहा, क्योंकि उसको वहाँ खड़े हुए १० मिनट से ज़्यादा हो गया था और मुझे डर हुआ कि वह शक कर रहा है। कहीं इस क़दर नज़दीक आकर भी भाग न जावे। लिहाज़ा मैंने उसके साँस की तरफ अन्दाज़िया राइफल सीधी करके बटन दबाया, तो देखा कि पूरे कद का शेर खड़ा है, साथ ही इसके बिजली की रोशनी ने मोती पर टकरा कर मेरी आँखों में चकाचौंध पैदा कर दी। मुझे यह भी डर था कि शेर बिजली की रोशनी देखकर कहीं भाग न जावे, जैसा कि डोल पोखरा कैम्प में ३ मर्त्तबा शेर बिजली की रोशनी पड़ते ही भाग गया था। लिहाज़ा मैंने बिजली की रोशनी की मदद से निशाने को बग़ैर ठीक किये हुए ही जल्दी फैर कर दिया और मुझे कुछ अन्दाज़ा न हुआ कि कहाँ मैंने निशाना लिया और कहाँ गोली पड़ी। मगर शेर आवाज करता हुआ गिरा और फौरन ही उठकर सीधा मेरे पेड़ पर शोर करते हुए चढ़ने लगा। किस्मत से पेड़ १०-१२ फीट की

ऊँचाई तक बिलकुल सीधा था। फिर वहाँ से शाखें शुरू हुई थीं और वहीं पर मेरा मचान बँधा था। शेर मचान के नजदीक पहुँच कर सँभल न सका और गिर पड़ा। वह पिछला धड़ जमीन पर टेक कर गुर्राने लगा। मैं घबराहट, डर और जल्दी में दूसरा कारतूस मेगजीन से नाल में लाया और फौरन उसकी तरफ नाल सीधी करके फिर बिजली का बटन दबाया। मैं अगली मक्खी पर से मोती हटाना फिर भूल गया और फिर मोती से रोशनी टकरा कर मेरी आँखों को चकमका दिया। मुझे डर था कि शेर ने मुझे देख लिया है, कहीं फिर न चढ़ आवे। रात बिलकुल अँधेरी थी। लिहाजा मैंने जल्दी में फिर निशाना को बग़ैर ठीक किये हुए फैर कर दिया और शेर पहाड़ के ढाल पर करीब पचास कदम ढोंकता हुआ तिरछा भागा। वह थोड़ी देर ठहर कर लुढ़कता हुआ नाले में घनी जामुन की नयी पौध में मुझसे करीब २५ कदम पर गिरा। मगर झाड़ी इस कदर घनी थी कि बावजूद बिजली की रोशनी के कुछ न दिखलायी दिया। शेर बेचैनी से शोर मचाता रहा और चारों तरफ़ से चीतल, साँभर, काँकड़ और बन्दर शेर की मौजूदगी पर खतरे की आवाजें अपनी-अपनी जबान में देने लगे।

करीब ४५ मिनट के शेर वहीं पड़ा हुआ शोर मचाता रहा और सब जानवर बोलते रहे। मुझे फिकर थी कि अब तमाम रात बग़ैर खाने और नींद के जाड़े में काटनी होगी और फिर यह ख्याल कि दूसरे दिन जख्मी शेर को ढूँढ़ना होगा। सबसे ज्यादा यह ख्याल भी परेशान कर रहा था कि कैप्टेन गुडविन अफ़सरान हमें खूब बदनाम करेंगे। आखिरकार शेर की आवाज कम होती गयी और फिर ऐसा अन्दाजा हुआ कि शेर पेट के भल आहिस्ता-आहिस्ता बड़ी घास और नालों से कटी हुई जमीन की तरफ बढ़ रहा है और कभी-कभी बोलता जाता था। मेरे आदमी हिदायत के मुताबिक लालटेन और शायद बाँस व रस्सी लेकर गाते हुए राइफल की दो फैरें सुनकर खुशी में आते हुए मालूम हुए कि शेर को कैम्प में लावें और इनाम लें।

इनको क्या मालूम था कि मेरे दिल पर क्या गुजर रही है और मेरे गुरूर का और बड़े बोल का क्या नतीजा मिला है ? मैं अपनी पूरी आवाज से चिल्लाया कि यहाँ मत आओ, शेर जख्मी है । लेकिन वह अपने गीत और खुशी में मस्त थे और नाले के ढाल में उतरना शुरू किया। मैं बहुत घबराया कि जख्मी शेर अभी बिलकुल नजदीक है, आदमियों के नजदीक गाते और बोलते हुए पहुँचने पर जरूर हमला करेगा और इसका न मालूम क्या नतीजा और बदनामी हो। मैंने आसमान की तरफ एक फैर और किया। फैर की आवाज सुनते ही सब आदमी चुप हो गये। मैंने कहा—भाग जाओ, शेर जख्मी है। उन्होंने कहा कि हम बड़ा कोट और चाय लाये हैं। मैंने कहा—ज्यादा बात न करो, फौरन भाग जाओ, सुबह आना। मेरे पास कोई गर्म कपड़ा न था। रात को काफी सर्दी पड़ती थी। मैं अपने गुरूर में खाकी जीन के कपड़े पहन गया था और ख्याल किया था कि ९ बजे तक शेर मार कर लाद लावेंगे। मचान बहुत छोटा था कि पैर भी नहीं फैला सकता था और डेरे की पुरानी दरी जो मचान पर बिछी थी, वह चपरासियों के इस्तेमाल में थी। लिहाजा उसमें से खटमल और पिस्सू निकल कर तमाम जिस्म में चढ़ गये और बैठना मुश्किल कर दिया।

इनके हमलों की वजह से नींद नहीं आयी। झपकियाँ लगती रहीं। करीब दो बजे रात को मचान के नीचे बहुत हौलनाक आवाज, जैसी मैंने पहले कभी नहीं सुनी थी और सख्त लड़ाई की वजह से आँखें खुलीं।

मैंने टार्च को दबाकर देखा तो दो रीछ जान तोड़कर पड्डे की बकाया लाश के कब्जे के लिए लड़ रहे थे। उन्होंने बिजली की रोशनी की बिलकुल परवा नहीं की और कभी खड़े होकर एक दूसरे को गिरा कर दो पहलवानों की तरह काफी देर तक लड़ते रहे। मैंने थोड़ी देर तक यह तमाशा देखा वे दोनों लड़ते और देर तक खाते रहे और करीब-करीब पूरी बकाया लाश को खा गये। आखिरकार सुबह

हुई और मैं मलामत से भरा हुआ जंगल के राजा को जख्मी करने और उसके बेकार तकलीफ उठाकर मरने और बदनामी हासिल करने पर बहुत अफसोस करता रहा। मेरे आदमी आये और मैं जकड़े हुए जिस्म से बगैर खाने और रात को बगैर नींद के परेशान मचान से उतरा। मिस्ल मुजरिम के शेर के खून के निशान पर उस जगह तक गया जहाँ वह आध घंटा से ज्यादा पड़ा शोर मचाता रहा था। वहाँ पर खून बहुत काफी मिक़दार में था। उस जगह से ऐसा मालूम होता था कि शेर पेट के भल घिसटता हुआ पत्ते, झाड़ी और घास को दबाता हुआ नाले में ऊँचे किनारे से गिरकर ऊँची घास में चला गया। यहाँ से आगे जाने की मेरी हिम्मत नहीं पड़ी और मैं वापस आया। वापसी पर मैंने मचानवाले पेड़ को देखा कि शेर पहली गोली खाकर करीब-करीब मचान के नीचे तक पहुँच गया था और छाल पर काफी गहरे निशान नाखूनों के बने हुए थे। वह जख्म की वजह से और आगे न चढ़ सका, नहीं तो बड़ी मुसीबत का सामना होता। मैं कैम्प में वापस आया तो देखा कि क्लास का काम मेरे असिस्टेंट की निगरानी में जारी था; कैप्टन गुडविन से थोड़ी टेढ़ी बातों के बाद मैंने गुसल किया और खाना खाकर हस्ब मामूल छपान को जंगल चला गया। दिन भर रात का सीन आँखों और दिमाग में घूमता रहा। काम से वापसी पर चाय पीकर मैं फिर मौका पर गया और चूँकि देर से रवाना हुआ था, उस जगह से आगे जाने की हिम्मत न पड़ी, जहाँ से शेर नाले में कूद कर या गिरकर ऊँची घास में गया था। कुछ तो इन तमाम वाक़ियात की वजह से दिल मुरदा हो गया था और कुछ रात को देर तक शेर की डरावनी धाड़े सुनकर हिम्मत आगे जाने की न हुई। मायूस होकर कैम्प वापस आकर मैंने अपने ऊँटवालों को बुलाया और कहा कि ऊँटों पर चढ़कर घास में शेर को दूसरे दिन तलाश करें। अगर मिल गया तो २५ रुपया इनाम दूँगा। वह गालिबन वहीं घास में मरा हुआ मिलेगा। इसके बाद मैं नहीं गया। ऊँटवालों ने क्या कोशिश की, मैं यह नहीं कह सकता। नतीजा यह हुआ कि एक निहायत उम्दा शेर ब वजह मेरी

नातजुरबेकारी और कमहिम्मती के जाये हो गया। वरना अगर तलाश किया जाता तो वहीं घास में मरा हुआ मिलता। केप्टन गुडविन दूसरे दिन कमिश्नर साहब से बिजरानी कैम्प में घोड़े पर जाकर मिले और फिर मय अपने कैम्प के रामनगर कूच कर गये। मैं भी एक हफ्ते के बाद काम खत्म करके रामनगर पहुँचा। चीफ कंसरवेटर, कंसरवेटर और डिवीजनल फारेस्ट अफसर, जोकि वहाँ ठहरे हुए थे, दूसरे कैम्प को कूच कर रहे थे। जब मैं उनसे मिलने को पहुँचा तो बाद सलाम के एक नौ उमर अफसर ने कहा कि सुना है तुमसे और शेर से खूब मुकाबला हुआ। मैंने कहा कि हाँ, यह मेरा पहला साबका था और बहुत बुरा तजुरबा हुआ। चीफ कंसरवेटर ने कहा--हम सबने ऐसी ही गलतियाँ शुरू में की हैं। मगर फारेस्ट अफसरान को, जोकि हर साल ८ माह जंगलों में दौरा करते हैं, जेब नहीं देता है कि रात में शिकार खेलें। नतीजा यह होता है कि या तो शेर जख्मी होकर बेकार की मौत मरता है या आदमखोर हो जाता है।

इस वाकिया के चन्द ही माह के बाद गवर्नमेंट ने रात को शिकार खेलना कानूनन बन्द कर दिया। मुझे उस मैलानी के शेर के न मिलने का अरसा तक अफसोस रहा। उसके पैर के निशान औसत शेर से बहुत बड़े थे। मेरी हिम्मत उसको घास और नालों में ढूँढ़ने की न पड़ी और न इतना तजुरबा और वक्त ही था। नहीं तो वह पहाड़ से लुढ़कने के बाद, इतना खून देने के बाद और पेट के भल घसिटने के बाद हरगिज दूर नहीं जा सकता था। लिहाजा अपने तल्ख तजुरबों के बाद नौ उमर शिकारियों को मेरी नसीहत है कि रात को बिजली की रोशनी से बेइतमीनान गोली चलाने से कामयाबी कम और खतरा व परेशानी ज्यादा होती है और अक्सर जख्मी जानवर नहीं मिलता है। बेकार जाये होता है, जोकि शिकार और बहादुरी के उसूल के खिलाफ है। आखिर इन बेगुनाह जानवरों को भी इस दुनिया में जिंदा रहने का हक है।

२६. मेरा आठवाँ गुलदार

अप्रेल सन् १९२१ ई० में हम पहाड़ के दौरे पर मुकाम सेवनी रानीखेत के नजदीक गये। यहाँ खालिस चीड़ का जंगल था और यह मुकाम सतह समुद्र से ५ हजार फीट की ऊँचाई पर था। आब व हवा बमुकाबला साल के तराई भाभर के जंगलों के निहायत अच्छी थी। मौसम बहार का था और करीब-करीब जंगल के कुल पेड़ों में फूल आ रहा था। हम रोजमर्रा जंगलों में काम देखने जाते। एक रोज एक गहरे नाले में होकर गुजरे; जिसमें घनी काँटेदार झाड़ियाँ बहुत थीं। कहीं पर पानी था और दोनों तरफ ऊँचे पहाड़ खूबसूरत सीधे चीड़ के पेड़ों से ढके हुए थे। इस जंगल में कटान हो रहा था; जिसको देखने हम क्लास को ले गये थे। मुझे ख्याल हुआ कि चीड़ के साफ जंगलों में सिवाय चट्टानों और नालों के जानवरों के छिपने के लिए जगह कम होती है। लिहाजा इस नाले में गुलदार का होना मुमकिन है और इरादा किया कि शाम को बकरी बाँधकर थोड़ी देर उस नाले में बैठेंगे; गो कोई पैर का निशान वगैरा नहीं दिखलायी दिया था। शाम को बजाय टहलने के मैं बकरी, अर्दली और असिस्टेंट को लेकर वहाँ गया और एक जगह घनी झाड़ियों के सामने बकरी बाँधकर हम तीनों एक ताजा चीड़ के कटे हुए लट्ठे की आड़ में करीब २० कदम पर बैठ गये। आध घंटा तक लापरवाई से बैठने के बाद मैं ख्याल कर रहा था कि गुलदार की मौजूदगी के कोई आसार नहीं हैं, लिहाजा उठना चाहिए, कि इतने ही में बकरी बड़े जोर से चिल्लायी और हमने देखा कि एक गुलदार ने बकरी को गिराकर दबा लिया। मैंने जल्दी निशाना लेकर फैर किया और गोली दोनों के पार हो गयी और वहीं रह गये। यह ६ फीट ८ इंच की मादीन थी।

पहाड़ का दौरा खत्म करके हम आखिरी हफ्ता मई सन् १९२१ ई० में फाइनल परीक्षा के लिए नैनीताल पहुँचे और शुरू अक्टूबर सन् १९२१ ई० में नयी क्लास शुरू करने के लिए फिर रामनगर पहुँचे।

३०. मेरी पहली कामयाबी : दो शेर एक मिनट में

ट्रेनिंग स्कूल आखिरी हफ्ता नवम्बर सन् १९२१ ई० में मुकाम भंडार पानी में कैम्प कर रहा था। यह वही जगह थी जहाँ दिसम्बर सन् १९१६ ई० में मिस्टर काँजीलाल के साथ तमाम रात जाड़े में पेड़ के ऊपर बेकार काटी थी। इस कैम्प में दो रोज खूब तूफान व बारिश आयी; जिससे काम बन्द रहा और कहीं घूमने को भी न निकल सके। दूसरे दिन शाम को कुछ बारिश बन्द हुई और हम रायफल और बन्दूक लेकर घूमने को निकले। हवा तेज चल रही थी और थोड़ी ही दूर गये होंगे कि बूँदें भी पड़ने लगीं। हम कैम्प को वापस हुए और जब हम पुरानी गाड़ी की लीक पर आ रहे थे, जोकि फायर लाइन के बीच में से ढालदार मुकाम में से गुजर रही थी और जिसके दोनों तरफ बड़े-बड़े पत्थर, चट्टान, घने साल के जंगल और नीचे घनी झाड़ियाँ थीं; एक साँभर ने खतरे की आवाज जोर-जोर से देना शुरू की; जोकि बराबर एक ही जगह हमारे दाहिनेवाले टुकड़े से नजदीक ही से आ रही थी। आवाज भारी और पुराने नर की मालूम होती थी। चूँकि हल्की-हल्की बूँदें पड़ रही थीं, पत्तियाँ और जमीन भीगी हुई थी, आँधी और बूँदों का शोर हो रहा था, लिहाजा आहिस्ता-आहिस्ता पैदल जानवरों के पास पहुँचना आसान था। मैंने राइफल लिया और साँभर की आवाज की तरफ होशियारी से चलना शुरू किया मैं उससे करीब १५ कदम पर पहुँच गया, लेकिन झाड़ियों की घनावट की वजह से और कुछ अँधेरा शुरू हो जाने से उसको देख न सका। लिहाजा खड़ा हो गया।

मेरे चन्द कदम सामने दीमक की बामी थी। मैंने ख्याल किया कि उसकी आड़ में खड़े होकर साँभर को देखूँ, जोकि अभी तक चन्द ही कदम आगे कुछ ऊँचाई पर बोल रहा था। जब मैं मुश्किल से एक

या दो कदम बामी से रह गया और दूसरा कदम आगे बढ़ाने के लिए नीचे निगाह डाली तो शेर की दुम की नोक हिलती हुई देखकर हैरत से घबरा गया। शेर मुझसे एक गज़ के अन्दर बामी के पीछे साँभर पर हमला करने को तैयार बैठा था। मैं दम रोककर बहुत खामोशी से मुड़ा और जिस अहतियात से गया था, वैसे ही फायर लाइन पर वापस आया। ब वजह बूँदें पड़ने के, पत्तियाँ व जमीन गीली होने के और आँधी के शोर के मेरी आहट शेर न मालूम कर सका। जब मैं सड़क पर असिस्टेंट और अरदली के पास पहुँचा, साँभर तब भी बोल रहा था। उन्होंने बगैर फैर किये हुए, वापस आने की वजह पूछी। मैंने आहिस्ता से कहा कि खामोश चले आओ। जब थोड़ी दूर निकल आये, तब मैंने बतलाया कि मैं बगैर फैर किये हुए वापस क्यों आया।

रात भर जोर की आँधी और बारिश फिर हुई। सुबह होने पर कुछ खुला। हम काम पर गये मगर दोपहर से फिर तूफान आ गया और हम भीगते हुए कैम्प को वापस आये। शाम को फिर कुछ खुल गया और हम गरजिया की सड़क पर थोड़ी दूर घूमने गये थे तो हमने देखा कि एक शेर के ताजे पैर के निशान पहाड़ से सड़क पर उतरने और फिसलने के बने हुए हैं और वह सड़क को काटकर नीचे नदी की तरफ़ पानी बन्द होने के बाद एक घंटा के अन्दर ही गुजरा होगा; क्योंकि पैर के निशानों पर पानी की बूँदें नहीं पड़ी थीं। मैं कैम्प वापस आया और अरदली को सामने थोड़ी दूर पर पहाड़ी कुलियों के झोपड़ों पर भेजा, जो हर साल जाड़ों में मय बाल-बच्चों और जानवरों के पहाड़ से आकर जंगल के कामों में मेहनत-मजदूरी करके जाड़ों के दिन गुजारते हैं। वहाँ सिर्फ एक ही पड्डा था; जिसके उन्होंने १५ रुपये माँगें, जब कि उस जमाने में मुनासिब कीमत ५ से ८ रुपये थी। मुझे लेना था, लिहाज़ा मैंने १४ रुपये देकर पड्डा खरीदा और उसी वक्त ले जाकर उस जगह बाँध दिया, जहाँ से शेर गुज़रा था।

रात में वारिश नहीं हुई और आसमान बिलकुल साफ हो गया। सुबह होते ही मैंने दो आदमी पड्डा देखने को भेजे; जोकि खाली आये।

उन्होंने कहा कि शेर पड्डा मार कर सड़क के नीचे की तरफ ले गया है। मैं काम से साढ़े तीन बजे वापस आया और चार बजे मचान, रस्सी, कुल्हाड़ी और दो आदमी लेकर उस जगह पर पहुँचा, जहाँ पड्डा मारा गया था। वहाँ गैर मामूली तौर पर ज़मीन, झाड़ियाँ और घास टूटी और खुदी हुई थी और जगह-जगह खून पड़ा हुआ था। ऐसा मालूम होता था कि पड्डे के कतल में और रस्सी तोड़ने में बहुत जोर लगाया गया है। थोड़ी दूर तक मैं घसीटन पर गया। वहाँ पेट की आलायश और कुछ हड्डियाँ पड़ी हुई थीं। शायद यहाँ पर पेट साफ किया और खाया गया था। फिर इसके बाद कोई निशान घसीटने का नहीं मिला। मैंने करीब आधे घंटे के लाश ढूँढ़ी और मायूस होकर वापस आ रहा था कि चौदह रुपये का नुकसान भी हुआ और जंगल का कोई सनीमा भी देखने को न मिला। उसी वक्त पूरब तरफ़ से कुछ कौए बोलना शुरू किये। मैंने कहा—चौकीदार लोग आ गये, अब पता लग जावेगा। मैं उनकी आवाज की तरफ़ गया तो उस पेड़ के नीचे जिस पर दो कौए थे, अगला आधा धड़ मिला; जिसमें सिर, गरदन, अगले दो पैर और कुछ हिस्सा सीने का था, बाकी बिलकुल साफ था। चन्द हड्डियाँ पड़ी थीं, जोकि एक शेर नहीं खा सकता था। मैंने वही पुरानी ग़लती करते हुए जल्दी से लाश से १५ फीट पर एक पेड़ पर अपना नया आविष्कारक मचान बाँधा; जोकि ढाई फीट लंबा और ८ इंच चौड़ा तख्ता था, उसके दोनों किनारों पर दो-दो सूराख थे; जिसमें ६-६ फीट सूत की लंबी व पतली रस्सियाँ बाँध रक्खी थीं। तख्ते के बीच में एक गद्दी कीलों से जड़ दी थी। मेरा यह नया मचान ५ से १० मिनट में बगैर शोर मचाये किसी खराब से खराब पेड़ में झूले की तरह लटका दिया जाता था और पैरों को टेकने के लिए १ व २ फीट का डंडा तख्ते के नीचे बाँध दिया था। इस मचान से एक और फायदा यह था कि इस पर रात भर बैठना गैरमुमकिन था; जिसकी कई तल्ख तजुरबों के बाद मैंने तोबा कर ली थी। जाड़े के दिन थे। वक्त कम रह गया था। ५ बज चुके थे। लिहाजा मचान को उलटा-सीधा टाँगकर

दूसरी गलती यह की कि उसके चारों तरफ पत्तीदार शाखें भी अपने छिपने के लिए नहीं लगाया। लिहाजा मैं सब तरफ से खुला हुआ था। मैंने दोनों आदमियों को जल्दी से भगा दिया और कह दिया कि जब फैर हो तो आ जाना, नहीं तो अँधेरा होने पर लालटेन लेकर सड़क पर जरूर आ जाना और वहाँ से सीटी देना। जब मैं दो सीटी दूँ, तो बोलते हुए मचान के पास आ जाना। सड़क मुझसे ६०-७० कदम की दूरी पर दिखलायी दे रही थी। मेरे पास ४०५ बोर वेन्चेस्टर राइफल के सिर्फ ४ ही कारतूस थे और मँगा रखे थे। लिहाजा दोनाली बन्दूक भी दो गोलियाँ भरकर गोद में रख लिया था। मेरी ख्वाहिश यह थी कि दिन में शेर आ जावे और मैं इतमीनान से गोली चला सकूँ; जोकि मुझको अपनी ८ वर्ष की कोशिश में नसीब नहीं हुआ था। मैं शिकारियों की या जंगलात के अमला की बिलकुल मदद नहीं लेता था; क्योंकि वे लोग बेकार ज्यादा और कार आमद काम कम करते थे और कामयाबी हो या न हो अपना बिला वजह का अहसान और नावाजिब उम्मीदें रखते थे; जोकि मैं पूरी नहीं कर सकता था। मैं अपना जाती अच्छा शिकारी नौकर नहीं रख सकता था। दो-एक किताबें, जोकि मैंने शिकार के बारे में पढ़ी थीं, उनसे कोई सबक इस किस्म का नहीं मिलता था कि जिससे कामयाबी में मदद मिले, या ऐसी हिदायत मिले जिनसे नये शिकारी गलतियों, नाकामयाबी और खतरे से बच सकें। लिहाजा मैं अपना कुल शिकार का इन्तजाम खुद ही अपने तजुरबों के मुताबिक करता था, जिसमें मुझे बहुत लुत्फ़ आता था और न किसी का अहसान न शिकायत का ही मौका होता था। खैर, मैं मचान पर बैठकर अपने पिछले दरजनों शेर के शिकार के नाकाम-याब तजुरबों पर गौर करने लगा।

मैंने देखा कि मचान लाश से बहुत ही करीब है और मैं चारों तरफ से खुला हुआ दूर से दिखलायी दे रहा हूँ। लेकिन अब कुछ नहीं हो सकता था।

मैं मचान के सामने पच्छिम तरफ देख रहा था कि मेरी निगाह

करीब अस्सी कदम पर एक शेर पर पड़ी। वह बहुत होशियारी से आहिस्ता-आहिस्ता एक झाड़ी से दूसरी झाड़ी के नजदीक ठहरता हुआ, झुका हुआ और चारों तरफ देखता हुआ आ रहा था। वह करीब १५ मिनट में मुश्किल से २० कदम आया होगा। मुझे बेहद खुशी थी कि आज अरसे की उम्मीदों के बाद मचान से दिन में शेर दिखलायी दिया। शेर पचास कदम पर एक झाड़ी में चूतर के भल बैठ गया और अगले हाथों को टेककर सर ऊँचा किये हुए चारों तरफ़ देखने लगा। सड़क की तरफ खास तौर पर तवज्जेह थी; जोकि उससे पचास कदम पर उसके दाहनी तरफ दक्खिन में थी। मैं भी करीब इसी कदर दूर उसके पूरब में बिलकुल सामने था। सड़क उस लाइन के बिलकुल समानान्तर थी, जोकि शेर से मुझ तक खींची जाती। उत्तर में करीब १०० कदम चौड़ा व बहुत घना जंगल था और फिर उतनी ही चौड़ी नहीं थी; जिसमें पानी सिर्फ ऊँचे पहाड़ की जड़ में काफी शोर मचाता हुआ बह रहा था। मोर और मुर्गियाँ चारों तरफ अपनी मामूली बोलियों में बोल रहे थे। मेरे पीछे पूरब में दूर तक जंगल की यह घनी पट्टी, जोकि सड़क और नदी के बीच में थी और चौड़ी होती चली गयी थी। इस पट्टी में पानी के कई एक छोटे-छोटे चश्मे थे और जमीन बिलकुल तर थी। जहाँ चन्द साल पहले काँजीलाल और मैं रात भर मचान पर जाड़े में जमकर बरफ़ हो गये थे। यह उस मुकाम का नक्शा था जोकि मैं मुफ़स्सिल इसलिए दे रहा हूँ, ताकि नये शिकारियों को अन्दाज़ हो कि शेर अपने मारे हुए जानवर की लाश के पास आने में क्या-क्या होशियारी करता है और किस तरह से शिकारी का पता मचान पर लगा लेता है। खासकर जब उसकी लाश के पास आदमी का आना-जाना और वहाँ मचान बाँधने की खटपट हो जावे और जब शेर को खतरे का ख्याल या इंसान की दी हुई दावत में दग़ाबाज़ी का ख्याल हो जावे, जोकि हम हिन्दोस्तानियों में आम बात है।

जैसा कि मैंने पहले कहा कि शेर करीब ५० कदम पर मेरे सामने बैठा हुआ सड़क की तरफ़ देख रहा था, मुझको उसका सीना खूब

साफ और काफी इतमीनान के निशाने के काबिल दिखलायी दे रहा था। मैंने ख़याल किया कि जो मौका मिले, उसको ले लेना चाहिए और आयन्दा की बेहतर उम्मीद पर न छोड़ना चाहिए, जोकि मिस्टर काँजीलाल का पहला मकूला था और इसीलिए वे हमेशा दो फैर किया करते थे। खासकर खाने-पीने के मामले में वे उसकी पूरी पाबन्दी करते थे। मैंने यह इरादा किया ही था और राइफल को जोकि मेरी गोद में आसमान की तरफ नाल का रुख किये हुए खड़ी कर रखी थी, आहिस्ता-आहिस्ता झुकाकर सीने पर ला ही रहा था कि शेर एकदम खड़ा होकर मुड़ा और झुके हुए दबे पाँव तेजी से जिस तरफ से आया था, उसी तरफ एकदम गायब हो गया। उस वक्त मेरी मायूसी और बेचैनी की कोई हद न थी। मैं अपने आप को मलामत कर रहा था कि वह काफी देर सीना खोले हुए मुझे मौका देता रहा। मुझे फायर करना चाहिए था और ख्याल हुआ कि शायद उसने मुझे राइफल झुकाते हुए लाश के ऊपर पेड़ पर बैठे देख लिया और अब न आवेगा। मैं बहुत ही रंजीदा था कि इतने में मैंने देखा कि दो आदमी पच्छिम की तरफ से सड़क पर बातें करते हुए आ रहे हैं और पूरब को हमारे कैम्प की तरफ जा रहे हैं। मैंने लम्बी साँस लिया और समझ गया कि किस वजह से शेर दुम दबाकर भाग गया। आदमी मेरे बायीं तरफ दक्खिन सड़क पर ६०-७० कदम से खूब जोर-जोर से बातें करते हुए और किसी मामले पर बड़ी सरगर्मी से बहस करते हुए, छोटा-सा हुक्का मुँह से लगाये हुए निकले चले गये। उनमें से एक के कंधे पर आरा और दूसरे के कंधे पर कुल्हाड़ी थी। उनको शेर की और मेरी मौजूदगी का शक ज़रा भी न हुआ और मुझे उस रोज मालूम हुआ कि शेर आदमी से कितना डरता है। मैंने फिर राइफल का मुँह आसमान की तरफ करके गोद में खड़ी कर ली और फिर इतमीनान से उम्मीद लेकर और सँभल कर बैठ गया। जब आदमी काफी दूर चले गये, उनकी आवाज़ें आना बन्द हो गयीं और जंगल में बिलकुल खामोशी फैल गयी, तो मैंने देखा कि यकायक एक मोर खतरे की

आवाजें देता हुआ मेरे दाहने यानी उत्तर की तरफ से उड़ता हुआ दूर चला गया और चन्द मादीन उड़कर नज़दीक के पेड़ों पर बैठ गयीं। वे गर्दनें झुकाकर नीचे देखते हुए अजीब खतरे की आवाज करने लगीं। मैंने उस तरफ देखा तो एक शेर आहिस्ता-आहिस्ता इधर-उधर देखता हुआ और ठहरता हुआ आ रहा था। मैं इस उत्तर की तरफ सबसे ज़्यादा खुला हुआ था। मेरा राइफल मेरी गोद में खड़ा था और मैं दोनों हाथों से पकड़ कर नाल को आसमान की तरफ किये हुए था।

शेर आता रहा और एक घास के छोटे रक़बे में खड़ा होकर चारों तरफ देखकर करीब ४० कदम पर बैठ गया। वह लाश की तरफ और मेरी तरफ बराबर देखता रहा; क्योंकि मैं बेवकूफी से लाश से चन्द कदम पर और ८ फीट की ऊँचाई पर बिलकुल खुला हुआ बन्दर की तरह शेर की निगाह के सामने ही बैठा हुआ था। मैंने उस रोज अपनी गलतियों को खूब समझा, जैसा कि उससे पहले कभी न समझा था।

शेर आराम से बैठा हुआ अपना सीना और हाथ बिल्ली की तरह चाटता रहा और मैं इस डर से कि कहीं शेर मुझे देखकर भाग न जावे, साँस रोके हुए मिस्ल पत्थर के बैठा था। अब फासला कुछ भी न था और सीने पर निशाना बहुत ही साफ और अच्छा मिल रहा था। अब शेर बहादुर के लिए कोई मौका बचने का मुमकिन न था; अगर मैं एक फीट अपने दाहने तरफ मुड़ सकता और अपना राइफल उसकी तरफ सीधा कर सकता। लेकिन ऐसा करना शेर को इतने नज-दीक दिन में आ जाने पर भी भगा देना था और जोकि मेरे लिए बरसों की मेहनत, इन्तजार और तजुरबे के बाद बहुत बड़ी मायूसी और रंज की बात होती। लिहाजा मैंने यही मुनासिब समझा कि पत्थर की मूरत की तरह बैठे रहो और देखो कि आगे यह क्या करता है; गो मैं काफी तकलीफ से बैठा था। शेर ने अपना सर पीछे मोड़ा और मैंने देखा कि एक और शेर दबे पाँव आहिस्ता-आहिस्ता आ रहा था। पहलेवाले शेर ने गुरगुराना शुरू किया। आनेवाले शेर ने खुशामदाना तरीके पर उसके पिछले हिस्से को, फिर सीने को चाटना शुरू किया

और उसके दाहने तरफ बराबर में बैठ गया। पहलेवाला शेर देर तक आहिस्ता-आहिस्ता गुरगुराता रहा; जिससे मालूम होता था कि वह उस मेहमान के आने पर खुश नहीं है। जब दोनों खामोशी से बैठकर लाश की तरफ देख रहे थे तो एक और तीसरा भी आता नजर आया। इन दोनों ने पीछे मुड़कर देखा और पहलेवाला उस पर भी गुरगुराने लगा। तीसरे ने भी बिलकुल दूसरे की तरह से दबे-दबे पास आकर पहलेवाले को जो तीनों में बड़ा मालूम होता था, दुम की तरफ से चाटते हुए बायीं तरफ सीने पर चाटते-चाटते बैठ गया। गोया इस बात का शुक्रिया अदा किया कि उसको भी दावत में शिरकत की इजाजत दे दी। अब तीनों एक लाइन में बैठे हुए इधर-उधर और ज्यादातर लाश की तरफ देखते रहे और कभी-कभी बिल्लियों की तरह अपने सीने और अगले पंजे चाटते रहे। मैं दम रोके हुए पत्थर के बुत की तरह, उनकी तरफ गरदन मोड़े हुए, उनकी मुखतलिफ अदाएँ और हरकतें देखता रहा और बड़ा सबक सीखता व लुत्फ उठाता रहा। मगर करीब आध घंटे के एक ही पोजीशन में जकड़ा हुआ पत्थर की तरह बैठने से तंग भी आ चुका था। इतने ही में तेज हवा के झोंके आये और मेरे सामने एक सूखी डाल जो लटक रही थी, हिली और उसके सूखे पत्तों से खड़खड़ाहट की आवाज पैदा हुई। इस पर एकदम से तीनों की ६ आँखें मेरे तीन फीट सामने की सूखी डाल पर पड़ीं और अब इन तीनों ने मुझे बहुत-बहुत गौर से कान ऊँचे-नीचे कर-करके देखना शुरू किया। उनकी अदाओं से जाहिर था कि उन्होंने अब मुझ पर काफी शक करना शुरू किया और बुरी तरह से आँखें जमायीं। मैं चोर की तरह से दमबखुद गरदन टेढ़ी किये बैठा तो था, मगर अब मुझे यह डर हुआ कि इनका शक अब बहुत ही पक्का नजर आता है। कहीं बग़ैर गोली चलाने का मौका दिये हुए इतने नजदीक आध घंटा दिन दहाड़े बैठकर भाग न जावें। मेरी गर्दन में अब नाकाबिल बर्दाश्त दर्द भी होने लगा था और मेरी हालत देखने के काबिल थी। लेकिन खुदा का शुक्र है कि उसी वक्त एक और जानवर की

आमद मेरे और शेरों के दरम्यान यानी मेरे पीछे दाहनी तरफ जोर की सुनायी देने लगी। तीनों अपने सर उस तरफ फौरन मोड़कर देखने लगे। मुझे भी जरूरत हुई कि देखूँ कि यह चाथी चीज क्या है। मेरी गरदन पहले ही से इन्तहाई दाहनी तरफ आध घंटे से मुड़ी हुई दर्द कर रही थी और आगे मोड़ना दुश्वार था। लिहाजा मैं मचान पर थोड़ा मुड़ा और देखा कि एक काँकड़ हड़ के पेड़ के नीचे ढूँढ़-ढूँढ़ कर हड़ खा रहा है। मैंने शेरों को देखा तो वे सर उठाये अभी काँकड़ ही को देख रहे थे। जब उन्होंने काँकड़ को देख लिया तो उस तरफ से लापरवा हो गये। मगर शेर नम्बर २ को मेरी तरफ से बमुकाबले औरों के ज़्यादा शक हो गया था। उसने फिर अपनी निगाह मेरे ऊपर जमायी और मैं कभी काँकड़ को और कभी शेरों को देख रहा था। काँकड़ को शायद शेर की खुशबू मिली। वह एकदम से ज़मीन से ३-४ फीट उछला और बड़े ज़ोर-ज़ोर से खतरे का शोर मचाता हुआ भाग गया। इस पर शेर फिर उधर देखने लगे और मैंने अपनी गर्दन सीधी कर ली। मगर मेरा राइफल अभी तक आसमान की ही तरफ रुख किये खड़ा था। बड़ा शेर जो बीच में बैठा था, उठा और उन दोनों पर गुर्राया। उन दोनों ने अपने-अपने सर अपने पंजों पर जमा दिये और आहिस्ता-आहिस्ता फें-फें की आवाज करने लगे; गोया कि यह जवाब दिया कि बहुत अच्छा, जो हुक्म हजूर; यानी वहीं बैठे रहेंगे। अब बड़े शेर ने आहिस्ता-आहिस्ता लाश की तरफ़ आना शुरू किया। मैंने देखा तो शेर नम्बर २ फिर मेरे ऊपर आँखें जमाये था और नम्बर ३ सीना चाट रहा था। मगर बड़ा शेर बेशक-व-शुबहा के लाश की तरफ़ चला आ रहा था। मैंने दिल में सोचा कि परवा नहीं, नम्बर २ को देखने दो। मगर अब नम्बर १ को ले डालो। जैसे ही उसका सर एक पेड़ की आड़ में आया मैंने राइफल एकदम से नीची कर ली और सिर पर निशाना जमा कर देखता रहा कि यह आगे क्या करता है। अब मुझे बिलकुल यकीन था कि इसकी मौत तो आ गयी। मगर खुशी के मारे मेरा दिल और दिमाग काबू में न था।

शेर ने लाश पर पहुँच कर उसको सूँघा और मुँह में दबा कर सर, गरदन और अगले पैरों को जो कुछ बचा था, लेकर आगे बढ़ा और नजदीक था कि मेरे मचान के नीचे से निकल जावे। मैंने उसके दोनों कंधों के बीच में गोली मारी और उसकी गुर्राहट की आवाज के साथ गिरता देखकर मैं अपने दाहनी तरफ फौरन काफी मुड़ गया। मैं नाल में नया कारतूस लगाते हुए दूसरा फायर उन दोनों में से एक शेर के बग़ल पर किया; जबकि वह तेजी से हवा में छलाँगें मार रहा था। वह भी आवाज के साथ ही गिरा। अब तीसरा शेर करीब ५० कदम के निकल चुका था और तेजी से भाग रहा था। मैंने उस पर भी तीसरी फैर की, मगर गोली उसके पेट के नीचे जमीन पर लगी और वह बाल-बाल बच कर निकल गया। अब मैंने चौथा आखिरी कारतूस नाल में लगाकर गौर किया कि दूसरी गोली की ज्यादा जरूरत किसको है। मैंने देखा कि बड़ा शेर जोकि मचान के नीचे पड़ा था, उठने की कोशिश कर रहा था और गिरता-पड़ता, मेरी तरफ देख कर बहुत शोर मचा रहा था। दूसरा, करीब ४० कदम पर घास में उछल-कूद रहा था। इसलिए मैंने यह गोली अहतियातन उसके और मार दी। अब मैंने बन्दूक सँभाली; जिसमें दो लीथल की गोलियाँ लगी हुई थीं। पहलेवाले शेर को जोकि मचान के नीचे बहुत ऊधम मचा रहा था, देख कर मैं जोर से खाँसा और उसने सर उठा कर और मुँह बना कर गुर्राना शुरू किया। मैंने एक गोली उसके सीने में गर्दन के नीचे मारी। मगर इसका कोई असर नहीं हुआ, सिवाय इसके कि अब गुस्सा और बढ़ गया और उसने उठने की इन्तहाई कोशिश की, मगर फिर गिर पड़ा। वह गुस्से में अपने ही हाथ चबाने लगा। तब मैंने आखिरी गोली उसके सर के पीछे गरदन पर मारी और वह खत्म हो गया। मैं उस रोज अपनी कामयाबी पर बहुत खुश हुआ कि दो शेर सामने पड़े हुए थे। अब मैंने अपने हाथ-पैर और गर्दन जोकि पौन घंटे के करीब दम बखुद बैठने से जकड़ गये थे. सीधे किये और सिगरेट पीने लगा। उस वक्त तीसरा शेर जो बच

गया था, मचान के करीब ही बोलना शुरू किया, मानो अपने साथियों को बुला रहा हो।

थोड़ी ही देर में मेरा असिस्टेंट, चन्द विद्यार्थी और नौकर आ गये और सड़क पर खड़े होकर पूछा कि आवें। मैंने कहा कि सिर्फ दो आदमियों को लालटेन के साथ भेज दो। बाकी सड़क पर खड़े रहें। अँधेरा हो चला था और तीसरा शेर नजदीक ही बोल रहा था। मैं मचान से उतरा और हम लोग जल्दी से सीधे कैम्प को चले गये। मेरे असिस्टेंट ने पूछा कि ६ फैर क्यों दागे। मैंने कहा कि तीन शेर आ गये थे। दो मार लिये हैं और एक बच गया है।

सुबह को हम फिर गये। मुझे ताज्जुब हुआ कि बावजूद दो शेर की लाशें नजदीक पड़ी होने के और ६ फैर होने के तीसरा शेर रात को फिर आया और कुल बक़ाया लाश को मचान के पास थोड़ी ही दूर पर बैठकर खा गया। हम दोनों को कैम्प में लाये और उनको नाप कर बहुत मायूस हुए कि बड़ा नर शेर ८ फीट १० इंच और मादीन ८ फीट २ इंच निकले। उनके दाँतों को देखा तो दूध के चारों बड़े दाँत हिल रहे थे और उनके जड़ से नये कीले आध-आध इंच के निकल आये थे। तब मालूम हुआ कि ये दोनों करीब डेढ़-डेढ़ वर्ष के पट्ठे हैं और तीनों पट्ठे मिलकर माँ से अलग शिकार करने लगे हैं। दोनों तन्दुरुस्ती में बहुत अच्छे थे और नर बहुत होनहार मालूम हो रहा था। मैंने एक कार्ड अपने दोस्त अब्दुल रहमान को उस वक्त लिखा, जिन्होंने किला गोरी शाह पर करीब २० बरस पहले लड़कपन में ताना दिया था कि क्या पिद्दी और क्या पिद्दी का शोरबा। तब मैंने यह कहा था कि अब अपना ही मारा हुआ शेर देखूँगा। मैंने लिखा कि आज वह मुराद खुदा ने पूरी की और दो शेर मेरे डेरे के सामने पड़े हुए हैं और खालें निकाली जा रही हैं।

३१. मेरा नवाँ गुलदार

दूसरे दिन मेरे दोस्त बाशीराम रेंजर, जिनकी हाल ही में गज़टेड अफ़सरी में तरक्की हुई थी और जोकि मेरे कैम्प से तीन मील के फासले पर उस इलाके के रेंज अफसर थे, आये और मेरे साथ ठहर कर अपनी रेंज का काम दो-एक रोज देखते रहे। मेरे शेर देखकर उनको भी शिकार का शौक हुआ। मेरे पास एक राइफ़ल ४०१ बोर का फाल्तू था। उन्होंने मुझसे नब्बे रुपये में उसे खरीदा; जोकि दरमियान दरजे के शिकार के लिए अच्छा था। उन्होंने चन्द फैर निशाना पर दागे और इतमीनान करके उसी रोज शाम को हम दोनों कुत्ता और बकरी लेकर घूमने निकले। हम लोग आधा मील गये होंगे कि हमने चीतलों के खतरे की आवाज का शोर सड़क से एक फरलाँग पच्छिम तरफ एक सूखे नाले के किनारे सुना; जहाँ पर नाले के दोनों तरफ़ घनी झाड़ियाँ थीं। चीतलों की आवाज की तरफ सौ कदम जाने के बाद नाले के किनारे हमको दो बड़े पेड़ एक दूसरे से करीब २० कदम के फासले पर मिल गये। मैंने बाशीराम से कहा कि एक पेड़ पर चीतलों की तरफ तुम बैठ जाओ, ताकि पहला मौका तुमको मिले और दूसरे पर मैं बैठ जाऊँ। दोनों के सामने नाले के किनारे बकरी को बाँध दें, फिर देखें कि क्या तमाशा होता है। जब हम लोग बकरी बाँधकर पेड़ों पर बैठ गये तो मैंने अरदली से कहा कि तुम कुत्ते को लेकर सड़क पर करीब सौ कदम पर खुले हुए घास के रक़बे में बैठो, जहाँ से हम आये थे। बकरी थोड़ी ही देर बोली होगी कि चीतलों ने शोर मचाना बन्द कर दिया। मैंने बाशीराम से कहा कि तैय्यार हो जाओ, आता है। मगर गुलदार ने उस सौ कदम आने में करीब आधा घंटा लगा दिया और बाशीराम को या तो झपकी आ गयी, या किसी ख़याल में बकरी की तरफ मुँह किये हुए डूब गये। मैंने देखा कि गुलदार एक झाड़ी की

आड़ में नाले की ढाल पर बाशीराम से करीब २५ कदम पर छिपा हुआ बकरी को देख रहा है और बाशीराम अपने ख्याल में बुत की तरह मस्त हैं। उस वक्त इशारा करना या बोलना गुलदार को भगा देना था। गुलदार आहिस्ता-आहिस्ता झाड़ियों में छिपता हुआ और नजदीक आ गया। बाशीराम को पता न लगा। आखिरकार गुलदार ने बकरी पर हमला किया। बाशीराम ने फौरन घबराकर बगैर निशाना लिये हुए फैर कर दिया और गुलदार नाले की झाड़ियों और घास में गायब हो गया। मैंने बाशीराम को इशारा किया कि खामोश बैठे रहो।

करीब १५ मिनट के बाद गुलदार ने मेरे सामने नाले के किनारे एक झाड़ी से मुँह निकालकर बकरी की तरफ देखना शुरू किया। जैसे ही उसने एक कदम और आगे बढ़ाया, मैंने उसके सीने पर गोली मारी। वह लुढ़ककर नाले की झाड़ियों में कुछ देर तड़पा और फिर खामोश हो गया। मैंने अरदली को आवाज दी। मेरा कुत्ता रोवा फौरन आ गया। मैंने पेड़ से उतरकर झाड़ी में पत्थर फेंके, कुत्ते को भेजा, मगर वह आगे नहीं बढ़ा। वह बहुत खौफ खाकर भूँकता रहा। फिर हम आगे बढ़े तो गुलदार को मरा हुआ पाया; जोकि बहुत अच्छा नर ७ फीट ६ इञ्च का था।

---

३२. मेरा दसवाँ गुलदार

सन् १९२१ ई० की फारेस्ट ट्रेनिंग स्कूल की क्लास खत्म होने के बाद मेरा तबादला हल्द्वानी फारेस्ट डिवीजन में बतौर असिस्टेंट डिवीजनल फारेस्ट अफसर के हुआ और मुझको जुबलीगंज से दोगाड़ी तक आर० के० आर० रेलवे; जोकि अब ओ० टी० आर० (उत्तरी-पूर्वी रेलवे) कहलाती है, उसके साढ़े चार मील और बढ़ाने के वास्ते सरवे करने और लेविल लेकर लाइन बनाने का स्टीमेट का काम सुपुर्द किया गया। लिहाजा मैं जून में कई हफ्ता दोगाड़ी रेंज कार्टर के आहाता

में डेरा लगा कर हल्द्वानी टनकपुर की सड़क पर ठहरा; जोकि जुबलीगंज होकर जाती थी। हमारे पड़ाव के करीब सौ कदम उत्तर में एक नाला था, जिसके दोनों तरफ बाँस और घनी झाड़ियाँ थीं। उस नाले में मोर, मुर्गी कसरत से रहते थे और मैं उसमें से रोजाना एक मुर्गी या मोर सुबह-शाम जब चाहता मार लेता। मैं उसको पोल्टरी फार्म कहता था। तमाम दिन मोर, मुर्गी इसमें बोला करते; जिनकी सुहानी आवाज मेरे कानों में अब तक गूँज रही है।

मैं यहाँ से ४ दिन की छुट्टी गया और वापसी पर टनकपुर रेलवे स्टेशन से १० मील दोगाड़ी पड़ाव में शाम को पहुँचा। गर्मी सख्त थी और जैसे ही हाथी से उतर कर कपड़े उतारने लगा, कि गुसल करूँ, वैसे ही रेंज अफसर ने कहा कि अभी थोड़ी देर कपड़े न उतारिये और हाथी को भी खड़ा रखिये; क्योंकि जबसे आप गये हैं, पोल्टरी फार्म में इस वक्त शाम को रोजाना एक गुलदार बोलता है। मैंने कहा कि अब मैं आ गया हूँ। लिहाजा अब वह नहीं बोलेगा। जैसे ही पट्टी, जूते उतार कर मैं नहाने को डेरे में गया कि गुलदार बोलने लगा। मैं फ़ौरन निकल आया और हाथी को वापस बुलाकर रेंज अफसर को और ४०५ बोर रायफल व ५ कारतूस लेकर गुलदार की आवाज की तरफ गया; जो बराबर थोड़ी-थोड़ी देर के बाद बोल रहा था। जब हम नाले पर पहुँचे तो वह नाले के उस पार झाड़ियों में करीब ५० कदम पर बोल रहा था। हम नाले के उस पार गये तो उसने दूसरी आवाज नाले के इस पार रेंज कार्टर की तरफ दी। हम फिर हाथी को नाले के इस तरफ लाये तो देखा कि सफेद मैली रंग का अच्छे कद का गुलदार नाले के किनारे हमारी तरफ़ करीब ४० कदम पर आ रहा है।

मैंने हाथी रोक दिया कि वह किसी तरफ घूमे और बगल साफ़ दिखलायी दे तो गोली मारें। थोड़ी देर उसने ठहरकर हाथी को देखा और जैसे ही नाले की तरफ मुड़ा, मैंने बगल पर गोली मारी और वह गिरते ही लुढ़ककर नाले के पानी के पास सर को अगले हाथों पर रखकर खामोश बैठ गया। वह लंबी साँसें लेता रहा। मैं हाथी पास

ले गया और देखा कि गोली ठीक और कारी लगी है और थोड़ी देर में जरूर मर जावेगा। मैं हाथी से उतर पड़ा और उसके पास जाकर खड़ा हो गया। वह खामोश साँसें ले रहा था, रेंज अफसर ने कहा कि एक गोली और मार दो।

मेरा बजट एक साल पचास और दूसरे साल सौ कारतूस का था। सीजन दौरे का खत्म पर था। कारतूस राइफल के कम थे। मैंने कहा— बिला वजह कारतूस खराब करना है और किफायत की गरज से अरदली को आवाज दी कि १२ बोर दोनाली बन्दूक और दो गोली के कारतूस ले आओ। हम दोनों नाले के किनारे खड़े उसको गौर से देख रहे थे। बन्दूक आने में देर लगी। मैंने हाथीवान से कहा कि एक छोटा पेड़ जोकि मेरे और हाथी के दरमियान खड़ा था, हाथी से गुलदार के ऊपर गिरवा दो। जैसे ही पेड़ गिराया गया और उसकी शाखें गुलदार के ऊपर पड़ीं, वह एक दम से ढौंकता हुआ सीधे हमारे ऊपर अचानक आया; जिसके लिए हम तय्यार नहीं थे। रेंजर खाली हाथ था और वह भागा। मेरे हाथ में राइफल तय्यार था। लिहाजा वगैर निशाना लिये हुए नाल सीधी करते ही उसके बदन से मिलाकर फैर किया; जोकि इत्तफ़ाक से उसके कमर पर पड़ा और गुलदार फिर ढालदार किनारे से लुढ़ककर उछलने-कूदने और शोर मचाने लगा। मैंने इतमीनान का एक और फैर उसके सीने पर किया, तब वह मरा। मेरे भी होश उड़ गये कि बाल-बाल बचा। खाल बहुत ही खराब हो गयी। गुलदार बुड्ढा और बहुत भारी था। मगर उसकी दुम सिर्फ १ फुट की थी, जब कि आम तौर पर गुलदार की दुम करीब ३ फीट की होती है। उसके जिस्म पर कई जगह पुराने जख्मों के निशान थे, जिस से जाहिर था कि हाल ही में इससे किसी दूसरे गुलदार से सख्त लड़ाई हुई थी, जिसमें वह दुम भी खो बैठा था।

३३. मेरा ग्यारहवाँ गुलदार

रेलवे लाइन खत्म करने के बाद दिसम्बर सन् १९२१ ई० में मेरा तबादला इम्पीरियल फारेस्ट कालेज देहरादून बतौर असिस्टेंट इंस्ट्रक्टर के हुआ और मैंने अपने पुराने दोस्त मिस्टर काँजीलाल से चार्ज लिया। जनवरी सन् १९२२ ई० में रेन्जर क्लास को लेकर मुकाम गरजिया रामनगर डिवीजन में दौरा पर आया।

इंस्ट्रक्टर इंचार्ज एक योरोपियन, आई० एफ० एस० थे। वे बीमार होकर एक महीने की मेडिकल छुट्टी पर चले गये। मैं एक रोज सुबह क्लास को काम पर ले जा रहा था। मैंने सड़क के किनारे एक सूखे नाले में बहुत-से गिद्ध पेड़ों पर और उड़ते हुए देखे। मैंने अरदली से कहा कि जाकर देखो कि क्या चीज मरी है और किसने मारी है। उसने वापस आकर कहा कि एक गाय को रात में गुलदार ने मारा है और चमार खाल निकाल रहे हैं। मैं काम पर चला गया। शाम को वापसी पर मैंने जाकर देखा कि गिद्ध लाश को बिलकुल साफ कर गये और सिर्फ हड्डियाँ पड़ी थीं। मैंने सोचा कि गुलदार को क्या मालूम कि लाश को गिद्ध खा गये। वह शायद अपनी आदत के मुताबिक शाम को खाने आवे। मैंने इरादा किया कि शाम को चाय पीकर बजाय इधर-उधर घूमने के यहाँ बकरी बाँधकर बैठा जावे। शायद गुलदार आवे और मेरे लिए उसका आना ही काफ़ी है, चाहे उसको खाना मिले या न मिले।

यह जगह हमारे कैम्प से करीब ही थी। चाय पीने के बाद मैंने अरदली, राइफल और ५ कारतूस लिये और हम उस जगह सूरज डूबने से एक घंटा पहले पहुँच गये। सूखे के पच्छिम तरफ काफी ऊँचा पहाड़ था; जिसकी जड़ में गाय की हड्डियाँ पड़ी हुई थीं। पूरब तरफ करीब २० फीट ऊँचा किनारा था; जिसमें कहीं-कहीं जानवरों के

उतरने के रास्ते थे। मैं एक रास्ते के करीब एक पेड़ के पीछे दोनों तरफ टाँगें लटकाकर ढालदार जगह पर गाय की हड्डियों से करीब ४० कदम पर बैठ गया। गिद्ध लाश को खाकर बिलकुल साफ कर गये थे। नाले के दोनों तरफ मामूली जंगल थे। करीब दो फरलाँग पर पहाड़ी कुलियों का पड़ाव था। उनके बोलने और जानवरों के घंटों की आवाज आ रही थी।

मैं वहाँ करीब आध घंटे के बैठा हूँगा और मेरा अरदली मुझसे करीब दस कदम पर बैठा था। मुझे नरम पैर वाले जानवर की सूखी पत्तियों पर चलने की आवाज और एक सूखी सड़ी हुई साख टूटने की भी आवाज मेरे पीछे से आती हुई मालूम हुई। मुझे खतरे का शक हुआ। मेरे रोंगटे खड़े हो गये, दिल धड़कने लगा। मैं खामोश बुत की तरह साँस रोके रहा। जानवर बिलकुल मेरे पीछे ढाल के किनारे पर था और मैं उससे एक कदम नीचे पेड़ की जड़ से लपटा बैठा था। वह काफी देर वहाँ खड़ा होकर शायद खायी हुई लाश ही को देखता रहा। उसकी आहिस्ता-आहिस्ता दबे पाँव चाल और साँस वगैरह से मुझे पूरा यकीन था कि वह गुलदार है, मगर जंगली जानवर बगैर हिले हुए जंगल की चीजों पर ज्यादा गौर नहीं करते; जहाँ कुछ हिला या खटका पाया या खुशबू आवे, तब फौरन चौकन्ने हो जाते हैं और भाग जाते हैं। मैंने आहिस्ता-आहिस्ता अपना सर मोड़ना शुरू किया ही था कि उसने एक डाँट उफ की तरह से की और भाग गया। मेरी हालत दम रोके हुए और कई मिनट तक खतरे के इस कदर नजदीक बैठे हुए घबराई हुई थी। मैंने फौरन मुड़कर देखा तो गुलदार पीछे भागा जा रहा था। मेरे अरदली ने यह तमाशा खूब देखा।

मैंने इरादा किया कि अब उठकर वापस जाना चाहिए, मगर यह ख्याल करते हुए कि गाँव के आदमियों की आवाज आ रही है, जिसका वह आदी है। मैं बैठा रहा कि वह शायद फिर आवे। करीब आध घंटे के बाद मैंने देखा कि एक काली चिड़िया, जिसकी दुम लंबी होती है और कौवे से छोटी होती है, नाले से

पच्छिम ऊँचे किनारे पर शोर मचाती हुई उड़ रही थी और कभी-कभी जमीन पर गोते भी मारती थी। मैंने गौर से देखा तो घास में आहिस्ता-आहिस्ता गुलदार लाश की तरफ उत्तर से करीब १०० कदम पर नाले के किनारे-किनारे आ रहा था। जब वह मुझसे करीब ६०-७० कदम के रह गया, तो खड़ा होकर उसने मेरी तरफ बहुत गौर से काफी देर तक देखा। मैं पेड़ के पीछे छिपा हुआ था और शायद वह पूरी तौर पर पहचान न सका। चूँकि उसको शक था, लिहाजा वह वहीं बैठकर कभी मेरी तरफ और कभी गाय की तरफ देखता रहा; जिसकी हड्डियों को एक गीदड़ नोच रहा था। जब सूरज डूबने लगा और गुलदार वहाँ से नहीं उठा तो मैंने सोचा कि अब मौका तो जाता ही है, थोड़ी देर में अँधेरा हो जावेगा, लिहाजा पेड़ का सहारा लेकर इतमीनान से मैंने सर के नीचे गरदन पर निशाना लेकर फायर किया और गुलदार पीछे की तरफ लुढ़क गया। काली चिड़िया जोकि पेड़ पर बैठी थी, फिर उसके ऊपर गोता लगाने और शोर मचाने लगी। मैंने अरदली को बुलाया और हम दोनों ने ख्याल किया कि गुलदार मर गया। हम दोनों ने उत्तर की तरफ काफी दूर जाकर नाले को पार किया और पच्छिमी ऊँचे किनारे पर चढ़कर ऊपर से उसी किनारे-किनारे होशियारी से आये, जिस पर गुलदार आया था। हमने उसको मरा पाया। गोली उसके बीच गरदन में ठोडी के नीछे पड़ी थी।

हमने गुलदार को नाले में गिरा दिया और गाँव में आकर दो आदमी लेकर गुलदार को कैम्प में ले गये। वह पुरानी मादीन थी; जिसके दाँत पीले रंग के घिसे हुए थे। खाल भी सफेदी मायल थी और नाप में सात फीट तीन इंच थी।

---

३४. मेरी दिल धड़कनेवाली दो शेरों से पैदल नाकामयाबी

मैंने पिछला गुलदार काफी दूर से गरदन पर निशाना लेकर मार लिया था, लिहाजा मुझे गुरूर आ गया और ख्याल किया कि मैं अब बड़ा निशानेबाज हो गया हूँ। कहावत मशहूर है कि घंमडी का सर नीचा होता है। दूसरे दिन शाम को मैं दो आदमी, कुत्ता, रायफल, बन्दूक और दोनों के पाँच-पाँच कारतूस लेकर टहलने को चला। मैं उस गाँव के करीब से गुजरा, जिसमें एक दिन पहले गुलदार मारा था। गाँववाले दौड़े हुए आये। वे कहने लगे कि आज रात को दस बजे के बाद हमारे यहाँ एक घंटे के लिए बैठ जाओ और एक गुलदार जो कि रात भर हमको तंग करता है, मार दो। मैंने कहा कि वह तो कल मार चुका हूँ। उन्होंने कहा—नहीं, यह दूसरा है और कल रात भर हमारे पड़ाव के आस-पास ही घूमता रहा है। मैं मौका और पैर के निशान देखने गया, कि शायद जोड़ा हो और दूसरा नर भी मिल जावे।

मैंने पड़ाव में चन्द बकरियाँ देखीं और एक बच्चा दो रुपये का खरीदा। मेरा खलासी गाँव में घूम रहा था। मैंने बुलाया और कहा कि बकरी लेकर मेरे साथ आओ। मगर बकरी ने गाँव से बाहर जाने को पैर नहीं उठाया और खलासी को बकरी को गोद में ले जाना पड़ा। हम टहलते हुए जंगल में एक सुनसान सड़क पर निकल गये। थोड़ी दूर चलने के बाद एक काफी चौड़ा नाला मिला; जिसमें पानी भरा था। नाले के दोनों ओर घनी झाड़ियाँ व घास थी। उसके दक्खिन ओर का किनारा करीब ४ फीट ऊँचा था और उत्तर का किनारा मैदानी था। दोनों तरफ ऊँचे-ऊँचे पहाड़ थे; जिन पर घने साल के जंगल थे। मैं सड़क को छोड़कर उस नाले के किनारे चलने लगा। मेरा इस्पेनियल कुत्ता जोकि चिड़ियों के शिकार में बहुत होशियार था, मोर,

मुर्गी की खुशबू पाकर दुम हिलाने लगा और मेरी तरफ उसने इजाजत लेने के लिए देखा। मैंने आगे बढ़ने का इशारा किया और बन्दूक लेकर उसके पीछे गया। उसने करीब एक दर्जन मोर उड़ाये; जिसमें से मैंने २ मारे। थोड़ी दूर और बढ़े तो कुत्ते ने चन्द कालीज यानी पहाड़ी मुर्गियाँ उड़ायीं; जोकि पेड़ों पर बैठकर कुत्ते की तरफ देखकर खतरे की आवाज किच-किच की करने लगे थे। मैंने उनमें से एक मुर्गी गिरायी। जब उसको उठाने को आगे बढ़ा तो एक साँभर की हड्डियाँ और सूखी खाल मिली। मैंने खलासी से कहा कि तुम कैम्प वापस जाओ। मोर, मुर्गी बावरची को देना और कुत्ते को बाँध देना। यह जगह शेर-गुलदार के लिए मुनासिब मालूम हुई। मैंने अरदली से कहा कि बकरी लेकर तुम मेरे साथ आओ। थोड़ी देर इस नाले के किनारे कहीं पर बकरी बाँधकर बैठेंगे।

पिछली शाम को गुलदार आसानी से मार कर गुरूर तो आ ही गया था और मैं अपने आपको बड़े शिकारियों में भी ख्याल करने लगा था। मैंने थोड़ा और आगे जाकर बकरी को एक घिरे हुए पेड़ में बाँधा, जोकि नाले के उत्तर मैदान में पड़ा हुआ था और अरदली के ऊपर सवार होकर नाले को पार करके जिसमें घुटने बराबर गहरा पानी था, मैं नाले के दक्खिन ऊँचे किनारे पर पहुँच कर एक बड़े पत्थर पर चढ़ने की कोशिश कर रहा था। बन्दूक और राइफ़ल अरदली के हाथ में थी। मैं बड़ी कीलोंवाला बूट पहने हुए था; जिस से गोल पत्थर पर चढ़ना जोकि हाथी के बराबर था, मुश्किल था। मैं फिसल कर नीचे खड़ा ही हुआ था कि अर्दली ने मेरे कंधे पर हाथ मारकर राइफल देते हुए कहा कि शेर, और पच्छिम की तरफ़ इशारा किया, जिस तरफ़ उसी लाइन में सूरज डूब रहा था। मैंने देखा कि एक पूरे क़द का निहायत तन्दुरुस्त नर शेर नाले के किनारे बिलकुल खुले में झाड़ियों के आगे खड़ा हुआ, कभी बकरी की तरफ और कभी हमारी तरफ करीब ३० कदम पर देख रहा था और बकरी जोर-जोर से बोल रही थी।

मैंने अरदली से राइफल लिया और उसी पत्थर के सहारे टेक लगा कर बैठ गया। अब पत्थर या पेड़ पर चढ़ने का मौका न था, अब तो जल्द-से-जल्द फ़ैर करने का वक्त था। क्योंकि जंगली जानवर शिकारी को देख कर बहुत कम मौका देते हैं। मैंने फौरन इतमीनान का निशाना उसके बग़ल पर लेकर लिबलिबी को दबाना शुरू किया कि इतने ही में दूसरे शेर ने झाड़ी से मुंह निकाला। मैं ठहर गया, तीसमार खाँ तो अपने आप को ख़्याल करने ही लगा था। अब अरदली भी मेरे दाहिने बैठ गया। अरदली के हिलने पर दोनों ने एक-दम से हमारी तरफ मुंह मोड़ कर देखा और फिर बकरी की तरफ देखने लगे। बकरी गला फाड़कर चिल्ला रही थी मगर उसने शेरों को नहीं देखा था, क्योंकि इन दोनों ने एक बड़े पत्थर की आड़ ले रखी थी, जोकि पानी में पड़ा हुआ था। मैं ४०५ बोर वेन्चेस्टर राइफल का, जिस पर मुझे पूरा काबू और उसकी ताक़त पर इतमीनान था, अगले नर शेर पर निशाना जमाये हुए था। हालाँकि मेरे बाल खड़े थे और दिल धड़क रहा था, मगर बहुत ही मज़ा भी मिल रहा था। जब करीब ५ मिनट के इस तरह से हो गये, तो अरदली ने कहा कि मारो। मैंने बहुत घमण्ड से कहा कि लिबलिबी दबायी और यह मर गया, अब जाता कहाँ है? ज़रा दूसरे शेर को और बाहर निकलने दो, ताकि दोनों को मार लूँ। उसने अपना हाथ अपने माथे पर मार कर कहा कि जल्दी मारो। ऐसे मौके हमेशा नहीं मिलते हैं। वह तजुरबेकार शिकारी था और पहले अफ़सर के साथ शेर से जख्मी भी हो चुका था। इतने में बड़े शेर ने मादीन की तरफ देखकर बहुत खौफनाक मुंह बनाया और वह फौरन बैठ गयी। अब और कम दिखलायी पड़ने लगा। बड़े शेर ने अगले हाथों से बालू के किनारे को दबा कर गिरा दिया और साथ ही खुद भी पानी में उतर कर बैठ गया। सिवाय सर और कुछ गरदन के सब पानी में डूब गया। मेरा निहायत इत-मीनान का निशाना बिलकुल बिगड़ गया। तब मैंने ख्याल किया कि लालच ने बहुत अच्छा मौका खो दिया और घबराया हुआ अपनी

ग़लती पर बहुत अफसोस करने लगा। सर पर गोली मारना नहीं चाहता था; क्योंकि अक्सर सर की गोली हड्डी पर फिसल जाती है। शेर ने फिर हम लोगों की तरफ देखा कि बेवकूफों की तरह बैठे हैं और आहिस्ता-आहिस्ता आगे बैठे हुए ही बकरी की तरफ पत्थर की आड़ लिये हुए खिसकना शुरू किया। जब नाले का किनारा पानी में गिरा था, उस वक्त से बकरी ने बोलना बन्द कर दिया था और पत्थर की तरफ शक की निगाह से देख रही थी। पत्थर के पास पहुँचकर शेर ने हमले के लिए सिकुड़ना और उठना शुरू किया। जब उसका कंधा करीब ४ इंच पानी के ऊपर निकला तब मैंने फायर किया। शेर आवाज करता हुआ उछला और गोली के मानिंद बकरी के सामने से झाड़ियों के अन्दर पहुँच गया। मैंने दूसरा फैर उसकी दुम से एक गज आगे किया जो खाली गया।

मायूस होकर मिस्ल नासमझ के मैं उसके पीछे नाले के पानी में होता हुआ दौड़ा। अरदली ने शोर मचाया कि उसके पीछे न जाओ, वह जख्मी है। मगर मैंने एक न सुनी और मैं भी झाड़ियों में चीरता-फाड़ता करीब २० कदम तक एक और छोटे नाले के किनारे पहाड़ की जड़ तक गया। मैंने देखा कि नाले की रेत में उसके पैरों के निशान बने हुए थे, मगर खून का कोई निशान नहीं था। खुशकिस्मती से वह पहाड़ पर तेजी से चढ़ गया, जहाँ साँभर बोलने लगे। मैं पागल की तरह मायूस वापस आया और मादीन को तलाश किया, मगर वह नहीं दिखलायी दी। अब मैं अपने घमंड और बड़े बोल पर अफ़सोस करने लगा, कि अगर दो का लालच न किया होता तो नर को तो मार ही लेता। उसने ५-७ मिनट तक बहुत अच्छा मौका दिया था और पैदल शेर मारने का मुझे बहुत अरमान भी था। लिहाजा यह बेहतरीन मौका खोकर अपनी ग़लती और लालच पर बहुत अफ़सोस था। उसी ख्याल में जहाँ पर से गोली चलाने के बाद शेर भागा था, वहाँ खून देखने लगा तो एक टुकड़ा खाल का करीब दो इंच का मिला। शायद गोली पानी में लगकर उछल गयी और सिर्फ

खाल में होकर गुजर गयी। मैंने फासला नापा तो ३३ गज से गोली चलायी थी। रायफल का निशाना देखने के लिए इतने ही फासले पर एक कागज पत्थर पर रखकर दो गोलियाँ और चलाया और दोनों घबराहट व परेशानी में गलत पड़ीं। मैंने रायफल को फेंक दिया; जिस से कुन्दा भी चिटक गया और कैम्प आकर बगैर खाना खाये इसी ख्याल में सो रहा।

---

३५. एक चालाक शेर पर मेरी दूसरी नाकामयाब कोशिश

मैं रेन्जर क्लास के साथ बरकूट रेन्ज देहरादून फॉरेस्ट डिवीजन में कैम्प किये हुए था और मेरा एक पुराना विद्यार्थी वहाँ का रेन्ज अफसर था। क्लास के अफसर इन्चार्ज मिस्टर ट्रिक एक हफ्ता की छुट्टी लिये हुए थे। बरकोट कैम्प से करीब एक मील के फासले पर ३ दिन शाम को एक शेर रोजाना सरहदी सड़क पर या तो बैठा हुआ या टहलता हुआ दिखलायी दिया। मैंने एक पड़वा सरहदी सड़क से एक नाले के मिलान पर बाँधा। नाले में करीब आठ से दस फीट ऊँचा घना बाँस खड़ा हुआ था। नाले का पच्छिमी किनारा करीब १२ फीट ऊँचा था और उसके ऊपर साल का घना जंगल था। पड़वा पहली ही रात को मारा गया। शेर ने उसे घसीटकर करीब ५० कदम घने बाँसों में नाले के ऊँचे किनारे के नजदीक रक्खा और दो पिछली टाँगें खा गया। मैं दो आदमी, मचान और रेन्जर को लेकर शाम को ४ बजे गया। लाश को तलाश किया और शेर के पैर के निशान देखे, कि नाले के ऊँचे किनारे पर चढ़कर साल के जंगल में गया है। रात में पानी बरसा था लिहाजा जमीन गीली थी और नाले का ढाल चिकना हो रहा था, जिस पर चढ़ना मुश्किल था। मैं रबड़ का जूता पहने हुए था जिससे चलने में आवाज कम होती है और पेड़ पर चढ़ना भी आसान होता है। मैं इस ढाल पर आधी ऊँचाई से कुछ

ही ज्यादा बहुत होशियारी से आहिस्ता-आहिस्ता गया हूँगा और रेंजर मेरे पीछे था। जैसे ही मेरा सर नाले के किनारे के ऊपर निकला, मैंने देखा कि शेर जोकि किनारे ही पर लेटा हुआ लाश की निगरानी कर रहा था, एक आवाज देकर उठा और भागा। चूँकि मुझे यह ख्याल भी न था कि शेर इस कदर नजदीक किनारे पर होगा, मैं घबराहट में फिसला और हम दोनों एक-दूसरे के ऊपर नाले में गिरे। खुश-किस्मती से हमारी बन्दूक जोकि भरी हुई तय्यार थी, दग नहीं गयी। हम फिर ऊपर चढ़े और शेर के लेटने के निशान यानी काफी पत्ते और घास दबी हुई किनारे पर देखी। शायद वह दिन भर वहीं लेटा रहा।

मैंने शेर का पीछा करना और उसको होशियार करना मुनासिब न समझा और ख्याल किया कि वह इसी रास्ते वापस आवेगा। नाले में करीब ही एक छोटा पेड़ था। मैंने सोचा कि उस पर बैठकर ढाल पर से उतरते हुए शेर पर खूब अच्छा निशाना मिलेगा। इस पेड़ में जमीन से आदमी के बराबर ऊँचाई पर दो शाखें जाँघ के बराबर मोटी हो गयी थीं और इनमें से एक कुछ-कुछ टेढ़ी थी। मैं उस पर अरदली का साफा रखकर बगैर किसी किस्म का शोर मचाये हुए फौरन बैठ गया और उन सबसे कहा कि मचान वगैरा लेकर वापस जाओ। अँधेरा होने पर सड़क पर आ जाना या जब फैर सुनो तब आ जाना। मैं करीब १ घंटा घोड़े की तरह टाँगें लटकाये हुए पेड़ पर बैठा रहा। मुझे किसी किस्म का कोई खटका नहीं सुनायी दिया। मेरे पैर देर से बगैर सहारे के लटके हुए थे, लिहाजा दर्द करने लगे। अँधेरा भी होने लगा था। मैंने इरादा किया ही था कि अब उतरना चाहिए, कि किसी नरम पैरवाले जानवर के मेरे पीछे से आने की आहिस्ता-आहिस्ता आवाज सुनायी दी। जंगल में बिलकुल खामोशी थी। मैं कान लगाये रहा। जानवर बिलकुल मेरे पेड़ के पीछे आकर खड़ा हो गया और साँस में थोड़ी-थोड़ी गुर्राहट की भी आवाज आ रही थी; जिससे यकीन हुआ कि शेर ही है। जबकि मैं उम्मीद कर रहा था कि वह

जिस रास्ते से ढाल पर चढ़ा है, उसी रास्ते आवेगा, जैसा कि इन जानवरों की आम आदत है और अच्छा मौका सर पर गोली खाने का देगा। लेकिन उसने पीछे से आकर मेरा प्रोग्राम बिगाड़ दिया और देर तक मेरे पेड़ से मिला हुआ खड़ा रहा। जब बिलकुल अँधेरा हो गया, तब वह बैठ गया और सिवाय आहिस्ता-आहिस्ता साँस की आवाज के काफी देर तक खामोश बैठा रहा। मैं भी दम रोके खामोश उसके बिलकुल ऊपर बैठा रहा। तब मैंने गौर किया कि अगर शेर लाश पर आ भी गया तो अँधेरे में निशाना भी ठीक नहीं लगेगा और रात भी अँधेरी है। आदमी अभी तक आये नहीं। अकेले उतरने की और फिर पचास कदम घने बाँस की झाड़ियों में चलकर सड़क तक पहुँचने की हिम्मत नहीं है। मैंने लाश के बहुत नजदीक बैठने की गलती पर अफसोस किया। मैं आदमियों का इन्तजार कर रहा था कि वे लालटेन लेकर बोलते हुए आवें और शेर भाग जावे तब मैं उतरूँ। ताकि शेर को यह शक न हो कि यहाँ कोई बैठा था और दूसरे दिन फिर मौका दे। देर होती गयी और आदमियों के आने की कोई आहट न मालूम हुई, मैं बहुत परेशान था। उन दिनों मुझे कुछ खाँसी थी और गले में खराश पैदा हुई और खाँसी ने जोर बाँधा। मैंने बहुत रोका मगर आवाज निकल ही गयी और शेर एकदम से आवाज देकर जिस तरफ से आया था उसी तरफ झाड़ियों को फाड़ता हुआ भागा। खैर, मैंने अच्छी तरह से खाँसा और जकड़े हुए हाथ-पैर सीधे किये, सीटी दी, मगर कोई जवाब नहीं आया। मैंने परेशान होकर आवाजें दीं, फिर भी कोई जवाब न मिला। मैंने सोचा कि मेरे खाँसने और आवाज से शेर जरूर दूर चला गया होगा और मजबूरन पेड़ से उतरा और खाँसता हुआ घने बाँसों को चीरता-फाड़ता किसी तरह धड़कते हुए दिल से सड़क पर पहुँचा। तब खतरे का डर जरा कम हुआ। करीब १०० कदम पर लालटेन चमकती हुई नजर आयी और मैं तेजी से उनकी तरफ बढ़ा। मेरे आदमियों ने गलत समझा कि ९ बजे बुलाया है।

दूसरे दिन मेरा अरदली अपना साफा लेने आया तो देखा कि पड्डे की लाश वैसे ही पड़ी थी। शेर समझ गया कि इसमें इंसान की फितरत शामिल है और वह नहीं आया। मैं अपने अरदली को रोज देखने भेजता रहा, मगर पूरे ५ दिन तक पड़वा वैसे ही पड़ा सड़ता रहा। चूँकि पड़वा बहुत घने बाँसों की झाड़ियों में था इसलिए गिद्ध और कौए भी उसे नहीं देख सके। छठे दिन हमारा कैम्प उसी रास्ते से लच्छीवाला को जा रहा था। मैं क्लास को सड़क पर छोड़कर खुद देखने गया, तो उस रात को शेर आया और उसी ढाल पर लाश को चढ़ा ले गया; जिस पर से वह पहले दिन चढ़ा था और जहाँ पर मैं और रेन्जर लुढ़के थे। लाश बिलकुल गल गयी थी और उसमें हजारों कीड़े पड़ गये थे। उसमें बहुत सख्त बदबू आ रही थी। मगर शेर ने ऊपर चढ़कर खूब खाया। जहाँ काफी हड्डियाँ पड़ी थीं और बाकी हिस्से को घसीटकर एक फरलाँग आगे ले जाकर उसने एक नाले के किनारे झाड़ियों में छिपा दिया, जिससे मालूम होता था कि वह फिर खाने आवेगा। मुझे यह नहीं मालूम था कि शेर इस कदर सड़ी हुई और कीड़े पड़ी हुई लाश को भी खा जाता है, जिसकी बदबू से सौ-पचास कदम दूर तक खड़ा होना और साँस लेना मुश्किल हो।

---

३६. मेरी तीसरी शेरनी

मैं लच्छीवाला कैम्प में रेंजर क्लास के साथ ठहरा था; जोकि देहरादून से १२ मील पूरब है। शनिश्चर की शाम को मैं अरदली, मचान, बकरी, राइफल और बन्दूक लेकर बग़ैर किसी खास मतलब के घूमने निकला और नकरोंदा दलदल के इर्द-गिर्द किसी मुनासिब जगह बकरी बाँधकर बैठने का इरादा किया। वहाँ पहुँचने पर मैंने देखा कि जहाँ पहले दलदल और पानी रहता था, बहुत बाँस और काँटेदार घनी झाड़ियाँ चारों तरफ रहती थीं और जिसमें कोई जा नहीं सकता था, अब वहाँ खुश्क ज़मीन पर ये झाड़ियाँ मौजूद तो

थीं, मगर जानवरों ने जगह-ब-जगह रास्ते बनाये थे। नज़दीक के गोरखा गाँववालों ने बहुत झाड़ियों को काट-पीटकर बरबाद भी कर दिया था। सौ-पचास गाय, भैंस और हमारे ३५ ऊँट भी चर रहे थे; जिनके घंटे-घंटियाँ जंगल में गूँज रहे थे। काफी आदमी एक-दूसरे को आवाज दे रहे थे और लकड़ी काट रहे थे। यह हाल देखकर मैं ना-उम्मीद हो गया कि यहाँ ऐसे शोर व गुल में शेर-गुलदार कैसे ठहर सकेगा। बहरहाल जानवरों के रास्तों पर काँटों से बचता हुआ मैं घूमने लगा कि कहीं शेर गुलदार के पैर का निशान दिखलायी दे। सन् १९२४ ई० के अप्रैल का आख़िरी हफ्ता था, सब तरफ सूखे जंगल थे, मगर यहाँ तरी, काफ़ी सब्ज़ और ठंडा था। दूसरी तरफ से एक गोरखा फटा हुआ फौज का खाकी कोट और नेकर पहने आ रहा था। मैंने उससे पूछा कि कभी यहाँ शेर-गुलदार भी बोलता है या उनके पैर के निशान दिखलायी देते हैं। उसने टर्रा कर कहा कि हम कुछ नहीं जानता। मैंने उसको जंगली समझकर और बात करना बेकार समझा। जब उसकी ४०-५० गायें निकल गयीं तो मैं आगे बढ़ा और मुर्गियों के खतरे का शोर मचाने और कुड़कुड़ाने की आवाज़ सुनायी दी। मैंने राइफल अरदली को देकर बन्दूक ली और आगे बढ़ा।

मैं जानवरों की टेढ़ी-तिरछी पगडंडी पर मुर्गियों की आवाज़ की तरफ जा रहा था और जैसे ही एक मोड़ पर घूमा तो देखा कि एक शेर २५ क़दम पर एक लाल गाय को दबाये हुए था, जोकि करीब-करीब मर चुकी थी। चन्द मुर्गियाँ पास में खड़ी तमाशा देख रही थीं और खतरे की आवाज़ कुटकुट-कुटाँग की दे रही थीं। मैं देखते ही खड़ा हो गया और अरदली की तरफ देखकर राइफल देने का इशारा किया और शेर की तरफ देखता रहा। शेर मुझे देखकर खड़ा हो गया, मगर अरदली जोकि बिलकुल मेरे पीछे ही था, उसने राइफल नहीं दी। मैंने फिर पीछे मुड़कर देखा तो अरदली मुझसे २० कदम से भी ज्यादा पीछे भागा हुआ जा रहा था। मुझे बड़ा गुस्सा मालूम हुआ और मजबूरन मैं भी उसके पीछे लपका, सीटी दी और ५० कदम पर जाकर

उसको पकड़ पाया। मैंने उसे बन्दूक देकर राइफल ली और फिर वापस आया; लेकिन शेर बेत की झाड़ियों में गायब हो गया, जोकि चारों तरफ थीं। गाय पड़ी हुई थी और गरदन से बहुत खून निकल रहा था। मैंने चारों तरफ गौर से देखा कि शायद शेर भी मेरी हरकतों को किसी झाड़ी से झाँक कर जरूर देख रहा होगा, कहीं हमला न कर दे और मुमकिन है गोली चलाने का भी अच्छा मौक़ा मिल जावे। मेरे पास वेन्चेस्टर ३५० बोर राइफल था; जोकि काफी काबिल इतमीनान था। जब शेर नहीं दिखलायी दिया तो मैंने सीटी देकर अपने आदमी को बुलाया। लाश से करीब २० कदम पर एक पेड़ पर बहुत घनी मालझन की बेलें फैली हुई थीं। मैंने तीन मोटी बेलों को आपस में मिलाकर बाँधा और उनके ऊपर घोड़े की तरह से आदमी के बराबर ऊँचाई पर बैठकर बेल की पत्तियों की आड़ कर ली। मैंने अरदली से कहा कि तुम यहाँ से २०० गज़ के फासले पर किसी जगह जाकर बैठ जाओ और जब मैं दो मर्तबा सीटी दूँ तब आना या जब फैर हो तब आना। मैं करीब आधे घंटे के बैठा हूँगा, सूरज डूब रहा था और शेर की कोई आहट न थी, उस वक्त चन्द मुर्गियाँ एक-दूसरे के पीछे लाइन में आयीं। उन्होंने गाय को देखा, थोड़ी देर कुड़कुड़ाई, यानी खतरे की आवाज़ दीं और फिर पच्छिम तरफ की झाड़ी में जैसे ही वह गयीं कि आफ़त आ गयी। शेर शायद वहीं पर बैठा हुआ गुस्से में मेरी हरकतें देख रहा था। वह एकदम से बड़े जोर से गुर्राता हुआ दौड़ा। सब मुर्गियाँ उड़कर आस-पास के पेड़ों पर बैठ गयीं। शेर लाश तक आया और फिर फौरन ही वापस चला गया। मैं अपने ख़याल में डूबा हुआ था। शेर की एकदम से गुस्से की ढौंक सुनकर चौंक पड़ा और राइफल दाग न सका। मैं अँधेरा होने तक बैठा, मगर शेर झाड़ी से बाहर नहीं निकला। मैंने नाउम्मीद होकर अरदली को बुलाया और उतर कर कैम्प को वापस आ रहा था और जब जंगल से बाहर सरहद पर निकल आया तो देखा कि एक बुड्ढा गोरखा अपने गाँव की तरफ से आ रहा था, जोकि वहाँ से करीब आध मील के

फासले पर होगा। वह अपनी खोयी हुई गाय को बुला रहा था। मैंने पूछा—तुम कौन हो और कहाँ जा रहे हो ? उसने कहा कि मेरा नाम हीरासिंह है। मैं पेन्शनर सिपाही हूँ और अपनी गाय को ढूँढ़ने जंगल जा रहा हूँ; जोकि आज चर कर वापस नहीं आयी है। मैंने पूछा—तुम्हारी गाय का क्या रंग है ? उसने कहा—लाल और बायाँ सींग टूटा हुआ है। मैंने कहा—उसको तो शेर ने मार दिया है। वह फ़ौरन मुड़ा और कहने लगा कि मैं अपने जमादार साहब की राइफल लेकर अभी आता हूँ और उसको मारूँगा। मैंने कहा कि यह गवर्नमेंट रिज़र्व फ़ॉरेस्ट है। इसमें सिवाय जंगलात के अफ़सर के कोई आदमी बग़ैर पास लिये हुए शिकार नहीं खेल सकता है। अगर तुम शेर मारोगे या मारने की कोशिश करोगे तो तुम्हारे ऊपर मुकदमा चलाया जावेगा और अगर इसको ऐसे ही पड़ा रहने दोगे तो मैं कल आऊँगा और तुमको ५) दूँगा। चाहे मुझे शेर मिले या न मिले। वह थोड़ा ठहर कर सोचने लगा। मैंने एक सिगार और दियासलाई की डिबिया निकाल कर उसको दी। वह हँसा और राजी हो गया। मैंने कहा कि मैं कल सुबह आकर मचान बाँधूँगा।

दूसरे दिन सुबह जब मैं वहाँ पहुँचा, वह मेरा इन्तज़ार कर रहा था। हम सब लोग मौके पर गये। शेर लाश को बेंत के अन्दर घसीट ले गया था और पिछले हिस्से को काफी खा गया था। हमारे खटके से शेर उठा ; जोकि वहीं झाड़ियों में लाश के पास अपनी आदत के मुताबिक लेटा हुआ था। वहाँ पेड़ों पर कुछ लँगूर बन्दर थे। उन्होंने उसको देखकर खतरे की आवाज़ देना शुरू की। गोरखा ने कहा कि शेर २५ कदम के अन्दर है, चलो मार लें। मैंने पूछा—कैसे ? उसने कहा कि मेरे पीछे आओ। चूँकि बाँस की झाड़ियाँ बहुत घनी और आदमी के बराबर ऊँची थीं, वह बैठकर शेर की तरफ झाड़ियों को फाड़ते हुए बढ़ने लगा। मैं भी उसके पीछे करीब १० कदम के गया और फिर यह कहते हुए ठहर गया कि इसमें जाना बहुत मुश्किल है और हम चन्द कदम के आगे कुछ नहीं देख सकते। उसने मुँह बनाकर कहा कि तुम डरपोक है। पाँच फैर वाला राइफल हाथ में है और

शेर का मुक़ाबला करने से डरता है। फिर किस वास्ते शेर मारने आ गया ? राइफल मुझे दो। मैं दिखलाऊँगा कि शेर कैसे मारते हैं। मैंने कहा–शेर उत्तर की तरफ जा रहा है। सब बन्दर उसी तरफ मुँह किये हुए बोल रहे हैं। यहाँ से सौ कदम पर बाँस की झाड़ियाँ ख़त्म हो जाती हैं और फिर काफी खुला हुआ है। मैंने कल देखा था। मैं जाकर वहाँ किसी पेड़ पर बैठकर दो सीटी दूँगा। तब तुम लोग इधर से शोर मचाना। शेर जरूर उस खुले हुए रक़बे से गुज़रेगा। तब मैं गोली मारूँगा। वह राजी हो गया और मैं झाड़ी के पूरब किनारे-किनारे दौड़ता हुआ खुले हुए हिस्से में उन झाड़ियों के सामने पहुँचकर एक पेड़ को छाँट कर उसके सहारे राइफल को खड़ा करके चढ़ना शुरू ही किया था कि उन लोगों ने बग़ैर मेरे सीटी दिये हुए शोर मचाना शुरू कर दिया। शेर दुम उठाये हुए तेजी के साथ दौड़ता हुआ मेरे पेड़ से करीब १५ कदम पर से निकल गया।

मैं मायूस होकर लौट आया और मचान बाँधने के लिए एक पेड़ लाश के करीब छाँटा। मगर हमारे गोरखा दोस्त ने मना किया और कहा कि शेर तुमको देख लेगा। यह पेड़ लाश से करीब १० कदम की दूरी पर था, लिहाज़ा मैंने दूसरा पेड़ १५ गज के फासले पर छाँटा और मचान बाँधने लगा। जब हम गाय की लाश को पत्तेवाली शाखों से ढक रहे थे, ताकि शाम तक कौवे और गिद्ध न देख सकें, तब गोरखा ने कहा कि यह मादीन शेर है। मैंने पूछा कि घास में पैर के निशान तक तो नजर नहीं आते, तुम यह कैसे कहते हो ? उसने जवाब दिया कि शेर ने गाय की दुम तोड़ डाली है। मैं हँस दिया और मचान बाँधकर हम सब लोग चले आये।

मैं शाम को दो आदमी लेकर गया। जब हम मचान से करीब १०० कदम के रह गये होंगे, चीतलों ने बहुत जोर-जोर से खतरे की आवाज करीब १ फरलाँग उत्तर की तरफ़ देना शुरू की, जिस तरफ सुबह शेर गया था। फिर बन्दरों ने भी खतरे की आवाज़ देना शुरू की। मैं मचान की तरफ़ दौड़ा और रायफल लेकर जल्दी से उस पर चढ़ गया

और मचान को पत्तों से बगैर ढके ही आदमियों को भगा दिया। उनसे कह दिया कि सरहदी लाइन पर जाकर बैठो। मैं अभी मुश्किल से मचान पर जमा था कि छोटी-छोटी चिड़ियों ने लाश के उत्तर ५० कदम से खतरे का बहुत शोर मचाना शुरू किया और नीचे देखते हुए एक झाड़ी से दूसरी झाड़ी पर लाश की तरफ आना शुरू किया। उनकी आवाज़ सुनकर और दूसरी भी चिड़ियाँ आ गयी और उधम मचा दिया। मैं उस तरफ गौर से देख रहा था कि हल्की-हल्की गुर्राहट सुनायी देने लगी और एक पतली सूखी लकड़ी शेर के पैर से दबकर टूटी। फिर मुझे झाड़ियों में कहीं-कहीं शेर की झलक दिखलायी देने लगी, कि वह बहुत आहिस्ता-आहिस्ता ठहरता हुआ लाश की तरफ़ आ रहा है। मैंने रायफ़ल उस तरफ सीधी करके अपनी छाती से जमा ली। चूँकि मचान को ढाँका न था, लिहाज़ा एक मोटी डाल से चिपक कर सिकुड़ा हुआ बैठा रहा। शेर लाश के उत्तर करीब २० कदम पर थोड़ी देर खड़ा आहिस्ता-आहिस्ता गुर्राता रहा। चन्द मिनट के बाद वह लाश से १० कदम पर खड़ा होकर चारों तरफ बहुत गौर से देखता रहा और फिर पेड़ों पर देखना शुरू किया। मैं बिलकुल खुला हुआ बैठा था। मुझे ख्याल हुआ कि कहीं मुझे देखकर भाग न जावे, लिहाज़ा फैर करना चाहिए। मगर वह अब भी घनी झाड़ियों के नीचे ही था और पूरा डर था कि गोली किसी डाल में छूकर रुख न बदल दे; लिहाज़ा मैंने फैर नहीं किया। शेर ने बजाय लाश पर जाने के पच्छिम तरफ अपना रुख बदल दिया और चारों तरफ़ पेड़ों को देखता हुआ लाश के दक्खिन तरफ मचान के सामने आया। मेरी खुशकिस्मती से उसने मेरे पेड़ पर ज्यादा गौर नहीं किया। मैं भी दम रोके हुए पत्थर की तरह खामोश बैठा तमाशा देखता रहा। जब उसको भरोसा हो गया, तब लाश की तरफ मुड़ा। मैंने आहिस्ता-आहिस्ता राइफल उसके ऊपर जमा ली और बहुत खुश हुआ कि अब इनकी मौत आ गयी। अब कहाँ जायगा? कुछ देर उसके खाने का भी तमाशा देखना चाहिए। लाश पर पहुँचकर उसने लाश को और जमीन

को सूँघा। कुछ शाखें भी लाश पर उठाने से छूट गयी थीं। उसने उनको गौर से देखा और शक करने लगा। उस वक्त गर्दन पर निशाना साफ मिल रहा था। मैंने सर के पीछे इतमीनान का निशाना लेकर लिबलिबी दबा ही दी। फैर होते ही शेर गाय के ऊपर गिर पड़ा और थोड़ी देर के बाद कलाबाज़ी खाकर बगैर आवाज़ किये हुए लाश के एक तरफ गिर पड़ा। मैं तय्यार था कि अगर उठने का इरादा करे तो दूसरी गोली मारूँ, मगर वह नहीं हिला। मैंने आदमियों को आवाज़ दी तो सबसे पहले वह गोरखा हीरासिंह दौड़ता हुआ आया। शेर को देखकर वह उसकी तरफ गया। उसने उसको उलटकर देखा और कहा कि मादीन है, जैसा हम बोला था।

मैं मचान से उतरा और मुझे सख्त ताज्जुब हुआ कि जो कुछ उसने कहा था, बिलकुल ठीक निकला कि शेर तुमको देख लेगा और मादीन है। मैंने उसको ५ रुपये निकालकर दिये और पूछा कि रुपया लेगा या कल वाला बकरा लेगा। उसने फौरन जवाब दिया कि बकरा खायगा। मैंने बकरे को दो रुपये चार आने का लिया था। मैंने कहा—रुपया लेता है तो यह लो और बकरा लेना है तो कल हमारे कैम्प लच्छीवाला आओ।

फैर की आवाज़ सुनकर और आदमी जमा हो गये और हमारा ऊँटवाला भी आ गया। मैंने उससे कहा कि अपने ऊँट पर शेर को लादकर ले आओ। मादीन बहुत बड़ी थी और नाप में ८ फीट ११ इंच निकली। सुबह होने पर जब उसकी खाल निकाली गयी तो एक लीथल की गोली उसके कंधे में निकली। उसकी वजह यह थी कि वह पेड़ों पर भी काफ़ी गौर से देखती थी, शायद किसी ने मचान से १२ बोर की लीथल की गोली उसको मारी हो और जख़्म बिलकुल अच्छा हो गया था। वह बहुत जल्द बच्चे देनेवाली थी और उसके पेट से पूरे बढ़े हुए चार बच्चे, २ नर और दो मादीन निकले। मुझे इस हत्या का बहुत सख्त अफ़सोस हुआ।

Plate No. IV.



Tiger shot at a natural kill.

३७· मेरा बारहवाँ गुलदार

दूसरे शनिश्चर की शाम को मिस्टर ट्रिग आई० एफ० एस० इंस्ट्रक्टर इंचार्ज इतवार की छुट्टी मनाने देहरादून जा रहे थे। जाते हुए मोटर को वे मेरे डेरे के सामने से ले गये और हँसते हुए कह गये कि अगर तुमने इस इतवार को दूसरा शेर मारा, तो मुझे बहुत हसद होगा। वह भी शेर के लिए अरसे से पड्डे बँधवा रहे थे, मगर नातजुरबाकारी की वजह से जैसे मैंने बरसों धक्के खाये थे, मगर हाथ अभी तक कोई नहीं लगा था, वही हालत उनकी भी थी। मेरी तबीयत खराब थी। मैं कहीं घूमने नहीं गया और एक खूराक मिगनेशिया साल्ट भी लिया; जिसने काफ़ी असर किया। हमारा कैम्प और जंगलात का बँगला रेलवे लाइन और सड़क के उत्तर थे। रेंज क्वार्टर वग़ैरह उसके दक्खिन में थे। सड़क पर मोटर लारियाँ और गाड़ियाँ बहुत चलती थीं।

आधी रात के बाद मैंने सुना कि रेंज क्वार्टर के कुछ दूर दक्खिन तरफ़ चीतल खतरे की आवाज़ें एक ही जगह पर बहुत देर से दे रहे हैं। मैं डेरे के बाहर आया। चाँदनी रात थी, मैंने चीतलों के शोर की तरफ़ एक बड़े पेड़ को सिम्त मालूम करने की गरज़ से दिल में अन्दाज कर लिया; जहाँ मुझे उनके शोर से यकीन था कि एक चीतल का क़तल उनके भाई-बन्दों के सामने हो रहा है। सुबह होने पर मैंने डेरे के सामने खड़े होकर अपने अरदली को एक बड़ा पेड़ आहाता में दिखलाया और कहा कि उस पेड़ की सीध में ४-५ सौ कदम सड़क और रेलवे लाइन के आगे जाओ और खूब गौर से देखो। मेरा ख्याल है कि वहाँ गुलदार ने चीतल मारा है। रात को वह बहुत शोर मचा रहे थे। अगर मिल जावे तो उसको पत्तीदार शाखों से अच्छी तरह ढककर मुझे खबर देना। थोड़ी देर में वह लौटकर आया और कहा—

वहाँ कुछ नहीं है। मगर चीतलों के एक जगह पर देर तक शोर मचाने और पिछले तजुरबे से मुझे यकीन नहीं हुआ। मैंने कहा— नहीं, जरूर चीतल मारा है। एक खलासी को लेकर फिर जाओ और अच्छी तरह से ढूँढ़ो। अगर तुमको न मिला और शाम को मुझे मिल गया तो एक रुपया जुर्माना करूँगा; क्योंकि मैं अपने आदमियों को हर गुलदार मारने पर साढ़े सात रुपया और हर शेर मारने पर पन्द्रह रुपया इनाम देता था। नाकामयाब कोशिश पर ऊपर का आधा रुपया देता था। गो शिकार के मामले में शुरू से आखीर तक हर काम में आगे मैं ही रहता था और हमेशा उनसे ज्यादा मेहनत करता था। खतरे के मौके पर मैं उनको कभी भी आगे नहीं जाने देता था। मुझे बड़े आदमियों का आरामकुर्सी वाला शिकार बिलकुल पसन्द नहीं था। क्योंकि उसमें सब इन्तजाम दूसरे लोग करते थे और वह सिर्फ मोटर या हाथी पर जाकर मचान या हाथी के हौदे से सिर्फ गोली चला देते थे। उस दिन चूँकि जुलाब लिया था, मैं मेहनत नहीं करना चाहता था। उस वक्त धूप निकल आयी थी और कौए उड़ने लगे थे। मैंने कहा कि अब यह चौकीदार आ गये हैं। जिधर ये बोलें, वहाँ खूब देखना। थोड़ी देर के बाद दोनों हँसते हुए वापस आये और कहा कि एक मादीन चीतल मारी है। थोड़ा सीना और पेट के अन्दर का कुल मलवा खा गया है। यह आदत गुलदार की है कि वह पहले ही दिन पेट फाड़कर पेट का सब मलवा खा जाता है और शेर पीछे से पिछली रानों की तरफ़ से खाना शुरू करता है। वह पेट के मलबे की कतई परवा नहीं करता, या तो अन्दर ही सड़ने देता है या छोड़ देता है। लेकिन शेर के बच्चे सब खा जाते हैं। मैंने कहा कि शाम को चलेंगे। मैं जुलाब की वजह से कमजोर था और पेड़ पर चढ़ने के काबिल न था। लिहाज़ा मैं एक कुर्सी और १२ बोर बन्दूक ले गया और एक बड़े पेड़ के बराबर कुर्सी पर लाश से ३० कदम पर बैठ गया। आदमियों ने चारों तरफ बराबर पत्तीदार डालें काट कर गाड़ दीं। मैंने आदमियों से कहा कि पड़ाव को चले जाओ और अँधेरा होने से थोड़ा पहले या

जब बन्दूक दगे तब आ जाना। जैसे ही आदमी गये, मैंने लाश के चारों तरफ देखना और ख़याल करना शुरू किया कि वह किस-किस चीज़ की आड़ लेकर आवेगा और मुझे गोली चलाने का कहाँ-कहाँ मौका देगा। मेरी पहली निगाह एक दीमक की बामी की तरफ गयी, जो चीतल की लाश से करीब पन्द्रह कदम और मुझसे करीब ४० कदम पर थी। मैंने देखा कि गुलदार उसके पीछे छिपा हुआ सर निकाले हुए मुझे पहले से ही देख रहा है और ताजुब नहीं कि उसने मुझको बैठते और डालें गाड़ते हुए सब हरकतें अच्छी तरह से देखी हों। राइफल कारतूस की किफायत की वजह से ले नहीं गया था और १२ बोर से गोली का उतनी दूर से सर पर ठीक निशाना लगाना मुश्किल था, लिहाजा मैं भी देखता रहा और वह भी अँधेरे तक बामी के पीछे सबर व इतमीनान से बैठा रहा। मैं मायूस होकर सूरज डूबने के बाद चला आया। अगर राइफल ले गया होता तो मुमकिन था कि सर पर गोली मार लेता। मगर मेरा सालाना बजट १२५ कारतूस १२ बोर के और ७५ कारतूस राइफल के था। क्योंकि मेरे सुपुर्द बड़ा खानदान था और मेरी स्त्री को शिकार से सख़्त नफ़रत थी, बरअक्स इसके मुझको शिकार से ज़्यादा किसी चीज़ में दिलचस्पी न थी। लिहाज़ा अक्सर लड़ाई होती रहती थी। दूसरे दिन सुबह जब मैं क्लास बाहर ले जाने को तय्यार था, मिस्टर ट्रिग देहरादून से वापस आये और हमारे साथ शामिल हो गये। काम पर जाते हुए मैंने शाम का किस्सा सुनाया और कहा कि आज आप किस्मत आजमायी कीजिए।

उन्होंने कहा कि मैं भी तमाशे में आज शरीक हो जाऊँगा। शाम को हम दोनों मचान वगैरह लेकर गये। मैंने देखा कि गुलदार लाश को सौ कदम और घसीट ले गया और खा गया। वहाँ पर लाश के दक्खिन में सिर्फ़ एक बड़ा हल्दू का पेड़ मचान बाँधने के काबिल था, बाकी सब छोटे या सीधे थे और गुलदार के आने का मौका दक्खिन ही से था। उत्तर में सड़क, रेलवे लाइन, रेंज कार्टर और हमारा बड़ा कैम्प था। मिस्टर ट्रिग ने कहा कि तुम इस हल्दू के पेड़ पर बैठना

पसंद करोगे ? मैंने कहा—नहीं, लाट्री डालेंगे, जो जीत ले। लाट्री इत्तफ़ाक से मेरे नाम निकली। मैंने कहा—आप मुझसे भारी हैं। आप अपना मचान इस पर बाँधिए। आपका मचान भी बड़ा है। मेरा २ फीट का झूला है, कहीं लटका लूँगा। मैंने उनके पेड़ से २० कदम उत्तर की तरफ एक पेड़ छाँटा और लाश से दोनों मचान के दरमियान खुकरी से साफ़ लाइन खींच दी। मैंने कहा कि इस लाइन के दक्खिन तरफ आपका फैर और इस लाइन के उत्तर तरफ़ मेरा फैर होगा। साहब बहादुर ने कहा—यह बहुत ठीक है। मचान बाँधे गये। हम दोनों अपने-अपने मचान पर बैठ गये और आदमियों से कहा गया कि वे चले जावें। ट्रिग साहब के पास हाथी व गैंडे मारनेवाला बहुत कीमती ४७० बोर दोनाली सेकेण्ड हैंड राइफल था; जोकि उन्होंने नौ सौ रुपये का बड़े शौक से हाल ही में मँगाया था। मुझ गरीबजी के पास ९५ रुपये की थी। थोड़ी देर के बाद ट्रिग साहब के मचान से सौ कदम पर दक्खिन तरफ चीतलों ने बोलना शुरू किया, जैसा कि उम्मीद थी। उस तरफ गुलदार के ठहरने के काबिल घना और खामोश जंगल था। हमने एक-दूसरे की तरफ देखा। मैंने कहा—लीजिए, आता है। मैं अपनी बन्दूक को रानों पर रखकर इतमीनान से बैठ गया, यह ख़्याल करके कि मुझे कोई मौका मिल ही नहीं सकता, क्योंकि गुलदार दक्खिन से आते हुए लाज़मी पहले ट्रिग साहब के सामने से निकलेगा और उनकी तोप की गोली की हवा से भी उसका दम निकल जावेगा। लाश हम दोनों से करीब ३० कदम पच्छिम थी। शेर व गुलदार अपनी रखी हुई लाश पर अँधेरे में भी सीधा आता है। चीतलों का बोलना थोड़ी देर बाद बन्द हो गया।

ट्रिग साहब राइफल लाश की तरफ सीधी किये हुए उसी तरफ और अपने बायें दक्खिन तरफ गुलदार की आमद के इन्तजार में डूबे थे। मैं भी लापरवाई से लाश और दक्खिन तरफ देख रहा था। गुलदार ने न मालूम क्यों बजाय सामने से आने के ट्रिग साहब के मचान के पीछे से आकर उस लाइन को पार किया, जो मैंने खुकरी से

बनायी थी और मेरे मचान के नीचे आकर खड़ा हुआ। उसके पैर से दबकर एक पतली सूखी शाख आहिस्ता से टूटी। ज़मीन बगैर झाड़ी के बिलकुल साफ़ थी। मैंने नीचे देखा तो गुलदार मेरे मचान से लाश की तरफ आहिस्ता-आहिस्ता जा रहा था। जब गुलदार चन्द कदम निकल गया तो मैंने ट्रिग साहब को देखा तो वह दक्खिन की तरफ देखने में मशगूल थे। गुलदार जब लाश के आधे फासले को तय कर गया तो मैंने बन्दूक उठाकर दाहनी नाल की लीथल गोली उसके बायीं बगल की तरफ मारी। वह गिरा और बोलता हुआ दुम उठाये हुए आगे भागा। मैंने फौरन ही बायीं नाल की भी गोली चला दी, मगर वह खाली गयी। गुलदार करीब ५० कदम पर गिरा। थोड़ी देर गुरगुराया, हाथ-पैर मारे और फिर जंगल में गायब हो गया। अब मैंने ट्रिग साहब की तरफ़ देखा। उन्होंने पूछा—किसकी हद में गोली चलायी? मैंने कहा—अपनी। साहब बहादुर ने कहा कि अगर मेरा इन्तजार किया होता तो जमीन में गाड़ देता। मैंने कहा—तो मना किसने किया था? थोड़ी देर के बाद हम उतर कर चले आये। दूसरे दिन सुबह हम दोनों अपने-अपने कुत्ते लेकर गये। मगर लाश से आगे गुलदार की खुशबू पाकर वे आगे नहीं गये। ट्रिग साहब ने अपने चपरासी से कहा कि आगे चलो। मैंने कहा—नहीं, यह मेरा ज़ख़्मी किया हुआ जानवर है। मैं आगे जाऊँगा। मैं थोड़ी दूर आहिस्ता-आहिस्ता होशियारी से गया और देखा कि एक लवक़ड़ के पास गुलदार पड़ा है। मैंने आवाज दी कि आओ। मैंने गुलदार पर पत्थर फेंके, मगर वह उसी वक्त गिरने के बाद ही मर चुका था। वह ६ फीट ६ इंच की मामूली मादीन थी।

---

३८. मेरा चौथा शेर पैदल

मिस्टर कार्नवल आई० एफ० एस० और मिस्टर बेनर्जी असिस्टेंट इंस्ट्रेक्टर जूनियर रेन्जर क्लास के साथ फाँदूवाला कैम्प में देहरादून से ६ मील के फासले पर थे। मैं मिस्टर कोस मास्टन आई० एफ० एस० के साथ सीनियर रेन्जर क्लास की फाइनल परीक्षा में लगा हुआ था। लिखित और जबानी परीक्षा में पूरा एक महीना लग जाता है। निगरानी करनेवाले रोजाना वक्त की सख्त पाबन्दी से तंग आ जाते हैं। कार्नवल साहब कानून जंगलात और एकाउंट की जबानी परीक्षा लेने फाँदूवाला से आये; जोकि मैंने पढ़ाया था। दो दिन बैठने के बाद सनीचर की शाम को ४८ विद्यार्थियों की परीक्षा जोकि आखिरी मजमून था, खत्म हुआ। कार्नवल साहब ने कहा कि कल शाम को वह और उनकी मेम साहबा पड्डु की लाश पर बैठे थे और दो शेर आये थे। मादीन आगे थी, नर झाड़ी के पीछे रुक कर गुर्राता रहा। मादीन ने मचान देख लिया और भागनेवाली थी, लिहाजा दागना पड़ा। वह गिरी, लेकिन फौरन उठकर भागी और थोड़ी दूर जाकर गिरी। यकीन है कि मर गयी होगी। आज सुबह मेम साहबा अरदलियों को लेकर उसको ढूँढ़ने गयी होंगी। उन्होंने कहा—कल इतवार की छुट्टी है। तुम मेरे साथ मोटर में चलो और मेरी शेरनी देखो। बँगला के चारों तरफ मुर्गियाँ बहुत हैं; कल उन का हँकुवा किया जाय। परसों सुबह मेरे साथ कार में वक्त पर आ जाना। मैंने कहा—आप चलिए, मैं घर जाकर जरूरी कपड़े लेकर और नया रायफल ४२३ बोर माजर, जोकि बम्बई से एक हफ्ता की आजमायश पर आया है, लेकर बाइसिकिल पर आता हूँ; ताकि उसके निशाने की आजमायश भी कर लूँ। यहाँ शहर में निशाना लगाने की जगह नहीं है।

मैं फाँदूवाला शाम को अँधेरे के बाद पहुँचा। उनकी शेरनी की खाल देखी। चाय पी और कहीं बाहर नहीं गये। मिस्टर कार्नवल ने कहा कि सुबह वे लोग उस नाले में, जिसमें शेरनी मरी है, नर

शेर के पैर के निशान देखने जावेंगे। उन्होंने मुझसे कहा कि यहाँ से १ मील पूरब दूसरा नाला है, उसमें तुम जाना। अगर उसमें नर शेर के पैर के निशान दिखलायी दें तो कोई मुनासिब जगह अरदली को पड्डा बाँधने के लिए बतला देना। दूसरे दिन सुबह जल्दी चाय पीकर मैं बेनर्जी और एक अरदली को लेकर पूरबी नाले में गया। क्योंकि मैंने अपना ४०५ बोर वेन्चेस्टर रायफल बेच डाला था, मैं अपने नये ४२३ बोर माजर रायफल को आजमाना और खरीदना चाहता था। जब हम एक तेज बहते हुए पानी के नाले को एक पत्थर से दूसरे पत्थर पर कूद कर पार कर रहे थे, मेरा पैर चिकने पत्थर पर फिसला और मैं गिरा। जिससे घुटने और कमर में बहुत चोट आयी कि चलना मुश्किल हो गया। खैरियत से रायफल अरदली के हाथ में था।

खैर हम पहाड़ की जड़ पर पहुँच गये; जोकि बँगले से एक मील के फासले पर था। यहाँ एक पेड़ पर कागज लगाकर २५ कदम से नयी रायफल का निशाना इतमीनान से लगाया। बावजूद यह कि कुन्दे के आखीर में रबड़ लगा हुआ था, फिर भी उसने बड़े जोर का धक्का कंधे और कनपटी पर दिया, कि सर घूम गया और दाँत से खून निकलने लगा। मैं डर गया और समझा कि शायद कम्पनी ने गलत कारतूस ४२३ बोर के बजाय ४२५ बोर के भेज दिये। कारतूसों को गौर से देखा तो ठीक मालूम हुए, मगर उसकी आवाज, धक्का और वज़न मेरे जैसे हलके आदमी के लिए नाकाबिल बरदाश्त थे। दूसरी वजह मेरे ख्याल में यह आयी कि मैंने नाल को साफ नहीं किया था और कम्पनी ने बहुत ज्यादा गिरीज़ इसमें भर दिया था; जोकि पहली फैर से निकल गया होगा। लिहाजा दूसरी फैर की आजमायश करना चाहता था, मगर बेनर्जी ने कहा कि दो फरलाँग आगे फायर लाइन है, उस पर साँभर जरूर मिलते हैं, उन पर फैर करना। एक साँभर कैम्प के लिए पहले मार दो, फिर निशानाबाजी करना। अरदली ने भी बहुत ख्वाहिश जाहिर की, लिहाजा हम फायर लाइन पर पहुँचे। वहाँ कोई जानवर न था। मैंने एक पेड़ पर कागज रख

कर ५० कदम से बहुत इतमीनान से बैठकर निशाना लेकर फैर किया। इस मर्तबा पहले से भी ज्यादा धक्का लगा और करीब-करीब मैं उलट गया। मेरे कंधे में दर्द होने लगा और मुझे रायफल दागने से डर मालूम होने लगा। लिहाजा हम नाले के पूरबी किनारे से वापस हुए।

नाला करीब ७० गज चौड़ा और खुश्क था; जिसमें पत्थर व बजरी थी। जगह-ब-जगह फूस व झाड़ियाँ थीं। हम पहाड़ से नीचे ढाल पर उतर रहे थे और हमारा किनारा पच्छिमी किनारे से कम ऊँचा था। हम थोड़ी दूर चले होंगे कि पच्छिमी किनारे के ढाल पर, जिस पर बहुत घना जंगल था, चीतल बोलने लगे। अर्दली ने फिर कहा कि अरसे से गोश्त नहीं खाया है, एक चीतल ही मार दीजिए। इतने ही में जानवरों के उतरने का एक रास्ता सामने मिल गया और मैं रायफल लेकर नाले में उतर गया। बेनर्जी और अरदली वहीं खड़े रहे। चीतल अब भी धीरे-धीरे बोल रहे थे। मैंने ख्याल किया कि वे हमको देखकर बोल रहे हैं। मैंने एक पेड़ की आड़ लेकर चीतलों की तरफ चलना शुरू किया; जोकि मुझसे करीब ६० कदम पर पहाड़ के ढाल पर एक पेड़ के नीचे खड़े थे, जिस पर घनी बेल फैली हुई थी और चीतलों के सिर्फ पैर और नीचे का धड़ दिखलायी दे रहे थे। चीतलों की सिम्त में सूखे नाले में एक घास का टुकड़ा करीब २५ फीट लम्बा, १० फीट चौड़ा, ५ फीट ऊँचा और मुझसे करीब २५ कदम पर था। उसमें घास हिलती हुई नजर आयी। मैं एक पेड़ के पीछे खड़ा घास को गौर से देख रहा था, कि शेर का सर निकला और मेरी तरफ देखने लगा। वह शायद घास के उत्तरी किनारे पर चीतलों की तरफ उनकी घात में था और मेरे बजरी और पत्तों पर चलने की आहट सुनकर इस तरफ देखने आया कि क्या चीज है। उसने चारों तरफ देखा, मगर मुझे न देख सका; क्योंकि मैं पेड़ की आड़ से खड़ा झाँक रहा था। मुझे शेर की उम्मीद न थी। यह यकायक मिल गया। रायफल नया था, जिसके ऊपर बिलकुल भरोसा न था और मुझे रायफल के धक्के और आवाज से भी उतना ही

खौफ लगता था, जितना कि शेर से। मैंने निशाना शेर के सर पर तो जरूर जमा रक्खा था, मगर दागने का इरादा न था; गो पैदल शेर मारने का बहुत शौक था। इतने में शेर और बाहर निकल कर अपना पैर खुजलाने लगा, और अब मुझे उसका कंधा भी दिखलायी देने लगा। निशाने को उसके सर से कंधे पर बदल कर और पेड़ का सहारा लेकर मैंने लिबलिबी दबा दी। इस मर्तबा न तो मुझको धक्का लगा और न आवाज ही ज्यादा मालूम हुई। शायद मेरा ख्याल उस वक्त बिलकुल शेर की तरफ था। बहरहाल शेर गिर पड़ा और उलट कर घास की ऊँची जमीन से नदी में पत्थरों पर आ गया। मेरे रायफल का फैर सुनकर चीतल भागे और नाले को पार करके पूरबी किनारे पर गये। बेनर्जी ने बन्दूक के दो फैर किये; जोकि खाली गये। अब वे दोनों सीधे मेरी तरफ दौड़ते हुए आये। मैं अभी तक पेड़ की आड़ में छिपा हुआ रायफल तय्यार किये हुए शेर को देख रहा था; जोकि सिर्फ दुम जमीन पर उलट-पलट रहा था। बेनर्जी ने मुझे नहीं देखा था और सीधे शेर की तरफ दौड़े जा रहे थे। मैंने मना किया कि न जाओ। इतने में उनकी निगाह खुद शेर पर पड़ी और वह जिधर से आये थे, उधर ही वापस भाग गये। थोड़ी देर में जब शेर का हिलना बन्द हो गया, तो मैंने पत्थर फेंका, शोर मचाया और उसके पास गया। मैंने बेनर्जी को बुलाया तो वे वहीं से जवाब देते रहे, मगर नीचे नहीं उतरे। जब सामने आकर मुझे शेर के पास देखा, तब आये। हमने उसकी खाल वहीं निकाली और सर और पंजे जिनकी खाल निकालना मुश्किल होता है, काट कर खाल ले आये। वह ८ फीट ९ इंच का पट्ठा था; जिसके बड़े चार दाँत अभी पूरे नहीं बढ़े थे और जिसने माँ को छोड़कर अकेले शिकार करना शुरू किया था। नातजुरबेकारी की वजह से वह मारा गया। क्योंकि धूप निकलने के बाद भी वह घूम रहा था नहीं तो शेर दिन में बहुत कम निकलता है।

३६. मेरा चौथा और आखिरी रीछ

मैं रेंजर क्लास के साथ चकराता फॉरेस्ट डिवीजन में मई सन् १९२४ ई० में दौरा कर रहा था और बोदपार कैम्प में, जोकि सतह समुन्दर से ७००० फीट की ऊँचाई पर है, ठहरा हुआ था। बँगले का चौकीदार एक बुड्ढा वहीं के नजदीक के गाँव का रहनेवाला था। वह करीब ४० बरस से उसी बँगले का चौकीदार था।

यह देखते हुए कि मैं रोज शाम को घूमने जाता था, उसने मुझसे पूछा—क्या आपको मुश्क हिरन, रीछ, धुरल और पहाड़ी बकरी मारने का भी शौक है ? मैंने कहा—क्यों नहीं। उसने कहा कि कल इतवार है। अगर सुबह अँधेरे तय्यार हो जाओ, जिससे कि दिन निकलने से पहले ही हम यहाँ से दो मील निकल जावें, जोकि यहाँ से बराबर चढ़ाई ९००० फ़ीट की ऊँचाई तक है, तो मुझे उम्मीद है कि हमको जरूर कुछ-न-कुछ मिलेगा। मैंने कहा—अगर तुम आकर मुझे एक घंटा पहले जगा दो, तो मैं तय्यार हो जाऊँगा।

दिसम्बर-जनवरी की तरह सर्दी में और तेज हवा में दिन निकलते वक्त ही हम वहाँ की सबसे ऊँची चोटी के करीब पहुँच चुके थे। कोहरा पड़ रहा था कि ज्यादा दूर नहीं दिखलायी देता था। ओक, भोजपत्र, देवदार और रई व मोरंडा के पेड़ सिकुड़े हुए कमी के साथ खड़े थे और इन पर तरह-तरह की फर्न-अरकिड और लटकती हुई हरी बाल के मानिन्द काई ढकी हुई थी। नीचे कहीं-कहीं झाड़ियाँ नील और दूसरे किस्म की थीं, मगर ज्यादातर हरी दूब, घास, इसटाबरी और बनफसा था। कहीं-कहीं बड़े-बड़े पत्थर और ग़ार थे; जिनमें गुलदार और रीछ दिन को छिप रहते थे।

मुश्क हिरन भी और कई जानवरों की तरह चंद खास-खास ही जगहों में मेंगनी करता है; जिन पर धीरे-धीरे ढेर लग जाता है। हमको कई जगह ये ढेर मिले।

मैंगनियों को मलकर सूँघने से भी हल्की मुश्क की खुशबू आती है। एक जगह पर हमको बिलकुल ताजी मैंगनियाँ मिलीं, जिनमें से भाप निकल रही थी। उसी वक्त सूरज भी अपनी अनोखी शान से निकल रहा था; जोकि सिर्फ पहाड़ों में ही नजर आती है। सूरज की किरनें बरफ से ढके हुए पहाड़ों पर जोकि सामने काफी दूर पर साफ दिखलायी दे रहे थे, तरह-तरह के रंग बदल रही थीं, जिनका बयान ग़ैर-मुमकिन है। मैं कभी आसमान पर और कभी बरफ के पहाड़ों पर तरह-तरह के बदलते हुए रंग देखकर बैठ गया और खुदा की कुद-रत पर सोचने लगा। मैंने अरदली को आवाज दी कि थरमस लाओ और इस सख्त सरदी में एक प्याली गरम चाय पीने को जी चाहा। जैसे-जैसे सूरज ऊपर आता और तेज होता गया, कोहरा फटता गया। बुड्ढे चौकीदार ने जिसके मुँह पर बहुत गहरी झुर्रियाँ पड़ी हुई थीं और ७० बरस से ज्यादा उम्र का होगा और जो मुझसे भी ज्यादा शौक़ीन शिकार और क़तल करने का मालूम होता था, कहने लगा—साहब क्या कर रहे हो? चाय तो तुम रोज बँगले पर पीते ही हो, मगर मुश्क हिरन रोज देखने को नहीं मिलता है। वह हमारे आगे-आगे ही जा रहा है। मैंने जल्दी से चाय खतम की और कहा कि बिलकुल ठीक कहते हो और चल दिया। हम थोड़ी ही दूर गये होंगे कि पूरे क़द का एक मुश्क हिरन हमसे करीब ५० कदम से छलाँग मार कर हमारे बायें तरफ नीचे की तरफ भागा और झाड़ियों में गायब हो गया। भागते हुए हिरन को उतनी दूर से मारना ज्यादा मुश्किल न था मगर मैंने सोचा कि ये जानवर रोज नहीं मिलते हैं, इतमीनान की गोली चलाऊँगा। मैं कुछ दूर उसके पीछे गया, मगर जब ढाल खतरनाक तौर पर तेज हो गया, तो नाउम्मीद होकर वापस चला आया। बूढ़े चौकीदार ने अपने सिकुड़े हुए चेहरे को और बिगाड़कर कहा कि अगर चाय न पी होती, तो कस्तूरा मार लेते। अगर मेरे पास केमरा होता तो उसकी फोटो रखनेवाली थी। हम पहाड़ की धार पर आगे बढ़े, जो पतली और चट्टानी होती गयी। लिहाजा मजबूर होकर हम पूरबी

हल्के ढाल पर करीब १०० कदम नीचे उतर आये और कुछ दूर ही आगे गये होंगे, तो देखा कि एक रीछ नीचे से आया और सीधा ऊपर की तरफ़ हमसे करीब ४० कदम के फासले पर एक सूखे नाले में बग़ैर हमको देखे हुए जा रहा था। मैं तेजी से गया और नाले के सामने पहुँचा तो देखा कि झाड़ियों में करीब ३० कदम के फासले पर कहीं-कहीं रीछ जाता हुआ नजर आ रहा है। मैंने उसको रोकने के लिए खाँसा, मगर उसने नहीं सुना। मैंने फिर जोर से खाँसा। वह कूद कर बोलता हुआ मेरी तरफ मुँह करके पिछले पैरों पर खड़ा होकर देखने लगा और सीने का बहुत साफ निशाना दिया। मैं जब निशाना ले रहा था, तो उसने शायद मुझे फिर देखा और शोर मचाता हुआ मेरी तरफ नीचे ढाल पर तेजी से दौड़ा। मैं करीब २० कदम पीछे भाग कर बैठ गया। जैसे ही वह नाले के बाहर निकला और इधर-उधर मुझे देखने लगा, वैसे ही मेरी ३६६ बोर की बोर की गोली उसके बगल में पड़ी और वह लुढ़कता हुआ करीब २० कदम पर एक चट्टान के सहारे ठहरा और छटपटा रहा था कि मेरी दूसरी गोली ने उसे खामोश कर दिया।

यह तन्दुरुस्त पूरे कद का नर था। उसको कैम्प में ले जाना मुश्किल था, लिहाजा हमने वहीं उल्टी-सीधी खाल निकाली और सर और पंजे काट कर कैम्प में ले आये। कैम्प में खाल साफ की गयी और चरबी व गोश्त छीलकर आहाता के बाहर फेंक दिया गया, जिसको मेरे वफ़ादार कुत्ते रोवा ने खूब खाया और तीन दिन के अन्दर पेचिश में बीमार होकर मर गया। मुझे उसके मरने का बड़ा अफ़सोस हुआ। रोवा ने १० बरस बड़ी वफ़ादारी से बहुत कारआमद बनकर मेरा साथ दिया था। उसके ऊपर मुझको बहुत बड़ा भरोसा था। कोई ज़ख्मी चिड़िया जंगल में या पानी में उससे बचकर नहीं जा सकती थी। रात को उससे ज्यादा मेरा कोई वफ़ादार चौकीदार न था। देहरादून और नैनीताल में अपने खेल-तमाशों की वजह से मुझसे ज्यादा उसको ही लोग जानते थे। खासकर राजा-नवाबों और अँग्रेजों में उसकी बड़ी

क़दर थी। देहरादून के, सिवालिक क्लब में उसको एक साल मिस्टर रोबा का ख़िताब दिया गया और दूसरे साल आनरेबिल मिस्टर रोबा का ख़िताब दिया गया, हार पहनाये गये और पचास मेम्बरान के साथ उसको चाय की दावत दी गयी। मेज़ पर बैठाकर उसकी तसवीर ली गयी। वह इसलिए कि वह रोज़ाना टेनिस खेलते वक्त एक तरफ़ गेंद लाकर लाइन पर रखने का काम करता था और शाम को जितनी गेंदें झाड़ियों में खो जाती थीं, वह सब ढूँढ़ ला देता था और दो कुली का काम मुफ्त करता था।

४०. खासन नदी के चालाक शेर से मेरी ७ माह की कोशिश

अक्तूबर सन् १९२७ ई० में मेरा तबादला देहरादून फॉरेस्ट कॉलेज से लेंसडौन फॉरेस्ट डिवीज़न को पूरे ५ बरस के बाद बतौर असिस्टेंट डिवीजनल फॉरेस्ट अफ़सर के हुआ। मिस्टर चेम्पियन आई० एफ़० एस० डिवीजनल फ़ॉरेस्ट अफ़सर थे; जिन्होंने (केमरा, शेर के जंगलों में) एक मशहूर किताब लिखी है। हुक्म यह थे कि आयन्दा अप्रैल में जब चेम्पियन साहब छुट्टी पर जावें, तब चार्ज मुझे दिया जावेगा। डिवीजन में पहुँचते ही मैंने उन कामों को देखने के लिए दौरा शुरू किया जो मेरे सुपुर्द किये गये थे। मैं लालढाँग पहुँचा और दूसरे दिन सुबह डिप्टी रेंजर के पेड़ों के छपान का निरीक्षण करने गया। मैं अपनी घोड़ी और अरदली को खासन नदी के किनारे छोड़कर पहाड़ पर छपान देखता रहा। काम ख़त्म करने के बाद, जोकि खासन नदी से एक मील के फासले पर होगा, मैं एक नाले में होकर उतरने लगा जोकि खासन नदी में जाकर मिला था। डिप्टी रेंजर ने, जोकि सन् १९२० में ट्रेनिंग स्कूल में मेरा विद्यार्थी रह चुका था और जानता था कि मुझे बड़े नर शेर के मारने का शौक़ है, कहा कि अगर आध मील और उत्तर की तरफ़ आप चलें, तो वहाँ से जो नाला खासन में जाता

है। उसमें मैं आपको बहुत बड़े शेर के पैर के निशान दिखलाऊँ, जोकि उस नाले में रोज़ घूमता है। गो शाम होनेवाली थी; मगर मैंने कहा—चलो। जब वहाँ पहुँचे तो वाक़ई पैर के निशान से मालूम होता था कि डिवीजन के बड़े शेरों में से है। चूँकि मैं लालढाँग २-३ दिन और ठहरनेवाला था, मैंने दूसरे दिन शाम को एक पड्डा मँगाकर उस नाले और खासन नदी के मिलान पर बाँध दिया। पहली ही रात को शेर ने उसे मार दिया। मैं बहुत खुश हुआ और जरूरी इन्तजाम करके शाम को खासन नदी के किनारे एक पत्थर पर अँधेरे तक बैठा रहा, मगर शेर नहीं आया। उसकी आदत थी कि अगर उसकी मारी हुई लाश के इर्द-गिर्द इंसान का गुजर या किसी किस्म का दख़ल हो जाता था, तो पहली मर्तबा खाकर फिर दूसरी मर्तबा उसके क़रीब ही नहीं आता था और लाश बिलकुल छोड़ देता था। उसमें खूबी यह थी कि जंगलात के बँगला और रेंज कार्टर के दरमियान होकर वह रोज रात को निकलता था, जोकि लालढाँग गाँव से १०० कदम उत्तर में थे। अफ़सरान और शिकार के परमिट वाले जो बँगले में ठहरते, इसके बड़े-बड़े पैर के निशान बँगले के आहाता के साथ-साथ सड़क पर देख कर खुश हो जाते और फौरन पड्डे की दावत देते। यह सिर्फ़ पहली रात को दो दिन की ख़ूराक खाकर फिर लाश के पास तक न आता और यह हर माह नये तजुरबे हासिल करता और मुफ्त की दावत खाया करता।

लालढाँग लेंसडौन फारेस्ट डिवीजन के बीच में ख़ास सड़क पर वाक़ै था। लिहाजा मुझे क़रीब-क़रीब हर महीने में नहीं तो दूसरे महीने में तो जरूर ही इस पड़ाव पर दो-एक दिन ठहरना पड़ता था। चुनांचे अक्टूबर से अप्रैल तक मैंने इस शेर को उसके पैर के बड़े निशान देख-कर लालच में ६ पड्डे दावत में दिये; जिनको उसने हजम किया और मुझे खूब बेवकूफ बनाया। उसने हर मर्तबा नये-नये सबक़ सिखाये और मेरी तरह नामालूम कितने शिकारियों को धोखे दिये। वह करीब रोजाना लालढाँग बँगला के आहाता के तार के बिलकुल पास से रात

को किसी वक्त जरूर हेकड़ी से निकल जाता; जबकि मैं मुश्किल से ३० कदम पर बँगले के बरामदे में सोता रहता। इन सब वाक़ियात का बयान करना बहुत लंबा किस्सा होगा। यह शेर अपनी चालाकी में मशहूर हो गया और जाननेवाले लोगों ने इस पर कोशिश करना छोड़ दिया। गाँव में मशहूर था कि यह शेर नहीं है, भूत है। कभी-कभी तो वह गाँव की बीच की सड़क पर भी होकर निकल जाता और गाँव का एक कुत्ता भी न भूँकता, न इसको किसी ने देख ही पाया, मगर उसके पैर सुबह जरूर दिखलायी देते। शुरू अप्रैल में छठा पड्डा खिलाकर मैंने भी हार मान ली और अपने आदमियों से कह दिया कि अब खासन नदी में आयन्दा हरगिज मेरा पड्डा न बाँधा जावे। मेरा कयाम लालढाँग में ४-५ दिन का था और अच्छी चाँदनी रात थी। शेर रोजाना आहाता के तार के पास से निकल रहा था। मैं एक रात को खाना खाकर काँटेदार तार के इस तरफ कुरसी डालकर बैठ गया। अरदलियों ने भी कहा कि एक रात की तकलीफ तो जरूर है मगर मार खा जावेगा। मैं १० बजे से बैठा। चाँदनी बहुत साफ थी और सड़क के दोनों तरफ ५०-६० कदम अच्छी तरह से दिखलायी देता था। मैं बड़ी उम्मीद से बैठा और बैठते वक्त मैंने अरदली से कहा कि मालूम होता है कि आज शेर बहादुर की सारी चालाकी खाक में मिल जावेगी और शायद लादकर लाने की तकलीफ भी बचेगी। सिर्फ गलती यह की कि अपने उत्तर तरफ एक घनी पत्तीवाली शाख न गाड़ ली। मैं खुले ही में अहाता के तार के खम्भों के पास कुर्सी पर बैठ गया, जोकि शेर भी दूर से देख सकता था। सामने सड़क थी और उसके बाद पूरब में सौ गज चौड़ी घनी झाड़ियाँ और पेड़ थे और फिर पहाड़ था। उत्तर में करीब १०० कदम पर खासन नदी थी; जिसमें होकर यह सड़क आयी थी। दक्खिन में पचास कदम पर सड़क के पूरब में रेन्ज कार्टर था और उसके दक्खिन बड़ी सड़क और फिर गाँव था।

रेन्ज कार्टर और पहाड़ के बीच फायर लाइन थी। मैं पहाड़ और

फायर लाइन के सामने बैठा था; ताकि गोली अगर खाली जावे तो पहाड़ में लगे। करीब १२ बजे मुझे कोई जानवर खासन की तरफ से सड़क पर आता नजर आया। वह जब करीब ६० कदम के रह गया, तब थोड़ी देर ठहरा और फिर सामने की झाड़ियों में चला गया। उसकी चाल-ढाल से शेर ही मालूम होता था। मैं चार बजे तक बैठा रहा। मच्छरों ने और नींद ने तंग कर दिया था, लिहाजा चला आया और बरामदे में चारपाई पर सो रहा। सुबह जाकर देखा तो शेर के वापसी के पैर मेरी कुर्सी से ५ फीट के ऊपर बने हुए थे। मैंने आगे बढ़कर देखा तो १२ बजे रात को जो जानवर आ रहा था और फिर जंगल में सामने घुस गया था वह शेर ही था, मुझे देखकर जंगल और जंगल से पहाड़ की जड़ पर होकर फायर लाइन पर निकल गया था। मैंने भी ख्याल किया कि बेशक इस शेर की भूत रहनुमाई करता है कि सुबह ही जब मैं उठ आया, तब फौरन उसके बाद ही निकल गया। गरजे कि शेर हाथ नहीं लगा।

चेम्पियन साहब अप्रेल में छुट्टी गये और मैंने पहली मर्तबा डिवीजन का चार्ज लिया। खुदा ने वह ख्वाहिश और अरमान पूरा किया, जिसको कि मैं बरसों से दिल व दिमाग में लिये हुए था। काम ज्यादा था और डिवीजनल दफ्तर मय क्लर्कों के ६ माह के लिए कोटद्वारा से लेंसडौन जानेवाला था। एक हफ्ता तक मैं दफ्तर के कामों में बहुत मशरूफ रहा और दफ्तर को लेंसडौन रवाना करके दौरा पर, बारह ऊँटों पर सामान, दो हाथी, मेरी घोड़ी, कैम्प, क्लर्क और दस-बारह आदमियों को लेकर तीसरे हफ्ता अप्रैल में रवाना होकर हम हल्दूखाता पहुँचे। गर्मी के दिनों में सामान और नौकर रात को खाना खाने के बाद हस्ब मामूल रवाना हो गये। मैं ५ बजे सुबह मशहूर हाथी बालमती पर करीम महावत, जिनका जिकर चेम्पियन साहब ने अपनी किताब (केमरा : शेर के मुल्क में) में बहुत तारीफ के साथ किया है और अरदली को लेकर रवाना हुआ।

४१. मेरा तेरहवाँ गुलदार

हमारा दूसरा कैम्प लालढाँग १० मील पर था। दो मील जाने के बाद खेती ख़त्म हो गयी और जंगल शुरू हुआ। दिन निकलने तक हम जंगल की सरहद और फायर लाइन पर पहुँच गये। कुछ दूर सरहद पर चलने के बाद चीतलों की खतरे की आवाज करीब १ फरलाँग दक्खिन जमींदारी जंगल में सुनायी दी। हम चीतलों की आवाज की तरफ गये और ३०-३५ चीतल नजर आये। हाथी को आते देखकर चीतल बोलते हुए आगे बढ़े। हम भी चीतलों के पीछे-पीछे चलते रहे। अब भी थोड़ा-थोड़ा अँधेरा था। एक गुलदार हमें बेर की झाड़ियों की आड़ में जाता नजर आया। रायफल की अगली मक्खी अभी साफ नहीं दिखलायी देती थी, लिहाजा हम भी उसके पीछे लगे रहे। उसने पगडंडी, जिस पर चल रहा था, छोड़ी और उसके दक्खिन तरफ पन्द्रह-बीस कदम पर खड़ा होकर हमको देखने लगा। मैंने कंधे पर गोली मारी और वह उसी जगह गिर पड़ा। उसको हाथी पर लादकर हम फिर रवाना हुए। यह साढ़े ६ फीट की मादीन थी।

करीम महावत को अपने तरीके पर हाथी को शेर, गुलदार के पास ले जाने में बड़ा घमंड था और वह अपने पिछले तजुरबे बयान करता रहा, मगर मैंने कोई जबाब नहीं दिया, क्योंकि मुझको भी गुरूर था, कि मैं उससे ज्यादा जानता हूँ। हम फिर सरहदी लाइन पर आ गये और चलते रहे। सूरज निकल रहा था। हमने देखा कि सरहदी फायर लाइन पर पहाड़ की जड़ में करीब १०० कदम पर धूल उड़ रही है। फायर लाइन पर कहीं-कहीं घास और कटे हुए पेड़ों के पुराने और जले हुए काले-काले ठूँठ थे। मैंने नजदीक से जाकर देखा तो एक रीछ दीमक खाने के लिए बामी खोद रहा था और अपने काम

में बहुत मेहनत से मशगूल था। उसका आधा धड़ गड्ढे के अन्दर था। हम करीब १० कदम पर आहिस्ता-आहिस्ता पहुँच गये और हाथी खामोश खड़ा देखता रहा। रीछ ने वही खास आवाज दीमक को साँस से खींचने की शुरू की; जोकि हमने पहली मर्तबा उस रोज सुनी थी, जब रीछ हमारे पेड़ पर चढ़ गया था। करीम महावत खुद भी अच्छा शिकारी था और वह हाथी की गरदन पर सीधा हाथ बाँधे हुए बठा था। हमने यह तमाशा चन्द मिनट देखा। महावत ने कहा—मारो। मैंने कहा—नहीं, बिला वजह की मेहनत, परेशानी और खर्चा होता है। इसकी खाल मुझे बिलकुल पसंद नहीं है। शायद हमारी आवाज सुनकर रीछ ने सर निकाला और हमको और हाथी को इस कदर करीब देखकर थोड़ी देर समझने में ली। फिर वह शोर मचाता हुआ उत्तर की तरफ पहाड़ पर जंगल में भाग गया। हम लालढाँग कैम्प पहुँचे और करीम महावत ने कहा कि मैंने रीछ भी दिलवा दिया था, मगर मारा नहीं।

४२. मेरा चौदहवाँ व पन्द्रहवाँ गुलदार

दूसरे दिन शाम को करीम महावत बगैर बुलाये हाथी लेकर आ गया। जबकि मैं दफ्तर के काम में रेन्जर और कैम्प क्लर्क के साथ मशगूल था। मैंने करीम से कहा कि आज नहीं जावेंगे। मगर रेन्जर ने कहा कि सब लोग चीतल की उम्मीद लगाये आपके आने का इन्तजार कर रहे थे। लिहाजा हम शाम को देर से गये। हम करीब एक ही फरलाँग के गये होंगे और खासन नदी को पार कर ही रहे थे कि हमने बन्दरों की खतरे की आवाज सुनी और फिर चीतल भी एक सूखे नाले के किनारे बोलने लगे। हम उस तरफ गये तो देखा कि एक गुलदार दीमक की बामी के पीछे छिपा बैठा था। बन्दर पेड़ों पर और चीतल उससे आगे बोल रहे थे। गुलदार ने पीछे से हमारा हाथी आता देखकर लापरवाई से आगे चलना शुरू कर दिया। चीतल

चारों तरफ बोलते हुए भाग गये। गुलदार नाले की ढाल पर मुड़कर करीब बीस कदम के फासले पर खड़ा होकर हमको देखने लगा। करीम ने हाथी को रोक लिया। मैंने उसके कंधे पर ३६६ बोर की गोली मारी। वह लुढ़कता हुआ और बोलता हुआ नाले में गिरकर थोड़ी देर में मर गया। वह साढ़े सात फीट का नर बहुत अच्छी तंदुरुस्ती में साफ-सुथरा था। जब हमने गुलदार को हाथी पर लादा तो अँधेरा होने लगा था। रेंजर और महावत ने कहा कि चीतल अभी दूर नहीं गये होंगे, एक मार दो। मैंने कहा कि अब निशाना ठीक नहीं लगेगा। कल जरूर चीतल मारेंगे। करीम अपनी कामयाबी पर बहुत खुश था। वह कहने लगा कि उसने चेम्पियन साहब को बहुत अच्छे-अच्छे मौके दिलाये; मगर वह मारते नहीं थे, सिर्फ अपनी किताब के लिए जिन्दा जानवरों के फोटो लेते थे। उसने कहा कि दूसरा हाथी रामप्यारी बेकार है। वह एक आँख से देखता है और उसका महावत भी कुछ काम नहीं जानता है। लिहाजा उसको पेन्शन है और मैं रोजाना काम पर जाता हूँ। जब दोनों महावत हाथियों को शाम को हस्ब मामूल राशन खिलाने लाये, जो कि दस सेर रोटी साढ़े सात सेर गुड़ रोजाना दिया जाता था, मैंने दूसरे महावत इस्माइल से कहा कि कल शाम को तुम अपना हाथी लाना।

दूसरे दिन शाम को इस्माइल अपना हाथी लाया। मैं अरदली को लेकर लूनी नाले में गया; जहाँ मैं अक्सर शेर, गुलदार व रीछ के पैरों के निशान और कभी-कभी जंगली हाथियों के भी, जब मैं जाड़ों में अपनी घोड़ी पर सुबह की गश्त में जाता था, देखता था। हम इस चौड़े नाले में, जिसके दोनों तरफ़ घने जंगल, झाड़ियाँ और बाँस थे मुश्किल से ५० कदम गये होंगे कि बन्दरों ने खतरे की आवाज़ें हमारे सर के ऊपर पेड़ों से देना शुरू कीं। मगर हमको कुछ नहीं दिखलायी दिया। सूरज डूब रहा था। हम बँगले से क़रीब २ मील के फासले पर थे। जंगली हाथियों की बाँस तोड़ने की आवाज़ें और रौल-चौल सामने के पहाड़ से आ रही थीं। चूँकि हमारे हाथी को क़रीब एक

महीना पहले जंगली हाथियों ने बहुत जख्मी किया था, लिहाज़ा यह घबराने लगा। मैंने इस्माइल महावत से कहा – नाले के पच्छिमी ढाल के नजदीक से एक चक्कर और लो, जिस तरफ बन्दर देख रहे हैं और फिर वापस चलो। जब हम लौट रहे थे, मैंने गुलदार की दुम और पिछला धड़ एक मोटे पेड़ के पीछे ढाल पर देखा। मैंने इस्माइल को रोका और कूले के थोड़ा ऊपर फ़ायर किया; जिससे उसकी कमर की हड्डी टूट गयी और कोई हिस्सा दिखलायी भी न देता था। गुलदार लुढ़क कर हाथी के पैरों के पास गिरा। मैंने फौरन दूसरी गोली उसको खत्म करने के लिए मारी। जंगली हाथी, जो कि क़रीब १०० क़दम पर पहाड़ के ऊपर बाँस तोड़ रहे थे, राइफल की आवाज सुन कर रम-फम करते हुए भागे। हमने गुलदार को हाथी पर लादा और उस रोज भी बग़ैर चीतल के कैम्प को वापस आये; जिससे सब कैम्पवालों को बड़ी मायूसी हुई। मैंने इस्माइल से कहा कि करीम से कहना कि किस क़दर आसानी से आज तुमने ५-६ गज की दूरी से काने हाथी से गुलदार दिलवाया।

दूसरे दिन सुबह करीम आया और कहा कि उसने एक बड़े नर शेर के पैर का निशान खासन नदी पर देखा है। आज यहाँ नजदीक ही पड्डा क्यों न बाँधा जाय; बजाय दूर बाँधने के। मैंने कहा कि वह बड़ा चालाक शेर है और पिछले अक्टूबर से अब तक मेरे ६ पड्डे खा चुका है। मैं इस पर और पड्डे जाये नहीं करना चाहता।

---

४३. मेरा जख्मी शेर से बाल-बाल बचना

दूसरे दिन सुबह इत्तला आयी कि जो दो पड्डे बाँधे गये थे, उनमें से एक को शेर ने मार लिया है। उस वक्त मैं और रेंज अफ़सर प्लान्टेशन के मुआइना को घोड़ों पर बाहर जा रहे थे। लिहाजा घोड़ों को आगे भेज दिया और हम लोग हाथी पर गये कि लाश को ढूँढ़कर ढक दें; या शेर मिल जाये तो मार लें और तब घोड़ों पर १२ मील

प्लान्टेशन को जावें। पड्डा जिस नाले में बाँधा था, वहाँ से शेर लाश को नाले के पार ले गया और फिर दूसरे ऊँचे किनारे पर थोड़ी ही दूर पर पहाड़ की जड़ में थोड़ी-सी बराबर जगह थी, उसमें एक घना बाँस पुरानी बामी में था, उसके नीचे रक्खा। शायद जब हम पहुँचे, तब शेर खा रहा था; क्योंकि ताजा खाया हुआ मालूम होता था। हमारी आहट पाकर शेर बामी के पीछे लाश से सिर्फ गज-दो-गज पर खड़ा था; जोकि किसी ने नहीं देखा। मैंने भीमसिंह अरदली से कहा कि बस, लाश को पत्तों से ढक दो और वापस चलें; शाम को आवेंगे। भीमसिंह ने भी इधर-उधर नहीं देखा और उलटा-सीधा पत्तों से ढक-कर हाथी पर चढ़ आया। शेर उसी बाँस की घनी डालों के नीचे बामी की आड़ में चन्द ही क़दम पर छिपा यह सब तमाशा देखता रहा। हम हाथी को उसी रास्ते वापस ला रहे थे, जिस पर से गये थे कि नाले के दूसरी तरफ पेड़ों पर लंगूर बन्दरों ने शोर मचाना शुरू किया। हमने चारों तरफ देखा, मगर कुछ नहीं दिखलायी दिया। लेकिन बंदर यक़ीनी तौर पर लाश की तरफ देखकर शोर मचा रहे थे।

करीम ने कहा—थोड़ा नाले को देख लें और हाथी को मोड़ा। मैंने बन्दूक रेंजर को दी कि अगर शेर हमला करे, तो तुम भी दागना। हम मुश्किल से १० कदम गये होंगे कि एक पत्थर नाले के ऊँचे किनारे से जहाँ लाश थी, हमारे सामने गिरा। हमने देखा कि शेर नाले के किनारे लाशवाले बाँस व बामी के सामने खड़ा हमको देख रहा था। करीम ने हाथी रोक लिया। मैंने शेर के कंधे पर ३५५ बोर की गोली मारी। शेर का मुँह हमारी तरफ था और जिस्म तिरछा था। घबराहट का निशाना हाथी की पीठ पर से था, जोकि साँस ले रहा था। गो फासला २५ या ३० फीट की ऊँचाई से ज्यादा न था, मगर गोली ठीक नहीं पड़ी। शेर गड़गड़ाता हुआ गिरा और मय पत्थर, मिट्टी, लकड़ी और पत्तों के लुढ़कता हुआ हाथी के सामने गिरा। गिरते वक्त मैंने एक और फैर और रेंजर ने दो फैर १२ बोर बन्दूक से गोली और गराब के किये। शेर ने फौरन गिरते ही अगले हाथों के भल पिछला

धड़ घसीटता हुआ, नाले में पत्तियाँ व शाखें वग़ैरह अपने साथ लेता हुआ आगे बढ़ना शुरू किया। करीम ने कहा कि फैर करो। मैंने कहा कि ४ फैरें तो उसके जिस्म पर इतने नजदीक से पड़ चुकी हैं, खाल ख़राब हो चुकी होगी। वह जल्द गिर जायगा, कहीं जा नहीं सकता, कमर तो टूट ही गयी है।

अगर मैं चाहता तो बाकी तीन गोलियाँ उसके जिस्म में और पहुँचा देता। मगर मैंने सिगरेट जलाया और रेंजर के ऊपर खफ़ा होता रहा कि तुमने बिला वजह दागा। शेर ने हमला नहीं किया था, खाल बिलकुल खराब हो गयी होगी। इतने में शेर ५० क़दम निकल गया। उसके बाद नाले में घूम था। वह आँखों से गायब हो गया। मैंने महावत से कहा कि बढ़ो, और घूम के बाद ही देखा कि शेर अपने साथ जो पत्ती व शाखें वग़ैरह लाया था, उसका सिर्फ़ ढेर ही बाक़ी है और काफी खून पत्तों के ऊपर पड़ा है, मगर शेर गायब है। मुझे बेहद रंज, फिकर व बेचैनी पैदा हुई।

नाले में अब बहुत ऊँचे-नीचे और बड़े-बड़े पत्थर और सख़्त तेज ढाल था, जिसमें हाथी का आगे जाना मुश्किल था। मैं हाथी से उतरा और यह सोचकर कि शेर नाले-नाले गया होगा, मैं बहुत तेज चला, ताकि जल्द उसके पास पहुँच जाऊँ। करीम महावत ने हाथी छोड़ दिया। वह खून देखता हुआ आगे बढ़ा, सीटी दी, इशारे से बुलाया और खून और शेर के जाने का रुख दिखलाया। शेर बजाय नाले-नाले जाने के दक्खिन तरफ के ५ फीट ऊँचे किनारे पर चढ़कर पहाड़ की एक हल्की धार पर चढ़ गया और मैं उसके पीछे जाने लगा। करीम ने मना किया कि उसकी कमर नहीं टूटी है, सिर्फ़ झटका आ गया था, नहीं तो ऐसी जगहों में हरगिज नहीं जा सकता था। मैंने कहा कि मैं जानता हूँ। अभी वह नजदीक ही होगा और दूसरी गोली मारने का मौका मिल जावेगा। उसने कहा कि अच्छा, मैं नाले-नाले जाकर आगे बैठूँगा; क्योंकि यह धार एक-दो फर्लाङ्ग के बाद उसी नाले में मिल जाती है।

मैंने उस जंगल को कभी पहले नहीं देखा था। मैंने कहा—अच्छा, जाओ और मैं खून के निशान को देखता हुआ चलता रहा। करीम ने खतरे से बचने के लिए मेरा साथ छोड़ दिया। या वाक़ई उसने जो कहा था, उसका मतलब वह ही था। मैंने गौर नहीं किया। मैं तेज चलता रहा और चारों तरफ देखता रहा। घास और झाड़ियों में लगा हुआ ताजा खून मेरे घुटनों पर हाफ पैन्ट के नीचे लगता रहा। उस धार पर मुझे दो जगह बहुत ऐसी मुश्किल मिलीं कि जहाँ से ज्यादा जख्मी जानवर नहीं गुजर सकता था। मैंने सोचा कि वह अभी बहुत अच्छी हालत में है और हमला कर सकता है। मेरे रोंगटे खड़े हो गये और दिल धड़कने लगा; लेकिन मुझे इन्तहाई खतरे में भी हमेशा लुत्फ आया। मैं चलता रहा और नाले के मिलान पर आया; जहाँ नाले में करीब ८ फीट ऊँचा गिरान था और जिस पर से हल्का-हल्का पानी टपक रहा था। मेरे उत्तर की तरफ करीब ३० कदम पर एक घनी झाड़ी थी। चूँकि जख्मी शेर-गुलदार हमेशा घनी झाड़ी या घनी घास छिपने के लिए और मक्खियों से बचने के लिए पसन्द करता है, लिहाजा मैंने ख्याल किया कि शायद शेर उसी घनी झाड़ी में हो। उसके हमले के लिए हर तरह से तय्यार होकर मैंने एक सेर भर का पत्थर उस झाड़ी में फेंका। जैसे ही पत्थर की आवाज हुई, शेर मेरे पीछे नाले के गिरान यानी ८ फीट की ऊँचाई पर करीब मेरे सर के ऊपर तक धाड़ता हुआ आ गया। मैं अपने पीछे शेर की आवाज सुनकर घबरा गया और मुड़ा तो उसकी एक झलकी लौटते हुए दिखलायी दी। मुझे सख्त ताज्जुब और खौफ़ लगा। मैं सीधा नाले में नीचे की तरफ उन बड़े-बड़े, ऊँचे-नीचे पत्थरों में भागा। नीचे से करीम आ रहा था। उसने कहा कि क्या है मैंने बतलाया कि अगर शेर नाले के ढाल पर से मेरे ऊपर कूद पड़ता तो मैं राइफल न चला सकता। मगर खुदा की मेहरबानी कि वह मेरे सर से दो फीट तक आकर वापस गया। वह ऊँचे पर था, मैं नीचे था और बाल-बाल बचा। खैरियत हो गयी। करीम ने कहा कि अब इसको छोड़ दो। शाम को

या कल देखेंगे। हाथी उन पहाड़ों में नहीं जा सकता था। हम कैम्प को बहुत मायूस, रंजीदा और प्यासे करीब नौ बजे वापस आये। अप्रैल का आखिरी हफ्ता था और बहुत गरम था। तमाम दिन सुबह का सीन आँखों में आता रहा। ज़ख्मी शेर का बेकार जाना या आदम-खोर हो जाना मुमकिन था। गिरने के बाद ही जब वह घसिट रहा था, मैं उसको आसानी से खत्म कर सकता था, यह ख्याल दिन भर आता रहा। शाम को हम आधा दरजन आदमी, कुल्हाड़ियाँ और भाले लेकर गये और नाले के उस गिरान पर पहुँचे, जहाँ पर उसने हमला किया था। खून के निशान नाले के तेज ढालदार गिरान पर देखे, जहाँ से शेर चढ़ा था। हमने पत्थर फेंके, खूब शोर मचाया; लेकिन वहाँ से कोई आवाज़ नहीं आयी। मैं चढ़ा और काफ़ी दूर तक कुछ नज़र नहीं आया। और भी सब चढ़ आये और उस नाली से करीब १५ फीट के फासले पर शेर काफ़ी देर उस नाली में बैठा, जिसमें पानी सुर्ख था और काफ़ी खून जमा हुआ था। बड़ा ही अच्छा हुआ कि मैं वहाँ से लौट गया और उसी वक्त ढाल पर नहीं चढ़ा। हम लोग करीब १ मील तक खून का निशान देखते गये और फिर आगे उसका पता नहीं चला। आखिरकार सब मायूस खाली हाथ वापस आये और दूसरे दिन हम खारा को कूच कर गये।

४४. मेरा सोलहवाँ गुलदार

दूसरे दिन शाम को मैं इस्माइल के हाथी पर गया और एक नर चीतल मारा। वापसी पर बँगला के करीब हल्का जंगल था और उसमें झाड़ियाँ भी कम थीं। बन्दरों ने बोलना शुरू किया। हम उनकी तरफ हाथी ले गये और देखा कि एक मादीन चीतल ने उसी वक्त बच्चा दिया है, जोकि खड़ा होता था और गिर पड़ता था। उसी के नज़दीक पेड़ों पर बन्दर भी बोल रहे थे। हम मादीन चीतल और उसके हाल के पैदा हुए बच्चे से हट कर निकले। माँ ने हमको हसरत की निगाह से

देखा। वह दो-चार कदम चली और फिर बच्चे की मोहब्बत की वजह से ठहर गयी। हमको कुछ नहीं दिखलायी दिया। जंगल में सिवा पत्तों के और एक छोटे, पुराने सूखे पेड़ के जोकि अरसे से पड़ा हुआ मालूम होता था, कोई झाड़ी या घास वगैरह भी न थी, लेकिन बन्दर उसी चीतल के इर्द-गिर्द के पेड़ों पर काफ़ी शोर मचा रहे थे। लिहाज़ा हमने दूसरा चक्कर लगाया। अरदली ने इशारा किया तो करीब २० कदम पर गिरे हुए पेड़ के सहारे गुलदार छिपा हुआ चीतल के हाल के बियाये हुए बच्चे को ४० कदम के फासले से ताक रहा था। मैंने हाथी रोका और उसको मार दिया। राइफल की आवाज़ से चीतली कुछ दूर भागी और खड़ी होकर देखने व बोलने लगी। हमने जल्दी से गुलदार को हाथी पर लादा और चले आये। चीतल का बच्चा इत्तफाक से हमारे उस तरफ निकल जाने से बच गया। नहीं तो चन्द ही मिनट में गुलदार उसको मार लेता। दूसरे दिन हम मुकाम चीला कूच कर गये; जोकि हरद्वार के नजदीक है और चार दिन वहाँ कयाम करके लालढाँग वापस आये।

४५. खासन नदी का मेरा पाँचवाँ चालाक शेर

लालढाँग पहुँचकर मैंने फॉरेस्ट गॉर्ड से कहा कि दो पड्डे, जो मैं यहाँ से ले गया था, वह वापस कर दो और एक-एक रुपया उनको इनाम का दे दो। लालढाँग से कोटद्वारा तक शेर का मौक़ा न था और खासन के चालाक शेर पर कोशिश करना बेकार था। दूसरे दिन सुबह मैं रेंजर को लेकर घोड़ों पर आमसूत का प्लान्टेशन देखने गया; जिसको एक हफ्ता पहले शेर ज़ख़्मी होने पर मुल्तवी कर दिया था। हम दोपहर को मई की धूप में लौटे। करीम महावत को मय हाथी, मचान और फॉरेस्ट गॉर्ड के आहाते में एक पेड़ के नीचे देखकर मैंने ताज्जुब किया और वजह पूछी। करीम ने कहा कि एक पड्डा कमजोर था और चलता नहीं था। लिहाजा उसको फारेस्ट गॉर्ड ने खासन नदी में ऊपर

पहाड़ को ले जाते हुए कल शाम को बाँध दिया था। उसको शेर ने मार दिया है और घसीट ले गया है। मैंने ख़्याल किया कि इसी वक्त उसको ढूँढ़कर मचान बाँध दें और शाम को चुपके से आप बैठ जावें। मैंने कहा कि मैं उस चालाक शेर के लिए नहीं बैठता, जो ६ पड्डे खा चुका है। यह वक्त और पड्डे का ज़ाये करना है। फारेस्ट गॉर्ड को पड्डे के दाम देने होंगे। मैं बँगले में चला गया। अरदली फारेस्ट गॉर्ड का रिश्तेदार था। उसने कहा कि अब पड्डा तो मार ही लिया गया है। क्या हर्ज है, इस फसल की आखिरी किस्मत-आजमाई कर ली जावे। मैं उठ खड़ा हुआ और बग़ैर नहाये और खाना खाये वैसे ही चला गया।

मौक़े पर पहुँचकर हमने उसी पुराने चालाक शेर के पैर के निशान देखे और हाथी को घसीटन पर नदी से क़रीब १०० क़दम के ऊँचे पहाड़ की जड़ की तरफ बेदिली से ले गये। शेर लाश को घनी झाड़ियों में बिलकुल पहाड़ की जड़ में ले गया था और खुद भी वहीं लेटा हुआ था। हाथी को आते हुए देखकर या सुनकर वह यकायक चौंक कर दुम उठाये हुए उत्तर की तरफ पहाड़ की जड़ के साथ-साथ भागा और फिर एक जगह चढ़ने का मौका पाकर पहाड़ पर चढ़ गया। हमने सिर्फ एक झलक देखी और मैं तय्यार भी न था। दूसरे, मैं भागते शेर पर बेइतमीनान गोली भी नहीं चलाता। अगर बिला वजह की मुसीबत मोल लेने को तय्यार भी होता तो भी पिछले हफ्ते के वाक़ियातों से हिम्मत न होती थी। ख़ैर, हमने एक पेड़ पर लाश से करीब ४० क़दम पर उसी जगह के सामने, जहाँ से शेर उस ऊँचे पहाड़ पर चढ़ा था, मचान बाँध दिया और झाड़ियाँ तोड़ने के लिए मचान से लाश तक कई मर्तबा हाथी को घुमा दिया, ताकि मचान से लाश दिखलायी दे सके और चले आये। मैं थक गया था; क्योंकि २४ मील घोड़े की सवारी, ३-४ मील प्लान्टेशन में पैदल चला था और अब एक घण्टा यहाँ लगा, लिहाजा एक बजे के बाद बँगले पर पहुँचा। वहाँ मैंने गुसल किया, खाना खाया और कुछ देर आराम किया। साढ़े ३ बजे करीम महावत हाथी लाया और कहा कि अब चलकर बैठ जाना चाहिए, क़ब्ल

इसके कि वह लाश के करीब आवे। मैंने कहा कि वह तो दूसरी मर्तबा लाश के नजदीक भी नहीं आता है। मैं तय्यार हुआ और साढ़े ४ बजे के करीब मचान पर बैठ गया। उस दिन मैंने पहली मर्तबा मचान को खूब चारों तरफ से पत्तीदार डालों से ढक लिया, ताकि शेर मेरा हिलना-डुलना मचान के बाहर से न देख सके।

महावत ने कहा कि मैं बँगले की तरफ करीब २ फरलाँग पर हाथी को चराऊँगा। मैं आराम व खामोशी से थोड़ी देर बैठा। सौ कदम पच्छिम खासन नदी के पानी के पत्थरों में बहने की आवाज बाजे की तरह से आ रही थी। जंगल घना और बिलकुल खामोश था। ठंडी हवा चल रही थी। मैंने पेड़ के तने से कमर टेक ली और चूँकि थका हुआ था, नींद आ गयी। मेरी आँख लंगूर बन्दरों के पेड़ों पर कूदने और लड़ने से खुली, जोकि काफी तादाद में कहीं से आ गये थे। मैं इस क़दर अच्छी तरह से ढका हुआ था कि पास के पेड़ों पर बन्दरों ने भी मुझे न देख पाया। करीब पौने ६ बजे घुरल यानी पहाड़ी बकरियों ने दो-चार खतरे की आवाजें नंगे पहाड़ की चोटी पर करीब १५०० फीट की ऊँचाई पर दीं। यह तो मेरे ख्याल में भी नहीं आ सकता था कि शेर जैसा भारी जानवर इस कदर ऊँचे और करीब-करीब नंगे पहाड़ पर मई की सख्त धूप में दोपहर गुजारेगा। बहरहाल यह शेर की आदत के ख़िलाफ था, लिहाजा मैंने यह ख्याल किया कि शायद कोई गुलदार घुरल का पीछा कर रहा है; जोकि मैंने अक्सर देखा था। मैं खामोश बैठा रहा, फिर मैंने पहाड़ की आधी ऊँचाई पर साँभर की ख़तरे की आवाज सुनी। मैंने ख्याल किया कि गुलदार पानी पीने को उतर रहा है। थोड़ी देर के बाद बन्दरों ने, जोकि मेरे चारों तरफ थे, ख़तरे की आवाजों का शोर मचाना शुरू किया। मैं समझा कि गुलदार काफी नजदीक आ गया है। अब सवाल यह पैदा हुआ कि गुलदार को मारना चाहिए या नहीं। मुझे मिस्टर काँजीलाल की यह बात याद आयी कि जो मिले उसको आयन्दा की बेहतर उम्मीद पर न छोड़ना चाहिए। लिहाज़ा मैंने इरादा किया कि जो कुछ आवे,

मारो। क्योंकि चालाक शेर के आने की जरा भी उम्मीद न थी। थोड़ी देर के बाद मुझे हलकी गुरगुराहट की आवाज और नरम पैरवाले भारी जानवर के पत्तों पर चलने की आवाज सुनायी देने लगी, कि मेरे पच्छिम तरफ ढाल पर, जहाँ से दोपहर को शेर चढ़ा था, कोई जानवर उतर रहा है। मगर झाड़ियाँ इस कदर घनी थीं कि कुछ दिखलायी नहीं देता था। उस ढाल पर मालूम हुआ कि कोई भारी जानवर झाड़ियों के पीछे पत्तों पर मुझसे करीब २५ कदम पर बैठ गया। वह दमे के मरीज की तरह भारी साँस ले रहा था। मुझे ऐसा अन्दाज हुआ कि सब बातों से तो यह शेर ही मालूम होता है। जंगल में सिवाय बन्दरों के बोलने और खासन का पानी बहने के और कोई आवाज न थी। मैं खामोशी से दिल धड़कता हुआ बैठा रहा। सूरज डूबते समय वह उठा और ढाल पर से आहिस्ता-आहिस्ता भारी साँस लेते हुए उतरने लगा। पहले मुझे उसका धारीवाला एक मोटा पैर झाड़ी के बाहर ढाल पर निकलता दिखायी दिया। मैं बहुत खुश हुआ। फिर वह आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ता रहा और उसका पूरा जिस्म दिखलायी देने लगा। अगर मैं चाहता तो उस वक्त उसको आसानी से गिरा सकता था, मगर मैं उसके ऊपर निशाना जमाये रहा और आगे बढ़ने दिया; ताकि उसकी और चाल-ढाल देखूँ।

वह जिस्म में बहुत भारी और तन्दुरुस्त था; जिसको देखकर तबीयत खुश हो गयी। वह जमीन पर उतर आया और मुझसे मुश्किल से १५ गज पर खड़ा होकर पानी की तरफ लापरवाई से देखता रहा। उसने मुड़कर जैसे ही लाश की तरफ देखा तो एकदम से होशियार हो गया। शायद उसको लाश तक झाड़ियों के तोड़वा देने पर शक हुआ और सर उठाकर बड़े गौर से देख रहा था। मुझे ख्याल हुआ कि वह चालाक व तजुरबेकार शेर है, कहीं भाग न जावे। मेरा निशाना उसके दिल पर जमा हुआ ही था; मैंने लिबलिबी दबा दी। उसने जोर की आवाज दी, पिछली टाँगे हवा में फेंकीं और सीधा अपने सामने करीब ३० कदम के दुम उठाकर जोर से भागा। फिर

Plate No. V.



My fifth tiger—The cunning old monarch of the Rawason valley.

वह एक गढ़े में गिरकर मेरी निगाह से गायब हो गया। मुझे सिर्फ उसकी दुम दिखायी दे रही थी। मैं मचान पर खड़ा होकर दूसरी गोली मारने के लिए तय्यार था। मगर वह गढ़े से नहीं निकल सका। इतने में महावत ने सीटी दी। मैंने उसको आवाज देकर बुलाया और हाथी पर सवार होकर गढ़े पर गया तो देखा कि शेर मर चुका था। यह गढ़ा शायद कुलियों ने तड़वेल की जड़ें निकालने के लिए खोदा था; जिनको वह आलू की तरकारी के बजाय खाते हैं। उस वक्त अँधेरा होने लगा था, लिहाजा हम शेर को वहीं छोड़ आये और हमारे आदमी उसे सुबह निकाल कर ले गये। यह निहायत अच्छी तन्दुरुस्ती में इस इलाके का सबसे बड़ा नर शेर था, जिसकी नाप ९ फीट १० इंच थी। मेरे ख़्याल से उसने बन्दरों की मौजूदगी से धोखा खाया और समझा कि मैदान खाली है और कोई ख़तरा नहीं है; नहीं तो बन्दर इस क़दर नजदीक न आते। उस रोज मुझको मचान के ढकने का फायदा मालूम हुआ। अगर मचान खुला होता तो बन्दर मुझको देखकर भागने लगते और शेर भी शक पाकर हरगिज न आता। मैंने उस शेर पर अक्टूबर से कोशिश की थी और आखिरकार सातवें पड्डे की दावत देकर ४ मई सन् १९२७ को मार पाया।

४६. मेरा सत्रहवाँ व अट्ठारहवाँ गुलदार

दो दिन के बाद मैं लालढाँग से कोटद्वारा पहुँचा। वहाँ चन्द दिन ठहरकर कोटरी रेंज में गया; जोकि लेंसडौन फारेस्ट डिवीजन की पूरबी सरहद पर कालागढ़ डिवीजन की सरहद पर है; जहाँ जंगल में आग लग गयी थी और डर था कि मेरे डिवीजन में न आ जावे। मैं रात भर सनेह के बँगले में ठहरा। दूसरे दिन सुबह करीब ४० कुली, रेंज का अमला और रेंजर को लेकर कोलूचोड़ बँगला को रवाना हुआ। सनेह से कोलूचोड़ तक सड़क को कोटरी नदी करीब दस-बारह मर्त्तबा पार करना था। लिहाजा मैं रेन्जर को और अरदली

को लेकर हाथी पर सुबह रवाना हुआ। हम हरी-भरी कूटरी वेली में होकर गुजर रहे थे, जिसके दोनों तरफ ऊँचे पहाड़ और घने जंगल थे। बहुत-से छोटे-बड़े नाले दोनों तरफ के पहाड़ों से आकर कोटरी नदी में थोड़ी-थोड़ी दूर पर मिले थे। उनमें से एक चौड़े व सूखे नाले में एक काँकड़ बहुत जोर-जोर से खतरे की आवाजें दे रहा था। नाला काफी चौड़ा था और दोनों तरफ के ढाल पर घनी झाड़ियाँ व जंगल थे। हम हाथी को इस नाले में थोड़ी दूर ले गये और एक गुलदार के ताजे पैर के निशान जानवरों की पगडंडी पर देखे। हमको देखकर एक काँकड़ पहाड़ के ढाल पर झाड़ियों में भागा और उसके पीछे ही से एक गुलदार, जोकि झाड़ियों में छिपा हुआ था, उठकर हमारे आगे-आगे एक झाड़ी से दूसरी झाड़ी में छिपता हुआ चला। जब वह हमसे करीब ३० कदम रह गया, तो मुड़कर देखने लगा और कंधे का साफ निशाना दिया। मैंने फैर किया और वह वहीं रह गया। यह ७ फीट ७ इंच का नर था; जोकि बहुत आसानी से और बगैर इन्तजाम के मिल गया।

हम कोलूचोड़ पहुँचे और खाना खाकर तीसरे पहर को रेन्ज के अमले और कुलियों को लेकर कालागढ़ फॉरेस्ट डिवीजन की सरहद की तरफ जहाँ बहुत गहरा धुआँ उठ रहा था, ५ मील मई की धूप में पैदल रवाना हुए; क्योंकि आधा फ़ासला बिलकुल पहाड़ में होकर बगैर रास्ते के था और जहाँ हाथी और घोड़ा कोई नहीं जा सकता था। हमने एक वक्त का खाना व पानी साथ ले लिया था और अपने आदमियों से कह दिया था कि दूसरे दिन दोपहर का खाना सरहद पर, जहाँ धुआँ मालूम हो, भेज देना। हम शाम को मौके पर बहुत अच्छे वक्त से पहुँच गये कि आग हमारी सरहद पर पहुँचने ही वाली थी। हमने अपने आधे कुलियों को रेन्जर बहादुरसिंह को देकर सरहदी फायर लाइन पर अपने उत्तर तरफ और आधे कुलियों को खुद लेकर वहाँ से दक्खिन तरफ फायर लाइन पर आग लगाते हुए बढ़ना शुरू किया। रात भर में सुबह तक आग को अपने जंगल में

Plate No. VI.



Herd of calves. An easy prey for the leopard.

आने में रोक लिया। सुबह तक हम सब लोग थक गये थे और एक घंटा आराम करके फिर दोपहर तक आग को काबू में कर लिया। जब दोपहर को हम लोगों का खाना और चार टीन पानी लेकर एक फॉरेस्टर आया, जिसको उस काम पर मुकर्रर किया था, तब फिर दो घंटा की छुट्टी देकर तीसरे पहर से शाम तक पूरी लाइन पर जलते हुए ठूँठ वगैरा बुझाकर रात में निगरानी के लिए रेन्जर और फॉरेस्टर को रकबा बाँट करके मैं अरदली और कुली को लेकर कैम्प कोलूचोड़ के लिए रवाना हुआ। मैं अँधेरे से पहले ढिमकी नाले के पास सड़क पर कैम्प से तीन मील पर पहुँचा तो वहाँ अपने हाथी को इन्तजार करते हुए देखकर बेहद खुशी हुई; क्योंकि मैं काफी थका हुआ था और अब ३ मील और चलने की हिम्मत बाकी नहीं रही थी। हाथी पर कुछ नाश्ता और पानी भी था, लिहाजा फिर तर-व-ताजा होकर रवाना हुआ और आठ बजे कोलूचोड़ पहुँचे। मैं गरम पानी से गुसल करके, खाना खाकर सो रहा। दूसरे दिन सब आदमी भी आग बुझाकर वापस आ गये। शाम को मैं हाथी पर थोड़ा घूमने चला गया। कुलियों के लिए एक चीतल मारकर मैं वापस आ रहा था तो एक चरवाहा मुझको देखकर दौड़ा हुआ आया और कहा कि एक गुलदार ने अभी इनकी गाय का बच्चा मारा है और उसको उनके कैम्प के पीछे नाले में खा रहा है। मैंने उसको हाथी पर बिठा लिया। और कहा कि मुझको ले चलो। नाले पर पहुँचकर मैंने देखा कि वाकई गुलदार गाय के बच्चे को खा रहा है। हाथी को आते हुए देखकर गुलदार ने सर मोड़कर हमारी तरफ गुर्राना शुरू किया; जैसे कि यह कह रहा हो कि बस, अब आगे न बढ़ना। मैंने हाथी करीब १५ कदम पर रोक दिया और उसके सर पर इतमीनान का निशाना लेकर फैर किया। गोली ठीक आँख में पड़ी और गुलदार उसी जगह ढेर हो गया।

वह ७ फीट ५ इंच का अच्छा नर था। हम उसको भी लादकर उसी वक्त कैम्प में ले आये।

४७. मेरा उन्नीसवाँ गुलदार

दूसरे दिन दफ्तर के काम में मशगूल रहा ; जोकि दो-तीन दिन में जमा हो गया था और शाम को घबराकर जंगल की ताजी हवा और कुदरत के मन्जर देखने चला गया। क्योंकि मेरे दिल बहलाने के लिए उन बियावान जंगलों में ये ही जिन्दा सिनेमा थे, जिनकी वजह से मेरे ३८ बरस जंगल की मुलाजमत में दिलचस्पी से गुजर गये। जंगलात की मुलाज़िमत बग़ैर किसी शुग़ल गुजारना भारू हो जाती है। मैंने जंगलात में हर कौम के फॉरेस्टर अफसरान को देखा है। कि ये ज्यादातर औरत या शराब के शुग़ल में वक्त गुजारते हैं और ज्यादा मजनू की तरह हो जाते हैं। जो पी० एच० डी० कहलाते थे और करीव आधा दरजन अफसरान को जिनका कोई शुग़ल न था, मैंने अपनी नौकरी के जमाने में खुदकशी करते देखा है।

मैंने करीम महावत को बुलाया और कहा कि किसी हरे-भरे ठंडे नाले पर चलो। वह थोड़ी दूर सड़क पर गया और फिर एक बड़े नाले के किनारे ले गया ; जोकि टेढ़ा, तिरछा घूमता हुआ पहाड़ी इलाके में से होता हुआ जिसके दोनों तरफ बड़ी-बड़ी घास झाड़ियाँ और जंगल थे, एक मील तक ले गया। मैंने इस नाले में छोटे-बड़े शेरों के पैर के काफी निशान देखे

हम एक हाल के जले हुए रकबे से गुजरे। नाले के दाहिनी तरफ छोटा-सा मैदान था, जिसमें बेर की झाड़ियाँ और कुछ पेड़ थे। यका-क एक सुअर के बच्चे की चीखने की आवाज बराबर कुछ देर तक आती रही। हम हाथी को उस तरफ ले गये तो देखा कि एक सुअर का बच्चा, जिसके ताजा खून निकल रहा था, जख्मी पड़ा शोर मचा रहा था और उसकी माँ इधर-उधर गुर्राती हुई दौड़ रही थी। वह बार-बार एक पेड़ की तरफ जाती, ऊपर देखती थी और फिर बच्चे के पास दौड़ कर जाती थी। हमने भी पेड़ पर देखा तो एक गुलदार

दो शाखों के बीच में जमीन से करीब १५ फीट पर बैठा हुआ था और हमसे करीब ५० गज के फासले पर रहा होगा। मैंने करीम से कहा कि आधी दूर उसके पास हाथी ले चलो। हाथी को अपनी तरफ़ आते हुए देखकर गुलदार पेड़ से कूद कर पहाड़ी की तरफ तेज़ी से भागा। सुअर भी उसके पीछे दौड़ा और दोनों गायब हो गये। सुअर का बच्चा वहीं पड़ा तड़पता और शोर मचाता रहा। मैं एक पेड़ की दो शाखों के बीच में खड़ा हो गया और करीम से कहा कि हाथी को नाले में ले जाकर खड़े रहो। थोड़ी देर के बाद मैंने देखा कि गुलदार पहाड़ी से उतरा और उसके सामने झाड़ियों की आड़ में पिछला धड़ टेककर बैठ गया। वह इधर सुअर के बच्चे की तरफ देखता रहा, मगर उसको देख नहीं सकता था; क्योंकि वह उससे करीब १०० कदम पर था और झाड़ी की आड़ थी। वहाँ थोड़ी देर बैठने के बाद गुलदार ने सुअर के बच्चे की तरफ़ यानी मेरी तरफ़ आना शुरू किया। उसी वक्त पहाड़ी पर से साँभरों ने शायद गुलदार को देखकर या उसकी खुशबू पाकर धीरे-धीरे बोलना शुरू किया। गुलदार फौरन वहीं पीठ के भल लेट गया और सफेद पेट और चारों पैर आसमान की तरफ कर दिये। साँभर कभी-कभी बोलते हुए पहाड़ी से नीचे उतरे और गुलदार से करीब ३० कदम पर खड़े होकर इधर - उधर शक की निगाह से देखते रहे। उन्हें जब कुछ भी नजर न आया तो जले हुए रकबे में नयी घास चरने लगे। तीन साँभर चरते हुए गुलदार की तरफ चले गये। वहाँ यकायक गुलदार को देख कर कूदकर बोलते हुए थोड़ी दूर भागे और फिर पीछे मुड़कर देखा तो गुलदार वैसे ही मरे हुए की तरह पड़ा रहा। दो साँभर जो पहाड़ की तरफ थे, वे भी आकर शामिल हो गये और सबने गुलदार को देखकर जोर-जोर से खतरे की आवाजें देना शुरू कीं। लेकिन गुलदार नहीं हिला। सब साँभर, शायद उसको मरा हुआ समझकर जमीन पर अगले पैर मारते और बोलते हुए आहिस्ता-आहिस्ता गुलदार की तरफ बढ़े। जब वह गुलदार से एक गज से भी कम फासले पर रह गये, तब एक ने आहिस्ता-आहिस्ता गर्दन आगे बढ़ाकर उसको सूँघा।

गुलदार एकदम से उछलकर उसकी गरदन में लिपट गया। सभी साँभर शोर मचाते हुए घबराहट में इधर-उधर भागे और जिसको पकड़ लिया था, एक-दो मर्त्तबा गिरकर गुलदार को गर्दन में लटका हुआ लेकर गिरता-पड़ता हुआ थोड़ी दूर तक भागा। गुलदार गर्दन से गिरकर पिछला धड़ टेककर बैठ गया और नाउम्मीदी से फें-फें की आवाज करता रहा और सभी साँभर भाग गये। उस वक्त फिर सुअर के जख्मी बच्चे ने उठने की कोशिश की और चीखना शुरू किया। गुलदार ने बच्चे की आवाज सुनकर इस तरफ कान और सर मोड़कर सुना; जिसको शायद वह अब तक यह समझ रहा था कि माँ के साथ भाग गया। गुलदार ने इस तरफ आना शुरू किया और जब वह करीब २५ कदम पर बिलकुल सुअर के बच्चे और मेरी सीध में था उसने मुझे देख लिया। मैं निशाना आँख पर जमाये हुए था, फौरन फैर कर दिया और वह वहीं गिर गया। यह औसत दरजे की मादीन ६ फीट ७ इंच की थी। इसने बड़े तमाशे दिखलाये।

४८. शेर के जोड़े से मेरी दिल धड़कनेवाली कोशिश

कोलूचोड़ के चारों तरफ हर सड़क और हर नाले में शेरों के पैर देखकर मैंने एक पड्डा एक पहाड़ के ढाल पर सड़क पर बँधवा दिया। वहाँ घना जंगल था। उस पहाड़ के पूरब तरफ का हिस्सा करीब ५० एकड़ के पिछले जमाने में गिर गया था और उसमें ऊँची घास और कहीं-कहीं छोटे-छोटे पेड़ थे। इस सड़क पर आस-पास के शेरों के मुकाबले में सबसे बड़ा शेर निकलता था। दूसरे दिन सुबह मैं करीम के हाथी पर खुद पड्डा देखने गया। वहाँ जाकर मैंने देखा कि शेर पड्डा मारकर पहाड़ पर करीब पचास कदम चढ़ाकर धार के उस पार टूटे हुए पहाड़ के घास के रकबे में ले गया। करीम ने कहा कि ढाल तेज नहीं है। मैं घसिटन पर हाथी ले जाऊँगा। गो मुझे खतरनाक मालूम हुआ, मगर करीम ने कहा कि मेरा हाथी इससे भी ज्यादा तेज

ढाल पर जाता है। मैंने जंगली हाथियों को तो उसी डिवीजन में उससे बहुत ज्यादा खराब पहाड़ों पर जाते देखा था, जहाँ घोड़ा हरगिज नहीं जा सकता है।

धार को पार करने के बाद हम टूटे हुए पहाड़ के घास के कुल रकबे को देख सकते थे और यहाँ ढाल उससे कम था; जिस पर हम अभी चढ़कर आये थे। इस रकबे में घनी घास और नीचे नरम बालू और पत्थर थे; जिसमें अक्सर हाथी का पैर गहरा घुस जाता था। हम कुछ दूर अहतियात से गये होंगे कि हमने अपने से करीब ५० गज नीचे नाले के पास शेरों के लड़ने की आवाज सुनी और पड्डे के घसीटने का रुख भी उसी तरफ था। शायद वे लाश को खा रहे थे।

चूँकि हम ऊपर से नीचे की तरफ बहुत आहिस्ता-आहिस्ता आ रहे थे, मगर हाथी के पैर से एक गोल पत्थर लुढ़का; जोकि शायद उनके ऊपर या नजदीक से गुजरा और उन्होंने एक जोर की आवाज दी। वे नीचे नाले की तरफ भागे और नाले के उस पार पहाड़ पर चढ़ते हुए घनी झाड़ियों में हमने उनकी झलक देखी। जब हम नाले में पहुँचे तो एक नर और एक मादीन शेर के ताजे पैरों के निशान भी देखे। पैरों के निशान पर थोड़ी दूर जाने के बाद हमने देखा कि वे पहाड़ पर चढ़ गये; जहाँ हाथी नहीं जा सकता था। करीम महावत ने पहाड़ की धार पर छोटे शेर को करीब सौ कदम पर खड़े देखा। वह हमको नीचे देख रहा था। मैं मादीन नहीं मारना चाहता था और न उतनी दूर से हाथी की पीठ पर से निशाने पर ही इतमीनान था। मगर करीम ने बार-बार कहा कि दौरा खतम पर है, मार लो। मैंने निशाना जमाने की कोशिश की, मगर काबिल इतमीनान निशाना नहीं जमा। करीम ने फिर कहा कि जल्दी फैर करो, नहीं तो भाग जायगा। इतने ही में शेर बैठ गया और अब निशाना और भी मुश्किल हो गया आखिरकार मैंने फैर किया। शेर धार के ऊपर भागा। मैंने फौरन ही दूसरा फैर किया और ऐसा मालूम हुआ कि शेर दूसरी तरफ कारी गोली खाकर गिर पड़ा। हाथी इस पहाड़ पर नहीं जा सकता था।

महावत ने कहा कि वह एक फर्लाङ्ग पच्छिम तरफ़ जाकर एक नाले से ला सकता है। लेकिन यह ख्याल करते हुए कि देर हो जावेगी, मैं हाथी से उतर पड़ा और शेर के पैरों के निशान देखता हुआ पहाड़ पर चढ़ना शुरू किया। चूँकि रात को बारिश हो चुकी थी, पहाड़ का ढाल गीला और फिसलने वाला था। मैं करीब ३०० फीट बग़ैर दम लिये हुए ४०५ बोर का भारी राइफल लेकर बराबर चढ़ता चला गया। लिहाजा थक गया और साँस भी फूल गया। दो शेरों का अकेले पैदल मुकाबला करने का ख्याल, जिसमें से एक की बाबत शक था, कि जख्मी हो गया है, दिल भी धड़कने लगा और की भी बहुत बड़ी गलती थी।

वह जगह, जहाँ पर मैंने मादीन पर गोली चलायी थी, अभी मुझसे करीब ३० कदम दाहिने तरफ थी। जैसे ही मैंने पहाड़ के बराबर पहुँचकर सर निकाला कि देखूँ रकबा किस किस्म का है ? कि अचानक ही मेरी निगाह नर शेर के सर पर पड़ी; जोकि मुश्किल से ६-७ कदम पर घास व झाड़ियों में पूरा डूबा हुआ सर निकाले मुझे बहुत ग़ौर से देख रहा था। मैंने उसके सर पर निशाना जमाने की कोशिश की; मगर चूँकि मैं सख़्त चढ़ाई कर आया ही था, साँस फूला हुआ था और दिल धड़क रहा था, काबिल इतमीनान निशाना सर पर न जमा सका। लिहाजा लिबलिबी दबाने की हिम्मत नहीं पड़ी; क्योंकि उतने नजदीक से शेर को जख्मी करना, खुदकशी करने के बराबर था। मैंने यह गलती की कि बैठ गया और दो कदम बैठे हुए आगे चलकर एक पेड़, जोकि सामने ही था, उसका सहारा लेकर सर पर इतमीनान की गोली मारना चाहता था। पेड़ के नीचे पहुँचकर पेड़ का सहारा लेकर मैंने सर उठाया, मगर शेर गायब था। मुझे अन्दाज़ा नहीं हुआ कि वह भाग गया, या मेरी तरफ छिपा हुआ हमला करने को आ रहा है, जैसा कि वे अक्सर किया करते हैं। लिहाज़ा मैं जिस तरफ से आया था, उसी तरफ तेजी से नीचे उतरने लगा। करीम ने आवाज़ दी कि क्या मामला है ? होशियारी से और

आहिस्ता आओ। आखिरकार जब थोड़ा ढाल बाकी रह गया तो मेरा पैर गीले ढाल पर फिसला और मैं लुढ़कता हुआ नीचे पहुँचा। करीम जल्दी से हाथी ले आया। मैंने उससे वाक़िया बतलाया। उसने कहा कि हाथी पर आ जाइये, मैं किसी-न-किसी तरह से ले चलूँगा। हम करीब १ फरलाँग के पच्छिम गये और एक तेज ढालदार नाले से हाथी को बड़ी मुश्किल से ऊपर चढ़ा ले गये। पहाड़ पर पहुँचने के बाद हमने देखा कि यह एक ऊँचा-नीचा मैदान था; जिसमें घनी काँटेदार झाड़ियाँ, ऊँची घास और कहीं-कहीं पाले के मारे हुए पेड़ थे।

हमने बहुत ढूँढ़ा, मगर शेरों का पता न चला। हम फिर उस जगह पर गये, जहाँ पर शेरनी के ऊपर गोली चलायी थी और वह गिरती हुई मालूम हुई थी। हमको कोई खून का निशान भी न मिला। मगर मेरी दूसरी गोली एक पतले पेड़ पर पड़ी; जिसके टुकड़े उड़ कर शेरनी के लगे और वह नीचे की तरफ कूद गयी। वह गिरती हुई मालूम पड़ी और करीब दो घंटे के जाये करके हम मायूस वापस आये।

४६. मेरा बीसवाँ और इक्कीसवाँ गुलदार

दूसरे दिन हम सनेह वापस आये और वहाँ एक दिन ठहरे। दो दिन से गोश्त नहीं था। शाम को करीम के हाथी पर घूमने निकले। हम आधा मील सरहदी सड़क पर गये होंगे कि हमने दूर पर एक नाले में चीतलों को बोलते हुए सुना। हम उस तरफ गये और जब तक वहाँ पहुँचे, चीतलों का बोलना बन्द हो गया। हम उस चौड़े नाले में, जिसके दोनों तरफ हल्की पहाड़ियाँ घने जंगलों से ढकी हुई थीं, घूमते रहे। हमारे हाथी की आहट पाकर एक गुलदार एक झाड़ी से निकल कर हमारे सामने से एक सूखे नाले की तरफ़ जाने लगा। हमने अपना रुख उसके बायीं तरफ बदल दिया। यह देखकर कि हम उसके पीछे नहीं आ रहे हैं, वह खड़ा होकर लापरवाई से हमारी तरफ देखने लगा। मैंने हाथी रोककर फैर किया और गोली शायद फेफड़ों में

लगी। वह बोलता हुआ गिरता-पड़ता भागकर नाले के किनारे बहुत ऊँची व नीची पहाड़ की पतली धार पर चढ़ गया ; जिस पर हाथी ले जाना मुश्किल था।

मैं हाथी से उतर कर खून के निशान देखता हुआ पहाड़ की धार पर चढ़ा और थोड़ी ही दूर गया था कि करीब २५ कदम पर पत्थरों में से एक गुलदार ने उठकर आगे चलना शुरू किया। मैंने ख्याल किया कि गोली कारगर नहीं लगी ; लिहाजा एक गोली और मारी और वह गिरकर तड़पता हुआ नाले में पहुँचा। वह बहुत शोर मचाने लगा। मैं तैयार था कि अगर उठे तो और गोली मारूँ। करीम महावत फैर और गुलदार की आवाज सुनकर हाथी को नाले में लाया। मैं पत्थर पर, जोकि मेरे पीछे था, बैठकर गुलदार का तमाशा देखता रहा। जब वह मर गया, तब मैंने उठने के लिए अपना दाहना हाथ सहारे के लिए पत्थर पर रक्खा, मगर ताज्जुब हुआ कि मेरा हाथ बजाय पत्थर के किसी नरम व गरम चीज पर पड़ा। मैंने पीछे मुड़कर देखा तो एक गुलदार उसी पत्थर के सहारे, जिस पर मैं बैठा था, लेटा हुआ आँखें बन्द किये हुए मुँह को खोल और बन्द करके आखिरी साँसें ले रहा था। उसकी नाक और मुँह से खून निकल रहा था।

मैं फौरन खड़ा हो गया। पहले तो मैं कुछ भी न समझ सका, लेकिन जब मैंने गोली का ताजा निशान उसकी बगल में देखा, तब मैंने ख्याल किया कि शायद यह पहलेवाला है, जिसके पीछे मैं खून के निशान पर आया था और दूसरा गुलदार, जो वहीं पर मौजूद था अपने जोड़े के हमदर्दी की वजह से उसके पास आया होगा। मेरी आहट सुनकर वह जाने लगा। तब मैंने उसके ऊपर गोली मारी, जोकि नीचे नाले में गिरा। मैंने उसको भी घसीटकर नीचे नाले में गिरा दिया ; जिसको देखकर करीम और अरदली भी बहुत ताज्जुब करने लगे। यह जोड़ा औसत दरजे का था। दूसरे दिन मैं कोटद्वारा वापस आया। दो-तीन दिन के अन्दर बारिश शुरू हो गयी और मैं ४ महीने के लिए अपने बरसात के हेड कार्टर लेंसडौन चला आया।

चन्द दिन के बाद मेरे दाँत में तकलीफ हुई और मवाद पड़ गया ; जिसकी वजह से तेज बुखार रहने लगा। मुझे दाँत निकलवाना पड़ा, जिसमें मेरे जबड़े की हड्डी टूट गयी और एक महीने तक सख्त तकलीफ और तेज बुखार की वजह से मेरी हालत खराब हो गयी। कप्तान मिश्रा आई० एम्० एस्० ने, जोकि अब कर्नल हैं, मेरे इलाज में बड़ी दिलचस्पी और तवज्जेह से काम लिया और सच तो यह है कि मेरी जान बचा दी। मैं अब तक उनका शुक्रगुज़ार हूँ।

वे शिकार के शौकीन थे। उन्होंने एक गुलदार लेंसडौन केन्टून्मेंट के जंगल में मारा और बहुत खुश हुए। शेर के शिकार की बातों में उनकी दिलचस्पी देखकर, मैंने उनको बरसात के बाद अक्तूबर में शिकार के वास्ते दावत दी। मैं कप्तान मिश्रा को लेकर २० अक्तूबर को लालढाँग पहुँचा। मैंने दो पड्डे बँधवाये; जिनमें से एक पड्डा मारा गया। शेर उसको घसीटकर घने बाँस की बोझी में एक नाले के किनारे ले गया था। वहाँ कहीं-कहीं पेड़ थे। हम लाश को करीब १५ कदम घसीटकर एक बड़े पेड़ के पास लाये और मचान बाँधकर ४ बजे कप्तान मिश्रा को बिठा दिया। उन्होंने कहा—अगर मेरा फैर अँधेरे तक न हो तो मैं रात भर बैठूँगा। दस बजे रात तक कोई फैर नहीं सुनायी दिया और हम सो गये। दूसरे दिन सुबह मैं हाथी पर उनको लेने पहुँचा। मुझे ताज्जुब हुआ कि बाँस के ३-४ पेड़ लाश के ऊपर और उसके इर्द-गिर्द उखड़े हुए पड़े थे, जमीन खुदी हुई थी और हाथियों की ताजी लीद जगह-ब-जगह पड़ी हुई थी। कप्तान मिश्रा मचान पर सिकुड़े हुए परेशान बैठे थे। मैंने पूछा—क्या हुआ? उन्होंने कहा कि शेर को शक हो गया। वह अँधेरे के बाद आया और बाँस की झाड़ियों की आड़ में चारों तरफ घूमता रहा ; मगर दिखलायी नहीं दिया। वह लाश के पास भी नहीं आया ; जहाँ टार्च की मदद से दिखलायी देता। रात अँधेरी थी। वह उस जगह बैठा रहा, जहाँ उसने लाश को छोड़ा था और कभी-कभी गुर्राता भी रहा। ९ बजे के करीब कई हाथी बाँस व डालें तोड़ते और खाते हुए और तरह-तरह की आवाजें करते हुए

आते मालूम हुए। जब वे लाश के करीब आ गये तो शेर ने उन पर गुरगुराना शुरू किया। हाथी करीब ८ या ९ के मालूम होते थे।

वे सभी इकट्ठे होकर बाँस के पेड़ों को शेर और लाश के ऊपर गिराने लगे; जिससे लाश बिलकुल छिप गयी। डाक्टर मिश्रा ने हवा में राइफल दागने का और बिजली की रोशनी से उनको डराने का इरादा किया; लेकिन इस डर से कुछ नहीं किया, कि कहीं हाथियों को उनकी मौजूदगी का पता न लग जावे और वे कहीं अपना रुख उनकी तरफ न कर दें; क्योंकि उनकी सूँड़ें मचान तक पहुँच सकती थीं। लिहाजा कप्तान साहब खामोश दम रोके हुए जंगली हाथियों की शेर से छेड़-छाड़ बिलकुल अपने मचान के नीचे और आस-पास ही देखते रहे। गो पेड़ मजबूत था और आसानी से हाथी न गिरा सकते थे; मगर डाक्टर साहब के लिए जंगली हाथियों की देर तक इस क़दर नजदीकी से जाहिर है कि बुरी हालत हो गयी होगी। बाँस के पेड़ गिरने से शेर गुरगुराता हुआ हट गया, मगर वहीं डटा रहा। हाथी भी धीरे-धीरे आगे बढ़ गये, मगर शेर फिर लाश पर नहीं आया। मैंने शुकर किया कि कोई हादसा नहीं हुआ और डाक्टर साहब को लेकर वापस आया।

कप्तान मिश्रा को मैंने अप्रैल में फिर बुलाया और उनके साथ मिस्टर हरपाल सिंह डिप्टी कलक्टर रुड़की भी तशरीफ लाये; जोकि अब कमिश्नर हैं। मिस्टर चेम्पियन के रुखसत पर से वापस आने पर मैं फिर उनका असिस्टेंट हो गया और अब मेरे पास हाथी नहीं थे। हम लोगों ने चाँडीरेंज में सिल्दसोत के किनारे सिवालिक पहाड़ की जड़ पर कैम्प किया; जोकि हरद्वार से ७ मील पूरब था। हमने ५-६ पड्डे व कई कुली मँगाये और मिस्टर हरपाल सिंह एक नर हाथी भी लाये थे। पहले दिन हमने दो पड्डे बँधवाये और शाम को सिल्द-सोत में हाथी पर घूमने गये। हम करीब एक मील के गये होंगे कि हमको एक नाले में मरा हुआ रीछ सड़ी हुई हालत में मिला। थोड़ी दूर और आगे गये तो घसीटन का निशान मिला और उसके आगे

एक छोटे-से तालाब में एक साँभर ऊँचे किनारे के नीचे मिला। उसके चारों तरफ शेर के पैर के निशान थे। पेड़ों पर गिद्ध बैठे थे। ऐसा मालूम होता था कि शेर ने सुबह के वक्त साँभर को मारा और तालाब के उस पार ले जाना चाहता था, मगर उस जगह किनारा ऊँचा होने की वजह से न चढ़ा सका। वह आसानी से घूमकर ले जा सकता था। उसने साँभर को खाया बिलकुल नहीं था, लिहाजा हमने ख्याल किया कि शेर खाने को आवेगा और कप्तान मिश्रा उसके नजदीक गिरे हुए शीशम के पेड़ के ऊपर घोड़े की तरह से एक मोटी डाल पर जमीन से करीब १० फीट की ऊँचाई पर बैठ गये। उन्होंने अपने जूते पेड़ की जड़ के पास छोड़ दिया। मिस्टर हरपाल सिंह और मैं हाथी पर सिल्दसोत के ऊँचे किनारे पर चले गये।

५०. जंगली हाथी से हमारी मुलाकात

हम करीब आधे मील के गये होंगे कि हमने एक जंगली हाथी सिल्दसोत के दूसरे किनारे पर, जोकि इस किनारे ही के बराबर ऊँचा था, देखा। हाथी नर था और दाँत काफी बड़े थे। किनारा दूर तक २०-२५ फीट ऊँचा दीवार की तरह चला गया था। लिहाजा जंगली हाथी के उतरने का कोई मौका नहीं था। हमसे उसका फासला करीब ६० गज के था। हाथी बेफिकरी से मोटे बाँस तोड़कर, पैर से कुचल कर और सूँड़ से ऊपर की हरी छाल छीलकर अन्दर की लकड़ी खा रहा था। हम बहुत देर तक देखते रहे। हमारा हाथी भी नर और अच्छे कद का खूब तंदुरुस्त था। अभी तक जंगली हाथी ने हमको नहीं देखा था और हमारी तरफ पीठ किये हुए बाँस खाने में मशगूल था। जब उसने हमको देखा, तो फौरन हमारी तरफ मुँह करके सूँड़ में एक मोटा और पन्द्रह फीट के करीब लम्बा बाँस लिये हुए बहुत गौर से हमको देखता रहा और कान हिलाता रहा। फिर उसने हमारी तरफ करीब १० कदम के नाले के बिलकुल

किनारे पर आकर चारों तरफ और नीचे खूब गौर से देखा और अपना बाँस फेंक दिया। फिर वह पैर से मिट्टी खोदकर सूँड़ से अपने सर पर और दाहने-बायें फेंकने लगा। पालतू हाथी भी अक्सर मक्खियाँ उड़ाने को ऐसा करते हैं, लेकिन महावत ने कहा कि वह लड़ना चाहता है। उसको खामोश और सायस्ता देखकर हमारी हिम्मत बढ़ी और हमने महावत से कहा कि हाथी को नीचे नाले में उतारो। लेकिन उसने कहा कि हमला करेगा। हमने उसको यकीन दिलाया कि उस तरफ के किनारे में उतरने का कोई रास्ता नहीं मालूम होता है और हाथी २५ फीट से कूद कर या तो मरेगा या अपनी टाँगें तोड़ लेगा। अगर आ भी गया तो हम दो-एक फैर हवा में दाग कर आसानी से भगा देंगे। तब महावत ने हाथी को आहिस्ता-आहिस्ता एक पगडण्डी से उतारा। हाथी बाँस खाने में फिर मशगूल हो गया। नदी में पहुँच-कर हम उसको ऊँचे सीधे दीवार की तरह किनारे की वजह से न देख सके, क्योंकि वह किनारे से १०-१५ फीट दूर था। हमारे हाथी के पत्थरों व बजरी पर चलने की आवाज सुनकर वह फिर किनारे पर देखने आया और हमको बहुत नजदीक से अच्छी तरह देखने का कई मिनट तक खूब मौका दिया। इस मर्तबा उसके मुँह में करीब ६ फीट लम्बा और मोटा बाँस था; जिसको वह कभी सूँड़ में और कभी मुँह में ले लेता था, ताकि मक्खियाँ उड़ा सके। महावत ने फिर डराया कि वह बाँस को जोर से फेंक कर मारेगा। मगर हाथी ने कोई ऐसी खराब हरकत नहीं की, सिर्फ आहिस्ता-आहिस्ता बोलता रहा। वह भी शायद हमको अपने ही एक भाई-बन्द के ऊपर बैठा देखकर दिलचस्पी से देख रहा था, जैसे हम उसको देख रहे थे।

थोड़ी देर के बाद वह अपने बाँस के पास चला गया, जिसको उसने गिरा रखा था और हमको फोटो लेने का बहुत ही अच्छा मौका दिया। हम वहाँ से कप्तान मिश्रा के पास गये और पूछा कि शेर आया या नहीं। उन्होंने जवाब दिया—हाँ, आया। मगर पेड़ की जड़ के पास देर तक बैठा मेरे पीछे गुर्राता रहा। फिर शायद उसको शक

हो गया और वहीं से वापस चला गया। मैं उसको देख न सका और न मैं घूम ही सकता था। मैं बिलकुल पास ही में खुले में बैठा था, इसलिए इन्तजार करता रहा कि सामने आ जावे और यह भी डर था कि पेड़ काफी मोटा और झुका हुआ है, कहीं चढ़ न आवे। हम सब उतरे और जमीन पर ताजे पैर के निशान देखे। अपने हाथी के पैर के निशान के ऊपर भी देखे और उसके बैठने का निशान शीशम की जड़ के पास और कप्तान मिश्रा के जूतों के पास देखकर बहुत अफसोस हुआ कि अगर बजाय लाश के इस क़दर करीब बिठाने के अगर किसी दूसरे पेड़ पर ३०-४० कदम के फासले पर बिठाया होता तो मुफ्त ही में शेर मिल जाता। हम सब नातजुर्बेकारी से खाली हाथ बगैर एक फैर तक दागे हुए वापस आये और बगैर गोश्त के खाना भी भरपेट न खाया। खाने के बाद अपने-अपने शिकार के तजुरबों की बातों में थोड़ा वक्त गुजरा और मिस्टर हरपालसिंह के दिलचस्प वाकियातों से बड़ा लुत्फ उठाया। आखीर में यह तय हुआ कि अगर शेर-गुलदार नहीं मिलते तो कम-से-कम मुर्गियाँ तो खाने के लिए मारना ही चाहिए। दूसरे दिन एक पड्डा मारा गया और कप्तान मिश्रा को पहला मौका दिया गया। हाथियों के डर से, जोकि सिल्दसोत में काफी थे, मचान एक बड़े हल्दू के पेड़ पर काफी ऊँचा बाँधा गया और मिश्रा साहब को बिठाकर हम दोनों ने हाथी पर एक चक्कर लगाया।

५१. मेरा बाइसवाँ व तेइसवाँ गुलदार

हम मिश्रा साहब के मचान से करीब १ मील पर ५० फीट चौड़ी फायर लाइन पर जा रहे थे। हमने चन्द चीतल जली हुई फायर लाइन पर नयी घास चरते हुए देखे। हमारे हाथी को देखकर वे दूर ही से जंगल में भाग गये और खतरे की आवाज देने लगे। हम उनकी तरफ जंगल

में हाथी ले गये और देखा कि एक गुलदार एक गिरे हुए पेड़ की आड़ से छिपा हुआ उनकी ताक में बैठा है। हम हाथी को उसके दाहने तरफ ले गये। हाथी को आते देखकर वह सर मोड़ कर हमको देखने लगा और खूब दबक गया। जब हम करीब ३० कदम के पहुँच गये तो हम दोनों ने फैर किया और वह उसी जगह रह गया। उसको लाद कर हम इधर-उधर घूमते रहे। मुर्गियाँ दिखलायी दीं। मगर दूर ही से उड़ गयीं। शाम के वक्त हम हरद्वार वाली सड़क पर पहुँचे और कैम्प की तरफ सड़क-सड़क वापस हुए। रास्ते से थोड़ी दूर पर एक छोटा-सा तालाब था; जिसके चारों तरफ घने बाँस की झाड़ियाँ और पेड़ थे। तालाब के किनारे मुझे गुलदार की एक झलक दिखलायी दी। हम तालाब की तरफ मुड़े। हाथी को आते देखकर गुलदार झाड़ियों में घुस गया। हमने बहुत ढूँढ़ा, मगर नहीं दिखलायी दिया। आखिरकार मायूस होकर हम वापस हो रहे थे कि महावत ने हाथी रोक लिया और सामने की झाड़ी में इशारा किया। मगर चूँकि अँधेरा हो चला था और झाड़ी भी घनी थी, लिहाजा हम सिवाय गुलदार के थोड़े जिस्म के और कुछ न देख सके और न यह अन्दाज ही कर सके कि कौन-सा हिस्सा है; गो मुश्किल से वह हमसे १० फीट पर होगा। मिस्टर हरपालसिंह उसको बिलकुल ही न देख पाये। राय यह हुई कि फैर किया जावे और मैंने फैर किया। वह बोलता हुआ झाड़ी के अन्दर भागा और फिर पता न लगा। दूसरे दिन हमको उस तरफ जाने का मौका न मिला। तीसरे दिन वह मिला, मगर ताड़ गया था और उसे वहीं छोड़ना पड़ा। हमने यह तय किया था कि नौ बजे कप्तान मिश्रा को वापस लावेंगे और अगर इससे पहले फैर हो गया तो उसी वक्त ले आवेंगे। लेकिन कैम्प में पहुँचते ही बादल घिर आये, बिजली कौंदने लगी और बड़े जोर का तूफ़ान, आँधी और ओले के साथ एक घंटे तक रहा। हमारे चारों तरफ के बड़े पेड़ गिर गये। मेरी घोड़ी रस्सी तोड़ाकर भाग गयी। हमारे बावरचीखाने की आग उड़ने लगी और जंगल में आग लगने का सख़्त ख़तरा हो गया। हम मुश्किल

से उसको बुझा सके। हमारे नौकरों की छोलदारियाँ उड़ गयीं। क्योंकि तूफान आने पर वे हमारे दो डेरे सँभालने के लिए आ गये थे और बड़ी मुश्किल से उनको कायम रख सके। पूरा कैम्प गड़बड़ और सामान उलट-पलट गया।

थोड़ी देर पानी बरसने के बाद तूफान बन्द हुआ। हम करीब १० बजे हाथी पर डाक्टर मिश्रा को लाने के लिए रवाना हुए। लेकिन हम थोड़ी दूर के बाद आगे न जा सके; क्योंकि पहाड़ी इलाका था, दूसरे बड़े-बड़े पेड़ों के गिरने से सड़क बन्द हो गयी थी। जंगली हाथियों के डर और अँधेरी रात से मजबूर होकर हम वापस आये और अपने दोस्त को ऐसे तूफ़ान में बियाबान जंगल में मचान पर छोड़कर रात भर फिकर रही। इस आँधी और तूफान की वजह से जो कुछ भी खाना मिल सका, खाया और सो रहे।

सुबह होते ही हम दोनों डाक्टर साहब की तरफ बेहद परेशान रवाना हुए। पेड़ों के गिरने से सड़क जगह-ब-जगह बिलकुल बन्द थी और मुश्किल से वहाँ पर पहुँच कर देखा कि डाक्टर साहब खैरियत से मचान पर मौजूद थे और चारों तरफ़ पेड़ों के गिरने से उजाड़ मालूम होता था। मचान वाले पेड़ की कई एक बड़ी-बड़ी शाखें भी गिर गयी थीं। आँधी, ओला, बारिश और चारों तरफ पेड़ों के गिरने से डाक्टर साहब की रात बेहद परेशानी व तकलीफ से गुजरी। ऐसे तूफान में शेर भी कहीं छिपा हुआ बैठा रहा और नहीं आया; या डाक्टर साहब को देख लिया। उसी दिन हम वहाँ से दूसरे कैम्प में चले गये और वहाँ भी कोई कामयाबी नहीं हुई, गो चार पड्डे मारे गये और दो जंगली जानवरों की मारी हुई लाशों पर बैठे।

---

५२. मेरा छठा शेर अकेले और ख़तरनाक हालत में

शुरू मई में मैं डिवीजन के पूरबी हिस्से की तरफ जा रहा था और एक दिन मुकाम पापीडाँडा में ठहरना पड़ा ; जहाँ कुआँ बन रहा था। मेरे पास दो पड्डे पिछले शिकार के बचे हुए थे। इनमें का एक बहुत कमजोर था और आते हुए हमारे पड़ाव से २ मील पर मर गया। मैंने उसको दो रुपया किराया देकर गाड़ी पर मँगा लिया और उसकी लाश को अपने पापीडाँडा कैम्प से दो मील उत्तर पहाड़ की जड़ में नाले और सड़क के मिलान पर इस ख़्याल से रखवा दिया कि बजाय गिद्धों को खिलाने के शायद कोई शेर या गुलदार अगर उधर से निकल पड़ा तो उठा ले जावेगा। दूसरे दिन आदमी देखने गया और उसने बतलाया कि पड्डे को शेर घसीट ले गया और उसके पैर के निशान बने हुए हैं। मैंने इरादा किया कि शाम को जाकर बैठूँगा। उस दिन वहाँ से दो मील पर किसी गाँव में मेला था और मेरे आदमियों ने मुझसे मेले में जाने के लिए इजाजत ली और वादा किया कि वे तीसरे पहर को तीन बजे तक वापस आ जावेंगे। कैम्प में कोई नहीं रह गया। मैंने साढ़े ३ बजे तक इन्तजार किया मगर कोई वापस न आया। मेरे निजी नौकर, बावरची और मेहतर भी नहीं आये। मुझे बड़ा गुस्सा मालूम हुआ और देर हुई जा रही थी, लिहाजा मैं ३६६ बोर राइफल और हस्ब मामूल ५ कारतूस लेकर बगैर मचान के यह उम्मीद करके चल दिया कि कहीं-न-कहीं पेड़ पर, चट्टान पर या नाले के किनारे छिपने की जगह मिल ही जावेगी। मैं वह जगह जानता था, जहाँ लाश रखी गयी थी। धूप बहुत तेज थी। मैंने लाश आसानी से ढूँढ ली; जोकि करीब १०० कदम घसीट कर नाले के मोड़ पर एक घनी बोझी में पहाड़ की जड़ के पास रखी थी। मैंने पहाड़ के ढाल पर बैठने की जगह के लिए गौर किया, मगर वह बिलकुल दीवाल की तरह था, लिहाजा बैठने के लायक कोई पेड़ तलाश कर रहा था। इतने ही में करीब ३०० गज

पर उसी नाले में जंगल की तरफ बन्दरों ने खतरे की हल्की आवाज देना शुरू की।

मैंने समझा कि शायद शेर आ रहा है। पूरब तरफ तेज ढालवाले पहाड़ पर चढ़ना गैरमुमकिन था। दक्खिन तरफ नाले का किनारा करीब ३० फ़ीट के ऊँचा था और उस पर बैठने का बहुत उम्दा मौका मिल जाता, मगर वहाँ पहुँचने के लिए उस जगह १०० कदम पीछे वापस जाना पड़ता, जहाँ पड्डा रक्खा था। शेर आ रहा था। मैंने नाले के किनारे करीब ३० कदम ऊपर की तरफ एक पेड़ छाँटा; यानी जिधर से शेर के आने की उम्मीद थी। मैंने इतने तजुरबे के बाद फिर वही पुरानी गलती की। मुझे सिवाय एक छोटे रोहिनी के पेड़ के, जोकि ढाई फीट मोटा होगा और जिसमें छाती बराबर ऊँचाई पर दो शाखें हो गयी थीं, कोई ऐसा पेड़ नहीं दिखायी दिया जिस पर मैं आसानी से चढ़ सकता और बैठ सकता। मैं उस पर घोड़े की तरह पैर लटकाकर बैठ गया और टाँगें लटका लीं, जोकि जमीन से करीब ४ फीट के ऊपर रही होंगी। जब मैं दूसरी सीधी शाख से पीठ लगा कर बैठा तो देखा कि लाश के सामने कुछ झाड़ियाँ पड़ती हैं, जिससे निशाने में रुकावट होती। मैं जल्दी से उतरा और उन झाड़ियों को तोड़कर घास को दबाता हुआ वापस आकर फिर जल्दी से बैठ गया। बन्दरों ने बोलना भी बन्द कर दिया। सिवाय मच्छर व मक्खियों की आवाजों के और जंगल बिलकुल सुनसान था। मैं कुछ देर खामोश बैठा और चूँकि नाउम्मीदी थी, लिहाजा लापरवा हो गया। मैं ख्याल करता रहा कि या तो शेर ने मुझे देख लिया या मेरी आहट पाकर वापस चला गया और या फिर बन्दरों ने झूठी खतरे की आवाज दी, जैसा कि अक्सर बहुत कम हुआ करता है। या कोई और छोटे किस्म के दरिन्दे को देखा होगा। इन्हीं ख्यालातों में आँख लग गयी और करीब-करीब रायफल और मैं दोनों ही गिरने से बच गये

सँभलकर बैठा और रायफल के कुन्दे को पैरों के बीच में रख

कर नाल को एक डाल पर जमा लिया, ताकि वह गिर न सके। क्योंकि अब शेर के आने की उम्मीद बहुत कम थी, जंगल में खामोशी थी और नींद के झोंके आ रहे थे, लिहाजा मैंने रूमाल निकालकर सामनेवाली डाल पर रखकर माथा टेक लिया और फिर सो गया। थोड़ी देर के बाद मेरे पीछे मुर्गियों ने खतरे की आवाज कुट-कुट-कुटाँग की जोर से देना शुरू की। मेरी आँख खुली और उसी हालत में मैंने सर और झुकाकर देखा तो चन्द मुर्गियाँ मेरे पीछे घूम-घूम कर और पीछे की तरफ देखकर शोर मचा रही थीं। मेरे दाहने तरफ से दो-चार और मुर्गियाँ शोर सुनकर आयीं और वे भी उन्हीं की तरह आगे देखकर शोर मचाने लगीं। मुझे यकीन हो गया कि कोई बात जरूर है। मैं साँस रोके हुए उसी हालत में खामोश बैठा रहा। इतने में एक सूखा तिनका चुट से टूटा और मुझे पिछले तजुरबे के मुताबिक पूरा यकीन हो गया कि शेर या गुलदार होशियारी से आ रहा है। मैंने फिर अपनी गलती पर यानी शेर के आने वाले रास्ते की सीध में बैठने पर मलामत की और ख्याल किया कि उसके लिए लाश पर पहुँचने के लिए सिर्फ दो रास्ते हैं; एक तो पहाड़ की जड़ के नीचे होकर मुझसे करीब २० कदम बायीं तरफ से और दूसरा सीधा मेरे पेड़ के पास होकर। फिर मुझे यह ख्याल आया कि मैं बहुत ही नीचे बैठा हूँ। अगर उसने मालूम कर लिया तो मुझ तक आसानी से पहुँच सकता है। मेरा रायफल मेरी टाँगों के बीच में और डालों में फँसा हुआ था और आसानी से, बगैर शेर को भड़काये हुए, जोकि मुझसे मुश्किल से दस फीट पर साँस ले रहा था, सीधा नहीं किया जा सकता था। वह आहिस्ता-आहिस्ता गुर्रा रहा था। मैं अरसे से गरदन झुकाये हुए देखना चाहता था कि कौन-सा जानवर है और कहाँ पर है। मेरी गर्दन दर्द करने लगी थी। दिल धड़क रहा था। आखिरकार मैंने शेर को उसी बेबसी की हालत में देखा। वह आहिस्ता-आहिस्ता गुरगुराता हुआ आ रहा था। मुर्गियाँ कुड़कुड़ाती हुई उसके सामने से हटती गयीं। सुर्ख मुर्गे ने अपने पर बिलकुल पास ही फटफटाये और अपनी

बहादुरी मुर्गियों को दिखलाने के लिए बाँग दी। मुझे उस वक्त वह मजा आ रहा था कि बयान नहीं कर सकता। गर्दन में नाकाबिल बर्दाश्त दर्द था। दिल आखिरी हालत पर धड़क रहा था और हवाश गुम थे। शेर आहिस्ता-आहिस्ता गुर्राता हुआ लाश की तरफ गौर से देखता हुआ बढ़ रहा था। वह मेरे पेड़ से कुछ आगे बढ़कर खड़ा हो गया और दबी हुई झाड़ियों को देखकर शक करने लगा। उसका सर मेरे पैर से मुश्किल से एक गज पर होगा। मुझे ऐसा मालूम होता था कि ख्वाब देख रहा हूँ। मैं पत्थर की तरह साँस रोके हुए, सर झुकाये हुए उसी हालत में जमा रहा।

शेर ने लाश तक झाड़ी व घास दबी देखकर शक किया। वह एक-दम से मुड़ा और तेजी से जिस रास्ते से आया था, उसी रास्ते से वापस चला गया। अगर मैं अपने दोनों पैर उस डाल के नीचे, जिस पर बैठा था, मिलाये हुए न होता तो मुड़ते वक्त शेर से मेरा बायाँ पैर जरूर टकरा जाता। मुर्गियाँ उड़कर पेड़ों पर बैठ गयीं। बहरहाल मुझे मौका मिला और सीधा होकर रायफल निकाली। मेरी रूमाल जमीन पर गिरी। मुझको हिलते देखकर मुर्गियाँ बोलती हुई उड़ गयीं। मैंने लम्बी साँस ली। अब बड़े जोर की खाँसी की जरूरत हुई; जिसके रोकने से आँसू निकल आये। जुकाम या खाँसीवाले मरीज को मचान पर हरगिज न बैठना चाहिए। थोड़ी ही देर में जंगल में फिर खामोशी छा गयी। मैंने ख्याल किया कि गो मैंने बहुत अच्छा मौका खो दिया. मगर खूब ही नजदीक से देर तक शेर का तमाशा भी देखा; जोकि बड़े-बड़े लोगों को, जिन्होंने सैकड़ों बहादुर शेरों का कतल किया है, देखने को नसीब न हुआ होगा; क्योंकि उनके लिए सब इन्तजाम दूसरे ही लोग करते हैं और वे सिर्फ लिबलिबी दबा देते हैं। वे शेर व दूसरे खतरनाक जानवरों के शिकार के असली दिल धड़कनेवाले, रोंगटे खड़े होनेवाले और हवास गुम होनेवाले मजे से मेहरूम रहते हैं।

मैं उस रोज बहुत ही खुश था कि आज मेरी अकेली मेहनत का पूरा इनाम मिल गया। अब मैं कैम्प की वापसी का इरादा करने लगा।

सूरज डूब रहा था। मैंने ख्याल किया कि अभी आधा घंटा रोशनी और है, बैठे क्यों न रहो ? जो वाक़िया अभी गुज़र चुका था, मैं दिल में उस पर गौर कर रहा था कि इतने ही में करीब ३० गज पर घनी झाड़ियों में एक सूखी पतली डाल मेरे पीछे फिर चुट से टूटी। मैंने आहिस्ता-आहिस्ता सर घुमाया, मगर कुछ न दिखलायी दिया। मैं राइफल आसमान की तरफ किये बैठा रहा कि फिर कुछ और नजदीक ही में एक और शाख चुट से टूटी। मैंने सर मोड़कर फिर देखा तो शेर आहिस्ता-आहिस्ता फिर आ रहा था, मगर इस मर्त्तबा उसने रास्ता थोड़ा बदल दिया था। वह मुझसे करीब १५ गज़ पूरब पहाड़ की तरफ घनी झाड़ियों में होता हुआ गुजर गया और थोड़ी देर के बाद लाश के पास खड़ा दिखलायी दिया। मैंने राइफल जमा ली। वह पानी के नाले को कूदकर उस लाइन के सामने खड़ा होकर लाश को सूँघने लगा; जिसको मैंने झाड़ी व घास दबाकर बनायी थी। मैंने अपनी खूबसूरत, सच्चे निशाने और भरोसेवाली ३६६ बोर राइफल को शेर की गर्दन और सर के जोड़ पर इतमीनान का निशाना लेकर लिबलिबी दबा दी। शेर आवाज़ के साथ ही लाश के ऊपर गिरकर वहीं रह गया। मैं चन्द मिनट देखता रहा कि इतने में मेरे अरदली की आवाज नाले के ऊँचे किनारे से आयी, कि मैं आऊँ। मैंने बुलाया और वह उधर से और मैं पेड़ से उतरकर शेर के पास पहुँचे। अरदली खुश व हँसता हुआ आया। जैसे ही वह मेरे पास पहुँचा, मैंने उसकी नाकाबिल माफ़ी की गैरहाजिरी के लिए, उसके एक अच्छा तमाचा मारा और कहा कि इस मर्त्तबा तुम किसी को इनाम नहीं मिलेगा। इसको मादीन पाकर मुझे बहुत अफ़सोस हुआ। वह ८ फीट ९ इंच थी और उसके पेट से ४ बच्चे २ नर और दो मादीन निकले।

बारिश उस साल देर से शुरू हुई और मुझे जून के दूसरे हफ्ते में फिर एक मर्त्तबा हरद्वार की तरफ डिवीज़न के पच्छिमी हिस्से में जाना पड़ा। डिवीज़नल अफ़सर मिस्टर चेम्पियन हेड कार्टर लेंसडौन को चले गये। उन्होंने अपने दोनों हाथी मेरे पास भेज दिये। लेकिन अब

उनमें मेरी दिलचस्पी कम हो गयी थी और पैदल या घोड़ी पर गुलदार, रीछ, सुअर, शेर और जंगली हाथियों के पास पहुँचने में खतरे का लुत्फ, बेहतर वरज़िश, होशियारी, जल्द फैसला, इतमीनान का पैदल निशाना और शिकार का असली मजा आता था; जो कि हाथी की पीठ पर बैठकर हासिल नहीं होता था और महावत की रेहनुमाई का उसकी काबिलियत या नाकाबिलियत के मुताबिक मोहताज रहना पड़ता था।

इस दौरे में मैंने हाथियों को बिलकुल आराम करने को छोड़ दिया और ३१ मई से शेर का शिकार भी बन्द हो चुका था। लिहाजा घोड़ी पर या पैदल सुबह-शाम घूमना शुरू किया। मेरे पास नौ उमर मजबूत घोड़ी थी; जिसको मैंने उसी साल अक्टूबर में पंजाब से ४½ सौ रुपये में मँगाया था। चूँकि वह पंजाब के सूखे मैदानी इलाके से आयी थी, लिहाज़ा शुरू में वह जंगलों में और पहाड़ी इलाकों में हर जंगली जानवर से भड़कती थी। चन्द ही दिन में मैं उससे तंग आ गया और क्योंकि वह जंगली जानवरों को देखकर एकदम से पिछले पैरों पर खड़ी हो जाती थी और पीछे भागती थी, लिहाजा पहाड़ी सड़कों पर उस पर सवार होने में डरता था।

उसके आने के करीब १ महीने बाद मैं एक दिन उस पर सवार होकर पहाड़ी सड़क पर एक गहरे नाले के किनारे मामूली चाल और लापरवाई से अकेला जा रहा था। हम जैसे ही एक तेज़ घूम से निकले, मैंने और घोड़ी ने दूसरी तरफ से करीब ३० कदम पर अपनी तरफ एक रीछ आते हुए देखा।

घोड़ी ने शायद यह जानवर अपनी उमर में पहली मर्त्तबा देखा था। वह एकदम से पिछले पैरों पर खड़ी हो गयी और फौरन तेज़ी से मुड़ी, जिससे घोड़ी और मैं १०० गज़ गहरे खड्ड में गिरने से बाल-बाल बच गये। खुशकिस्मती से मैंने और घोड़ी ने एक ही वक्त में रीछ को देखा था। उसकी आदत को जानते हुए मैंने काठी पकड़ ली थी और

होशियार हो गया था। मुड़ते ही उसने उस पहाड़ी सड़क पर पूरी ताकत से चौकड़ी भरना शुरू किया; जिसमें कई चक्कर थे और मैं बड़ी मुश्किल से एक मील के बाद उसे रोक सका। उसने वापस फिर उस रास्ते पर जाने का रुख नहीं किया और न मीठी चने व तेल की रोटी ही खायी, जो कि मैं उसको हिलाने के लिए जेब में रखता था।

मारने से वह और ज्यादा बेकाबू हो जाती और मुझे उसी रास्ते जाना था; क्योंकि मेरा कैम्प और सामान रसियाबढ़ से चीला जा चुका था। लेकिन उसने कदम नहीं उठाया और मुझे उतरना पड़ा, गो मैं जानता था कि अकेले उसके ऊपर सवार होना बहुत मुश्किल था और मेरे साथ कोई आदमी भी न था। मैं आगे-आगे पैदल चला, तब घोड़ी उस मोड़ पर आकर रुक गयी; जहाँ रीछ मिला था। इत्तफ़ाक से दो आदमी पीछे से आ गये और उनकी मदद से इस खतरे के मोड़ को पार किया। मैं घोड़ी के ऊपर सवार हुआ और चीला पहुँचा।

करीब ६ महीने के अन्दर जंगल, पहाड़ और जंगली जानवरों से इस घोड़ी का तमाम डर निकल गया। वह हर जगह और हर जानवर के सामने जा सकती थी। उसने सब किस्म के जिंदा और मरे हुए जानवर देख लिये थे। अब वह बड़े शौक से सुअर व गुलदार के पीछे दौड़ने को हर वक्त तैयार थी और जंगली हाथियों के गोल के बहुत करीब तक चली जाती थी। उसने मुझे बड़े दिल हिलादेनेवाले तमाशे दिखाये; जोकि हाथी से या किसी किस्म के शिकार में मुमकिन न थे। मैं चीला में ४-५ दिन ठहरा और चूँकि उस फसल के कुल काम खत्म हो चुके थे, सिवाय आग से हिफाजत के, मैं रोज़ दिन निकलने से पहले ८-१० मील सड़कों, फायर लाइन और नालों पर अकेले जाता और बड़े-बड़े दिलचस्प और खतरनाक तजुरबे मुझे हुए।

चीला से मैं लूनी गया और वहाँ डेरे में रहा, गो सिर्फ़ २ मील पर मीठाबेरी का बँगला था। लूनीसूत और उसके इर्द-गिर्द पानी के

लालच से हर तरह के जानवर जमा हो जाते थे और वहाँ अक्सर एक बहुत बड़े गुलदार के पैर के निशान भी देखने में आते थे। मैं उसको मारना चाहता था। लूनी पहुँचकर हमारे आदमी डेरे वगैरा लगाने और कैम्प जमाने में लग गये। नजदीक में एक तालाब था। मैं रायफल लेकर चीतल की तलाश में चला गया; क्योंकि फॉरेस्ट गार्ड और उनके कुली वगैरह गोश्त खाने को चीतल माँग रहे थे। वे हमारा कैम्प लगाने में मदद कर रहे थे। मैंने चीतलों का एक गोल तालाब पर देखा और उनमें जो सबसे बड़ा था, उसे मार कर फौरन ही कैम्प में वापस आया; ताकि लोगों से कह दूँ कि अँधेरा होने से पहले उठा लावें और शाम को खा सकें। हम आदमी लेकर करीब आधे घंटे के अन्दर ही तालाब पर पहुँच गये। वहाँ हमने देखा कि करीब दो दर्जन के सुअर हमारे चीतल को खाने और आपस में लड़ने में मशरूफ हैं और हमारी नजदीकी से बिलकुल बेखबर हैं। जब हम उनसे करीब ४० कदम दूरी पर पहुँच गये; तब उन्होंने हमारी तरफ देखा। मैंने सबसे बड़े नर सुअर पर इतमीनान का बगल पर निशाना लेकर फैर किया और वह वहीं गिर गया। बाकी सब इधर-उधर भागे और करीब तीस कदम पर जाकर सब खड़े होकर देखने लगे कि क्या माजरा है? उस वक्त दूसरे नर को, जोकि पहलेवाले से जरा छोटा था, उसको भी मैंने गिराया। हमने चीतल को जाकर देखा कि करीब-करीब सब खा लिया था। यानी गोश्त, पेट का मलवा, खाल और छोटी हड्डियाँ व पसलियाँ तक खा गये थे। सिर्फ सर और पैरों की हड्डियाँ छोड़ी थीं। मैंने चीतल का सर और छोटा सुअर कुलियों को दे दिया और बड़े सुअर को घसीट कर ऐसी जगह डलवा दिया, जहाँ उम्मीद थी कि लूनी का बड़ा गुलदार शायद ले जावे; जिसके लिये मैं वहाँ आया था। सुबह जाकर देखा कि सुअर को एक शेर करीब २०० कदम घसीटकर घनी झाड़ियों में ले गया और काफ़ी खा गया। चीतल की हड्डी वगैरह जो हम छोड़ आये थे, उसका कोई पता न लगा। चूँकि शेर का मारना १ जून से

अक्टूबर तक के लिए बन्द हो चुका था, लिहाज़ा मैंने कुलियों से कहा कि बकाया सुअर को भी उठा ले जावें। अक्सर लोगों का ख्याल है कि शेर दूसरों के मारे हुए जानवर नहीं खाता है, यह बिलकुल ग़लत है। लेकिन मैंने बारहा देखा है कि शेर इसकी कतई परवा नहीं करता, कि किसने मारा है या जानवर किसी बीमारी से मर गया है।

५३. जंगली हाथियों से मेरी मुठभेड़

दूसरे दिन सुबह मैं लूनी सूत को देखने गया, जो कि करीब १०० गज चौड़ा खुश्क नाला था और जिसमें सिर्फ ४-५ फीट चौड़ा चश्मा बह रहा था। तमाम नाले की सतह छोटे-बड़े पत्थरों से ढकी हुई थी। इसमें ४ से ६ फीट चौड़ा टेढ़ा-मेढ़ा एक रास्ता था और नाले के दोनों किनारे ८ से १० फीट तक ऊँचे थे। नाले के ऊँचे किनारों के दोनों तरफ करीब १ या दो फरलाँग हमवार पट्टी थी; जिस पर घना जंगल था और उसमें बाँस कसरत से था। इसके बाद ऊँचे पहाड़ साल के जंगल से ढके हुए थे। सूरज निकलने से पहले जून के महीने की ठंडी हवा और चारों तरफ हरे-भरे जंगल बहुत ही सुहाने मालूम हो रहे थे। यह टेढ़ा और पतला रास्ता बड़े-बड़े पत्थरों में घूमता हुआ करीब ८ मील की लम्बाई तक पहाड़ के एक गाँव में ६००० फीट की ऊँचाई पर गया था। इस खूबसूरत वेली की चौड़ाई घटती जाती थी। हम जैसे-जैसे पहाड़ की तरफ ऊपर बढ़ रहे थे।

मैं करीब २ मील के आहिस्ता-आहिस्ता अपनी काबिल इतमीनान घोड़ी पर शेर, गुलदार व रीछ वगैरह के पैरों के निशान देखता हुआ और बियाबान जंगल में अकेले सवारी का लुत्फ उठाता हुआ पहुँचा। मैं एक जगह पर घोड़ी से उतरकर एक बड़े शेर का निशान नाप रहा था; जो कि बालू में लोट-पोटकर हाल ही में आगे गया था। मैंने उसी वक्त करीब १ फरलाँग आगे नाले के दाहनी तरफ घने जंगल में

Plate No. XIII.



The author in the bamboo forest—the home of wild elephants.

बाँस के तोड़ने और फाड़ने का चटाखा सुना; जो कि सिर्फ हाथी ही कर सकता था। मैं घोड़ी पर बैठकर आगे बढ़ा। जैसे-जैसे मैं आगे गया, हाथियों की रौलचौल बाँस और शाखें तोड़ने की आवाज़ नाले के दोनों तरफ घने जंगल में बढ़ती गयी। मगर कुछ दिखलायी नहीं दिया और आगे चलकर यह शोर दोनों तरफ इस क़दर बढ़ गया कि जैसे तूफान आनेवाला है और ४०-५० हाथी से कम का यह शोर नहीं मालूम होता था। मैं चारों तरफ धड़कते हुए दिल, खड़े हुए रोंगटे और खतरे की हल्की सर्दी के नशे में देख रहा था कि किस तरफ से आफ़त आती है। मेरी घोड़ी; जो कि कैम्प में बराबर दो हाथियों के साथ रहती थी, पीछे मुड़ने और भागने का इरादा करने लगी। लेकिन मैं अभी और देखना चाहता था; क्योंकि ऐसे मौके ज़िन्दगी में कम मिलते हैं। मैंने घोड़ी को मीठी रोटी जेब से निकालकर दिखलायी; जो कि मैं हर रोज़ साथ ले जाता था और दस-पाँच मील चलने के बाद दिया करता था; जिसको वह बहुत शौक से खाती थी। मगर उसको भी उसने देखकर छोड़ दिया। लेकिन मैं डटा रहा कि जब तक चन्द जंगली हाथी न देख लूँगा, नहीं जाऊँगा। मुझे पूरा यकीन था कि अगर हाथियों ने हमला भी किया, जिसकी उम्मीद न थी, तो भी मेरी घोड़ी मुझे इस टेढ़े और पतले रास्ते से निकाल ले जावेगी। मैंने उसको आगे बढ़ाया और मुश्किल से दूसरे घूम से हम निकले ही थे, तो देखा कि १०-१२ हाथी और ३-४ बच्चे खुले नाले में हमसे करीब ६०-७० गज़ पर एक-दूसरे के ऊपर पानी और मिट्टी फेंक रहे थे। उन्होंने हमको नहीं देखा और अपने ही खेल में मशगूल थे। मैंने घोड़ी को रोक दिया कि यह मुफ्त का तमाशा; जो कि नकली सिनेमा से बेहतर था, देखूँ। मगर मेरी घोड़ी नाचने और कूदने लगी। उसने खतरा महसूस किया और खड़ी होकर भागने के लिए मुड़ी। इतना खटका सुनकर जंगली हाथी चौकन्ने हो गये। सबने हमारी तरफ देखा और बढ़ना शुरू किया, शायद यह देखने के लिए कि कौन-सा जानवर है। वे दस-पाँच कदम चलकर खड़े हो गये। उन्होंने बच्चों को बीच

में कर लिया और अजब-अजब किस्म की बोलियाँ बोलने लगे। उनमें जो सबसे बड़ा नर था, आहिस्ता-आहिस्ता हमारी तरफ आना शुरू किया और सब वहीं खड़े रहे। जब यह नर हेकड़ी से आता ही चला गया और करीब ३० गज़ के रह गया और घोड़ी बेताबी से उछल-कूद रही थी, मैंने अपनी आवाज़ से लुहा-लुहा का शोर मचाया। जैसे खेतवाले जंगली जानवरों को डराते हैं। हाथी ने भी खास आवाज़ की और रुक गया। मगर घोड़ी उसी वक्त मुड़ी और भाग पड़ी। या तो मेरी आवाज़ ने या हाथी की बोली ने और सब हाथियों को होशियार कर दिया और तमाम हाथी तरह-तरह की आवाज़ें करते हुए आते मालूम हुए। तमाम जंगल में तूफान-सा आ गया। चन्द हाथी खुले में हमारी बायीं तरफ नाले में उतर आये और नाले के दोनों तरफ घने जंगल से हाथियों ने जगह-ब-जगह उतरना शुरू किया। इस डर से कि कहीं हाथियों के बीच में न फँस जाऊँ, मैंने अब जल्दी निकलने की कोशिश की। लेकिन चन्द हाथियों को आगे देखकर मेरी घोड़ी अपने आप रुक गयी। अब मैं धड़कते हुए दिल और खड़े हुए रोंगटों से काफ़ी तमाशा देख चुका था; जो कि मेरे खतरे के मज़े की इन्तहा थी। घोड़ी ने पीछे लौटने का इरादा किया। मगर मैंने आगे बढ़ने के लिए एँड़ मारी। मैंने देखा कि एक बहुत बड़ा तन्दुरुस्त नर हाथी; जो कि शायद उस गोल का सरदार था, सीधा हमारी तरफ़ आ रहा था। यह देखकर मैं और घबराया और एकदम से शोर मचाता हुआ घोड़ी को तेज़ी से निकाल ले गया। उसने तो खतरे को मुझसे बहुत पहले मालूम कर लिया था और उस टेढ़े और तंग रास्ते पर बड़ी तेज़ी से निकल गयी। पत्थरों की वजह से और किसी तरफ जाना मुमकिन भी न था। थोड़े हाथी और बच्चे हमारे रास्ते के पास आगे खड़े थे। घोड़ी को बेतहाशा तेज़ आते देखकर और मेरे लुहा-लुहा के शोर से वे चीखते हुए और दुमें सीधी किये हुए दाहनी तरफ भागे। इसके बाद मैदान साफ और हाथियों का खतरा निकल चुका था। मुझे शक होता है कि सिवाय चन्द राजा और नवाबों के भी बावजूद अपने बेइन्तहा

ज़राये मिस्ल हाथी, आला दरजे के घोड़े, हथियार और दौलत के भी ऐसे दिल हिलानेवाले, रोंगटे खड़े करनेवाले और गर्मियों में सर्दी की झुरझुरी लानेवाले जंगली जानवरों के शिकार के लुत्फ़ नहीं उठाये होंगे; गो उन्होंने सैकड़ों शेर और दीगर खतरनाक जानवर मारे होंगे। खतरे से गुज़र जाने के बाद मैं घोड़ी से उतरा, खूब शाबाशी दी और उसको खस्ता मीठी रोटी का राशन दिया; जो कि अब उसने शौक से खाया। कुल कैम्प को और मुझे भी गोश्त की जरूरत थी, लिहाजा मैं कैम्प पहुँचकर, राइफल लेकर तालाब के इर्द-गिर्द पैदल घूमा और एक चीतल मारा। शाम को अखबार पढ़ा और कुत्ते से वक्त गुजारा; जिसको मैं सिखला रहा था। जब अँधेरा हो गया, मैंने आवाज़ दी कि खाना लाओ। मगर खाना अभी तैयार न था, लिहाज़ा मैं डेरे के बरामदे में किरमिच की आरामकुर्सी पर लेट गया। मेरा कुत्ता मेरी कुर्सी के नीचे बैठ गया और मुझे नींद आ गयी। रात अँधेरी थी और लालटेन मेरे पास छोटी मेज पर जल रही थी। डेरे के बरामदे में चारों तरफ चिकें लटक रही थीं। यकायक मेरी पीठ में बड़े ज़ोर का धक्का लगा। कुत्ता चीख मारकर भागा और बहुत ज़ोर से भूँकने लगा। मैंने शोर मचाया और बन्दूक और कारतूस लेकर बाहर निकला। मेरे आदमी भी शोर सुनकर लालटेन लेकर दौड़ आये। लेकिन कुछ नहीं दिखलायी दिया। हमने देखा कि चिक; जो कि आरामकुर्सी के पीछे लटक रही थी, फटकर आराम कुर्सी के नीचे घुस गयी; जिससे अन्दाज हुआ कि कुत्ते पर हमला हुआ था, जो कि चिक की रुकावट और आरामकुर्सी के ढाँचे की वजह से बच गया।

खाना मैंने डेरे के अन्दर खाया; क्योंकि बाहर और बरामदे में लालटेन की रोशनी पर तरह-तरह के सदहा कीड़े जमा हो गये थे। कुत्ते ने फिर भूँकना शुरू किया और उस लड़के ने जो रोटी ला रहा था, कहा कि कोई बड़ा जानवर मुझे आते देखकर पच्छिम की तरफ़ भाग गया, जिस तरफ से पहले हमला किया था और जिधर का

हिस्सा खाली पड़ा था। मैंने ख्याल किया कि गुलदार कुत्ते की फिराक में चक्कर लगा रहा है। लिहाजा मैंने कुत्ते को बँधवा दिया। जून के महीने की गरम रात थी। लेकिन उस रात को गुलदार की वजह से मैंने आधी चारपाई डेरे के बरामदे के अन्दर और आधी बाहर रक्खी। कुत्ते को चारपाई के पाये से बाँध दिया और हस्ब मामूल तेज जली हुई लालटेन छोटी मेज पर बराबर में रक्खी। मैं १२ बोर की बन्दूक और चन्द गर्राब के कारतूस चारपाई पर रखकर लेट गया। अभी नींद नहीं आयी थी कि हाथियों की रम-फम और बाँस और डालें तोड़ने की आवाज जोर से सुनायी देने लगी। रफ्ता-रफ्ता यह आवाज पूरब की तरफ नजदीक आती गयी; जिस तरफ मेरा बावरची-खाना था और घोड़ी और मेहतर वगैरह थे। घोड़ी भड़कने लगी। थोड़ी देर में वही सुबह की तरह का तूफान बहुत नजदीक आ गया और मालूम होता था कि वही सुबहवाला हाथियों का गोल चरते-चरते यहाँ पहुँच गया है। मेरा साईस आया और पूछने लगा कि घोड़ी को कहाँ ले जाऊँ? वह बहुत कूद रही है। मैंने उससे कहा कि हाथी नाले के इस तरफ हमारे कैम्प को और आग को देखकर नहीं आवेंगे, बल्कि नाले में जोकि बहुत चौड़ा है, मुड़ जावेंगे। तुम लोग खूब आग जला दो। घास की मशालें बनाकर दो-चार आदमी हाथ में लेकर घुमाओ और खाली पीपे बजाओ। इतने ही में मेरा बावरची शोर मचाता हुआ भागा कि उसकी छोलदारी के पास पूरब तरफ हाथी ने एक बाँस का पेड़ गिराया है। टीन बजाये गये, आग जलायी गयी। खूब शोर मचाया गया और मैंने हवा में दो फैर किये; जिससे हाथियों ने तरह-तरह की बोलियाँ बोलते हुए भागना शुरू किया। उनकी आवाजों और पेड़ों के टूटने से तमाम जंगल गूँज गया। गोया तूफान और जलजला था, जोकि गुजर रहा था। आखिरकार हाथी लूनीसूत में होते हुए पच्छिम मीठाबेरी बँगले की तरफ चले गये और करीब घंटे भर में अमन व अमान हुआ।

जब खामोशी छा गयी तब हम सब करीब ११ बजे के लेटे। रात

में पिछले पहर के वक्त मेरी आँख यकायक कुत्ते के चीखने और चारपाई में झटका लगने से खुली। गुलदार शायद रात भर इर्द-गिर्द लगा रहा और कुत्ते को जंजीर तोड़कर ले गया। दूसरे दिन सुबह उसका कालर और हड्डियाँ करीब १५० गज पर मिलीं। इस तरह मैंने लूनीसूत के बड़े गुलदार के मारने की कोशिश में अपना होनहार इस्पेनियल कुत्ता खोया; जोकि बड़े शौक से काम सीख रहा था।

५४. मेरा चौबीसवाँ गुलदार

मैं मुकाम सनेह में पड़ाव किये हुए था। जंगल के काम खत्म हो चुके थे। बारिश का इन्तजार था कि शुरू हो तो लेंसडौन बरसात के हेडक्वार्टर पर जाऊँ। एक दिन मेरे आदमियों ने आधे दिन की छुट्टी ली, ताकि नजदीक के एक थारू गाँव में, जोकि हमारी सरहद पर काशीपुर रियासत में था, जाकर मछली का शिकार थारू आदमी और औरतों के साथ खेलें। थारू लोग हिन्दोस्तान के पुराने बाशिन्दे हैं; जोकि हिमालिया के नीचे तराई के इलाकों में, जहाँ मलेरिया बुखार बहुत आता है, गोरखपुर, गोंडा, बहराइच, खीरी, पीलीभीत और नैनीताल जिले तक उत्तरी हिस्सों में आबाद हैं। ये लोग भोले-भाले साफ और सादी जिन्दगी बसर करते हैं और उस खराब आब-व-हवा में सदियों से रहकर आदी हो गये हैं।

उनकी खास गिजा चावल, मछली और शराब है। वे शराब अपने ही घरों में बनाते हैं और उन्हें इसकी गवर्नमेंट से इजाजत है। मछली पकड़ने में मर्द, औरत, बूढ़े, जवान और बच्चे सब बहुत होशियार हैं। इनके तराई के मुल्क में नदी, नाले और झीलें भी बहुत हैं। हर एक के पास ५-६ फीट चौड़ा गोल जाल होता है; जिसे वे खुद बनाते हैं और जिसको पतली लकड़ियों के ढाँचे पर बाँध लेते हैं। हर एक की कमर से एक झोला बँधा होता है। मर्द सिर्फ लँगोटी बाँधते हैं और औरतें भी बहुत ऊँचा घाँघरा और सीने पर एक कपड़ा ढक

लेती हैं। मर्द व औरत एक के बाद एक लाइन में खड़े होकर सब एक साथ गाते हुए, जाल डालते हुए और मछलियाँ, जो जिसके जाल में आती हैं, पकड़-पकड़ कर अपने-अपने झोले में डालते हुए बढ़ते जाते हैं। वे हर रोज अपने-अपने गाँव की पार्टियों में तीसरे पहर को आमतौर पर दो-तीन घंटे शिकार खेलते हैं और मनों मछली सुखा कर रख लेते हैं।

सिवाय मेरे बावरची के, कैम्प के सब लोग शिकार देखने गये थे और शाम तक वापस नहीं आये। बँगले के नजदीक कोटरी नदी के उस पार पहाड़ी इलाका शुरू हो गया था। वहाँ शाम को चीतलों ने खतरे की आवाज देना शुरू की और उनमें बन्दर भी शामिल हो गये। मैं थोड़ी देर अपने आदमियों का इन्तजार करता रहा, फिर न रहा गया और ३५५ बोर राइफल और बकरी लेकर रवाना हुआ। कोटरी नदी पार करने के बाद पहाड़ के नीचे हमवार जमीन पर चन्द एकड़ का घना जंगल था; जहाँ चीतल और बन्दर बहुत शोर मचा रहे थे। मैंने चारों तरफ़ देखा कि कोई पेड़ आसानी से चढ़नेवाला जल्दी मिल जाय, मगर नहीं मिला। एक पेड़ पर घनी और मोटी बेलें चढ़ी हुई थीं। मैंने बकरी को सामने बाँध दिया और राइफल को कंधे में लटकाकर बेलों की मदद से पेड़ पर चढ़ने लगा। मैं ८ या ९ फीट ऊपर चढ़ा हूँगा और इरादा कर रहा था कि जिस डाल को हाथ से पकड़े हुए था, उस पर घोड़े की तरह बैठ जाऊँ; मेरे पैर बेल पर फिसल रहे थे कि बकरी जोर से चिल्लायी। मैंने नीचे देखा तो गुलदार बकरी को दबाये बैठा था। मैं ऐसी हालत में लटका हुआ था कि राइफल को कंधे से न उतार सका। मैं थोड़ा और ऊपर चढ़ा और दोनों कुहनियों को उस डाल पर टेक कर जिस पर बैठना चाहता था, राइफल को कंधे से उतारा और सेफ को हटाकर राइफल नीचे झुका रहा था कि लिबलिबी पर उँगली जल्दी में पड़ गयी और फ़ैर हो गया। गुलदार कूदकर झाड़ियों में भाग गया। मुझे बहुत अफसोस हुआ। गुलदार काफी बड़ा नर था। आखिरकार मैं उस डाल पर बैठ

Plate No VII



Tharu women drawing water from a well

गया और नाउम्मीदी से इन्तजार करने लगा। बकरी ने या तो मुझे देखकर या गुलदार के डर से बोलना बन्द कर दिया। चीतल भाग गये। मगर बन्दर नजदीक के पेड़ों पर खतरे की आवाजें देते रहे; जिससे ख्याल होता था कि शायद गुलदार को बन्दर देख रहे हैं और वह वहीं छिपा हुआ है। मैं करीब आध घंटे डाल पर बैठा हूँगा कि गुलदार बकरी के करीब एक झाड़ी के पीछे से बकरी को देख रहा था। शायद उसने मुझे नहीं देख पाया या परवा ही नहीं की; क्योंकि यह शेर से ज्यादा निडर होता है। मैं राइफल को उसकी तरफ सीधी किये हुए, इन्तजार में था कि थोड़ा और आगे निकले तो किसी नाजुक जगह में गोली मारूँ। वह थोड़ी देर दबका रहा और जैसे ही उसका सर और गर्दन साफ़ झाड़ी के बाहर दिखलायी दिये, मैंने सर और गर्दन के जोड़ पर गोली मारी। वह कलाबाजी खाकर बोलता हुआ झाड़ियों में गायब हो गया। मैंने ख्याल किया कि गर्दन की हड्डी बच गयी और गोली रग व पुट्ठों को काटती हुई निकल गयी। दूसरे दिन सुबह एक फरलाँग तक खून मिला और उसके बाद कोई पता न लगा। अगले दिन मैं दौरा खत्म करके कोटद्वारा चला गया। करीब एक हफ्ता के बाद रेन्ज अफसर ने उसके नाखून मेरे पास भेजे और इत्तला दी कि कुली उस तरफ से गुजरे और बदबू पाकर गये तो गुलदार मरा हुआ मिला। गुलदार सड़ गया था और उसकी खाल खराब हो गयी थी। नाखूनों के देखने से अन्दाज होता था कि वह काफी बड़ा नर था।

५५. मेरा पचीसवाँ गुलदार

सन् १९२८ ई० की बरसात में मेरा तबादला यू० पी० फॉरेस्ट ट्रेनिंग स्कूल में बतौर प्रिन्सिपल के फिर हो गया। जाड़ों में मैं पीलीभीत फ़ारेस्ट डिवीजन में स्कूल को लिये हुए दौरा कर रहा था और खीरी फॉरेस्ट डिवीजन की तरफ जा रहा था। खानबहादुर रहमतउल्ला

आई० एफ० एस० पीलीभीत डिवीजन के चार्ज में थे और उसी साल पेन्शन पर जानेवाले थे।

हम रेल से उतर कर रात भर के लिए पीलीभीत ठहरे। खान-बहादुर साहब ने शाम को मेरी दावत की और शहर के चन्द और अफसरान को भी बुलाया। जब हम सब लोग ड्राइंग रूम में बैठे थे तो मैंने एक पुरानी फटी हुई शेर की खाल फर्श पर देखकर कहा कि एक फ़ारेस्ट अफसर के कमरे में यह रद्दी खाल अच्छी नहीं लगती। उन्होंने जवाब दिया कि यह जवानी में मारा था। अगर तुमको अच्छी नहीं मालूम होती है तो एक नयी खाल भेज दो; मैं इसको फेंक दूँगा। मैंने कहा—बहुत अच्छा, आप अपने दो हाथियों में से एक हाथी एक हफ्ता के लिए मेरे साथ अपने डिवीजन के अन्दर ३ कैम्प के लिए कर दीजिए। मैं जो कुछ मारूँगा वह सब उसी हाथी पर खीरी डिवीजन में जाने से पहले आपको भेज दूँगा। उन्होंने कहा—मंजूर है। सुबह जब हमारा कैम्प ऊँटों पर लद रहा था तो खानबहादुर साहब अपनी बुड्ढी हथिनी, जिसको पेंशन मिल चुकी थी और आधा राशन मिलता था, भेज दी।

दूसरे कैम्प में पहुँचकर शाम को मैं बँगले के इर्द-गिर्द तीतर व मुर्गी की तलाश में अपने असिस्टेंट के हाथी पर घूमने गया। हम खुले जंगल में, जहाँ घास और बेर की झाड़ियाँ ज़्यादा थीं, घूम रहे थे। मेरे असिस्टेंट ने करीब १०० गज पर चन्द मादीन साँभर घने जंगल के किनारे देखे। हम उनकी तरफ हाथी ले गये, इस उम्मीद पर कि शायद कोई नर भी हो। हम मुश्किल से २० कदम गये होंगे कि चारों साँभरों ने सर उठाकर हमारी तरफ देखा और भागे। चूँकि कोई नर नज़र नहीं आया, लिहाज़ा हमने भी रुख़ बदल दिया और थोड़ी ही दूर गये होंगे कि चारों साँभरों ने खतरे की आवाजें देना शुरू कीं। हमने हाथी उनकी तरफ़ फिर मोड़ा और देखा कि चारों एक ही जगह पर खड़े होकर हमारी तरफ़ दुम किये हुए सब उत्तर की तरफ मुँह किये हुए आवाज़ दे रहे हैं। यह देखकर मुझे शेर-गुलदार का शक

हुआ और थोड़ी देर तक वहाँ ठहर कर देखता रहा। साँभर उसी जगह पर जमे हुए बोलते रहे। मैंने महावत से कहा कि हाथी को आहिस्ता-आहिस्ता उनकी बगल से ले चलो। जब हाथी करीब आधे फासले को तय कर चुका, तब वे फिर भागे और हमने देखा कि एक गुलदार बेर की झाड़ी से कूदा और एक साँभर को पीछे से पकड़ा; बल्कि करीब-करीब उसके पुट्ठे पर सवार हो गया। थोड़ी दूर तक दोनों में कुश्ती होती गयी और बेर की झाड़ियों में गिर पड़े। हम जल्दी से हाथी लेकर पहुँचे और झाड़ी में वह गड़बड़ी देख ही पाये थे कि साँभर पीछा छुटा कर भागा। गुलदार ने १०-२० क़दम पीछा किया और फिर झाड़ियों में छिप गया। मैं वहीं हाथी घुमाता रहा और कभी-कभी उसकी झलक भी दिखलायी दी। आखिरकार एक जगह पर उसका कँधा दिखलायी दिया। मैंने फायर किया और वह वहीं रह गया। वह खूब तन्दुरुस्त ७ फीट २ इञ्च की मादीन थी।

५६. मेरा सातवाँ शेर बड़े लुत्फ़ के साथ

२५ जनवरी सन् १९२९ ई० को मैं सुबह के वक्त क्लास को लिए हुए एक सौ फीट चौड़ी फायर लाइन से गुजरा। चौराहे से करीब सौ कदम पर ३०-४० चीतल जली हुई फायर लाइन की नयी घास पर चरते हुए दिखलायी दिये और मुझे उनमें से एक सफेद रंग का नज़र आया। मुझे यकीन नहीं हुआ। मैंने विद्यार्थियों से पूछा कि क्या उनको भी कोई सफेद चीतल नजर आ रहा है और उन्होंने भी कहा कि हाँ। मैंने फारेस्ट गॉर्ड से पूछा, उसने कहा कि कई मर्त्तबा मैंने दो सफेद चीतल इसी फायर लाइन पर देखे हैं। चूँकि यह एक गैरमामूली बात थी, मैंने कहा—अगर मैं आज शाम को यहाँ आऊँ, तो उम्मीद देखने की है? उसने कहा—ज़रूर। उस वक्त मेरे साथ सिर्फ़ बन्दूक थी; जिसके लिए फासला ज्यादा था। काम से वापस आकर शाम को हाथी पर मैं फारेस्ट गॉर्ड को लेकर मय दूरबीन और राइफल के सफेद चीतल के लिए

फायर लाइन पर पहुँचा तो सुबह की बराबर एक गोल चीतलों का करीब ३ सौ गज़ पर नज़र आया। दूरबीन से देखने पर एक मादीन और एक बच्चा सफेद मालूम हुए। मैंने सोचा कि इनमें से एक मार कर बम्बई अजायबखाने में भेजूँगा; क्योंकि सफेद चीतल कुदरत के खिलाफ़ था। बूढ़ा हाथी फायर लाइन पर आहिस्ता-आहिस्ता चल रहा था। ताजा खून और घसिटन का निशान खूब साफ़ और उसके ऊपर शेर के पैरों के निशान फायर लाइन के उत्तरी जंगल से दक्खिनी जंगल के टुकड़े में जाते हुए नजर आये। मैंने कहा कि शाम होनेवाली है, चीतलों को जाने दो, शेर की घसिटन पर चलो। हम थोड़ी दूर जंगल में गये तो एक मादीन साँभर, जिसकी पिछली रानें कुछ खायी हुई थीं, मिली। जंगल में घास और पत्तियाँ जमीन को ढके हुए थीं; जिसकी वजह से यह पता न चला कि शेर किस तरफ गया है। लिहाजा मैंने लाश के इर्द-गिर्द हाथी से चक्कर लगाना शुरू किया।

मुझे यकीन था कि शेर दूर नहीं गया होगा; क्योंकि ताजा खाया हुआ था और मक्खियाँ भी अभी नहीं आयी थीं। दूसरे, कोई जानवर और चिड़ियाँ भी खतरे की आवाज नहीं दे रही थीं। तीसरे, चक्कर में, जोकि लाश के काफी दूर था। महावत ने शेर की झलक देखी और मुझे उस तरफ इशारा किया। लेकिन मैं न देख सका। हमने उस तरफ हाथी बढ़ाया और देखा कि शेर बगल दिये हुए ६०-७० गज़ पर खड़ा हमको देख रहा था। महावत और फारेस्ट गॉर्ड ने कहा कि दागो। मगर मैं इन जानवरों पर दूर से बेइतमीनानी गोली चलाना मुनासिब नहीं समझता हूँ। दूसरे, हाथी खामोश नहीं खड़ा होता था। मैंने महावत से कहा कि और आगे बढ़ो, मगर इतने ही में शेर चल दिया। उसने एक मौका फिर दिया, मगर मैंने नहीं दागा। मैं ५० गज से कम फासले से दागना चाहता था। मैं कुछ देर तक शेर के गिर्द चक्कर दिलवाता रहा, ताकि फासला कम हो जावे। मगर शेर ने उससे नजदीक नहीं आने दिया। चूँकि सूरज डूब रहा था, लिहाजा मैंने सोचा कि किस्मत आजमाई करो और हिलते हुए हाथी पर से दागा।

शेर गिरा और शोर मचाता हुआ और पिछला धड़ घसीटता हुआ एक घनी झाड़ी की तरफ़ गया। क़ब्ल इसके कि मैं दूसरी गोली चला सकूँ वह झाड़ियों में गायब हो गया। जिस झाड़ी में ख़्याल था कि वह घुसा है, उसके नजदीक हाथी ले जाने पर वह बहुत जोर से गुर्राने लगा; जिससे यह मालूम होता था कि वह हमला करने को बिलकुल तय्यार था। हाथी ३० कदम पर रुक गया और किसी सूरत से आगे नहीं बढ़ा, या महावत ने रोक दिया। महावत ने कहा कि अब छोड़ दीजिए और सुबह देखियेगा; जोकि माक़ूल बात थी। वह चल तो सकता था और इधर उसके खो जाने का भी डर था। लिहाजा मैंने अन्दाज से दो गर्राब हिलती हुई शाखों के नीचे और उसकी आवाज पर दागे। मगर वह न तो निकला ही और न गर्राब उसके लगे ही। मेरे पास अब राइफल के चार कारतूस थे और दो कारतूस चार नम्बर छर्रे के थे।

मैंने महावत से कहा कि झाड़ी सिर्फ २० फीट लम्बी-चौड़ी होगी, एक चक्कर उसके चारों तरफ लो और उसने बड़ी मुश्किल से एक चक्कर ३० गज दूर से लिया। मगर शेर नहीं निकला। मैंने हाथी रोक कर हिलती हुई शाखों के ४-५ फीट नीचे आवाज की तरफ एक राइफल की गोली चलायी। मगर शेर वैसे ही गुर्राता रहा, यानी राइफल का भी फैर जाये हुआ। अब मेरे पास दो छर्रे और राइफल के तीन कारतूस बाकी रह गये; जिनको मैं फेंकना नहीं चाहता था। मैं महावत के ऊपर बहुत खफ़ा हुआ और कहा कि झाड़ी के नजदीक हाथी ले चलो। उसने कहा कि शेर ज़ख्मी है और जरूर हमला करेगा। मैंने कहा कि मैं भी तो तुम्हारे साथ उसी हाथी पर हूँ। अगर वह हमला करेगा तो मैं भी गोलियों से हमला करूँगा। इस पर उसने नाराज़ होकर कहा—अच्छा, तो तमाशा देखिए और वह हाथी को झाड़ी के बिलकुल किनारे पर ले गया। उसने आहिस्ता-आहिस्ता चक्कर लगाना शुरू किया। शेर ने थोड़ी देर से बोलना बन्द कर दिया था और यह पता नहीं चलता था कि वह झाड़ी में किस जगह पर है।

अब करीब-करीब बिलकुल अँधेरा भी हो चुका था। मैंने अरदली से कहा कि झोले से मेरी दो सेल की टार्च निकाल कर झाड़ी के किनारे और उसके १ गज अन्दर तक बराबर रोशनी खोले हुए चलो और जहाँ आँखें चमकती हुई मालूम हों, सीटी देकर मुझे इशारा करना। इस तरह हमने झाड़ी का आधा चक्कर लगाया होगा कि अरदली ने सीटी दी और इशारा किया। मैंने टार्च लेकर राइफल की नाल से बायीं हाथ से लगा कर रोशनी खोली तो देखा कि शेर अपना खुला हुआ मुँह अपने अगले हाथों पर रक्खे हुए हमला करने को तय्यार था। मैंने जल्दी से उसके सर पर निशाना लेकर धड़कते हुए दिल से फायर कर दिया। फासला कुछ भी न था और मुझे पूरा यकीन था कि दोनों आँखों के बीच में गोली लगी होगी।

फैर होते ही हाथी करीब ५० कदम के भागा, या महावत बगैर नतीजा देखे भगा ले गया। कुछ देर तक हम खड़े रहे और कोई आवाज किसी किस्म की नहीं सुनायी दी। हम खाँसे और बोले और महावत से कहा कि नजदीक चलो। लेकिन उसने साफ़ इनकार कर दिया और कहा कि अब सुबह देखना, जोकि बिलकुल ठीक राय थी। मैंने नम्बर ४ का एक छर्रा उस तरफ दागा, तब भी कोई आवाज नहीं आयी। मुझे पूरा यकीन था कि गोली ठीक सर पर लगी है और शेर खत्म हो चुका है। मैंने महावत से कहा—अच्छा, हाथी बिठाओ। मैं राइफल पर टार्च जमाकर जाऊँगा; बिलकुल तय्यार होकर जल्दी से फैर करने की अगर जरूरत हुई। फारेस्ट गॉर्ड ने कहा कि मैं भी साथ चलूँगा, अगर मुझे बन्दूक और एक बचा हुआ ४ नम्बर का कारतूस दो। महावत ने मेरा पक्का इरादा देखकर हाथी को मोड़ा और आहिस्ता-आहिस्ता उसे झाड़ी से १५ कदम पर खड़ा कर दिया। टार्च दो सेल की और कमजोर थी। कुछ नहीं दिखलायी दिया। महावत आगे जाने को किसी तरह से तय्यार नहीं था।

मैंने कहा कि अगर शेर जिन्दा होता तो अब तक कुछ तो हिलता-डुलता और आवाजें करता। महावत ने कहा—जब आखिरी गोली

दागी है, तब वह कब बोल रहा था या हिल रहा था ? मैंने कहा कि उस वक्त वह हमला करने की घात में था और हमला करने से पहले मेरी गोली ने उसकी खोपड़ी उड़ा दी है। अगर ऐसा नहीं है, तो मैं बिलकुल तय्यार हूँ कि जैसे ही वह हमला करेगा, दूसरी गोली उससे पहले ही उस पर पड़ेगी, नहीं तो हाथी बिठा दो, मैं देख लूँगा।

हम जोर-जोर से बातें कर रहे थे और फारेस्ट गॉर्ड भी महावत की तरह तजुरबाकार और बूढ़ा था। वह कहने लगा कि अगर जिन्दा होता तो इतने नजदीक से जोर-जोर की हमारी बातें सुनकर हरगिज खामोश न बैठा रहता। आखिरकार महावत ने बहुत ही ना-रज़ामन्दी से हाथी थोड़ा ही आगे बढ़ाया था कि मेरी टार्च की रोशनी शेर के सर पर पड़ी और उसकी आँखें नहीं चमकीं। सर से खून बह रहा था। मैंने कहा कि मर गया। महावत ने पूरी तौर पर इतमीनान करके हाथी को बिठाया और हम नीचे कूदे। हम सब शेर को घसीटकर बाहर लाये और बड़ी मुश्किल से तमाम कपड़े खराब करके उसे हाथी पर लाद कर उसी शाम को ले आये। मैं बहुत खुश हुआ कि खूब तमाशा देखकर बग़ैर किसी इन्तजाम के शेर मिल गया, नहीं तो दूसरी शाम तक उसको वहीं छोड़ना पड़ता और दिन भर फ़िकर रहती। दूसरे दिन काम खत्म करना था। मैंने खानबहादुर रहमतउल्ला साहब को लिखा कि उनके हाथी ने एक गुलदार और एक शेर उनके कमरे के लिये दिलवा दिया, जोकि रवाना हैं और मुझे मौका बेइन्तहा लुत्फ और तमाशा देखने का दिया, जिसका शुक्रिया अदा करता हूँ। इसके बाद मैं खीरी डिवीजन को चला गया। मैं अब ख्याल करता हूँ कि मैंने गलती की कि महावत का कहना नहीं माना और खैरियत ही से कोई हादसा नहीं हुआ।

५७. मेरा बेइरादा आठवाँ शेर बहुत ही खतरनाक हालत में

शुरू मार्च सन् १९२९ ई० में मैं खीरी फारेस्ट डिवीजन से फिर पीलीभीत डिवीजन के तराई रेन्ज में, जोकि नैपाल की सरहद पर है, एक कूप का क्लास छपान कराने को लाया। खानबहादुर रहमतउल्ला आई० एफ० एस० पेन्शन पर जा चुके थे और खानबहादुर जियाउलहक आई० एफ० एस० ने उनसे चार्ज लिया था। मैंने फिर वही पेन्शन-याफ्ता बूढ़ी हथिनी एक हफ्ते के लिए माँग ली और तराई रेन्ज के एक बँगले में पहुँचा; जिसका नाम मैं भूल गया हूँ और जहाँ मुझे विद्यार्थियों से छपान कराना था। वहाँ पर पहले ही से दो शिकारी मय दो हाथियों के और बहुत से आदमियों के शिकार का पास लिये हुए ठहरे थे। मेरे लिए बँगले में एक कमरा खाली था। मैं कई रोज शिकार को बिलकुल नहीं गया, गो शिकारी साहबान ने कह दिया था कि उनको कोई एतराज नहीं है।

शिकारी साहबान ४ पड्डे लाये थे; जोकि मारे जा चुके थे और शेर नहीं मिला था। मेरे पास भी दो पड्डे थे। उन्होंने एक पड्डा मुझसे लिया और जोर दिया कि आप शाम को जरूर हस्ब मामूल टहलने जाइये और जो कुछ मिले, जरूर शौक से मारिए। वह पीलीभीत जिले के नवाब लोग थे। उनमें से एक के बहनोई, जोकि पक्की उमर के थे उनको नौ उमर नवाब लोग साथ कम ले जाते थे और वह अक्सर शाम को मेरे पास आकर बैठते थे। एक दिन हम सब लोग बरामदे में बैठे थे, एक घंटा दिन बाकी था और जंगली मुर्गे बँगले के चारों तरफ बोल रहे थे। मेरे असिस्टेंट मिस्टर पाँगती ने कहा कि पाँच दिन से दाल और आलू खाते-खाते घबरा गये हैं, चलिए एक मुर्गा मारें। उस पर नवाब साहब के रिश्तेदार ने और जोर दिया कि हाँ

अपना हाथी मँगा लीजिए और थोड़ा घूम आवें, मेरा भी जी तमाम दिन बैठे-बैठे घबरा गया है।

वह महीना रमजान का था और मैं रोजे रखता था। मैं काम से वापस आकर गुसल करके बरामदे में आकर बैठा था। हुक्का भरा हुआ तैयार था और सूरज डूबने का इन्तजार कर रहा था, ताकि रोजा खोलूँ। वक्त भी कम था और मेरा जी जाने को नहीं चाह रहा था कि इतने ही में मुर्गों की आवाज के साथ चीतलों ने भी बँगले से एक फरलाँग पूरब तरफ बोलना शुरू किया। इससे सबका शौक और भी बढ़ गया। मैंने अरदली से कहा कि हाथी ले आओ; जोकि करीब एक हफ्ते से बेकार बैठा था। महावत बेकार बैठने के बजाय उस वक्त थारू के गाँव में चला गया था; जोकि नजदीक ही में था। अरदली भी गोश्त का उतना ही शौकीन था, जितने कि और सब लोग थे। हाथी की गद्दी वगैरह उलटी-सीधी चरकटे की मदद से रखकर जोकि महावत का लड़का था, हाथी को ले आया और महावत के बजाय उसके लड़के को बिठा लाया; जोकि १६ बरस का लड़का था। मैं हाथी पर अपने भरोसे का ३६६ बोर राइफल लेकर महावत के लड़के के पीछे बैठा। मेरे असिस्टेंट मेरे बाद अपने बाप की पुरानी दोनली १२ बोर बन्दूक लेकर बैठे; जिसका कुन्दा चिटखा हुआ था और पीतल के तारों से बँधा हुआ था। उनके पीछे वे बूढ़े रईस बैठे, जिनको नवाब साहब यह कहकर छोड़ जाते थे कि आप पड़ाव में मुर्गियाँ मारियेगा। मैंने उस रोज अरदली को भी नहीं लिया, ताकि बूढ़े हाथी पर ज्यादा बोझ न हो जावे। हम बँगले के आहाते के बाहर गये। मोर, मुर्गी दिखलायी तो देने लगे, मगर किसी ने हाथी को नजदीक नहीं आने दिया। इतने में एक फरलाँग पर नेपाल की सरहद पर घने जंगल की पट्टी में फिर चीतल बोलने लगे। हमारे बूढ़े दोस्त ने कहा कि मोर, मुर्गियों को जाने दीजिए और एक चीतल मारिए, ताकि सारे कैम्प का भला हो। लिहाजा हमने हाथी का रुख चीतलों की तरफ कर दिया। करीब १ दर्जन के मादीन चीतल और एक छोटा

नर दिखलायी दिये। मैंने कहा इसमें कोई मारनेवाला नर नहीं है; क्योंकि ३२ से कम सींग का चीतल मारना मना था। मैंने चीतलों को जाने दिया। जैसे ही चीतल हमको देखकर भागे कि एक साँभर ने कई बार खतरे की आवाज दी। आवाज भारी थी और ख्याल हुआ कि शायद नर हो। मैंने महावत के लड़के से कहा कि साँभर की तरफ चलो। जंगल बहुत घना था, जिसमें दलदल की पैदावार—बड़ी-बड़ी मोटी बेलें, जंगली काफी की घनी झाड़ियाँ और कहीं-कहीं बेंत की काँटेदार बोझियाँ थीं; जिसकी वजह से हाथी का चलना मुश्किल था और चन्द कदम से ज्यादा दूर दिखलायी भी नहीं देता था। थोड़ी दूर चलने के बाद एक पुरानी गाड़ी की लीक मिल गयी; जो एक या दो साल पहले निकासी के लिए इस्तेमाल हुई थी। हम उस पर आगे बढ़ते रहे।

मैं अपने दाहने व बायें साँभर को देखता जा रहा था। इतने ही में मेरी नजर लीक से एक या दो गज बायीं तरफ एक शेर के पिछले हिस्से और दुम पर पड़ी। हम दक्खिन की तरफ जा रहे थे और शेर का मुँह हमारे पीछे यानी उत्तर की तरफ था। मगर वह मुँह मोड़े हमको देख रहा था। ऐसा मालूम होता था कि शेर भी उसी गाड़ी की लीक पर हमारे सामने आ रहा था। वह हाथी के चलने की आहट सुनकर लीक से हटकर खड़ा हो गया था। घनावट झाड़ियों की इतनी थी कि शेर बहुत कम देख रहा था और सिवाय मेरे किसी ने न देखा। मैंने महावत के लड़के के कंधे पर हाथ रखकर हाथी रोकने का इशारा किया और बगल का निशाना लिया। मगर यह ख्याल करके कि फासला कुछ भी नहीं है, कहीं हमला न करे, फौरन निशाना सर पर बदल दिया; इस उम्मीद पर कि फैर के साथ ही गिर जावे और लिबलिबी दबा दी। उम्मीद के खिलाफ शेर ने फैर के साथ ही एक धाड़ मारी और सबकी बेखबरी में हाथी पर आ कूदा। हाथी चीख मारकर फौरन भागा। शेर का एक हाथ मेरे असिस्टेंट की दोनों रानों के बीच में पड़ा और उनकी बिरजिस फाड़ ले गया और दूसरा हाथ हाथी की गद्दी पर पड़ा और उसका भी एक टुकड़ा फाड़ दिया। मेरे

असिस्टेंट की बन्दूक बड़े जोर से दगी और उसका कुंदा मेरे सर में इतने जोर से लगा कि मैं चकरा गया। शेर तो वहीं गिर गया और हाथी झाड़ियों और काँटों में होता हुआ ५० कदम पर बड़ी मुश्किल से रुका। हम सब लोग डालों से और काँटों से जगह-ब-जगह नुच गये। सबके कपड़े फट गये और समझ में नहीं आया कि यकायक क्या मुसीबत आ पड़ी। मगर यह सब कुछ एक मिनट के अन्दर ही गुजर गया।

शेर कुछ दूर तक शोर मचाता हुआ गया और फिर गिरकर बहुत शोर मचा रहा था। मैंने अपने असिस्टेंट मिस्टर पाँगती से दरयाफ्त किया कि तुमने क्या और किस जगह पर शेर के ऊपर फायर किया। उन्होंने जवाब दिया कि मैंने तो कोई फैर नहीं किया। मैंने कहा—अपने बन्दूक की नालें देखो। उन्होंने जब नाल खोली तो देखा कि दोनों कारतूस खाली थे और नाल के ऊपर के हिस्से फटकर फैल गये थे।

मैंने पूछा—तुमने क्या भरा था? उन्होंने बतलाया कि एक में लीथल गोली थी और दूसरी नाल में ४ नम्बर के छर्रे थे। मैंने कहा कि तुमने या तो आँख में मारा है या फेफड़ों में। क्योंकि शेर बराबर दर्दनाक शोर मचा रहा था और बेचैनी से पटखरियाँ खा रहा था, जोकि हम अच्छी तरह से सुन रहे थे। मैंने महावत के लड़के से कहा कि हाथी शेर की तरफ ले चलो; मगर वह रोने लगा। नवाब साहब के बूढ़े रिश्तेदार बहुत खफ़ा होकर कहने लगे कि शेर इस तरह से नहीं मारे जाते हैं और यह कि उन्होंने गलती की कि नातजुरबेकार लड़कों के साथ चले आये। मैंने महावत के लड़के से कहा कि हाथी को बिठा दो; ताकि मैं उतर जाऊँ। बूढ़े मियाँ ने फिर मना किया और सही राय दी कि अब उसको वहीं छोड़ दो और सुबह देखना। लेकिन नातजुरबा-कारी और जोश की वजह से मैं नहीं माना और बड़ी गलती की। मैं हाथी से उतर कर धाड़ते हुए शेर की तरफ आहिस्ता-आहिस्ता रवाना हुआ। बूढ़े मियाँ ने फिर कहा कि देखो अगर कोई हादसा हुआ तो हमसे कोई मदद की उम्मीद न रखना। यह शब्द सुनकर मेरे पैरों में

ब्रेक लग गया। दिल धड़क रहा था और रोंगटे कुल जिस्म के सरदी के साथ खड़े हो गये। मेरे दिल में फिर ख्याल आया कि कहीं यह जख्मी शेर भी पहले की तरह गुम न हो जावे और आगे बढ़ा। जब मैं उस जगह पहुँचा, जहाँ गोली चलायी थी और शेर हमला करने के बाद गिरा था, मैंने देखा कि खून बहुत काफी मिकदार में झाड़ियों और जमीन के ऊपर गिरता हुआ गया था और शेर अभी तक बेहद दर्दनाक शोर मचा रहा था। वह उठ-उठकर गिर रहा था। जब मैं उसके करीब २५ कदम पर पहुँचा तो देखा कि जंगली काफी की झाड़ियाँ, जिसके अन्दर वह तड़प रहा था और खौफनाक शोर मचा रहा था, बड़े जोर से हिल रही थीं; मगर झाड़ी की घनावट की वजह से बिलकुल दिखलायी नहीं देता था। यह ख्याल करके कि और आगे जाना बेहद खतरनाक है, मैं ठहर गया, कि शायद कोई हिस्सा शेर का दिखलायी दे तो गोली चलाऊँ; मगर नहीं दिखलायी दिया। उसका इस कदर नजदीक डरावना शोर दिल व दिमाग हिलाये देता था। वहाँ देर तक ठहरना मेरे लिए नामुमकिन था। मेरे सामने गूलर का एक पुराना पेड़ था, जिसमें आदमी जितनी ऊँचाई पर दो शाखें हो गयी थीं। उसके ऊपर आसानी से चढ़ने के काबिल था। मैं आहिस्ता-आहिस्ता गूलर के पास धड़कते हुए दिल से पहुँचा। मैंने रायफल को सेफ करके कंधे से लटकाया और कूदकर एक सूखी डाल में लटक कर दाहना पैर दो शाखों की तरफ फेंका ही था कि वह सूखी डाल ऐसे नाजुक वक्त में बड़े चटाखें से टूट गयी। मैं जमीन पर धम से गिरा; जिससे मेरी कमर में सख्त झटका आ गया। शेर जोकि अभी तक बेताबी से उछल-कूद रहा था और शोर मचा रहा था, एकदम से खामोश हो गया। मैंने झाड़ी की तरफ देखा तो वह बड़े जोर से हिली और मैंने समझा कि शेर हमला करने को आ रहा है। हालाँ कि उस कमर की चोट और झटके से मामूली वक्त में उठना भी मुश्किल था; मगर जान के लालच में मैं पूरी ताकत से घनी झाड़ी और काँटों में हाथी की तरफ भागा। महावत के लड़के या हाथी ने झाड़ियों में खड़बड़ सुनकर समझा कि शायद शेर

आता है। जब मेरी निगाह हाथी के ऊपर पड़ी, तो हाथी दुम उठाये भाग रहा था, जिससे मुझे बहुत नाउम्मीदी हुई और मैं आगे भी नहीं भाग सकता था। बूढ़े मियाँ ने, जोकि दुम की तरफ मुँह किये हुए रस्से पकड़े बैठ थे, मुझे देखा और हाथी को रोक दिया। मैंने देखा कि शेर नहीं आ रहा था।

हाथी पर सवार होकर मैंने बतलाया कि क्या-क्या हुआ। मैंने महावत के लड़के से कहा कि शेर की तरफ ले चलो। उसने फिर इनकार किया। मैंने उससे कहा कि हम और सब लोग भी तो हाथी पर हैं। अगर वह हमला करेगा तो हम भी उसको मारने के लिए गोली चलावेंगे। लेकिन नवाब साहब के बहनोई ने फिर कहा कि अब छोड़ दो, सुबह देखना। अगर मैंने बूढ़े मियाँ का कहना माना होता तो सुबह यह शेर वहीं मरा मिलता। मगर मुझे डर था कि कहीं यह भी पहले दो शेरों की तरह खो न जावे। लिहाजा मैंने जिद की और हाथी को उस गूलर के पेड़ तक ले गया, जहाँ मैं गिरा था। शेर ने फिर गुर्राना शुरू कर दिया था। हाथी रुक गया। लेकिन वहाँ से सिवाय झाड़ी के हिलने के शेर नहीं दिखायी दिया। मैंने हाथी को और बढ़वाया और शेर ने जोर की धाड़ मारते हुए हमला किया। हाथी दाहने तरफ भागा और बाल-बाल बच गया। शेर के सिर्फ दो नाखून हाथी के पिछले पैरों को नोचते हुए चले गये और फिर शेर गिर पड़ा। हाथी करीब ४० गज पर रुक गया। हम सब बुरी तरह से काँटों से नुच गये। खुशकिस्मती से शेर अपने ही दुःख से कराह रहा था और हमारा पीछा नहीं किया; नहीं तो कुछ-न-कुछ आफत लाजमी थी।

बड़े मियाँ की टोपी गिर गयी, पाजामा फट गया, हाथ-पैर और कान काफी काँटों से नुच गये और इसलिए वे बहुत ही खफा थे। हम चारों में कोई ऐसा न था जिसके जगह-ब-जगह से खून न निकल रहा हो। महावत के लड़के के सबसे ज्यादा खून निकल रहा था; क्योंकि वह सबसे आगे था। हाथी ने पीछे मुड़ने से बिलकुल इनकार कर दिया, क्योंकि शेर करीब ही में बोल रहा था और आगे बेलों व काँटों की

झाड़ी में फँसा हुआ था। हम सबके हवाश गुम थे और हालत देखने के काबिल थी। असलियत तो यह है कि शेर के शिकार का ऐसा लुत्फ़ आया कि कभी भूल नहीं सकता। लड़के ने अपने झोले से खुकरी निकाली और बेलों, काँटों और डालों को काटना शुरू किया। शेर इस कदर नजदीक काटने का शोर सुनकर बोलता हुआ पूरब की तरफ बढ़ा। हमने उसके पानी में चलने की आवाज करीब ५० कदम पर सुनी। मैंने हाथी की गद्दी पर खड़े होकर शेर की झलक नाले को पार करते हुए देखी और जल्दी और घबराहट में फैर किया, जोकि खाली गया। लड़के ने कहा कि यह नैपाल की सरहद पर नरकुल और दलदल में जा रहा है; जोकि नजदीक ही है। और मैं दक्खिन की तरफ से उसके आगे हाथी ले चलता हूँ। उस तरफ जंगल भी खुला है। उसने कहा कि मैं इस तरफ़ रोज चारा लेने आता हूँ और इस रक़बे को खूब जानता हूँ। मैंने कहा—बहुत अच्छा, जरूर आगे ले चलो। वह हाथी को पच्छिम की तरफ मोड़कर नरकुल और दलदल के सामने ला रहा था कि शेर भी बोलता हुआ करीब ६० कदम पर घनी झाड़ियों से सर झुकाये हुए निकला। उसका रुख नरकुल व दलदल की तरफ था। बन्दर भी खूब शोर मचा रहे थे। मैं चलते हुए शेर पर पेड़ों के बीच में हाथी पर से इतमीनान का निशाना न ले सका और लड़के से कहा कि हाथी बिठा दे, ताकि जमीन पर से इतमीनान की गोली चला सकूँ। हाथी मुश्किल से बैठा। शेर नरकुल के किनारे पहुँच चुका था। मैंने बैठे हुए हाथी पर से दो फैर जल्दी-जल्दी किये, जो खाली गये और शेर नरकुल में घुस गया, जोकि मैं नहीं चाहता था।

अब अँधेरा होना भी शुरू हो गया। मैंने रोजा खोला और मायूस होकर कैम्प वापस आये तो कमर के दर्द और काँटों से नुचे हुए जख्मों की तकलीफ का अन्दाज हुआ। बड़े मियाँ ने तमाम किस्सा नमक-मिर्च लगाकर अपने नवाब शिकारियों से कहा। वे मेरे पास आये और मालूम किया कि अब क्या इरादा है। मैंने कहा—सुबह उसको तलाश करूँगा। उन्होंने कहा कि एक हाथी हम अपना भी दे

देंगे और फिर दूसरे कैम्प को चले जावेंगे। मेरी रात बेचैनी से कटी और नींद भी कम आयी। सुबह एक नवाब शिकारी अपने हाथी पर और मैं अपने हाथी पर नरकुल व दलदल तक गये। बहुत शोर मचाया, पत्थर फेंके और कई फैर हवा में दागे। मगर कोई खटका न सुनायी दिया। महावत हाथी को नरकुल और दलदल में नहीं ले गया। हम और ज्यादा रंजीदा कैम्प को वापस आये। गुसल किया, कपड़े बदले और क्लास को काम पर ले गये। हमने शेर को ढूँढ़ने का ख़्याल छोड़ दिया। मिस्टर हक़ डिवीजनल फॉरेस्ट अफसर, जोकि दूसरे कैम्प में पड़ाव किये हुए थे, डाकवाले के जरिये यह वाक़िया सुना और तीसरे पहर को मोटर में आये। पूरा किस्सा सुनने के बाद उन्होंने कहा कि मैं मदद करूँगा। उन्होंने करीब १ दर्जन थारू नजदीक के गाँव से बुलाया और उनको फारेस्टर और फारेस्ट गॉर्ड के साथ नरकुल और दलदल के रकबे से पूरब भेजा; जोकि थोड़ा ही था। उन्होंने उनसे कहा कि पूरब से नरकुल में आग लगा दो।

वे मेरे साथ हाथी पर पच्छिम से उस रास्ते से खून देखते गये; जिस पर शेर गया था। उस जगह पर, जहाँ शेर देर तक जंगली काफी की झाड़ी में पिछली शाम को तड़पता और शोर मचाता रहा था, बहुत खून मिला। हमने ख़्याल किया कि शेर जरूर मर गया होगा। जब तक हम नरकुल और दलदल के पास पहुँचे, आग भी बड़े जोर से जलती हुई आ गयी, और एक रीछ निकल कर हमारे दाहने तरफ से भागा। मिस्टर हक़ हाथी पर सवार होकर उसके पीछे चले गये और मैं अपने अरदली के साथ वहाँ रह गया।

जब आग खत्म हो गयी, नरकुल के डंठल बगैर पत्तों के खड़े रह गये और काफी दूर तक दिखलायी देने लगा, तब मैंने अरदली से कहा कि देखो, अब काफी ठंडा और जाने के लायक हो गया या नहीं। मैंने देखा कि वह करीब २५ कदम के गया होगा और वहाँ से शेर-शेर कहता हुआ भागा। मैंने पूछा कि मरा हुआ है या जिन्दा। उसने कहा कि मैं ठीक नहीं कह सकता। मैंने सिर्फ़ उसका जिस्म नाले के अन्दर

देखा है। मैंने मिस्टर हक़ का इंतजार किया और उनके आने पर हम सब हाथी पर गये और शेर को नाले में पानी के अन्दर मरा हुआ और फूला हुआ पाया। पानी की वजह से वह जलने से बच गया था। वह शाम ही को मर गया था; क्योंकि पेट बहुत फूल गया था। उसमें काफी बदबू आने लगी थी। मैंने ग़ौर से देखा तो मेरी सिर्फ पहली गोली सर के पीछे के हिस्से में लगी थी; जिससे सर की हड्डी का एक टुकड़ा उड़ गया था, मगर भेजे की झिल्ली नहीं फटी थी और मेरे असिस्टेंट की लीथल गोली, ४ नम्बर के छर्रे; तमाम काग़ज और ऊन की डाटें दाहनी आँख और नाक के बीच में घुसकर सिर्फ एक इंच पर सब रक्खी हुई थीं और दिमाग फिर भी बच गया था; जिसकी तकलीफ से वह तड़पता और शोर मचाता था। वह ९ फीट ८ इंच का खूब तगड़ा नर शेर था। हाथी पर लादने और कैम्प में लाने से सिर्फ पेट के थोड़े से बाल निकल गये थे। फौरन खाल को निकाल कर और धोकर फिटकरी के तेज पानी में रात भर भिगो दिया गय और दूसरे दिन मुकाम टनकपुर कूच करके वहाँ खाल को साफ कराकर सुखाया। खाल बिगड़ने से बच गयी। यह मेरा दूसरे नम्बर का खतरे का तजुरबा था। अगर मिस्टर हक़ न आते तो यह शेर भी मैं खो चुका था।

५८. मेरा छब्बीसवाँ गुलदार

टनकपुर से मुझे क्लास को हल्द्वानी फ़ारेस्ट डिवीज़न में एक पड़ाव से दूसरे पड़ाव मार्च करते हुए और काम दिखलाते हुए नैनीताल और अल्मोड़ा फ़ारेस्ट डिवीज़न जाना था। मुकाम चोरगलिया के नजदीक क्लास को एक नरसरी बनाकर शीशम बोना था और वहाँ के घने शीशम के प्लान्टेशन में कमजोर पौधे निकाल कर घनावट को हलका करना था। इन कामों के लिए वहाँ एक हफ्ता ठहरना था। एक दिन सुबह के वक्त विद्यार्थी नरसरी बना रहे थे और मैं अपने असिस्टेंट और रेंज अफसर के साथ एक गिरे हुए पेड़ पर बैठा अख़बार पढ़ रहा

था। थोड़ी देर में गिद्ध सामने घास के रक़बे में जंगल के किनारे गिरने लगे। मैंने अरदली से कहा कि देखकर आओ, कौन-सा जानवर मरा है और क्यों मरा है? उसने वापस आकर कहा कि शेर ने एक नर नीलगाय कई रोज हुए मारा है। बहुत बदबू आ रही है, आधा खा गया है और गिद्ध पड़ रहे हैं। मैंने कहा कि तुम जाकर गिद्धों को उड़ा दो और वहीं बैठना। काम खत्म होने पर हम आवेंगे। मैंने उम्मीद की कि शाम को कुछ तमाशा देखने को शायद मिले; क्योंकि दिल बहलाने का यही जरिया और मेरे लिए सिनेमा था; जिससे मेरे ३८ बरस जंगल की नौकरी में बड़े ही लुत्फ़ से गुजरे।

दोपहर को काम बन्द करने के बाद हम तीनों वहाँ गये और देखा कि एक पूरे क़द का नर नीलगाय बड़ी घास में एक सूखे नाले के पास आधा खाया हुआ पड़ा था और रेत पर या तो छोटे शेर या पुराने गुलदार के पैरों के आने-जाने के निशान बने थे। मैंने काँटेदार झाड़ियों की डालें कटवाकर लाश को ढक दिया, ताकि गिद्ध न खा सकें और वापस चला आया। शाम को मैं मचान, दो आदमी और रस्सी व कुल्हाड़ी लेकर गया। वहाँ ५० कदम तक कोई पेड़ किसी तरफ मचान बाँधने के लायक न था। ३०-४० कदम पर एक आदमी के बराबर ऊँची दीमक की बामी थी। मैंने उसकी चोटी को गिराकर बैठने के लायक हमवार किया। उस पर घास व पत्तों की एक तह रक्खी; ताकि गद्दी का काम दे और साँप वग़ैरह को सूराखों के जरिये नीचे से आने से रोके। दो पत्तीदार डालें बामी से ऊँची, उसके दाहने व बायें गड़वा दीं; जिससे मैं छिप गया। बैठने के बाद मैंने लाश को घास के बाहर बालू में निकलवा लिया। अपने आदमियों को मैं मचान से वापस कर दिया और कह दिया कि अँधेरा होने से पहले लालटेन लेकर आ जावें और जब तक मैं सीटी दूँ, नरसरी में बैठें। लाश को खुली हुई देखकर गिद्ध, जो सुबह से आस-पास के पेड़ों पर बैठे हुए इन्तजार कर रहे थे, आ गये और थोड़ी देर में खत्म करके हड्डियाँ और खाल छोड़कर अँधेरे से पहले उड़ गये। मौका तो बहुत कम था, मगर मैं बामी पर

बमुकाबले मचान के ज्यादा आराम से बैठा रहा। पैर टेकने के लिए भी मैंने जगह बना ली थी। कोई खटका किसी तरफ से गुलदार की मौजूदगी का नहीं हुआ। अँधेरा हो गया, मगर हल्की रोशनी ४-५ दिन के चाँद की थी।

छपका चिड़ियों ने अपना मनहूस गीत शुरू किया। नीलगाय की हड्डियाँ और खाल सफेद बालू पर काला ढेर-सा मालूम होता था। रोशनी नये चाँद की बहुत कमजोर थी। मैं सीटी देनेवाला ही था कि मुझे हड्डियाँ घसीटने की कुछ आवाज सुनायी दी। मैंने गौर से देखा तो ऐसा मालूम हुआ कि गीदड़ हड्डियों को घास की तरफ घसीटने की कोशिश कर रहा है। मैंने ख्याल किया कि जो कुछ भी हो अब और देर तक नहीं बैठना है। एक फैर दाग कर चलें। मैंने निशाना जमाने की कोशिश की, लेकिन अगला मसा बिलकुल नहीं दिखलायी दिया। मैं इतमीनान का निशाना न जमा सका। मैं राइफल का पिछला और अगला मसा चाँद के ऊपर जमाकर राइफल को उसी हालत में झुकाता गया और उस जानवर के ऊपर उल्टा-सीधा जमाकर फायर कर दिया। वह शेर और गुलदार की तरह से आवाज करता हुआ घास में भागा। मैंने फौरन ही दूसरा फैर घास में भागने की आवाज पर किया; जोकि शायद खाली गया और वह करीब ६० गज दूर जाकर गिर गया। वह कुछ देर तक गुर्राया फिर उसने दो मर्त्तबा कै की। इसके बाद वह ऐसी साँस लेता रहा जैसे कि गले में कुछ अटका-सा हो। फिर कुछ तड़पने की आवाज आयी और बाद में खामोशी हो गयी। ऊपर के हालात से मुझे यकीन हो गया कि जो कुछ भी हो, मगर मर जरूर गया है। मैंने थोड़ी देर और बैठने के बाद अपने आदमी को आवाज दी, जोकि लालटेन लेकर आया और हम कैम्प को चले गये। दूसरे दिन सुबह हम वहाँ गये और फिर वे ही पैरों के निशान देखे। हमने खून की धार के निशान और उसमें फेफड़े के टुकड़े भी देखे। हम कुछ दूर गये। मगर घास बहुत घनी थी और आगे कुछ नहीं दिखलायी देता था। मैंने एक लम्बा बाँस कटवाया और खून के निशान

के दोनों तरफ घास दबाते हुए तैयार राइफल लिये हुए आगे बढ़े। हमें एक मरा हुआ गुलदार मिला; जोकि शाम ही को मर कर अकड़ गया था। वह एक बूढ़ा नर था; जिसका रंग सफेदी माईल हो चला था और दाँत घिसे हुए मैले थे। वह ७ फीट १० इंच का था।

---

५६. मेरा सत्ताइसवाँ गुलदार

जून सन् १९३० ई० में मेरा तबादला गोरखपुर बतौर डिवीजनल फारेस्ट अफसर के हुआ। वहाँ पहुँचकर मैंने एक सरसरी दौरा कुल डिवीजन का वहाँ के हालात, जंगल, सड़कों और निकासी के जराये और जो काम हो रहे थे, उनकी जाँच करने की गरज से किया; ताकि १५ जुलाई तक सालाना नीलाम करने के वक्त तक हेड कार्टर पर पहुँच जाऊँ। एक उत्तरी रेंज में मैं एक दिन सुबह रेंज अफसर के साथ वहाँ के एक जमींदार से सरहदी झगड़ा तय करने को गया। जब हम दोपहर को करीब आधा दरजन आदमियों के साथ घोड़ों पर वापस आ रहे थे, मैंने एक छोटा जानवर सड़क पर बँगले की तरफ से, जोकि वहाँ से करीब १ मील के था, आते देखा। जब वह काफ़ी नजदीक आ गया तो हमने पहचाना कि गुलदार है। गो दोपहर के वक्त गुलदार का धूप में सड़क पर घूमना ग़ैरमामूल था।

मैंने घोड़े से उतर कर अपना भरोसे का राइफल ३६६ बोर अरदली से लिया और घोड़ा अरदली को देकर सबसे कहा कि वहीं खड़े रहें। मैं सड़क पर उसकी तरफ बढ़ा। जब गुलदार करीब ३०-४० कदम के रह गया तो वह जरा ठहरा और फिर साल के जंगल में बायीं तरफ चला गया। सड़क १५ फीट चौड़ी और साफ थी और दोनों तरफ घने साल के जंगल थे। मैं राइफल तैयार किये हुए पंजों के बल तेजी से बढ़ा और जिस जगह वह जंगल में घुसा था, गौर से

देखता रहा। गुलदार सड़क से करीब २० कदम पर खड़ा हुआ मुँह मोड़े सड़क की तरफ देख रहा था। मैं ठहरा और बगल पर निशाना लेकर गोली मारी, वह वहीं गिर गया। मैंने आदमियों को बुलाया और सब लोग उसी वक्त उसको बँगले पर ले आये। वह औसत दरजे की ६ फीट ८ इञ्च की मादीन थी।

---

६०. मेरा अट्ठाइसवाँ गुलदार

मैं दौरा खत्म करके गोरखपुर हेड कार्टर की तरफ वापस आ रहा था और हर कैम्प में सिर्फ रात भर ठहरता था। मैं इस कैम्प में दोपहर को पहुँचा। शाम को मैं घूमने के लिए जाने को तैयार हो रहा था कि बन्दर और चीतलों ने खतरे की आवाजें बँगले से एक या दो फरलाँग पर नाले की तरफ घने जंगल में देना शुरू कीं। मैं बँगले के चौकीदार की बकरी, राइफल, मचान और दो आदमी लेकर गया। जब उस जगह पर पहुँचा, जहाँ बन्दर अब भी बोल रहे थे, मैं जब मचान बाँधने के लायक पेड़ तलाश कर रहा था कि बकरी सामने बाँध कर बैठूँ तो मुझे मरा हुआ एक सुअर मिला; जिसका पेट फूला हुआ था। खून ३-४ जगह से निकल रहा था; जहाँ पर गर्राब के सूराख थे और थोड़ा-सा ताजा गुलदार ने भी खाया था। गुलदार के पैर के निशान बने हुए थे। उसको शायद किसी खेतवाले ने रात को गर्राब मारे थे और वह यहाँ तक आकर मर गया। इत्तफाक से गुलदार उस तरफ निकल पड़ा और यह सुअर मिल गया। जंगल की सरहद और खेत वहाँ से दिखलायी दे रहे थे। यह देखकर मैंने ख़्याल किया कि गुलदार अपनी पूरी खूराक खाने थोड़ी ही देर में जरूर आवेगा। गुलदार बमुकाबला शेर के ज़्यादा निडर होता है। मैं वहीं एक पेड़ पर मचान बाँधकर बैठ गया और मचान को खूब ढक लिया। मैंने अरदली से कहा कि बकरी को वापस

ले जाओ और तुम दोनों यहाँ से खूब बोलते हुए और यह कहते हुए बँगले तक जाओ कि आओ चलें, आओ चलें; ताकि गुलदार यह समझे कि सब लोग चले गये, मैदान खाली है और जल्दी से आ जावे। लेकिन उसने शायद हमारी सब कार्रवाइयाँ देख लीं; क्योंकि अव्वल तो वह बहुत देर में आया, दूसरे बहुत होशियारी से शक करता हुआ और मचान की तरफ देखता हुआ आया। मचान अच्छी तरह से ढका हुआ था; मगर उसने मुझे देख लिया और करीब ५० कदम पर खड़ा हो गया। मैंने ख्याल किया कि अब यह भागनेवाला है, लिहाजा मैंने फैर कर दिया और गुलदार गिर गया। यह भी ५ फीट ५ इञ्च की मामूली मादीन थी और मुझे मादीन मारने से नफरत हो गयी।

६१. मेरा उन्तीसवाँ गुलदार

जनवरी सन् १९३० ई० में मेरा तबादला चकराता फारेस्ट डिवीजन के चार्ज में हुआ। चकराता फारेस्ट डिवीजन के ऊपर के हिस्से सतह समुन्दर से ६ हजार से १० हजार फीट की ऊँचाई के हर साल अप्रैल तक बरफ से ढके रहते हैं। जाड़ों में ६ महीने डिवीजनल फारेस्ट अफसर और उसका दफ्तर कालसी, जमुना के किनारे हिमालिया के दामन में और अप्रैल १५ से अक्तूबर १५ तक चकराता हेड कार्टर रहता है। कालसी में जमुना नदी से पहाड़ तक चौथाई मील से आध मील तक चौड़ी पट्टी करीब - करीब हमवार जंगल की है। कालसी हेड कार्टर के सामने उत्तर की तरफ चकराता जानेवाली मोटर की सड़क और फिर ऊँचे पहाड़ हैं। दक्खिन में जमुना नदी, उस पर झूले का पुल और नदी के बाद घने साल के जंगल हैं। वहाँ की सीनरी बहुत खूबसूरत और आब-व-हवा बहुत अच्छी है। मैं रोज शाम को पहाड़ की जड़ के साथ-साथ बँगले के पूरब और पच्छिम घूमने जाया करता था। मैंने चन्द ही दिनों में कई मील बँगले के दोनों तरफ देख लिया। उसमें कुत्ते की मदद से रोज मोर, मुर्गी और पहाड़ी मुर्ग मिल जाते थे।

रात को रोजाना गुलदार जंगलात के आहाते का चक्कर लगाते। हमारे आहाते में करीब ३० आदमी और चन्द मय बाल-बच्चों के थे; जिनके पास कुत्ते, गायें और बकरियाँ थीं। गुलदार कभी-कभी इन जानवरों में से एक-आध मार लिया करता था। गुलदार के पैर रोज मोटर-सड़क पर मिलते थे; जिस पर रात को वह हर रोज जरूर घूमते थे। गुलदार ने मेरे वहाँ आने के पहले ही हफ्ते में मेहतर का कुत्ता और मेरे कैम्प क्लर्क की गाय मारी। मैं गाय की लाश के पास बैठा; जोकि हमारे आहाते के किनारे पर ही थी। मगर गुलदार दिन में नहीं आया।

हमारे कालसी के बँगले से करीब एक मील के फासले पर पहाड़ और जमुना नदी के बीच के हमवार जंगल में जाड़ों में कुछ गूजर ५०-६० भैंस के साथ रहते थे। वे ही लोग हमारे अमले को दूध, घी, दही बेचने रोज आते थे। एक दिन एक गूजर ने आकर कहा कि रात को हमारे एक पड्डे को गुलदार ने मार डाला है और अक्सर मारता ही रहता है। अगर उसको मार दें तो बड़ी मेहरबानी होगी। देहरादून के सुपरिन्टेन्डेंट पुलिस भी दौरे पर आये हुए थे और मेरे ही साथ मय अपनी मेम साहबा के ठहरे हुए थे। हम सब उस वक्त बरामदे में बैठे थे। मैंने उनसे पूछा कि अगर वह बैठना चाहें तो बैठ सकते हैं। थोड़ी देर वह सोचते रहे और फिर कहा कि हमको शिकार का शौक नहीं है। लेकिन इस शर्त पर किस्मत आजमाई करेंगे कि अगर मार लें तो दस रुपये फीस के दें। मैंने कहा कि कायदा यह है कि पहले फीस दीजिए और फिर कोशिश कीजिए। चाहे मिले या न मिले। उन्होंने कहा कि हमारा कल कूच है। हम नहीं बैठेंगे। मैं गूजर के साथ गया और अपना हल्का मचान एक पेड़ में पहाड़ की तेज ढाल पर बाँधा। लाश वहीं घनी झाड़ियों में थी। गूजर और हमारे आदमी बातें करते हुए अपने पड़ाव पर, जोकि वहाँ से करीब एक फरलांग के था, पहुँचे ही होंगे कि उनकी आवाजें आना बन्द हुई। मैंने देखा कि एक गुलदार नीचे से इधर-उधर देखता हुआ आहिस्ता-आहिस्ता आ रहा था और उसके पीछे दूसरा गुलदार पहले से बड़ा आ रहा था। दोनों लाश से २५ कदम पर

ठहर गये; जोकि मुझसे इतने ही फासले पर थी। वे थोड़ी देर बैठे चारों तरफ देखते रहे। जब हर तरफ खामोशी पायी, सिवाय गूजर के पड़ाव की तरफ, जहाँ से जानवरों के घंटे और कभी आदमियों के बोलने की आवाज आती थी, तो मादीन उठी और नर उससे दस कदम पीछे-पीछे आया। लाश पर पहुँचकर मादीन ने फिर इधर-उधर देखने के बाद लाश को सूँघा और लौट दिया। इतने में नर भी वहाँ पहुँच गया।

जब मादीन ने खाना शुरू किया तब मैंने ३६६ बोर राइफल से इतमीनान का निशाना नर की बगल में लेकर फैर किया और वह वहीं गिर गया। मादीन उछली और भाग गयी। मैंने सीटी दी और मेरे आदमी और गूजर आये। मैं मचान से उतरा और निहायत अच्छा नर गुलदार जरा देर में मिलने से बहुत खुश हुआ। गूजर लोग अँधेरा होने से पहले दुश्मन के मारे जाने की खुशी में गुलदार को बँगले पर ले आये। वह साढ़े सात फीट का खूब तंदुरुस्त नर गुलदार था। सुपरिन्टेन्डेंट पुलिस मय मेम साहबा के टहलने गये थे। वापसी पर आकर देखा, जबकि गुलदार की खाल निकाली जा रही थी। उन्होंने अफसोस किया कि मैंने क्यों न मौके को लिया। मैंने कहा कि पड्डा अभी आधे से ज्यादा पड़ा है और मादीन उसको रात में जरूर खावेगी। इस तरह कल शाम को फिर मौका देगी। उन्होंने कहा कि अब उसके सामने बन्दूक दग चुकी है। उम्मीद आने की कम है।

मैंने कालसी में ३ बरस के कयाम में ४ गुलदार और बगैर किसी इन्तजाम के ऐसे ही जानवरों की लाशों पर और एक जिंदा कुत्ता बाँध कर मारे और कुत्ते को भी बचा लाये।

६२. शाम को बच्चों के साथ टहलते वक्त मेरा तीसवाँ गुलदार

एक दिन शाम को मैं दो छोटे बच्चों को और अर्दली को साथ लेकर पहाड़ और जमुना के दरमियान पूरबी सरहदी लाइन पर मोर, मुर्गी के लिए टहलने गया। हमारा धोबी, जोकि सामने से दिन भर काम करके वापस आ रहा था, उसने कहा कि सुबह के वक्त गुलदार ने यहाँ से एक फरलाँग ऊपर पुराने खेतों में एक टट्टू मारा है। मैंने उस तरफ देखा तो गिद्ध पेड़ों पर जमा हो रहे थे। हम उस तरफ गये, ताकि दूसरे दिन मचान बाँधकर बैठने का मौका देखें। जब थोड़ी चढ़ाई खत्म हो गयी और पुराने खेतों का मैदान और झाड़ियाँ शुरू हुई तो मैंने देखा कि करीब ६० गज पर जमीन पर बहुत-से गिद्ध बैठे हुए थे। मैंने गौर से देखा तो एक गुलदार खड़ा हुआ मेरी तरफ़ पूँछ किये हुए लाश को नोच रहा था। मैंने अपने अरदली से कहा कि बच्चों को लेकर यहीं बैठ जाओ और मैं राइफल लेकर करीब १५ कदम झाड़ियों की आड़ लेकर और बढ़ा। गिद्धों ने मुझे देख लिया और वे भागने व उड़ने लगे। क्योंकि गुलदार सर उठाकर चारों तरफ शक की निगाह से देखने लगा था, लिहाजा मैं एक झाड़ी की आड़ में बैठ गया। मैंने इतमीनान का निशाना सर के नीचे सीने पर लेकर फैर किया। गुलदार आवाज देकर कूदा और पूरब की तरफ भागा, फिर पहले ही नाले में करीब ३० कदम पर गिर गया। वह ७ फीट ७ इंच का नर था।

६३. मेरा इकतीसवाँ गुलदार

मेरे कन्सरवेटर मस्टर हर्बर्ट आई० एफ़० एस० सालाना दौरे पर आये हुए थे और हम डिवीजन में १५ दिन से दौरा कर रहे थे। वापसी पर हम एक दिन मई सन् १९३१ ई० में मुकाम मंडाली पहुँचे; जोकि सतह समुन्दर से आठ हजार फीट की ऊँचाई पर था और काफी ठंडा

Plate No. VIII.



Panther shot with children in evening walk.

था। वहाँ दो बँगले थे; एक डिवीजन का और दूसरा उससे ५० कदम पर थोड़ा नीचे देहरादून फारेस्ट कालेज का। कन्सरवेटर ऊपर के और मैं नीचे के बँगले में ठहरे।

तमाम आहाते में छोलदारियाँ लगी हुई थीं। ४८ खच्चर, २१ कैम्प क्लर्क, अरदली, खलासी, डाकवाले, मेहतर और धोबी ठहरे हुए थे। हर तरफ आग जल रही थी और काफी शोर व रौल-चौल थी। कोहरे की वजह से काफी अँधेरा था। दूसरे दिन हमको चकराता कूच करना था, लिहाजा हमने अपना सिर्फ जरूरी सामान खोला था। शाम को करीब ८ बजे मैं बँगले की अँगीठी के सामने कैम्प क्लर्क के साथ दफ्तर का काम कर रहा था और हवा व सर्दी की वजह से दरवाजे बंद कर रखे थे। बावजूद इतने आदमियों और रोशनी के एक गुलदार आहाते में आकर कई जगह पर बोला। मेरे दो इस्पेनियल कुत्ते गुलदार की आवाज इस कदर करीब सुनकर भूँकने लगे। नौकरों ने शोर मचाया। गुलदार का बोलना बन्द हो गया। करीब एक घंटे के बाद जब पेशकार चले गये तो मैंने कुत्ते खोल दिये और खाना माँगा। दरवाजे खुले और गुलदार फिर पहले से बहुत नजदीक बँगले के सामने बोला। दोनों कुत्ते बाहर निकल गये और बड़ी मुश्किल से वापस आये। मैंने दोनों को बाँधकर संदूक खोलकर ३६६ बोर राइफल, ३ कारतूस और टार्च निकाले; जिसमें १०-१५ मिनट लग गये होंगे।

मैं बरामदे में गया और दो सेल की टार्च से देखा। मगर कोहरे की वजह से कुछ नहीं दिखलायी दिया। मैंने कमरे के अन्दर आकर किवाड़ बन्द किये और खाने के लिए बैठा ही था कि गुलदार फिर बोला। जिस तरफ वह बोल रहा था, मैंने गौर से रोशनी उस तरफ डाली तो कोहरे की वजह से दो धुँधली आँखें करीब ६० कदम पर एक ऊँचे टीले पर, जिसको बराबर करके डेरे लगाने के लिए जगह वाइसराय के दौरे में बनायी गयी थी और अब उस पर हल्की घास और झाड़ियाँ थीं, उस पर दिखलायी दीं। मुझे मालूम था कि उस पर कोई नहीं ठहरा है। मैंने बरामदे के पीलपाये के सहारे से खड़े होकर

बहुत इतमीनान का निशाना लेकर फैर किया। आँखों की रोशनी बन्द हो गयी। मैंने फिर रोशनी डाली तो वही दोनों धुँधली आँखें इस मर्तबा टीले के नीचे चमकीं। मैंने सीढ़ियों पर बैठकर एक इतमीनान का फैर और किया। रोशनी फिर बन्द हो गयी और फिर इसके बाद नहीं दिखलायी दी। ३६६ बोर राइफल की दो फैर फौरन एक के बाद दूसरे ने रात की खामोशी में तमाम आहाते और पहाड़ को गुँजा दिया। हमारे तमाम खच्चर बोलने लगे और कंसवेटर साहब ने अपने बँगले के बरामदे में खड़े होकर, जोकि मेरे बँगले से ५० गज ऊँचे पर उसी आहाते में था, तेज टार्च की रोशनी मेरी तरफ डाली। उन्होंने पूछा कि क्या मामला है ? मैंने कहा कि एक गुलदार देर से मेरे कुत्तों के पीछे पड़ा हुआ था, मैंने उसको डराया हैं। उन्होंने कहा कि उसकी तरफ हरगिज न जाना और फौरन अन्दर जाओ। मैं खाना खाया और सो रहा। मैं हमेशा सूरज निकलने से पहले कसरत करके नहा-धोकर कपड़े पहन कर तैयार हो जाता था। दूसरे दिन सुबह मैं चाय पी रहा था तो मेज के पास राइफल खड़ा देखा और रात का किस्सा याद आ गया। चाय पीने के बाद मैं राइफल उठाकर टीले की तरफ चल दिया। कुत्ते मेरे साथ हो लिये। राइफल की मेगजीन में एक कारतूस बाकी था। टीले के नीचे बहुत खून जम गया था और लोटने-पोटने के काफी निशान थे। कुत्ते जमीन सूँघते हुए आगे दौड़े और मैं उनके पीछे दौड़ता हुआ ४ फीट चौड़ी एक पगडंडी पर गया ; जोकि वहाँ से करीब ३० कदम पर दो सड़कों में फटी थी। एक नीचे जाती थी और दूसरी पहाड़ की धार पर बराबरी में जाती थी। कुत्ते नीचे वाली पगडंडी पर उतर गये। मैं वहाँ चारों तरफ देखने लगा। मैंने देखा कि गुलदार मुझसे करीब २० कदम पर बिलकुल खुले में पगडंडी ही के ऊपर मेरी तरफ पूँछ किये हुए मुँह मोड़कर देख रहा था। उसकी गर्दन खून से भरी हुई और फूली हुई थी। मैंने फौरन ही बगल पर निशाना लेकर फैर किया और गुलदार सड़क पर तड़पने लगा। कुत्ते दौड़ आये और भूँकने लगे।

कंसरवेटर साहब फिर रात के कपड़ों में बाहर निकल आये और पूछा कि क्या मामला है; तुम कल रात से फैर कर रहे हो। मैंने कहा कि अब मैंने उसको मार लिया है। वह भी वहाँ आ गये। हमने देखा तो पहली रात की एक गोली उसकी बायीं आँख के नीचे गाल पर पड़ी थी और सिर्फ खाल में होकर गरदन के रग व पुट्ठों को गहरी काटती हुई निकल गयी थी। उसने काफी बड़ा सूराख कर दिया था। मगर गर्दन की हड्डी बच गयी थी। शायद वह उस वक्त बायीं तरफ मुँह मोड़कर मुझे देख रहा था। वह गर्दन की तकलीफ की वजह से ३० कदम से ज्यादा न जा सका और रात भर वहीं तेज हवा और जाड़े में बैठा रहा। वह निहायत तन्दुरुस्त और खुबसूरत खालवाला ७ फीट ८ इंच का नर गुलदार था।

---

६४. बगैर इन्तजाम मगर काफी खतरे में मेरी नवीं शेरनी

चकराता फॉरेस्ट डिवीजन का इलाका जमुना नदी के किनारों से ५ मील दोनों तरफ सहारनपुर अम्बाला जिले में होते हुए देहली तक था। चकराता डिवीजन और पहाड़ी रियासतों की लकड़ी, जो जमुना और टोन्स नदियों में होकर १५ से २० लाख की तादाद में सिलीपर और कड़ियों की शक्ल में सालाना निकासी की जाती थी और उसका निकलवाना और निगरानी का इन्तजाम चकराता डिवीजन के चार्ज में था, जिस पर बहुत काफ़ी महसूल लिया जाता था, इसके इन्तजाम के लिए बड़ा अमला मुकर्रर था और रास्ते के शहरों और कस्बों में कई जगह डीपू थे। डिवीजनल फारेस्ट अफसर को जाड़ों में एक-दो दौरे इस तरफ निगरानी व जाँच के लिए लगाने पड़ते थे। लिहाजा मैं पड़ाव से पड़ाव सहारनपुर डिवीजन में होकर इस दौरे से वापस आ रहा था। रायबहादुर मिस्टर मथुराप्रसाद भोला, जिनका मैं फारेस्ट ट्रेनिंग स्कूल में असिस्टेंट था, इस डिवीजन के चार्ज में थे और

इत्तफाक से बादशाही बाग के बँगले में रात भर के लिए हम दोनों का साथ हो गया। मिस्टर भोला सुबह दूसरे पड़ाव को चले गये और मुझे वहाँ दो दिन का काम था। दोपहर के बाद मैं एक डीपू की जाँच-पड़ताल करके वापस आया और खाना खाकर तीसरे पहर दफ्तर का काम कर रहा था कि एक आदमी बँगले के आहाते में आकर शोर मचाने लगा। मैंने बुलाया और पूछा कि क्या बात है? उसने कहा कि उसकी गाय को शेर ने मार डाला है। जब वह रात को घर वापस नहीं आयी तो वह उसको ढूँढ़ने गया। शेर ने उस पर हमला किया और वह बाल-बाल बच गया। मैंने कहा—तो मैं क्या कर सकता हूँ? तुमने गाय को क्यों छोड़ दिया? उसने बड़ी हकदारी से जवाब दिया कि छोड़ नहीं दिया, बल्कि मैं ५० गायों के चरने का महसूल जंगलात को देता हूँ। जानवर जंगल में चरने को ग्वाले की निगरानी में रोज जाते हैं और उनको कभी-कभी शेर मार डालता है। या तो गवर्नमेन्ट मेरी गाय का सौ रुपया नुकसान का मुआविजा दे; क्योंकि उसकी गाय बच्चा देनेवाली थी और अच्छे किस्म की दूध की गाय थी, और या फिर हम लोगों को इन जानवरों के मारने की आम इजाजत दे, कि हम जिस तरह से चाहें इनको मार डालें। मैंने कहा कि तुम्हारे डिवीजनल अफसर मिस्टर भोला हैं। मैं सिर्फ इतना कर सकता हूँ कि अगर वह जगह नजदीक है और तुम मुझे ले चलो तो मैं उसको मारने की कोशिश कर सकता हूँ।

उसने कहा कि वह जगह यहाँ से करीब दो मील के है और वह साथ चलेगा। मैं कपड़े बदलकर तैयार हो गया और ३६६ बोर राइफल, ५ कारतूस और अरदली को लेकर घोड़ी पर रवाना हो गया। जब हम पूरे तीन मील चकराता वाली पक्की मोटर सड़क पर चल चुके तो मैंने पूछा कि अब कितनी दूर है, तो उसने जवाब दिया कि थोड़ी दूर और है। हम सड़क छोड़कर एक चौड़े नाले में उतर गये; जिसके किनारे होकर दूर तक सड़क जाती थी। यह नाला ज्यादातर सूखा और चौथाई मील चौड़ा था। इसके पार ऊँचे पहाड़ और घने जंगल थे। मैंने फिर

पूछा कि अब कितनी दूर और किस तरफ है। उसने कहा—यहाँ से आधा मील जंगल में टूटे हुए पहाड़ पर है। मुझे गुस्सा मालूम हुआ और वापसी का इरादा किया। क्योंकि करीब साढ़े तीन मील के आ चुके थे और सूरज डूबनेवाला था। गर इतनी दूर चलकर और वक्त जाया करके बगैर मौका देखे वापसी को जी भी न चाहा। पहाड़ पर घोड़ी बिलकुल नहीं जा सकती थी और न कोई रास्ता या पगडंडी ही थी। मैंने अरदली को घोड़ी के साथ खुले हुए सूखे नाले के मैदान में छोड़ा। गो वह मजबूत गढ़वाली था, मगर वह अकेले डरने लगा। वह कहने लगा कि घोड़ी को देखकर कोई शेर या गुलदार इधर से शाम का वक्त है, अगर निकला तो जरूर आवेगा और मेरे पास कोई हथियार नहीं है।

मैंने कहा कि ये जानवर बिला वजह आदमी की मौजूदगी में हमला नहीं करते हैं। अगर आ भी जावे तो शोर मचा देना। वह भाग जावेगा और मैं भी आ जाऊँगा। गाँववाले को लेकर मैं पहाड़ पर चला और कई नाले पार किये। घने जंगल में वह बेतुक ऊपर ही चढ़ता चला जाता था। मैंने कहा कि अब करीब आधा मील के आ चुके। सूरज डूब रहा है, क्या अँधेरे से पहले वहाँ पहुँच सकेंगे? नहीं तो बेकार है। दम फूल रहा था। उसने आगे टूटे हुए पहाड़ की तरफ इशारा किया और कहा कि उस बड़ी घास में आज सुबह शेर ने मेरे ऊपर हमला किया था। वह आगे जाने से झिझका।

मैंने कहा कि अब तुम मेरे पीछे-पीछे आओ और इशारे से मुझे वह सिम्त बतलाते रहो। जिस तरफ लाश है। उस पुराने टूटे हुए पहाड़ में करीब १५-२० एकड़ के रकबे में आदमी से ऊँची घास थी, कोई पेड़ न था। मगर थोड़ी-थोड़ी दूर पर इस नयी और नरम बालूवाली मिट्टी में ५-६ फीट गहरे और उसी कदर चौड़े नाले थे; जिनका पार करना हर जगह मुश्किल था। उसके इशारों से मुझे ऐसा अन्दाज हुआ कि अभी लाश ५० कदम के करीब है। उस घास के करीब तीन तरफ सीधे और ऊँचे पहाड़ थे; जिन पर कोई नहीं चढ़ सकता था।

सिर्फ पूरब और दक्खिन की तरफ जिधर से हम आये थे, नीचे की तरफ ढाल था। गाँववाले के इशारों से मुझे अन्दाज हुआ कि अभी लाश करीब ५० कदम के दूर है। मैं लापरवाई से चल रहा था कि यकायक सामने १०-१५ ही कदम से आवाज देकर शेर कूदा और एक झलकी देकर उत्तर की तरफ भागा। वह ऊँची घास में गायब हो गया। उस तरफ ६०-७० कदम पर ऊँचा तेज ढालवाला पहाड़ था; जिस पर चढ़ना मुश्किल था। लाश के पास से चन्द कौए उड़े। लाश के पास पहुँचकर देखा कि गाय बड़ी थी। दो पिछली टाँगें शेर खा गया था और एक पूरे दिन का बच्चा थोड़ा ताजा खाया हुआ पड़ा था। शेर लाश के उत्तर गया था और मेरा ख्याल था कि शेर उसी बड़ी घास में है; जोकि करीब १० एकड़ के थी और उम्मीद थी कि उसी तरफ से जल्दी फिर खाने को आवेगा। लाश के दक्खिन तरफ करीब १० कदम पर १० फीट चौड़ा और ६ फीट गहरा नाला था। मैं उस नाले के दक्खिन तरफ आकर एक झाड़ी के पीछे गिरे हुए पहाड़ के ढाल पर बैठ गया। पहाड़ पच्छिम और उत्तर से दक्खिन और पूरब की तरफ ढालू था। मैंने ख्याल किया कि शेर उत्तर से आवेगा, जिधर कि वह गया था और चूँकि मेरे और लाश के दरमियान में काफी गहरा नाला था, लिहाजा मैं महफूज हूँ। लाश भी करीब २० कदम पर अच्छी तरह से दिखलायी दे रही थी। शेर के हमले के लिए नाला रुकावट दे रहा था; जिससे मुझे उम्मीद थी कि अगर जख्मी होकर उसने हमला भी किया तो दूसरी गोली और चला सकूँगा। मैंने गाय-वाले से कहा कि तुम मेरे पीछे २५ कदम पर खामोश बैठ जाओ। मगर चूँकि वहाँ कोई पेड़ नहीं था, लिहाजा उसने कहा कि मैं घोड़ी के पास बैठूँगा। मैंने कोई जवाब नहीं दिया और वह चला गया।

जब अँधेरा होने लगा तब मैंने इरादा किया कि अब वापस जाना चाहिए। मगर उसी वक्त मैंने अपने चन्द कदम पीछे किसी नरम पैर-वाले जानवर की आती हुई आहट सुनी। मैं दम रोके हुए खामोश आहट ले रहा था, मगर मुझे खतरा मालूम होने लगा। मेरे रोंगटे खड़े

हो गये। हल्का जाड़ा लगने लगा और दिल धड़कने लगा। मुझे अन्दाज हुआ कि कोई भारी जानवर मेरे टोप के ऊपर खड़ा साँसें ले रहा है। अब बर्दाश्त न हो सका और मैं एकदम से बड़े जोर की लुहा-लुहा की आवाज करके कूदा और फौरन पीछे मुड़कर देखा कि शेर भी उसी वक्त आवाज देकर मुड़ा और ऊपर की तरफ भागा। मैं नीचे की तरफ टूटे हुए पहाड़ की नरम बालूवाली जमीन और घास में भागा। खैरियत हुई कि कोई नाला रास्ते में नहीं पड़ा। जब जंगल के किनारे पहुँचा तब होश आया और सँभलकर घोड़ी के पास बड़े नाले में पहुँचा। शेर ने मुझे पूरब से आते देखा था, लिहाजा उसने वह सिम्त छोड़ दी थी। मैंने उसको पच्छिम-उत्तर की तरफ भागते देखा था, लिहाजा मैंने वह सिम्त छोड़ दी और अपने-अपने हिसाब से दोनों ने बड़ी समझ और अक्लमन्दी से दक्खिन की तरफ को जाना मुनासिब समझा। दोनों बाल-बाल बच गये, नहीं तो मुठभेड़ तो हो ही चुकी थी। दूसरे दिन सुबह मैं अँधेरे आधा दर्जन आदमी लेकर आया। मैं उत्तर की तरफ पहाड़ की एक ऊँची धार पर बैठ गया और नीचे से हँकुआ कराया। मगर शेर नहीं निकला। मुझे उम्मीद थी कि शेर सुबह का खाना खाते हुए फँस जावेगा, मगर न मालूम किधर निकल गया। शेर ने रात को खाया था। वह बच्चे को पूरा खा गया था और लाश को कुछ दूर उत्तर की तरफ नाले के पास और घसीट ले गया था; जहाँ पर एक छोटा पेड़ अकेला घनी घास में खड़ा था। उसमें ३ कल्ले आदमी के हाथ के बराबर मोटे जमीन के पास से निकले थे। मैंने सोचा कि उसके ऊपर जमीन से ४ फीट पर बैठने का इन्तजाम हो सकता है; जोकि जमीन पर बैठने की बनिस्बत ऊँचा ही होगा और लाश भी साफ़ दिखलायी देगी। लाश के और उस पौधे के दरमियान दो नाले ५-६ फीट गहरे और उसी कदर चौड़े थे। मैंने शाम को बैठने का इरादा किया और वापस चला आया।

शाम को करीब साढ़े ३ बजे मैं रवाना हुआ और वहाँ पहुँचकर मैंने दो लकड़ियाँ दो कल्लों में दोनों तरफ से छाती बराबर ऊँचाई पर बाँधीं

और उसके ऊपर कुर्सी की गद्दी रखकर बैठ गया। मैंने अपने पैरों को तीसरे कल्ले से सहारा दे लिया। मैंने उम्मीद की थी कि शेर पच्छिम व दक्खिन की तरफ से आवेगा, जिस तरफ से वह पिछली शाम को आया था और अच्छा मौका देगा। मैंने यह न ख्याल किया कि शेर ने शाम को मुझे इस तरफ देख लिया था और उस तरफ से नहीं आवेगा। मैंने अपने दोनों आदमियों से कहा कि तुम पूरब तरफ सौ कदम पर किसी पेड़ या पहाड़ पर जाकर बैठ जाओ और जब मैं सीटी दूँ तब आना या जब फैर हो तब आना। मैं आधा घंटा बैठा हूँगा कि दो लकड़ियों में से एक लकड़ी, जिन पर मैं बैठा था, करीब ४ इन्च के नीचे खिसक गयी। लिहाजा मैं आगे झुक गया। जिस लकड़ी पर मैं पैर टेके था, वह भी झुक गयी और मैं जमीन पर खड़ा हो गया। जंगल की खामोशी में थोड़ी गड़बड़ जरूर हुई, मगर शेर का कोई पता न था, लिहाजा फिर से लकड़ी को मजबूत बाँधकर मैं फिर सँभलकर बैठ गया। जब सूरज पहाड़ के पीछे जा रहा था तो एक पत्थर मेरे पीछे पहाड़ से करीब ५० कदम पर लुढ़का; जिससे मुझे कुछ शक हुआ। मैंने पीछे मुड़कर देखना चाहा, मगर लकड़ी ने फिर खिसकना शुरू किया और चूँकि मेरे चारों तरफ बड़ी घास थी, मैं कुछ न देख सका। चूँकि मैं शेर के आने का सामने से इन्तजाम किये हुए था; लिहाजा नहीं चाहता था कि वह पीछे से आवे। मुझे फिकर शुरू हुई। मैंने लकड़ी का खिसकना रोकने के लिए पच्छिम वाले कल्ले को अपने दाहने हाथ के अन्दर ले लिया; जिससे मैं मजबूती से तो बैठ गया, मगर अब थोड़ा-बहुत भी घूमना मुश्किल हो गया।

थोड़ी देर के बाद एक काला तीतर मेरे पीछे करीब २५ कदम से खतरे का शोर मचाता हुआ उड़ा। अब मुझे यकीन हो गया कि शेर मेरे पीछे से आ रहा है और सामने का मौका जो मैंने बनाया था, वह सब बिगड़ गया। मैंने ख्याल किया कि मैं बहुत नीचे हूँ, अगर मेरे पास ही आ जावेगा तो जोर से आवाज देकर भगा दूँगा; क्योंकि मैं इस तरह जकड़ा बैठा था कि मुड़ नहीं सकता था और सिर्फ सामने

ही दाग सकता था। अब मुझे घास में आहिस्ता-आहिस्ता चलने की आवाज और हल्की-हल्की गुरगुराहट भी सुनायी देने लगी; जोकि शेर व गुलदार के साँस के साथ निकलती है। मैं साँस रोके हुए धड़कते हुए दिल से खामोश बैठा था। मेरा काफी तजुर्बा था कि जंगली जानवर जब तक कुछ खटका न हो या कोई चीज हिले नहीं, बहुत कम शक करते हैं। इतने में शेर का सर मेरे दाहने तरफ करीब ६ फीट पर घास से निकला। मैं बग़ैर सर मोड़े हुए तिरछी आँखों से देख रहा था। जबसे तीतर उड़ा था, तब से मैं फिसलती हुई दो डालों पर बड़ी मुश्किल से अपने जिस्म को साधे हुए था। शेर आहिस्ता-आहिस्ता गुरगुराता हुआ बड़े ग़ौर से सिर्फ लाश ही की तरफ देख रहा था। उसे अभी तक मेरी मौजूदगी की खबर नहीं थी और इत्तफाक से हवा शेर की तरफ से मेरी तरफ चल रही थी। जब उसको यकीन हो गया कि लाश के पास कोई खटका नहीं है, तब वह दो-तीन कदम आगे बढ़ा और नाले को कूदने का इरादा करने लगा। इस वक्त बगल का निशाना बहुत साफ मिल रहा था। मगर मैं मुड़ नहीं सकता था और मेरा राइफल भी सामने लाश की तरफ जमा हुआ था। गो वह मेरे बहुत नजदीक था, मगर घनी और ऊँची घास हम दोनों को एक-दूसरे से छिपाये हुए थी और अब वह मेरी लाइन से काफी आगे बढ़ गया था, लिहाजा उसकी निगाह मुझ पर पड़ने का बहुत कम मौका रह गया था। वह अब नाला कूदने के लिए दो-चार कदम ऊपर-नीचे ले रहा था और इस कोशिश में एक मर्तबा उसके पिछले पैर मेरे दाहने पैर से करीब एक गज पर आ गये। आखिरकार जब वह कूदा तो उसकी हिलती हुई दुम मेरे दाहने हाथ के बहुत ही करीब आ गयी। वह चन्द कदम आगे बढ़ा और दूसरे नाले के किनारे पर खड़ा होकर फिर लाश को और चारों तरफ देखने लगा। मेरा खतरा अब बहुत कम हो गया था। मगर वह अब अपने आपको पूरे खतरे में ला रहा था। मैंने रफ्ता-रफ्ता राइफ़ल को थोड़ी दाहिनी तरफ घुमाकर बजाय कंधे के अपने सीने पर कुन्दे को जमाकर इतमीनान का निशाना उसकी

गर्दन का उठे हुए सर के पीछे लेकर लिबलिबी दबा दी। शेर मेरी ३६६ बोर राइफल की आवाज ही के साथ आगेवाले नाले में गिर गया, जिसको वह कूदना चाहता था। राइफल के झटके से मैं जमीन पर आ गया और उसी वक्त एक आवाज पूरब तरफ के पहाड़ से शाबाश की आयी। मैंने उस तरफ देखा तो मेरा अरदली और फारेस्ट गॉर्ड अपने साफे को हिला रहे थे। मैंने आवाज दी कि आ जाओ। शाम होने लगी थी और शेर को नाले से निकालना मुश्किल था। नाले के अन्दर खाल भी नहीं निकाली जा सकती थी और दूसरे दिन हमारा कूच था, लिहाजा हमने सुबह आकर खाल निकाली और ९ बजे तक कूच होने से पहले पड़ाव पर पहुँच गये। वह ८ फीट १० इंच की खूब तन्दुरुस्त मादीन थी।

६५. मेरा पहला और आखिरी थार : बड़ी मुश्किल से

मेरे चकराता के बँगले के ड्राइंग रूम की दीवारों पर दो सींग थार के और कई सींगें दीगर जानवरों के टँगे हुए थे; जोकि पिछले अफसरान छोड़ गये थे। नौ उमर फ़ौजी अफसरान अक्सर बँगलों और शिकार के परमिट लेने को आते थे और थार के सींगों को देखकर करीब-करीब सभी दरयाफ्त करते थे कि क्या तुमने ये थार मारे हैं? मगर किसी ने भी और सींगों की बाबत कभी न पूछा और न शेर व गुलदार की खालों की बाबत पूछा; जोकि फ़र्श पर पड़ी थीं।

मेरे चकराता डिवीजन में ३ वर्ष रहने के बाद मिस्टर डेविस आई० एफ्० एस्० रेंजर क्लास को लेकर आये और उन्होंने भी वह ही पुराना सवाल किया। मैंने कहा कि आखिर थार में क्या खास बात है, जो हर शिकारी यही सवाल करता है? उन्होंने कहा—हाँ, यह ज्यादातर टूटे हुए या बहुत तेज ढालवाले पहाड़ों में रहते हैं और इनके पास पहुँचना इंसान के लिए बहुत मुश्किल होता है। मैंने कहा कि घुरल भी तो इसी तरह के पहाड़ों में पाया जाता है। वे हँसे और कहा—यह घुरल

से बहुत ज्यादा खराब और मुश्किल पहाड़ों में रहता है। उन्होंने कहा कि फॉरेस्ट गार्ड रिंगाली को एक सिलिप लिख दो कि मुझको थार की जगह दिखलावें। मैंने एक सिलिप लिख दिया। दूसरे दिन सुबह मिस्टर डेविस जब वहाँ से कूच कर रहे थे तो उन्होंने मुझे एक छोटी-सी किताब थार के शिकार पर दी और कहा कि इसको पढ़कर वापस कर देना और इससे तुमको मालूम हो जावेगा कि थार का मारना कैसा मुश्किल होता है। उसको पढ़ने के बाद मुझे थार मारने का शौक पैदा हुआ; जिसकी मैंने चकराता के तीन बरस कयाम में परवा तक नहीं की थी। दो-चार रोज के बाद मैं भी दौरे पर रवाना हुआ और तीसरे पहर १२ मील पर मंडाली पहुँचा। मिस्टर डेविस एक बक्स बंद करवा रहे थे और कहा कि मुझे बड़ी खुशी है कि मैंने एक अच्छे कद का १३ इंच सींगवाला थार मार लिया है और वह उसको बनने के वास्ते देहरादून भेज रहे हैं। उन्होंने उन खतरनाक मुकामात का मुख़्तसिर हाल बतलाया, जहाँ वह मिला था। मैंने कहा—मेरा भी जी चाहता है कि मैं भी एक थार मारूँ। उन्होंने जवाब दिया कि तुम्हारी थार मारने की उमर गुजर चुकी। इसके लिए बहुत ही तेज ढालवाले नंगे, ऊँचे पहाड़ों और उसी कदर गहरी वादियों में चढ़ने-उतरने को बड़ा मजबूत दिल चाहिए; जहाँ कलेजा मुँह को आ जाता है।

उन्होंने कहा कि एक थार मारना आधे दर्जन शेर मारने से ज्यादा मुश्किल है। उनकी इन बातों से थार मारने का मुझे और शौक पैदा हुआ। मैंने अपने कैम्प क्लर्क से कहा कि एक आदमी फॉरेस्ट गार्ड रिंगाली के पास भेज दो कि मैं कल एक दिन के लिए वहाँ आ रहा हूँ। यह मुकाम टेहरी रियासत की सरहद पर मंडाली से ९ मील के फासले पर था और मैंने ३ बरस में देखा भी न था।

इत्तफाक से मेरे दोस्त कर्नल मिश्रा भी शाम को चार दिन के लिए आ गये। हम दूसरे दिन तीसरे पहर रिंगाली पहुँचे। मैं बेचैन था और मैंने फॉरेस्ट गार्ड से कहा कि चाय पीने के बाद शाम को मैं थार का मुल्क देखने चलूँगा। डाक्टर मिश्रा, जोकि मुझसे भारी थे, पगडंडी पर

४२३ बोर राइफल लेकर एक आदमी के साथ गये और मैं फॉरेस्ट गार्ड ध्यानसिंह के साथ जोकि गढ़वाली था, ३६६ बोर राइफल लेकर रवाना हुआ। वह पहाड़ों में खूब चल लेता था और उस इलाके से भी खूब वाकिफ़ था। मैं भी अपने अहलकारान और साथियों में पहाड़ों में किसी से पीछे नहीं रहता था। हम करीब २०० कदम के पगडंडी पर गये, फिर वह रास्ता छोड़कर उत्तर की तरफ एक पतली पहाड़ की धार पर ले गया; जिसके दोनों तरफ़ बहुत गहरे पानीवाले कम-से-कम हजार-पाँच सौ फीट के खड्ड थे। ये पहाड़ सिलेट के थे और इन पर सिवाय कँटेदार झाड़ियों के और कहीं-कहीं छोटे पेड़ों के कुछ नहीं था; जिनको देखकर जी घबराने लगा और थार मारने का शौक कम होने लगा। लेकिन मैं फॉरेस्ट गार्ड के पीछे-पीछे बड़ी कीलों वाला बूट पहने हुए, जोकि सिलेट के पहाड़ों पर जहाँ मिट्टी का नाम न था, फिसलता था, अपने आपको घसीटता रहा। यह पतली धार ऐसी थी कि दोनों तरफ गहरे खड्ड देखकर चक्कर आता था। वहाँ एक गलत कदम या फिसलना मौत के बराबर था। कुछ दूर चलकर यह पहाड़ की धार करीब ३ फीट के बहुत गहरी फटी हुई थी। धार मुश्किल से १ फीट चौड़ी रही होगी। ध्यानसिंह, जोकि नंगे पैर था, बन्दर की तरह उसको कूद गया। दूसरी तरफ कोई चीज सहारे या पकड़ने के लिए नहीं थी। बल्कि एक नंगी ढालदार चट्टान थी। अगर पैर फिसल जाता तो बगैर टिकट के हमेशा के लिए जिंदा ही सीधा जहन्नुम को चला जाता। मैंने एक पत्थर उस फटे हुए काले गढ़े में डाला; जिसकी आवाज भी न सुनायी दी। मैंने कहा कि मैं इन कीलों वाले जूतों से और जबकि दूसरी तरफ न तो पैर टेकने को बराबर जगह है और न कोई चीज पकड़ने और सहारे के लिए ही है, हरगिज नहीं कूद सकता हूँ। फॉरेस्ट गार्ड ने कहा कि राइफल मुझे दे दो और जूते उतार कर वहीं छोड़ दो, फिर कूदना मुश्किल नहीं होगा और इसके बाद आगे जाना इतना खराब न होगा।

मैं सोचता रहा और जूते व मोजे उतारकर बड़ी हिम्मत करके कूदा। फॉरेस्ट गार्ड ने अपनी लकड़ी सहारे के लिए बढ़ा रखी थी। मैंने फौरन

उसको पकड़ लिया और पैरों की उँगलियों को चट्टान पर जमाकर सँभल गया। मगर मेरे होश उड़ गये और थार का शौक आधा बाकी रह गया। कूदने के बाद मैंने पीछे मुड़कर देखा और ख्याल किया कि अपनी जिंदगी में यह बड़ी हिम्मत का काम किया; जोकि जख्मी शेर के मुकाबले से भी ज्यादा था।

मैंने फौरन पूछा कि लौटेंगे किस तरफ से। उसने जवाब दिया कि इसी तरफ से। यह सुनकर मेरा आधा खून सूख गया। नंगे पैर चलना मुझे आसान मालूम हुआ। हम कभी बन्दर की तरह चारों हाथ-पैर पर और कभी छिपकली की तरह करीब सौ कदम के और गये होंगे कि धार थोड़ी-थोड़ी चौड़ी होनी शुरू हुई और ३ से ३ फीट तक चौड़ी हो गयी, मगर उसमें उतार-चढ़ाव बहुत ही तेज होने लगे। एक तेज उतार के बाद १० व २० फीट चौड़ा एक टुकड़ा पड़ा और फिर करीब ५० गज के गिरान था। मैंने उसके किनारे खड़े होकर नीचे देखा तो दो नर थार मेरा खटका पाकर मुझे पहले ही से देख रहे थे। वे मुझे देखते ही नीचे की तरफ भागे। मैं फौरन मुड़ा और राइफल लेकर फिर देखा तो वे गायब हो चुके थे। फॉरेस्ट गार्ड ने कहा कि यहीं खड़े देखते रहो। वे दाहिने या बायें किसी-न-किसी तरफ पहाड़ के ढाल पर दिखलायी देंगे। करीब १० मिनट के बाद मैंने देखा कि वे दाहने तरफ वाले पहाड़ के ढाल पर करीब २०० गज के फासले पर एक के पीछे दूसरा तेजी से हमसे उतना ही नीचे कन्दूर वेली में काँटेदार झाड़ियों में भाग रहे थे, मैंने ४ फैर उन पर भागते में दागे। राइफल की आवाज पहाड़ों में देर तक गूँजती रही और सिर्फ एक ही थार हमको भागता हुआ कुछ दूर और दिखलायी दिया और फिर वह भी गायब हो गया।

हमको शक हुआ कि शायद एक गिर गया, मगर हमने उसको लुढ़कते हुए नहीं देखा। फॉरेस्ट गार्ड ने कहा कि मैं जाकर देखूँ, मगर चूँकि सूरज डूब रहा था, मैंने उसे इजाजत नहीं दी और वहीं से लौट पड़े। क्योंकि उस फटे हुए पहाड़ को दिन में पार करना चाहता था और उसके पार करने में वही मुश्किल पेश आयी। हम बँगला पर

थके हुए पसीने में तर पहुँचे। क्योंकि वापसी में ज्यादातर चढ़ाई करनी पड़ी, लिहाजा बिलकुल बेदम हो गये थे।

फॉरेस्ट गार्ड ने कहा कि सब शिकारी यहाँ की देवी को चवन्नी, अठन्नी और रुपया चढ़ाते हैं। उसने एक बहुत बड़े बाँझ के पेड़ को दिखलाया, जो बँगले के आहाते में सड़क के किनारे खड़ा था और जिसमें बहुत-सी चाँदी की चवन्नी, अठन्नी और रुपये कीलों से ठुके हुए थे। उसने कहा कि देवी को पैसा चढ़ाने पर ही लोग थार मारने में कामयाब होते हैं। मैंने भी एक अठन्नी दी और फॉरेस्ट गार्ड ने उसको भी कील से उस बाँझ के पेड़ में ठोंक दी; जोकि मोटाई में करीब १४ फीट था। वह पेड़ कम-से-कम ५-७ सौ बरस का होगा। इस लम्बे जमाने में वह न मालूम कितने हुकुमरान इस इलाके में देख चुका होगा। फॉरेस्ट गार्ड ने खुश होकर कहा कि अब आपको थार मिल जावेगा और सुबह के लिए मुझसे वक्त मुकर्रर किया।

दूसरे दिन सुबह हम अँधेरा खुलते ही उस पहाड़ की चटखन पर पहुँच गये, जिसको देखकर और दोनों तरफ गहरे ग़ार देखकर आधी जान जाती थी। मैं रबड़ का जूता पहने गया था। उस ग़ार को जैसे-तैसे पार करके हम थोड़ी दूर गये होंगे कि सूरज अपनी पूरी शान-शौकत से निकल रहा था, मैं बैठ गया और खुदा की शान पर ग़ौर करता रहा; जिसका बयान मेरी ताकत से बिलकुल बाहर है। मैंने ऐसी शान से सूरज का निकलना पहले कभी नहीं देखा था। ठंडी और साफ हवा चल रही थी। तरह-तरह की चिड़ियाँ अपने पैदा करनेवाले की शान की तारीफ़ कर रही थीं। आसमान और उत्तर के बरफ से ढके हुए पहाड़ों पर तरह - तरह के रङ्ग बदल रहे थे; जो कभी देखने में नहीं आये थे। हम नौ बजे तक उस टूटे हुए खतरनाक पहाड़ों की धारों और गहरी वादियों में घूमकर बिलकुल थक कर चूर होकर वापस आये और कुछ नहीं देखा। शाम को रग व पुट्ठों में इस कदर दर्द हो रहा था कि ज्यादा दूर न जा सके और वैसे ही बेकार समय बरबाद करके चले आये।

जब हम आहाते में उस बड़े बाँझ के पेड़ के पास से गुजरे, तो मैंने फॉरेस्ट गार्ड से कहा कि हमारी अठन्नी उखाड़ लाओ; क्योंकि थार के लिए मैं अब और कोशिश नहीं करूँगा और कल सुबह वापस मंडाली जाऊँगा। उसने कहा कि जो चीज देवी-देवताओं को चढ़ा दी जाती है, वह फिर वापस नहीं ली जाती है। नहीं तो मनहूसियत लाती है। मैंने कहा—तो जाने दो।

बँगले पर वापस आकर मैंने अरदलियों से कहा कि सबसे कह दो कि कल सुबह मंडाली जाने को तैयार हो जावें। फॉरेस्ट गार्ड ने कहा कि आप ८ बजे से पहले नहीं जावेंगे और जब तक खच्चर लादे जावेंगे, हम थार मारकर वापस आ जावेंगे। मैंने कहा कि बस, मैंने काफी थार और उनका डरावना पहाड़ खूब देख लिया, जिनमें वे रहते हैं। हमने काफी कोशिश की और नाकामयाब रहे। मैं उनसे हारी लेता हूँ और उनको शाबाश देता हूँ, जो थार मार ले गये। मगर उसने खुशामद की और जिद की कि सिर्फ एक ही घंटे के लिए कल सुबह और आखिरी कोशिश कर लीजिए। डाक्टर ने कहा कि क्या नुकसान है। एक घंटा घूमकर मंडाली चले जाना। मैं राजी हो गया।

हम पहले दिन की तरह सुबह दिन निकलने से पहले रवाना हो गये। जब हम नौकरों के कार्टर के सामने से गुज़र रहे थे, फॉरेस्ट गार्ड ने मेरे अरदली झापलू को आवाज दी और आहिस्ता से कहा कि अगर तुम राइफल की आवाज सुनो तो फौरन एक आदमी, बाँस व रस्सी लेकर उस तरफ आ जाना। मैं फॉरेस्ट गार्ड के इस मगरूर भरोसे पर हँसा। हम आगे बढ़े और एक काँटा मेरे रबड़ सोल में होकर मेरे तलवे में काफी गहरा घुस गया। मैं काँटा निकालने के लिए बैठ गया और फॉरेस्ट गार्ड उस बड़े बाँझ के पेड़ के सामने हाथ बाँध कर घुटनों के बल झुक गया। थोड़ी देर के बाद वह मेरे साथ हो लिया। हमने वह ग़ार पार किया और फिर उसके बाद एक चोटी के पीछे जाकर, मेरे लिए जो दो बड़े सख्त मुकाम थे, उन्हें पार किया। फॉरेस्ट गार्ड ने बजाय पूरब के आज रुख उत्तर की तरफ बदल दिया

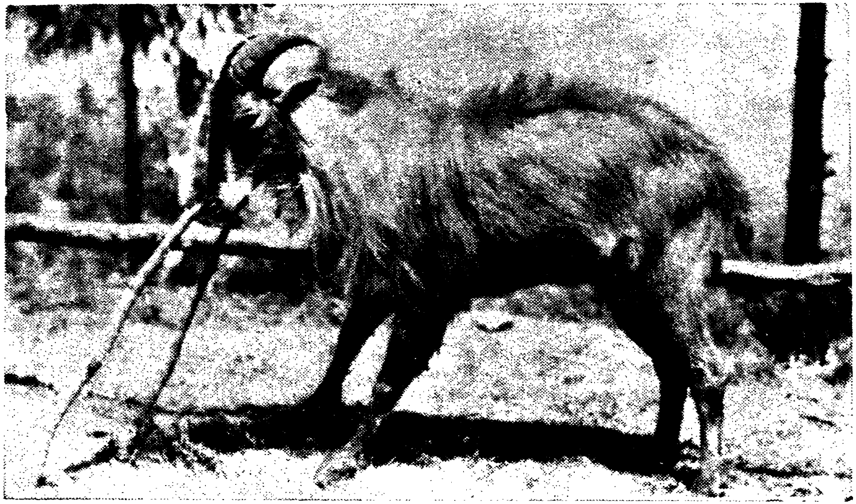
और थोड़ी दूर वैसी ही सिलेट की नंगी और तेज ढालवाली धार पर ले गया। वह एक जगह पर करीब ३० फीट गहरे और १० फीट चौड़े गिरान पर खड़ा हो गया, जोकि करीब-करीब तिरछी दीवार की तरह से था और जिसमें से सिलेट के छोटे-छोटे टुकड़े चिटखकर नीचे जमा हो गये थे। उसकी सतह काफी खुरदरी हो गयी थी। उसमें एक-एक, दो-दो इञ्च गहरे दाँत थे। उस पहाड़ की धार के दोनों तरफ बहुत ही गहरे ग़ार थे कि उनमें जाना तो दरकिनार, देखने से ऐसा मालूम होता था कि कोई घसीटे ले रहा है और चक्कर आने लगता था। मैं तो डर के मारे उन ग़ारों की तरफ देखता भी न था। कुदरत ने ८-९ हजार फीट की ऊँचाई पर अजीब-व-गरीब मुल्क बनाया है। फारेस्ट गार्ड ने कहा कि अगर इस पर उतर आओ तो फिर उस चट्टान के पास थार मिल जावेगा। इस ढाल पर सिलेट के टुकड़े चिटखने और गिरने से एक-एक दो-दो इंच की सीढ़ियाँ-सी बन गयी थीं। फारेस्ट गार्ड ने चट्टान की तरफ मुँह किया और उन सीढ़ियों पर अपने हाथ व पैरों की उंगलियों से सहारा लेता हुआ नीचे उतर गया। उसने कहा कि यहाँ तो थोड़ी हमवार जमीन है। मैं यहाँ खड़ा हूँ, जूते उतारकर नीचे फेंक दो और आहिस्ता-आहिस्ता उतर आओ। मैंने कहा कि मैं थार के लिए अपनी गर्दन नहीं तोड़ना चाहता। ऊपर आ जाओ, वापस चलेंगे, मुझे थार नहीं चाहिए। उसने कहा– ठहरिए। वह उस चट्टान की तरफ गया और वापस आकर कहा कि चट्टान के नीचे वेली में एक बहुत अच्छा नर थार चर रहा है। मुझे भी फारेस्ट गार्ड से कुछ कम शौक तो था नहीं, मैंने यह सुनते ही जूते नीचे फेंक दिये और बड़ी होशियारी से काँपते हुए नीचे उतर ही गया। वह मुझे वहाँ से करीब ५० कदम और आगे ले गया। जहाँ एक ठोस सिलेट की चट्टान से एक सीधा पत्थर करीब ६ फीट लम्बा बराबर हालत में निकला हुआ था। मगर उस पत्थर में भी मिलान पर २-३ इंच की चटखन पड़ी हुई थी। फारेस्ट गार्ड ने इस पत्थर पर लेटकर आहिस्ता-आहिस्ता आगे खिसकना शुरू किया और नीचे देखकर इशारा किया कि थार

नीचे चर रहा है। वह खुद वहाँ से हट आया और मुझसे कहा कि आप भी इसी तरह से इस पत्थर के सिरे तक लेटे-लेटे चले जायँ। और झुककर नीचे थार को, जोकि ७५ गज पर चर रहा है, आसानी से मार लीजिए। मैंने कहा कि राइफल की धमक और आवाज से अगर यह पत्थर चिटखन से टूटा तो मैं और पत्थर नीचे खड्ड में न मालूम कहाँ चले जावेंगे और मौत तो यकीनी है। उसने कहा कि यह वेली ज्यादा गहरी नहीं है और इस चट्टान से पिछले तीन बरस में ५ थार मारे गये हैं। मगर यह पत्थर आज तक नहीं गिरा, आज ही क्यों गिर पड़ेगा। मुझे बहुत शक था और पत्थर की हालत देखकर फॉरेस्ट गार्ड की बात का यकीन नहीं होता था। फॉरेस्ट गार्ड फिर उस पत्थर पर लेटकर आगे बढ़ा और देखकर वापस होकर कहने लगा कि थार को हमारी मौजूदगी का अभी पता नहीं है और वहीं हरी घास, इस्टाबरी और बनफशा चर रहा है। इन नंगे चट्टानी पहाड़ों में चरने की जगह कहीं-कहीं ही होती हैं। जानवर वहीं चरने को पहुँच जाते हैं। इतना खतरा लेने और मेहनत के बाद मुझे भी ख़्याल हुआ कि थार को इस कदर नजदीक छोड़कर चले जाना ठीक नहीं। मगर डर यह था कि अगर पत्थर चिटखन से टूटा तो फिर बचने की कोई उम्मीद नहीं है। फारेस्ट गार्ड ने कहा कि मैं अपना साफा आपकी और अपनी कमर से बाँधकर चट्टान को पकड़ कर खड़ा हो जाऊँगा। मैंने कहा कि अच्छा, और उस सीधे पत्थर पर लेटकर आहिस्ता-आहिस्ता आगे खिसकता हुआ राइफ़ल दाहने हाथ में लिये हुए किनारे पर पहुँचा। मैंने नीचे देखा तो थार पिछली टाँगों पर खड़ा हुआ एक झाड़ी की पत्ती खा रहा था। उसकी पीठ मेरी तरफ थी। मैंने पीठ की हड्डी पर निशाना लिया। मगर पत्थर के टूटने के डर से दागने की हिम्मत न पड़ी। फारेस्ट गार्ड ने सीटी दी और इशारा किया कि फैर करो। मैंने हिम्मत करके लिबलिबी दबा दी और बगैर गोली का असर देखे हुए चट्टान की तरफ देखने लगा। मगर पत्थर अपनी जगह पर रहा। राइफल की आवाज पहाड़ों में गूँजती हुई खत्म हुई। मैंने नीचे

देखा तो थार पड़ा हुआ तड़प रहा था। मैं पत्थर से उतरा और फारेस्ट गार्ड को चक्कर के रास्ते थार के पास ले गया। उसकी कमर टूट गयी थी। उसके खत्म होने के थोड़ी देर बाद ही हमारे आदमियों ने आवाज दी। मैं बहुत खुश था कि अब मिस्टर डेविस से कहने के काबिल हो गया कि मैंने भी थार मार लिया।

मुझको मानना पड़ा कि एक थार का मारना आधे दर्जन शेर से भी ज्यादा मुश्किल है; क्योंकि उस किस्म के नंगे, ऊँचे और सख्त तेज ढालवाले टूटे पहाड़ और गहरी वादियों में थार तक पहुँचना बहुत ही मुश्किल होता है; जहाँ एक गलत या लापरवाई के कदम का नतीजा यकीनी मौत हो, जख्मी शेर के मुकाबले कहीं ज्यादा खतरनाक है। उस थार के सींग साढ़े बारह इंच यानी अच्छे कदवाले थार के थे। खालिस शिकार के लुत्फ की नजर से उत्तरी हिन्दुस्तान में और किसी जानवर के शिकार करने में इतना खतरा, मेहनत और लुत्फ नहीं आता, जितना कि मिस्टर थार के शिकार में आता है; क्योंकि इसके शिकार में रुपया और जराये कुछ मदद नहीं दे सकते। हँकुआ मुमकिन नहीं और हर शख्स उन पहाड़ों में कदम नहीं उठा सकता, लिहाजा सिर्फ वही थार को मार सकता है जो जान पर खेल कर थार तक पहुँच सके। इसके बाद मेरे ख्याल में आदमखोर शेर, खूनी हाथी जोकि बगैर छेड़े हुए हमला करते हैं, उनके पैदल मारने में कुछ लुत्फ शिकार का आता है। बाकी सब जंगली जानवर इंसान को देखकर भागते हैं। मेरी राय में वे नामवर शिकारी, जिन्होंने दर्जनों बहादुर शेर मारे हैं, अगर एक थार मारने का भी लुत्फ उठा लें तो मुझे यकीन है कि उसके बाद उनको हजारों रुपया और वक्त खर्च करके भी उन बेगुनाह जंगली जानवरों के आसानी से कतल और बरबाद करने में कोई लुत्फ न आवेगा, बल्कि नफरत ही हो जावेगी, जिनके मारने में न तो जानतोड़ मेहनत करनी पड़ती है और न कोई खतरा ही होता है। जबकि ये गरीब भोले-भाले बेकस जानवर हँकाकर हाथी के हौदे या पेड़ पर मचान के सामने लाये जाते हैं। जहाँ से न तो उन

Plate No. IX.



'Thar'—the most difficult animal to reach in the broken landslips of the Himalyas.

बेचारों को भागकर बचने का और न अपने जानी दुश्मन पर हमला करने का कोई मौका होता है और जहाँ कुल इन्तजाम दूसरे करते हैं। शिकारी साहब सिर्फ लिबलिबी दबा देते हैं और नाम उन्हीं का होता है।

हिन्दुस्तानी शिकारी अपनी नामवरी जानवरों के मारने की तादाद में समझता है और खुश होता है। पच्छिमी शिकारी खुद मेहनत करके खतरा उठाकर, जंगली जानवर को बचने, हमला करने और बदला लेने का मौका देकर मारने में खुश होता और लुत्फ उठाता है। हिन्दुस्तानी शिकारी बेशक बेहतरीन शिकार का लुत्फ उस वक्त उठाता था, जब बन्दूक और राइफल हिन्दुस्तान में नहीं थे और वह सिर्फ तीर, कमान, भाले और तलवार से शिकार खेलता था। अब ताकतवर राइफल, मोटर, टार्च, जंगलों में सजे हुए बँगले और उम्दा सड़कों से हिन्दोस्तानी शिकारी ने हिन्दोस्तान के अजीब-व-गरीब जंगली जानवरों को बगैर ख़याल के नर, मादीन व बच्चों को तबाह व बरबाद करना शुरू कर दिया है और उस बेजबान मखलूक की न तो कहीं फ़रयाद और न कहीं सुनवायी ही है। गवर्नमेंट का फ़र्ज है कि वह अपने मुल्क के जंगली जानवरों को बरबाद व खत्म होने से बचावे; ताकि आयन्दा नस्ल के मनचले नौउमर मेहनती, जफाकशी व दिलेरी के सबक भारत माता के जंगली जानवरों के शिकार से सीखते रहें और उनका बहादुराना जोश जागता रहे; नहीं तो उनके जिकर व किस्से सिर्फ किताबों ही में पढ़ने को मिलेंगे।

यहाँ पर दो अमरीकन नौउमर औरतों के शिकार का जिकर ना-मुनासिब नहीं होगा। सन् १९१४ में मैं रायबहादुर मिस्टर मथुराप्रसाद भोला प्रिन्सिपल यू० पी० फारेस्ट ट्रेनिंग स्कूल का असिस्टेंट था। हम मुकाम अमानगढ़ रामनगर डिवीजन में पड़ाव किये हुए थे और मिस्टर स्टीविन्स को, जोकि उस वक्त वहाँ के डिवीजनल फारेस्ट अफ़सर थे, ऊपर से हिदायत आयी कि दो अमरीकन औरतें जनाब गवर्नर साहब बहादुर की मेहमान एक हफ्ते के लिए शिकार में आ रही हैं। लिहाजा ऐसा इन्तजाम किया जावे कि उस रकबे में जो-जो

जानवर और चिड़ियाँ मिलती हों, उनमें से वे एक-एक सब में से मार सकें। करीब आधा दर्जन हाथी जमा किये गये और बम्बई के एक होटल ने २ घोड़े, दो डेरे, ४ छोलदारियाँ और कुल खाने का इन्तजाम किया और वहीं से खानसामा व बैरा वगैरह को मेहमानों से दो रोज पहले भेजकर इन्तजाम करा दिया। मेहमान काशीपुर रेलवे स्टेशन पर उतरे और वहाँ से १२ मील घोड़ों पर अमानगढ़ आये; जहाँ मिस्टर स्टीविन्स ने उनका स्वागत किया। पड्डे दो रोज पहले से कई जगह बाँधे और मारे जा रहे थे। रुपया और खर्चे की कोई फिकर नहीं थी। खाना खाने के बाद मिस्टर स्टीविन्स उनको हाथियों पर, जहाँ सुबह दो मचान बँधवा दिये गये थे, ले गये और हिन्दोस्तान के शिकार के तरीके के मुताबिक उनसे मचान पर बैठने को कहा और पूछा कि क्या वे अकेली बैठेंगी या एक-एक शिकारी हिफाजत के लिए साथ बिठावेंगी। उन्होंने कहा कि हम मचान पर से इन नायाब जानवरों का कतल नहीं करते। हम मचानों के पेड़ों की आड़ में खड़ी हो जावेंगी और हमको कोई शिकारी नहीं चाहिए। उन्होंने कहा कि अफरीका में खालिस घास के रकबों में शेर रहते हैं और हमने घास की आड़ में खड़े होकर उनको मारा है। यही तरीका वहाँ के शिकार का है। हम इन शानदार जानवरों को पूरा स्पोर्ट का मौका देना चाहते हैं; जोकि बगैर हमारे पास आये हुए हमको नुकसान नहीं पहुँचा सकते हैं। मगर हम तो दूर ही से उनके गोली मार सकते हैं। उनके पास ३५० बोर वेन्चेस्टर राइफल और १६ बोर की बन्दूकें थीं। मिस्टर स्टीविन्स ने अहतियात की गरज से एक-एक शिकारी मचानों पर बिठा दिये और खुद हाथियों से हँकुवा कराकर ले आये। ३ शेर निकले। एक पट्ठा सबसे आगे था। उसके पीछे उसकी माँ और फिर थोड़ी दूर पर नर था। एक लेडी ने, जो इनके करीब थी, मादीन पर गोली चलायी और उसे वहीं गिरा लिया। पट्ठा आगे भाग गया। बड़ा नर राइफल की आवाजें सुनकर दूसरी लेडी की तरफ कट गया और जब उनके सामने से तेज दुलकी जा रहा था मेम साहबा ने एक गोली पीछे से दागी;

जो उसके जिस्म को आड़ी हालत में पार कर गयी, मगर शेर भागा चला गया। मिस्टर स्टीविन्स हँकुवा लेकर पहुँचे। दोनों शिकारियों को हाथी पर लेकर जख्मी शेर को ढूँढ़ा और करीब २०० कदम पर उसको भी खत्म करके दोनों को लाद लाये।

अभी मरे हुए दो और पड्डे दूसरी जगहों पर थे और उन पर भी मचान बँधे हुए थे। लेकिन उन लेडी शिकारियों ने जाते इनकार किया और कहा कि हम दोनों को एक-एक शेर मिल गया। अब हम और ज्यादा इन खूबसूरत और बहादुर जानवरों को बर्बाद नहीं करना चाहतीं। सुबह दोनों मिस्टर स्टीविन्स के साथ हाथियों पर गयीं और एक रीछ और एक साँभर लायीं। फिर उन्होंने हाथी पर से शिकार खेलना बन्द कर दिया। यह कहकर कि हाथी पर से स्पोर्ट का कोई लुत्फ नहीं आता। यह कतल करने के लिए बहुत ठीक है। दो दिन उन्होंने पैदल ही गुलदार, चीतल और काँकड़ के लिए सर्फ किये; मगर सिर्फ एक सुअर मारा। तीसरे दिन वे रेंज अफसर के साथ आबादी की तरफ घोड़ों पर गयीं और एक काला हिरन पैदल मारा। चौथे दिन उन्होंने चन्द मोर, मुर्गी, तीतर व बटेर उड़ाकर मारे। वे या तो सिर्फ राइफल ले जाती थीं या सिर्फ बन्दूक; जैसा शिकार मारना होता था और जो कुछ मिलता था, मारती थीं। उनका फोटो जरूर उसी जगह पर लेती थीं। उन्होंने चीतल, गुलदार और काँकड़ पर पैदल एक दिन और सर्फ किया; मगर कुछ नहीं मिला। छठें दिन वे अपनी कामयाबी और जंगल के मञ्जर की खूबसूरती से बहुत खुश-खुश सबको काफी इनामात बाँटकर रवाना हुईं। इस किस्म का शिकारी नजरया हिन्दोस्तान के ऊँचे शिकारियों में भी कम पाया जाता है। मैंने और सबने उस वक्त उनको बेवकूफ समझा था। मगर अब अरसा के तजुर्बे के बाद समझता हूँ कि असल शिकारी वही हैं। हम हिंदोस्तानियों की कामयाबी ज्यादा तादाद में जानवरों का मारना है; चाहे जिस तरह से भी मार सकें। मगर उनका शिकार का तरीका बहादुरी से मारने का है।

६६. मेरा बत्तीसवाँ गुलदार

जुलाई सन १९३२ ई० में मैं टिडनी के बँगले में देवगढ़ रेंज चकराता फारेस्ट डिवीजन में टोन्स नदी के किनारे ठहरा हुआ था। यह जगह सतह समुन्दर से ३००० फीट की ऊँचाई पर बहुत ऊँचे-नीचे पहाड़ों में है। टोन्स नदी इस जगह पर बहुत तेज ढाल पर बहती है; जिसके बहने का शोर करीब आधे मील से सुनायी देता है और बँगले के बरामदे में तो बात करना और सुनना मुश्किल हो जाता है। गाँववालों ने कहा कि उनके गाँव में करीब १ महीने से रोज रात को एक जोड़ा गुलदार का आता है और एक जानवर—मसलन बकरी, गाय-भैंस का बच्चा, कुत्ता वगैरह हफ्ते में कम-से-कम जरूर मार ले जाता है। उन्होंने मुझसे कहा कि अगर आप रात को बैठ जावें तो अपनी बकरी हम लोग बाँध देंगे। मैंने कहा कि गाँव का एक लावारसी कुत्ता ले आओ और वे खुजली का बीमार, मगर काफी बड़ा एक कुत्ता ले आये। मैंने उसको बँगले से एक फरलाँग दक्खिन तरफ जंजीर से सड़क के किनारे, जहाँ दोनों तरफ घनी झाड़ियाँ और चट्टानें थीं, शाम को बँधवा दिया। इस सड़क पर करीब-करीब रोज गुलदार के रात में चलने के ताजे निशान दिखलायी देते थे। यह रास्ता इन झाड़ियों के बाद टोन्स नदी के किनारे पहाड़ के खुले ढाल पर दूर तक गया था। कुत्ता पहली ही रात को मार दिया गया और आधा खाकर उसको वहीं छोड़ दिया, क्योंकि जंजीर तोड़ न सका; गो बहुत जोर उसको तोड़ने के लिए लगाया गया था। सुबह लाश को खूब ढँकवा दिया, ताकि कौए और गिद्ध न खा जायँ। दिन में गाँव के इतने नजदीक गुलदार के आने की कोई उम्मीद न थी। लिहाजा मैं जल्दी खाना खाकर अँधेरा होने के बाद जाकर एक बड़ी चट्टान पर बैठ गया; जिसको मैं कुत्ता बँधवाते वक्त छाँट गया था और इरादा किया कि ९ बजे रात तक बैठूँगा। मैंने सब आदमियों को वापस कर दिया। रात बिलकुल अँधेरी थी, मगर मैं

दो सेल की टार्च ले गया था। एक घंटे के बाद मुझे लाश पर कुछ खड़बड़ सुनायी दी और फिर टोन्स नदी की सनसनाहट में हल्की-हल्की खाने और हड्डी चबाने की आवाज सुनायी दी। मैंने राइफल को उसी आवाज की तरफ जमाकर रोशनी खोली तो देखा कि गुलदार मेरी तरफ दुम किये हुए कुत्ते को खा रहा था। सर के पीछे इतमीनान का निशाना लेकर मैंने फैर किया और गुलदार उसी तरह से बगैर आवाज किये व हिले हुए बैठा रह गया। आदमियों के आने पर मैं बँगले चला आया। दूसरे दिन सुबह जब गुलदार मँगवाया तो तमाम गाँव के मर्द - औरत अपने दुश्मन को देखने के लिए जमा हो गये। आखिरी कौर गुलदार के मुँह ही में रह गया था। वह ६ फीट ५ इंच की मादीन थी।

६७. मेरा बगैर इंतजाम के पैदल दसवाँ शेर

चकराता से जनवरी सन् १९३३ ई० में मेरा तबादला बुन्देलखंड फॉरेस्ट डिवीजन का हो गया ; जिसका हेड कार्टर झाँसी में था। मैंने अपनी तमाम पिछली नौकरी करीब २५ बरस के हिमालिया पहाड़ और उसके तराई के शादाब घने जंगलों में गुज़ारी थी, लिहाजा बुन्देलखंड के सूखे हल्के और काँटेदार झाड़ीनुमा जंगल देखकर बहुत नाउम्मीदी हुई। उत्तरी हिंदोस्तान के शेर व गुलदारों के रहन-सहन का तरीका बुन्देलखंड से मुख्तलिफ़ था। वहाँ ये जाड़ों में घने जङ्गलों और झाड़ियों में रहते हैं और गर्मियों में पानी के पास ऊँची हरी घास में रहते हैं। यहाँ ये ग़ारों में और बड़े-बड़े पत्थरों और चट्टानों के नीचे रहते हैं ; जोकि पानी के नजदीक नाले, नदियों के किनारे कहीं-कहीं पाये जाते हैं। बाकी और आदतें एक-सी ही होती हैं। मैंने करीब १५ दिन के हेड कार्टर में गुजारने के बाद दौरा शुरू किया। यहाँ के जङ्गल एक सिलसिले में मिस्ल और यू० पी० के जङ्गलों के न थे; बल्कि छोटे-छोटे टुकड़ों में दूर-दूर झाँसी और बाँदा के दो जिलों में फैले हुए थे।

दक्खिन में सूबा सी० पी० की सरहद थी। ग्वालियर व दतिया रियासतें पच्छिम में थीं। टीकमगढ़, चरखारी और आधा दर्जन छोटी - छोटी रियासतें बीच में और रियासत पन्ना पूरब में थी। लिहाजा सरहदों पर पहुँचने के लिए डिवीजनल अफसर को १२ मील पच्छिम में, करीब १०० मील दक्खिन में और करीब २२५ मील के पूरब में दौरा करना पड़ता था। दौरा करने का जरिया रेल, मोटर और लारी थे। बवजह लम्बे सफर के हाथी और घोड़े का यहाँ बिलकुल इस्तेमाल न था। लिहाजा दोनों से मेहरूम रहना पड़ा।

चन्द महीने के बाद जब मैंने उन जगहों का जरूरी दौरा कर लिया, जहाँ काम हो रहे थे तो मैं देवगढ़ बँगले पहुँचा; जोकि बेतवा नदी के किनारे रियासत ग्वालियर की सरहद पर था। बेतवा नदी इस जगह बहुत गहरी थी, पानी नीला था। उसके दोनों तरफ बड़े - बड़े घने पेड़ थे, जिसमें हजारों बड़े किस्म के चमगादड़ लटके हुए हर वक्त शोर मचाते थे। बँगले के पच्छिम तरफ बहुत पुराने भील कौम के लोगों का गाँव था; जोकि हिंदुस्तान के असली पुराने निवासी हैं।

पूरब में करीब एक फरलाँग पर एक तालाब और तारीखी पुराना मंदिर था; जिसके चारों तरफ हल्का जंगल व झाड़ियाँ थीं। उसके आगे करीब ५०० फीट ऊँचा पहाड़ था, जिसके ऊपर मैदान में बड़ा जबर्दस्त कम-से-कम १ हजार बरस से ज्यादा पुराना लाल व काले पत्थरों का किला मुसलमानों की हुकूमत से पहले का बना हुआ है। जिसकी चौड़ी और ऊँची दीवारें, बड़े-बड़े जबर्दस्त फाटक, जिसमें से हाथी मय हौदे के निकल जावें और उसके अन्दर चन्द इमारतें पुराने किस्म के लदाव की अभी तक मौजूद हैं। जिनमें करीब १२०० के छोटी-बड़ी ६ फीट के कद तक की पत्थरों की मूर्तियाँ इस इलाके से जमा करके गवर्नमेंट ने बतौर नुमाइश के रखी हैं। नीचे से पहाड़ के ऊपर किले के फाटक तक पहुँचने के लिए बड़ी चौड़ी सड़क पहाड़ के ढाल पर आठ इञ्च मोटे पत्थरों की लम्बी-लम्बी सिलों से बनी हुई है; जोकि अभी और हजारों बरस कायम रहेगी। किला की शान से और

उसके अन्दर और आस - पास की टूटी-फूटी उजड़ी हुई इमारतों से अंदाज़ होता है कि गुजरे हुए जमाने में उस किले और महलों के राजा-रानियों ने व सहजादे-सहजादियों ने न मालूम कैसी-कैसी खुशियाँ व जशन और कैसे-कैसे दर्दनाक ग़म देखे होंगे कि जिनके आज नाम-व-निशान तक भी बाकी नहीं हैं। अब उनमें जङ्गल, झाड़ी खड़े हैं और उल्लू, अबाबील, चमगादड़, काले बन्दर, शेर, रीछ और गुलदार रहते हैं, जहाँ कि दिन में भी जाते डर मालूम होता है। वह पहाड़ जिस पर किला ५०० फीट की ऊँचाई पर है, वह करीब ८ मील के पच्छिम से पूरब की तरफ लम्बा और दो-तीन मील चौड़ा मैदान है, जिनमें अब जंगल हैं और सिवाय पूरब के ३ तरफ तेज ढाल है। इस मैदान का दक्खिनी किनारा, जोकि बेतवा नदी से एक-दो फरलाँग दूर है, मिस्ल दीवार के ५०० फीट ऊँचा है। इसको अड़ी कहते हैं। उसमें एक मील तक शहद की मक्खियों के हजारों छत्ते लगे हुए हैं। जिन तक शहद निकालने के लिए कोई नहीं पहुँच सकता है। इस ऊँचे पहाड़ की जड़ में हजारों बरस से पत्थर व चट्टानें गिर-गिरकर तरह-तरह के ग़ार, गड्ढे और भीटे बन गये हैं। पहाड़ के पच्छिमी कोने से जहाँ पर बेतवा नदी पहाड़ से मिलती है, करीब आध मील तक बहुत घनी झाड़ियाँ और सागौन व बाँस का जङ्गल है। इसमें शेर, रीछ, गुलदार वगैरह हमेशा पाये जाते हैं। यह टुकड़ा शिकार के लिए बहुत मशहूर है। बँगले के उत्तर तरफ एक बड़ा मैदान है; जिसमें चन्द पुराने और नये मन्दिर हैं और गवर्नमेंट ने भी एक बड़ा कमरा बनवा दिया है। जिसमें पुराने जमाने के पत्थरों पर नक्स व निगार और मूर्तियाँ जमा हैं। इस मैदान में हर साल जैनी मतवालों का मेला होता है; जिसमें एक लाख से ज्यादा आदमी दूर-दूर से जमा होकर मजहबी रस्म अदा करते हैं और एक बड़ी गाड़ी दो हाथियों में खींचकर बाजे - गाजे और गोलों की आवाजों के साथ घुमाते हैं। यह उजड़े हुए देवगढ़ का नक्शा है, जोकि तारीखी वजह से और शिकार की वजह से मशहूर है। मैंने अपने अरदली रामलाल से पूछा कि यहाँ की मशहूर शेर की जगह कितनी दूर है?

उसको इस डिवीजन में ४० बरस हो गये थे। उसने कहा कि यह बँगले का चौकीदार, जोकि इसी गाँव का भील और मशहूर शिकारी है और इसी वजह से मिस्टर वाइट हेड डिवीजनल अफसर ने इसको २० बरस हुए चौकीदार बनाया था, इससे पूछिए और इसने इस छोटी जगह से दर्जनों शेर अफसरान और शिकारियों से मरवा दिये हैं। उसने कहा कि पहाड़ की अड़ी के नीचे बेतवा नदी तक इस थोड़ी-सी जगह में बहुत घनी झाड़ियाँ, खोह और पत्थरों के नीचे शेरों के छिपने की बहुत अच्छी जगहें हैं। पानी भी नजदीक है। अगर शेर इस जगह के नज़दीक कहीं पड्डा मारता है, तो इन्हीं ठंडी जगहों में पहाड़ की जड़ में दिन भर छिपा रहता है। अगर थोड़े आदमी पच्छिम से हँकुवा कर देते हैं तो वह पूरब की तरफ आधा मील जाकर नाले में ऊपर चढ़ता है। शिकारी को वहीं नाले के ऊँचे किनारे पर बिठा देते हैं और वे आसानी से आते हुए शेर को नजदीक से बगैर किसी खतरे के मार लेते हैं। लेकिन दो-चार दिन से उस अड़ी के नीचे शेर नहीं निकला है। उसने यह भी कहा कि पिछले महीने में एक शिकारी ने उसी नाले के मुँह पर नजदीक से शेर को जख्मी किया। शेर पीछे हाँकने वालों की तरफ मुड़ गया। एक आदमी को मार डाला और दो को जख्मी किया। तब से उस तरफ कोई जाता भी नहीं है। इसलिए ठीक पता भी नहीं है। मैंने कहा कि एक पड्डा खरीद लाओ; हम आज शाम को अड़ी के नीचे पड्डा बाँधकर उस नाले को देखेंगे, जहाँ शिकारी बैठते हैं। फिर किले की मशहूर मूर्तियों को देखते हुए वापस आवेंगे। उसने कहा कि एक ही शाम को इन सब जगहों को नहीं देख सकते हैं। यह चक्कर कम-से-कम ५ मील का होगा और सब मूर्तियाँ और मकान देखने को कम-से-कम एक-दो घंटा चाहिए। मैंने कहा कि अच्छा, तुम पड्डा ले आओ। आज पड्डा ही बाँधेंगे और कल शाम को किला देखेंगे।

वह अपने गाँव से पड्डा करीब ४ बजे शाम को लाया। उस वक्त बहुत धूप थी। लिहाजा हम पाँच बजे रवाना हुए। मेरे साथ पुराना तजुर्बेकार अरदली रामदयाल, बँगले का चौकीदार और पड्डे का

मालिक, जिसको मैंने कुलियों में रख लिया था, गये। हम करीब दो फरलाँग के आहिस्ता-आहिस्ता गये होंगे; क्योंकि पड्डा कमजोर था और मुश्किल से चलता था। वह पिछले महीने में भी बँध चुका था। वहाँ का कायदा यह था कि पड्डे का मालिक ही पड्डा बाँधता और खोलता था। पड्डे के दाम और एक रुपया रोज उसको मजदूरी दी जाती थी और अगर शेर मारा जाता था तो इसके अलावा इनाम भी दिया जाता था। पड्डा बहुत आहिस्ता चल रहा था। मैं और पड्डे का मालिक उसको पीछे छड़ी से हँकाते रहे और रामलाल उसकी रस्सी पकड़कर आगे घसीटता रहा।

हम थोड़ी दूर और आगे बढ़े होंगे कि रामलाल ने सीटी दी और पगडंडी के दाहने तरफ इशारा करके कहा कि चीतल हैं। मैंने ५०-६० कदम पर बेतवा नदी की तरफ चन्द चीतल चरते देखे। मैंने कहा कि यह शेर की जगह बहुत छोटी-सी है। मैं यहाँ फैर करके उनको नहीं भड़काऊँगा, आगे बढ़ो। रामलाल नाउम्मीद होकर पड्डे को जोर-जोर से गालियाँ देता हुआ घसीट रहा था कि यकायक हमारे बायीं तरफ पगडंडी के बहुत पास झाड़ियों में से शेर के ढौंक कर भागने की आवाज सूखे पत्तों में से आयी। हम सब घबरा गये। शेर चीतलों की ताक में लगा हुआ था। रामलाल रस्सी छोड़कर आगे भाग गया और थोड़ी दूर पर ठहर कर उसने मुझे इशारे से बुलाया। उसने कहा कि शेर यहाँ है। चौकीदार पेड़ पर चढ़ गया था और पड्डेवाला जिधर से हम आये थे, उधर भाग गया। पड्डा वहीं खड़ा रह गया और यह सब एक मिनट में ही हो गया। मैं रामलाल के पास गया, उसने इशारे से शेर को दिखलाया। उस वक्त शेर करीब ५० कदम पर झाड़ियों में पहाड़ की जड़ के साथ-साथ पच्छिम तरफ वापस जा रहा था। मैंने कहा कि आओ, पड्डा इसी जगह बाँध दो और मुझे किसी छोटे रास्ते से अड़ी के ऊपर ले चलो; ताकि मैं दौड़कर शेर के बराबर पहुँच जाऊँ। चौकीदार ने कहा कि सिवाय उसी नाले के और कोई ज़रिया पहाड़ पर पहुँचने का नहीं है और नाला अभी उतनी ही दूर है जितना कि हम

आये हैं। मैंने कहा कि मैं दौड़ूँगा, अगर आ सको तो तुम भी आओ। चौकीदार और मेरा अरदली मुझसे उमर में ज्यादा थे। मगर दोनों तन्दुरुस्त थे। पट्टु वाला सबसे कम उमर का था, मगर सबसे ज्यादा सुस्त था।

मैंने दौड़ना शुरू किया। चौकीदार ने कहा कि शेर पच्छिम की तरफ अपने छिपने की जगह गिरे हुए चट्टानों की तरफ जा रहा है और आप उसके आगे नहीं पहुँच सकते। मैं और तेज हो गया और उन सबको पीछे छोड़ दिया। रामलाल ने कहा कि हम आपके पीछे आ रहे हैं। मैं तेज ढालवाले नाले पर पहुँच गया; जिसमें बड़े-बड़े पत्थर और चूने की चट्टानें उल्टी-सीधी पड़ी हुई थीं। अव्वल तो मेरा साँस फूलने की वजह से दूसरे कील वाले जूते से गिरने के डर से मैं आहिस्ता-आहिस्ता होशियारी से आधे नाले तक चढ़ा था कि चौकीदार आ पहुँचा और चूँकि वह नंगे पैर था, मुझसे आगे पहाड़ पर पहुँच गया। उसने शेर को देखकर सीटी दी और पच्छिम की तरफ इशारा किया। जब मैं उसके पास पहुँचा तो देखा कि शेर करीब २०० गज़ के पच्छिम बाँस, झाड़ी और पत्थरों में जा रहा था। मैंने पूछा कि उसके छिपने की जगह अब उससे कितनी दूर होगी। चौकीदार ने कहा कि बस, अब वह उनके करीब ही पहुँच गया है। मैं अफसोस करने लगा कि यह सब मेहनत बेकार गयी। चौकीदार ने कहा कि पत्थर और ग़ार तो उस जगह से शुरू हो गये हैं। मगर बहुत दूर तक आगे चले गये हैं और बड़े ग़ार अभी दूर हैं। मैंने फिर अड़ी के किनारे-किनारे झाड़ी और काँटों को बचाते हुए पूरी रफ्तार से दौड़ना शुरू किया। हाफ पैन्ट और घुटने काँटों से काफी जख्मी हो गये। चौकीदार भी मेरे पीछे दौड़ता रहा। मैंने एक पेड़ और एक निकली हुई चट्टान, जोकि शेर के काफी आगे थे, निगाह में रख लिये थे और इरादा किया था कि वहाँ पहुँचकर नीचे शेर को देखूँगा। मैं उस जगह करीब-करीब बेदम होकर पहुँचा और ठहरकर नीचे झाँका तो शेर इत्तफ़ाक़ से बिलकुल मेरे नीचे आहिस्ता-आहिस्ता जा रहा था। उसको मेरी मौजूदगी का पता न था।

मैं हाँफता हुआ, पसीने में तर और घुटनों से खून निकलता हुआ बैठ गया और करीब १५० गज़ के फासले से इतमीनान से बगल का निशाना लेकर ३६६ बोर राइफल का फायर किया। शेर फायर के साथ गिरा और ढाल पर नीचे लुढ़कने लगा। मैंने फौरन ही दूसरा फैर किया। उसकी आवाज के साथ ही सैकड़ों शहद की मक्खियाँ उड़ीं; जिनके छत्ते नजदीक ही नीचे थे। मैं ठीक तरह से अपनी दूसरी फैर का नतीजा भी न देख सका था कि मेरे बायें हाथ पर एक मक्खी ने डंक मारा और चारों तरफ से मक्खियों ने घेर लिया। मैं उठकर भागा। चौकीदार जो पीछे था, उसने कहा कि उत्तर की तरफ भागो, वहाँ से सड़क किले की तरफ जाती है। मक्खियों का गोल हमको घेरे चला आ रहा था। मैंने एक पत्तीवाली डाल तोड़ ली और उसको अपने चारों तरफ घुमाता रहा। पहाड़ के ऊपर बिलकुल हमवार मैदान था। सड़क मिलने पर एक या दो फरलाँग मैं और भागा हूँगा और फिर थककर गिर गया। तीनों आदमी भी एक के बाद एक मक्खियों का गोल साथ लिये हुए पहुँचे। सभी लोग एक जगह पास बैठकर पत्तीवाली डालें हिलाते रहे। अँधेरा होने पर मक्खियाँ कम हुईं और हम उठकर किले में होकर बंगले पर बड़ी मुश्किल से एक घंटा अँधेरा होने के बाद पहुँचे। रामलाल अरदली के पाँच जगह मक्खियों ने काटा और उसका मुँह और आँखें बुरी तरह से फूल गये। उसे रात भर जोर का बुखार रहा। बाकी को एक-एक, दो-दो मक्खियों ने काटा था, जोकि फूल गया और सख्त तकलीफ थी।

मुझे शेर की बाबत इससे ज्यादा कुछ नहीं मालूम था कि वह मेरी पहली गोली पर गिरा और ढाल पर लुढ़कने लगा। और चूँकि फासला ज्यादा था, शेर झाड़ियों में चल रहा था और मैं थका हुआ था, लिहाजा मुझे पूरा यकीन न था कि शेर के गोली ठीक लगी होगी और मुझे रात भर ख्याल आता रहा कि दूसरे दिन उसको पहाड़ से गिरे हुए बड़े-बड़े पत्थरों और चट्टानों के नीचे कैसे ढूँढ़ा जावेगा; जबकि यह भी नहीं मालूम था कि शेर किस हद तक ज़ख्मी है। कम

ज़ख्मी शेर मुसीबत ढा लेता है; जिसका इस वक्त तक काफी तजुर्बा हो चुका था। लोगों ने कहा कि कुछ भैंसे और हथियार बन्द आदमी लेकर नीचे की तरफ से जाना चाहिए। डर सिर्फ़ शेर ही का नहीं था, बल्कि शहद की मक्खियाँ भी उतनी ही खतरनाक थीं।

सुबह होते ही मैंने रामलाल को बुलाया। उसका मुँह बहुत फूला हुआ था और बुखार था। चौकीदार के भी हाथ और पैर कुछ फूले हुए थे। मेरा भी बायाँ हाथ फूला हुआ था और बहुत दर्द कर रहा था। मैंने दूसरा अरदली, दो खलासी, एक डाकवाला, मेहतर, मोटर ड्राइवर और दो कुली दो रुपये पर लिये और पन्द्रह रुपया इनाम का वादा किया चाहे शेर मिले या न मिले। मैं उन्हें लेकर रवाना हुआ। मैंने सबको एक-एक कम्बल और एक-एक पत्तीवाली डाल शहद की मक्खियों से बचने के लिए दिया।

हम पहले उस जगह पर पहुँचे, जहाँ से फैर किया था और थोड़ी दूर पहले दिन वाली मक्खियों की जगह से हटकर बड़े-बड़े पत्थर फेंके, जो दूर तक लुढ़कते हुए शोर मचाते चले गये। मगर शेर की कोई आहट नहीं मालूम हुई। फिर हम उसी नाले से नीचे उतरे, यह ख्याल करके कि या तो शेर मर गया है या किसी पत्थर के नीचे ग़ार में चला गया है। हम पहाड़ की जड़ के साथ-साथ आहिस्ता-आहिस्ता गिरे हुए पत्थर और चट्टानों में होशियारी से चारों तरफ देखते हुए बढ़े और भील कुली को मैंने अपनी दोनाली बन्दूक में गराब भर कर दी; जोकि बन्दूक अच्छी तरह से चला लेता था।

जब हम उस चट्टान के नीचे पहुँचे, जहाँ से पिछली शाम को फैर किया था, तो सब आदमियों ने और आगे जाने से इनकार किया। मैंने कहा कि मैं आगे चलूँगा। अगर शेर हमला करेगा तो बहुत मुमकिन है कि मैं उसको मार लूँगा और अगर न मार सकूँ तो तुम पेड़ों पर और बड़ी-बड़ी चट्टानों पर चढ़ जाना। फिर तुमको कोई खतरा नहीं रह जावेगा। जो कुली मेरी बन्दूक लिये हुए था, आगे आया। मैंने कहा कि तुम मुझसे १० कदम पीछे रहो और अगर जरूरत पड़े

तो मुझको बचाकर फैर करना। हम २० कदम और गये होंगे कि मैंने शेर को एक चट्टान के सहारे पड़ा देखा। मैं खाँसा और कुली से कहा कि पत्थर मारो, मगर वह मरा हुआ था और मक्खियाँ भी आने लगी थीं। हमने नजदीक जाकर देखा तो मालूम होता था कि वह शाम ही को मर गया था। मेरी ३६६ बोर राइफल की पहली गोली कन्धे पर लगी थी और वह उसी से फ़ौरन मर गया था। वह ८ फ़ीट ५ इंच की पुरानी मादीन थी और उसकी खाल भी अच्छी न थी।

६८. मेरा ग्यारहवाँ शेर पैदल

७ मई सन् १९३४ ई० को मैं दुदहई फ़ारेस्ट के बँगले में पहुँचा, जोकि एक झील के किनारे पर था। मेरी बीबी और बच्चे गर्मियों की छुट्टियों में एक छोटे स्टेशन पर, जोकि वहाँ से ६ मील के फासले पर था, सुबह की गाड़ी से आनेवाले थे। मैं दिन निकलते वक्त एक अरदली, एक खलासी और ड्राइवर को लेकर जब मोटर में बैठ रहा था तो बँगले के सामने अपनी चारपाई के पास शेर के पैर के निशान देखे; जोकि बँगले के आहाते में होकर अक्सर रात को निकलता था। जिस दिन मैं आया था उस दिन भी रात के ताजे निशान बँगले के पास से गुजरने के देखे थे। मैंने ख्याल किया था कि जब तक हम वहाँ हैं करीब १५ आदमी, चार गाड़ियाँ, आठ बैल और आहाते में कई जगह आग और आदमी देखकर शेर आहाते में होकर नहीं निकलेगा। खैर, मैंने ३६६ बोर राइफल और ५ कारतूस ले लिया और रवाना हुए। शेर भी उसी सड़क पर गया था, जिस पर हम जा रहे थे।

जब हम ढाई मील चौराहे पर पहुँचे तो देखा कि एक और शेर पूरब से भी आया था और वह भी स्टेशनवाली सड़क पर गया था। अब दो शेरों के निशान एक नर और एक मादीन के, सड़क पर साफ दिखलायी देने लगे ; जोकि हमारे आगे-आगे गये थे। चौराहे से सड़क में तेज ढाल नीचे की तरफ भाकड़ा नाले को पार करने के लिए करीब

१ फरलाँग तक था। जब मोटर नाले में पहुँचा, जिसमें एक फीट गहरा पानी था, तो मैंने शेर के पैर का ताजा निशान अपने बायीं तरफ एक पत्थर पर देखा, जिस पर से पानी उस वक्त तक नीचे की तरफ रेंग रहा था। मैंने नाले को पार करके मोटर रोका और वैसे ही ताजे पानी के शेर के पैर के निशान और पत्थरों पर भी देखे। शेर शायद नाले से गुजर रहा था। जब उसने हमारे मोटर की आवाज चौराहे से नाले की तरफ आती हुई सुनी, तब वह सड़क छोड़कर नाले में चला गया। मैंने ख्याल किया कि वह हमसे ज्यादा दूर नहीं गया होगा।

सूरज निकल रहा था और रेल के आने का वक्त था। स्टेशन छोटा था। वहाँ कुली नहीं मिलते थे और रेल सिर्फ ५ मिनट ठहरती थी। मैंने अरदली और ड्राइवर से कहा कि तुम मोटर ले जाओ और जंगल के ठेकेदारों के आदमियों की मदद से असबाब उतरवा कर इस नाले पर मेरा इन्तजार करना। मैं खलासी को अपने साथ लेकर नाले के पच्छिमी किनारे पर रवाना हुआ; जोकि नाले से ३-४ फीट ऊँचा था। जंगल में हाल ही में आग लग चुकी थी, लिहाजा छिपने का मौका नहीं था और सूखी पत्तियाँ काफी गिरी हुई थीं; जिस पर चलने से आवाज होती थी। मैंने जूते उतार दिये और खलासी से कहा कि उनको लेकर के तुम २० कदम मेरे पीछे आओ और जब मैं ठहरूँ, तुम भी ठहर जाओ; बिलकुल मेरी नकल करना। मैं सिर्फ मोजा पहने हुए बड़े पेड़ों की आड़ लेता हुआ ५० ही कदम गया था कि मैंने शेर को नाले में एक गहरे कुँड के किनारे बैठा देखा। उसके पूरब तरफ नाले का किनारा दीवार की तरह २० फीट से भी ज्यादा ऊँचा था। शेर का मुँह दक्खिन की तरफ था और दाहनी बगल मेरी तरफ थी। फासला करीब ८० गज के था। मैं बैठकर मौका देख रहा था कि किस तरफ से और नजदीक पहुँचूँ। शेर बेफिकरी से बैठा अगले हाथों से हड्डी दबाये हुए चबा रहा था। बाद को मालूम हुआ कि किसी शिकारी का पड्डा वहाँ दस रोज पहले मारा गया था। उसकी हड्डियाँ व पैर वहाँ पड़े हुए थे, शायद इसी शेर ने मारा हो। मैं चाहता था कि कम-

से-कम १५ गज सामने बाँस के पेड़ के नीचे पहुँच जाऊँ, तब वहाँ से बैठकर बाँस की शाखों को बचाकर इतमीनान की गोली मारूँ। हवा खिलाफ ही मेरी तरफ से शेर की तरफ चल रही थी और शेर के कान व आँखें बहुत तेज होते हैं। जैसे ही मैं आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ा शेर ने सर मोड़कर मेरी तरफ देखना शुरू किया। मैं जिस तरह था वैसे ही बाँस की हल्की आड़ में ठहर गया। जंगल बहुत खुला हुआ था; क्योंकि हाल ही में जल चुका था। शेर ने फिर हड्डी चबाना शुरू किया। अब मैं बैठे-बैठे करीब ५ कदम के और आगे बढ़ा। शेर ने फिर मुँह मोड़कर इस मर्तबा ज्यादा शक के साथ देर तक मेरी तरफ कान ऊँचे-नीचे करके देखा। मैंने ख्याल किया कि अब यह और आगे नहीं जाने देगा; लिहाजा बाँस की लटकती हुई शाखों को बचा कर मैंने उसकी दाहनी बगल पर इतमीनान का निशाना लेकर फायर किया। वह एक ढौंक मारकर सीधा अपने सामने नाले के पूरबी ऊँचे किनारे की तरफ भागा। मगर वह दीवार की तरह सीधा था और चढ़ने के काबिल न था। उसकी जड़ तक जाकर वह फिर मुड़ा और कुँड के किनारे भाग रहा था कि मेरी दूसरी गोली भी पहली गोली के पास पड़ी और वह उसी जगह गिर पड़ा, जहाँ पहले हड्डी चबा रहा था। मैं तीसरी गोली मारने के लिए निशाना जमाये हुए बिलकुल तैयार था कि अगर उठे तो दागूँ, मगर वह थोड़ी देर तड़पकर रह गया। मैंने पत्थर फेंके, खाँसा मगर वह नहीं हिला। मैं आहिस्ता-आहिस्ता होशियारी से गया तो देखा कि मेरी पहली गोली उसके बगल के जरा पीछे पड़ी थी, जिससे अगले हाथ और दिल बच गया और पसली व फेफड़े में चोट लगी थी। मगर दूसरी गोली कंधे पर पड़ी थी और उसने दोनों अगले हाथ और दिल को चूर कर दिया था। यह देखकर मुझे बहुत ही अफसोस हुआ कि यह भी मादीन थी और वह नर शेर न था, जोकि मेरी चारपाई के पास से रात को निकल गया था। यह हाल ही में बच्चे देनेवाली थी। मैं सड़क पर नाले के किनारे बैठा मोटर की वापसी का इन्तजार करता रहा। जब मोटर आया तो मैं सबको शेर

और उसका जंगल का घर दिखलाने ले गया। जब वह कैम्प लाकर नापी गयी तो ८ फीट २ इंच की निकली। उसके पेट से चार बच्चे, २ नर और २ मादीन निकले; जिसका मुझे बहुत ही अफसोस हुआ। मैं मादीन शेर को जितना बचाता था, उतना ही वे मुझे मिलते थे।

६६. मेरा तैंतीसवाँ गुलदार

दूसरे साल शुरू जनवरी सन् १९३५ ई० में मैं फिर देवगढ़ आया। मेरा शौक शेर व गुलदार मारने का भी खत्म हो चुका था और मैं कोई खास इन्तजाम उनकी तलाश और मारने के लिए नहीं करता था, बल्कि जो मौका अपने आप चलते-फिरते मिल जाता था, वह ले लेता था। मेरी स्त्री की तबीयत मुझसे बिलकुल मुख्तलिफ थी। उनको खेल-कूद व दौरे से कोई दिलचस्पी नहीं थी। शिकार से तो उन्हें शुरू से ही सख्त नफरत थी और हमेशा मुझे रोका और नफरत दिलायी। जब कभी मैं कोई जानवर मारता था, उनको बहुत अफसोस होता था। वे हमेशा यही कहा करती थीं कि इसका जोड़ा और बच्चे सब इसको नहीं पावेंगे तो कैसा रंज करेंगे और क्या ख्याल करेंगे।

देवगढ़ पहुँचकर मैंने चौकीदार से पूछा कि उस अड्डी के नीचे आजकल कुछ है। उसने कहा कि कभी-कभी बड़े और छोटे शेर के पैरों के निशान मिलते हैं। वह आते व जाते रहते हैं और अगर हम बराबर दो-चार दिन पड्डा बँधवा दें, तो जरूर मारा जावेगा। मैंने कहा कि तुम रोज देख आया करो और जब बड़े शेर का निशान देखो तब बतलाना, पड्डा बाँधेंगे। मेरी स्त्री ने जो लड़कों को लेकर बड़े दिन की छुट्टियों में आयी थीं और मैं सबको एक हफ्ता के लिए दौरे में ले आया था, कहा कि तुम अपने शौक के लिए दो जानें लेते हो। यह गरीब बेजबान पड्डा रात भर जनवरी की सर्दी में खुले मैदान में और फिर मौत के मुँह में बँधकर क्या ख्याल करेगा, जब हम आराम से अपने गरम बिस्तर में बँगले के अन्दर महफूज सो रहे होंगे। कभी इस पर

भी ख्याल किया है ? तुमको इस तमाम खर्चे, तकलीफ और खतरे से क्या मिलता है ? सिवाय थोड़ी देर के लिए घबराहट व परेशानी के, जिसको तुम लुत्फ समझते हो और यह लुत्फ अब तुमने बहुत देख लिया है। इस जुल्म से तुम्हारा जी कब भरेगा ? तुम्हारे पास शेर व गुलदार की काफी खालें हैं। मेहरबानी करके जब तक मैं यहाँ हूँ, गरीब बेकस पड्डे को मौत के मुँह में न बँधवाओ। जब अकेले हो, बँधवा लेना। तुम ईश्वर को क्या जवाब दोगे, जिसने इन जानवरों को बनाया है और तुम इनको बरबाद करते हो ? मैंने पड्डा बँधवाने का ख्याल छोड़ दिया, यह कहते हुए कि तुम और बच्चे अलग रहते हो, इस वियावान जंगल में आखिर जिन्दगी कैसे बसर की जावे।

मैं शाम को बीबी-बच्चों को किला और उसके अंदर बौद्धमत की सैकड़ों मूर्तियाँ दिखलाने ले गया। हमने इस मर्तबा पुरानी इमारतें और मूर्तियाँ देखने में करीब दो घंटे के सर्फा किये। सूरज डूबने से पहले हम वापस होने लगे। मेरा कुत्ता इधर-उधर झाड़ियों में तीतरों के पीछे दौड़ता रहा। उसने चन्द चीतल भगाये और उनके पीछे दौड़ता गया। मेरे अरदली ने कहा कि कुत्ते को बुला लो, नहीं तो गुलदार पकड़ लेगा। मैं हँसने लगा। उसने कहा कि पहले डिवीजनल फारेस्ट अफसर मेजर पामर के कुत्ते को इसी जगह गुलदार पकड़ चुका है। मैंने बुला लिया और अब हम किले के फाटक के पास पहुँच चुके थे कि बन्दरों ने खतरे की आवाजें पेड़ों पर से देना शुरू कीं; जोकि किले की दीवार के साथ-साथ हमसे करीब १०० कदम उत्तर की तरफ खड़े थे। पहले मैंने ख्याल किया कि शायद मेरे कुत्ते को देखकर बोल रहे हों, लेकिन उनकी आवाजें और ज्यादा तेज होती गयीं, जैसे-जैसे हम उनसे दूर होते गये। मैंने गौर से उनको देखा तो वे सब किले की दीवार के बाहर देखकर बोल रहे थे। मैंने अरदली से राइफल लिया और उससे कहा कि तुम कुत्ते को पकड़कर यहाँ सबके साथ ठहरो और मैं थोड़ी देर में अँधेरे से पहले आ जाऊँगा। किले की दीवार बाहर से बहुत ऊँची थी। मगर अन्दर से नीची थी और कई जगह

पर टूटी हुई थी। ५० कदम जाने के बाद मैं उस चौड़ी दीवार पर चढ़ा और बाहर की तरफ आड़ लेकर गौर से देखा तो पेड़ और झाड़ियाँ काफी थीं और कुछ नहीं दिखलायी दिया, लेकिन बन्दर अब भी बाहर की तरफ देखकर शोर मचा रहे थे; जिससे यकीन होता था कि वे कोई दुश्मन जरूर देख रहे हैं।

मैं करीब १५ कदम के और आगे बढ़ा और बन्दर मुझे अपनी तरफ आते देख कर पूरब की तरफ पेड़ों पर कूद-कूद कर जाने लगे। मैं किले की दीवार पर गोली चलाने के एक सूराख के सामने बैठ गया और बकरी की दो-तीन आवाजें बोला। ५ मिनट के अन्दर मैंने देखा कि एक गुलदार झाड़ी से निकल कर आहिस्ता-आहिस्ता मेरी तरफ थोड़ी दूर आकर खड़ा होकर गौर से देखने लगा। मैंने बकरी की दो और आवाजें दीं। वह दबक कर आहिस्ता-आहिस्ता दीवार की तरफ एक झाड़ी से दूसरी झाड़ी की आड़ लेता हुआ आया और जब करीब ३० कदम के रह गया तो मैंने सीने पर गोली मारी और वह वहीं गिर गया। जब मुझे यकीन हो गया कि मर गया तो मैं फाटक पर आकर सबको साथ लेकर कैम्प में आ गया। सुबह मैंने आदमी भेजे, जो गुलदार को उठा लाये। यह भी ६ फीट ४ इंच की मादीन थी।

७०. मेरा चौंतीसवाँ गुलदार

मार्च सन १९३५ ई० में हमीरपुर जिले में मुकाम मोतीकटरा पर सड़क के किनारे मैं गाँव के बाहर डेरा लगाये हुए था। गाँव के चारों तरफ सड़कों और पगडंडियों पर गुलदारों के पैर के निशान दिखलायी देते थे; जोकि रात को वहाँ घूमते थे। गाँव के दो तरफ नदी, नाले और घने जंगल थे और गाँववाले कहते थे कि गुलदार हर हफ्ता दो-एक गाय या बकरी गाँव के नजदीक मारते रहते हैं। दूसरे दिन सुबह मैं जंगल के नाजायज कटान का मुआइना करने गया और वापसी पर गाँव के नजदीक मैंने एक जगह पसन्द की और इरादा

किया कि एक घंटा शाम को वहाँ गाँव का लावारसी कुत्ता बाँधकर बैठूँगा। शाम का खाना जल्दी खाकर मैं वहाँ गया और अपना हल्का झूले का मचान एक पेड़ पर लटका कर गाड़ी की लीक के किनारे कुत्ते को सामने बाँध दिया और आदमियों से कह दिया कि थोड़ी दूर पर किसी पेड़ पर जाकर बैठ जावें। अँधेरा होने के थोड़ी देर बाद तीन गीदड़ कुत्ते की भूँकने की आवाज सुनकर आये और कुत्ते के चारों तरफ घूमते रहे। उनमें से एक कुत्ते से ३० कदम दक्खिन तरफ बैठ गया और दो उत्तर की तरफ जमीन सूँघते और कुत्तों की तरह पिछले पैरों से मिट्टी उड़ाते रहे। यकायक गीदड़ अपनी बोली में भूँकते हुए भागे। थोड़ी देर के लिए बिलकुल सुनसान हो गया। कुत्ता बजाय भूँकने के आहिस्ता-आहिस्ता गुर्राता रहा। अँधेरा हो गया था। मुझे सड़क के किनारे कुछ चलने की आवाज कुत्ते की तरफ जाती हुई मालूम हुई। फिर यह आवाज बन्द हो गयी और थोड़ी देर के बाद कुत्ते पर हमले की आवाज हुई। कुत्ता एक मर्तबा चिल्लाया और खामोश हो गया। मैंने छोटी टार्च की रोशनी डाली तो मालूम हुआ कि गुलदार कुत्ते को दबाये हुए है। मैंने जल्दी से निशाना लेकर फायर किया। गुलदार जोर की आवाज देकर भागा और करीब २५ कदम पर गिर पड़ा। थोड़ी देर तड़पने के बाद मरने की आवाज मालूम हुई और फिर खामोशी हो गयी।

मैंने आदमियों को सीटी दी। कुत्ते की तरफ रोशनी डाली तो कुत्ता खामोश पड़ा हुआ था। मैं समझा कि मर गया है। पेड़ से उतरने के बाद हम पड़ाव की तरफ रवाना हुए और थोड़ी दूर ही गये होंगे कि कुत्ता चिल्लाने लगा। मैंने फिर रोशनी डाली तो कुत्ता खड़ा था और भागने के लिए झटके मार रहा था। हमने पास जाकर देखा तो उसके एक नाखून तक भी नहीं लगा था। हम उसको भी खोल लाये। सुबह गुलदार मरा हुआ मिला। यह भी ६ फीट ८ इंच की मादीन थी।

७१. मेरा पैंतीसवाँ गुलदार

मोतीकटरा रेलवे स्टेशन से करीब ६० मील और पक्की सड़क से करीब १० मील पर था। मार्च में भी वहाँ दिन में काफी तेज धूप और गर्मी पड़ती थी और दोपहर को हवा बहुत जोर से चलती थी; जिससे डेरे में धूल और पत्तियाँ बहुत आती थीं। मैंने जंगल से वापस आकर गुसल किया और खाना खाकर दफ्तर का काम करने लगा। मगर इस पड़ाव में मक्खियाँ इस कदर ज्यादा थीं कि बैठना मुश्किल हो गया।

मैंने कैम्प क्लर्क से कहा कि शाम को आना और मैं थोड़ी देर के लिए लेट रहा। तीसरे पहर को मेरे डेरे के नजदीक सड़क पर कोई औरत बहुत बुरी तरह से रोती हुई आ रही थी। मैंने अरदली को बुलाकर कहा कि देखो यह कौन और क्यों रो रही है। अरदली ने आकर बतलाया कि एक बुढ़िया की गाय गुलदार ने मार डाली है। मैंने उसको बुलाया और पूछा कि कब और कहाँ पर मारी है। उसने कहा कि मैं ब्राह्मण बेवा औरत हूँ। मेरे तीन गायें थीं। मैं उनको और गाँववालों की १०-१२ गायें लेकर चराने जाती थी। मेरी एक गाय दो सेर दूध देती थी; जोकि मैं आठ आने का बेच लेती थी। यही जरिया मेरी गुजर-बसर का था और उसी गाय को गुलदार ने मार डाला है। उसका एक महीने का बचा बच्चा भी मर जावेगा।

मैंने पूछा कि गुलदार ने कब और कहाँ गाय को मारा है। उसने कहा कि एक घंटा हुआ होगा, मैं एक पेड़ के नीचे बैठी थी और सब गायें सामने करौंदे की झाड़ियों में एक सूखे नाले के किनारे चर रही थीं। यकायक सब गायें चौंक कर भागीं। मगर कुछ दिखलायी न दिया। मैं उठी और सब गायों को इकट्ठा कर रही थी, तब मैंने एक गाय के मरने और तड़पने की आवाज करौंदे की झाड़ियों में सुनी।

मैं उस तरफ गयी तो देखा कि मेरी ही गाय जमीन पर पड़ी तड़प रही थी और गुलदार उसको दबाये हुए था। मैंने शोर मचाया, अपनी लकड़ी जमीन पर मारी, मगर गुलदार मेरे ऊपर गुर्राने लगा। तब मैं और गायों को हँका लायी। मैंने कहा—मुझे तुम्हारी मुसीबत पर बड़ा अफसोस है। मगर मैं क्या कर सकता हूँ, सिवाय इसके कि गुलदार के मारने की कोशिश करूँ। उसने कहा कि उसको तसल्ली हो जावेगी, अगर उसका दुश्मन मार दिया जावे। मैंने पूछा कि वह जगह यहाँ से कितनी दूर है। उसने जवाब दिया कि बिलकुल नजदीक है। मैंने एक अरदली और एक खलासी को बुढ़िया के साथ भेजा और कह दिया कि गाय की लाश को करौंदे की काँटेदार डालों से खूब ढक देना और खलासी को वहाँ छोड़ आना ताकि गिद्ध न पड़ने दे। मैं तैयार होता हूँ और तुम्हारी वापसी पर ४ बजे चलूँगा।

गाँव के लोग भी जमा हो गये थे और चन्द लड़के भी जाने लगे, मैंने उनको रोक दिया कि ज्यादा आदमी न जाओ नहीं तो गुलदार भड़क कर होशियार हो जावेगा। मैं तैयार होकर चाय पी रहा था। अरदली लौटकर आया और उसने कहा कि जब वे लोग वहाँ पहुँचे, गुलदार गाय को खा रहा था। गाय के पास ही एक सूखा नाला था, जिसके दोनों तरफ घनी झाड़ियाँ थीं और चारों तरफ सिवाय करौंदे की झाड़ियों के १०० गज चारों तरफ कोई पेड़ भी मचान बाँधने के लायक नहीं था। गुलदार उनको देखकर नाले के अन्दर झाड़ियों में चला गया। उन्होंने लाश को ढक दिया था, मगर गिद्ध जमा हो रहे थे। मैं वहाँ चार बजे के बाद पहुँच गया। खलासी ने बतलाया कि नाले में झाड़ियों के नीचे कोई जानवर आगे-पीछे चल रहा है। मैंने ख्याल किया कि गुलदार ने पेट भर कर नहीं खाया है, लिहाजा नज़दीक ही घूम रहा है और जल्दी आने की उम्मीद है। मैंने जल्दी से एक घने करौंदे की झाड़ी लाश से करीब २५ कदम पर पूरब की तरफ छाँटी और नाला लाश से १० कदम पच्छिम था। झाड़ी के अन्दर मैंने अपने बैठने के लायक जगह साफ़ कर ली और बैठ गया। मैंने अपने आदमियों से

कहा कि तुम यहाँ से सौ कदम पर गाँव से जो रास्ता इस तरफ आया है, उस पर बैठ जाओ और किसी को इस तरफ न आने दो। यह रास्ता मेरे पीछे करीब ५० कदम से गुजरता था। मैं करीब २० मिनट के वहाँ बैठा हूँगा कि दक्खिन की तरफ से किसी जानवर के आने की आहट सूखे पत्तों पर मालूम हुई। गाँव और मेरा कैम्प करीब आधा मील के उत्तर में था। सड़क मेरे पीछे पूरब में और गाय की लाश पच्छिम में डूबते हुए सूरज के सामने थी। सूखी पत्तियों में आवाज मेरे बायीं तरफ और नजदीक आती गयी। मेरे रोंगटे खड़े होने शुरू हुए और मैंने आहिस्ता-आहिस्ता अपनी ३६६ बोर माजर राइफल आते हुए जानवर की तरफ सीधी की; जोकि अब मेरी झाड़ी के बिलकुल पास था, मगर घनी झाड़ी की आड़ से दिखलायी नहीं दे रहा था। मेरे तमाम डर का मजा, जोकि खतरनाक जानवरों के शिकार का खास लुत्फ है, खत्म हो गया। जब मैंने देखा कि दो नातंदुरुस्त खुजली के बीमार गीदड़ चोरों की तरह से पैंतरा बदलते हुए, इधर-उधर देखते हुए और दुम लटकाये हुए मेरे सामने आकर खड़े हो गये। उन्हें यह नहीं मालूम था कि उनसे बड़ा चोर मुश्किल से ५ गज पर छिपा बैठा है। मगर वह अपनी ही फ़िक्र में डूबे हुए थे कि किस तरह से दो-चार मुँह गाय पर मारकर अपना भूखा पेट भरें। मैंने एक कंकड़ी उठाकर उनकी तरफ फेंकी। दोनों हवा में उछल पड़े और बगैर मुझे देखे हुए सामने भाग गये। करीब १० मिनट के अंदर खाने के लालच में वे फिर पहले की तरह डरते हुए उत्तर की तरफ से आये। जब वे चारों तरफ देख रहे थे, मैं झाड़ी में झुक गया; ताकि वे मुझे न देख सकें और कुछ खा लें; क्योंकि दूसरे जानवर की लाश पर मौजूदगी से असली कातिल रश्क और गुस्से की वजह से एकदम अंधा होकर दौड़ पड़ता है। दूसरे, उसको लाइन क्लिअर मिल जाता है, कि कोई खतरा नहीं है। दोनों गीदड़ डरते-डरते लाश पर आकर खाने लगे और चारों तरफ देखते रहे। मैंने फिर आहिस्ता से सीटी दी। वे फिर कूदकर भागे और जब देखा कि कुछ नहीं है तो फिर आ

गये। इसी तरह से कुछ देर गुज़री और जब वे आजादी से खाने और लड़ने लगे तो एक ने सर उठाकर उत्तर की तरफ देखा और भागा। दूसरा भी उसके पीछे दुम दबाकर दक्खिन की तरफ भाग गया। मैं समझा कि गुलदार आता है। मगर बजाय गुलदार के एक पूरे क़द का लकड़बग्घा उत्तर की तरफ से आहिस्ता-आहिस्ता चोर की तरह से आया। गोया यह उसे मालूम था कि लाश का मालिक कोई और है और न मालूम किस वक्त वह आ पड़े और मरम्मत करे। वह लाश से करीब २० कदम पर कुछ देर ठहरा और चारों तरफ देखता और हवा को अपनी चौड़ी नाक से सूँघता रहा। लाश के पास आकर बजाय खाने के उसने फौरन गाय की गर्दन पकड़ी और पूरी गाय को उत्तर की तरफ घसीटना शुरू किया। यह देखते हुए कि अगर वह थोड़ी दूर और ले जावेगा तो मैं उसको देख भी न सकूँगा, मैंने सीटी दी। वह ज़रा रुका, चारों तरफ देखा और फिर घसीटने लगा। मैंने रूमाल निकालकर हिलाया और सीटी दी। उसने मेरी तरफ ग़ौर से देखा और भाग गया; मगर थोड़ी ही देर में फिर आ गया।

वह जब दूसरी मर्त्तबा आया तो बावजूद मेरी सीटी और रूमाल हिलाने के वह लाश को मेरी निगाह से हटा ले गया। मैं परेशान था कि क्या करूँ। आखिरकार मैंने दो सीटियाँ जोर से दीं। मेरे आदमियों ने भी जवाब में दो सीटियाँ दीं। मैंने फिर दो सीटियाँ दीं और आदमी आये, जैसा कि मैंने सिखा रक्खा था। मैं झाड़ी से निकला और हम तीनों ने मुश्किल से गाय को फिर घसीट कर पहली जगह पर लाकर एक झाड़ी से बाँध दिया। मुझे नहीं मालूम था कि लकड़बग्घे में भी इस क़दर ताक़त होती है। मैं फिर झाड़ी में बैठ गया और आदमियों को वापस कर दिया। अब इतनी गड़बड़ और शोर के बाद गुलदार के आने की उम्मीद बहुत कम रह गयी थी; लेकिन मैंने शाम तक बैठने का इरादा कर लिया था। सूरज डूबने के बाद लकड़बग्घा फिर आया और गाय को खींचने के लिए कई झटके लगाये; मगर रस्सी को न तोड़ सका। उसने मेरी तरफ देखा। उसने या तो पहचाना नहीं या

देख ही न सका और फिर चारों तरफ देखकर बैठ गया। उसने जल्दी-जल्दी खाना शुरू किया। मैं उसको देखता रहा। अब अँधेरा होने लगा था और उठने का इरादा भी कर रहा था कि लकड़बग्घा यकायक कूदा और भागा। मैं चारों तरफ उसके इस तरह एकदम भागने की वजह देखने लगा, मगर कुछ नहीं दिखलायी दिया। अब और अँधेरा हो चला था। मैंने फिर उठने का इरादा किया और ख्याल किया कि कल शाम को फिर बैठूँगा। उस वक्त नाले में पत्तों पर खड़बड़ सुनायी दी। मैंने गौर से देखा तो मुझे नाले के किनारे किसी जानवर का सर, आँखें और नाक की तरह कुछ दिखलायी दिया, मगर यकीन नहीं हुआ कि क्या है। अँधेरा होता जाता था। मैंने थोड़ा और इन्तजार किया कि अगर वह हिले तो दागूँ, नहीं तो इस तरह पहले कई मर्त्तबा धोखा हो चुका था; लेकिन अँधेरा ज्यादा होने लगा और राइफल के आगे की मक्खी भी बहुत कम दिखलायी देती थी, लिहाजा मैंने उस सर की तरह-सी चीज़ पर निशाना लेकर फैर किया। मुझे ऐसा मालूम हुआ कि कोई जानवर नाले में लुढ़का और फिर सूखी पत्तियों में दो-चार बार पूँछ फटकी और फिर बिलकुल खामोशी छा गयी। मैं उठा और खामोशी से चला आया कि सुबह देखेंगे कि क्या है। जब मैं अपने पड़ाव पर पहुँचा तो देखा कि बुढ़िया बैठी थी। उसने पूछा कि क्या मेरे दुश्मन को मार दिया। मैंने कहा कि कल सुबह आओ, तब चलकर देखेंगे कि क्या मारा है। या तो तुम्हारा दुश्मन है या लकड़बग्घा है। मगर मुझे यह यकीन है कि दोनों में से एक जानवर जरूर मार दिया है।

दूसरे दिन सुबह हम, गाँववाले और बुढ़िया सभी गये तो देखा कि गीदड़ और गिद्ध लाश के चारों तरफ बैठे देख रहे थे और श्री-लकड़बग्घा साहब जंगल के कानून के मुताबिक कि "जिसकी लाठी उसकी भैंस"—गाय को बेफिकरी से खा रहे थे। हमको आते देखकर सब एक-एक करके गायब हो गये। मैंने नाले के किनारे, जहाँ गोली दागी थी, जाकर देखा तो एक निहायत अच्छा तन्दुरुस्त नर गुलदार

पड़ा था और दोनों आँखों के बीच में मेरी ३६६ बोर राइफल, जोकि बहुत ही कम खाली जाती थी, उसकी गोली का सूराख था। मैंने पीछे देखा तो बुढ़िया अपनी गाय की हालत देखकर रो रही थी। मैंने कहा कि लो, तुम्हारा दुश्मन यह पड़ा है। सबसे पहले बुढ़िया ही नाले में उतरी और मरे हुए गुलदार को अपनी टेढ़ी लकड़ी से मारना और गाली देना शुरू किया, और इतना मारा कि लकड़ी टूट गयी। हम उसको कैम्प में लाये और नापा तो ७ फीट ९ इंच का नर गुलदार बहुत अच्छी तंदुरुस्त हालत में निकला। हमको उसी दिन वहाँ से दूसरे कैम्प को जाना था। फौरन ही खाल निकलवायी और बुढ़िया बैठी हुई देखती और कोसती और रोती रही। मैंने बुढ़िया को ५ रुपया देकर बिदा किया। हम खाना खाकर दूसरे कैम्प रुरा को रवाना हुए। मोतीकटरा ववजह शहर, रेलवे लाइन और पक्की सड़क से दूर होने के, हमेशा और अरसा तक गुलदारों के लिए बहुत अच्छी जगह बना रहेगा और वहाँ के घने झाड़ीदार नाले वाले जङ्गल भी उनके लिए बहुत ही मुनासिब हैं।

७२. मेरा छत्तीसवाँ गुलदार

रुरा मोतीकटरा से करीब ८० मील के था; लिहाजा मैं कूच करता हुआ पहुँचा। रुरा में कटान और प्लान्टेशन के काम हो रहे थे। इसलिए मुझे वहाँ कई दिन ठहरना पड़ा। पुराने प्लान्टेशन में एक कुआँ नरसरी में था; जिसके चारों तरफ अब बहुत घना जङ्गल था। कुएँ की जगत करीब ६ फीट ऊँची थी। कटान और प्लान्टेशन देखने जब मैं रोज़ जाता, तो एक नदी को किश्ती से पार करना होता था और पुराने प्लान्टेशन के कुएँ के पास से घने जङ्गल से गुज़रना होता था। मैं वहाँ रोज एक गुलदार के जोड़े के पैरों के निशान देखता था। यह कुआँ रुरा जङ्गलात के बँगले से करीब एक मील के था और शाम को चीतलों के खतरे की आवाजें रोज़ सुनायी देती थीं। मैंने फॉरेस्ट गार्ड से कहा कि एक बकरी का बच्चा मेरे लिए खरीद लाओ, ताकि शाम को कुछ

तमाशा देखें। जब बकरी का बच्चा आ गया तो मैं शाम को उसको और अरदली को लेकर नदी को किश्ती से पार करके पुराने कुएँ पर गया। बकरी के बच्चे को कुएँ से करीब २० कदम पर दक्खिन तरफ़ बाँधा। मैं कुएँ की ६ फीट ऊँची जगत पर बैठ गया और चन्द लम्बी, पत्तीदार डाल अपने सामने और दायें-बायें अपने छिपने के लिए खड़ी कर ली। मैंने आदमियों से कह दिया कि एक फरलाङ्ग पच्छिम तरफ नाववाले के साथ बैठो और जब मैं सीटी दूँ या फैर हो, तब आना। जङ्गल में बिलकुल खामोशी थी। गर्मियों की तेज गर्म हवा चल रही थी और मक्खी, भुनगे और मच्छरों ने बैठते ही घेर लिया; जिससे कि खामोश बैठना मुश्किल हो गया। हवा की तेजी से एक डाल, जोकि मेरे सामने खड़ी थी, गिर पड़ी और उसको ठीक करने की कोशिश में बकरी ने मुझे देख लिया और बोलना बन्द कर दिया। खामोश और गूँगी बकरी को लेकर बैठने से कोई फायदा न था, लिहाजा मैं उतरा और बकरी की आँखों पर रूमाल बाँध दिया, जिससे बकरी खूब बोलने और उछलने-कूदने लगी।

बकरी थोड़ी ही देर बोली होगी कि करीब १ फरलाँग दक्खिन में चीतलों ने खतरे का शोर मचाना शुरू किया; जिससे उम्मीद हुई कि शायद चीतलों ने गुलदार को आते हुए देख लिया। बकरी बोलती रही, मगर चीतलों का बोलना बन्द हो गया और थोड़ी देर के बाद चन्द मोर खतरे का शोर मचाते हुए बकरी से करीब ५० कदम दक्खिन से उड़कर मेरे चारों तरफ बड़े पेड़ों पर बैठ गये। मैंने अपनी निगाह उस तरफ घनी झाड़ियों में जमायी तो देखा कि एक गुलदार का सर आहिस्ता-आहिस्ता नरसरी की खन्दक के ऊपर निकल रहा था। गो मैं गुलदार और बकरी के सीध में था, मगर पत्तीदार डालों की वजह से, जिनको मैंने अपने सामने खड़ा कर रखा था, गुलदार ने मुझे नहीं देखा। उसकी सारी तवज्जेह बकरी की तरफ थी, जोकि खूब बोल रही थी। उसने थोड़ी देर कूदती हुई और बोलती हुई बकरी को देखा फिर खन्दक में गायब होकर १० कदम पूरब की तरफ और बकरी से करीब

२० कदम पर फिर सर निकाला और जब बकरी का पिछला धड़ उसकी तरफ हुआ, तब दुबके हुए तेजी से बकरी के पास आकर खड़ा हो गया। बकरी किसी जानवर के पास आने की आहट सुनकर या रूमाल में से गुलदार को देखकर खामोश गुलदार की तरफ मुँह करके खड़ी हो गयी।

मुझे उम्मीद थी कि गुलदार बकरी के पास पहुँचने पर फौरन हमला करेगा और मैंने यह तय कर रखा था कि जैसे ही बकरी को पकड़े मैं इतमीनान का निशाना लेकर फैर करूँ। लेकिन बजाय इसके, गुलदार चन्द कदम आगे बढ़ा और अपनी लम्बी दुम बकरी के ऊपर डाल दी। दुम लगते ही बकरी कूदी और कैम्प की तरफ भागी। मगर रस्सी का झटका लगते ही गिर पड़ी। गुलदार पास ही खड़ा देखता रहा और जब बकरी खतरे की आवाज करती हुई उठी, गुलदार मुड़ा और अपनी दुम फिर बकरी की तरफ फेंकी। मैंने ख्याल किया कि गुलदार को पूरा भरोसा बकरी को पकड़ने का है। तीसरे चक्कर पर जब उसकी बगल मेरे सामने पड़ी, मैंने फायर किया। गुलदार अपने मुँह के सामने थोड़ी दूर भागा और फिर वापस आकर बकरी का मुँह आँखों के नीचे से पकड़ा। मैंने दूसरा फायर किया। यह गोली कँधे पर पड़ी। वह मय बकरी के गिर गया और थोड़ी देर तड़पकर मर गया। मैंने अपने आदमी को बुलाया और कुएँ की जगत से कूदा तो देखा कि गुलदार ने बकरी का मुँह आँख के नीचे से करीब-करीब अलग कर दिया था। इसलिए मुझे बकरी को भी मारना पड़ा। मेरी पहली गोली गुलदार के पेट में पड़ी थी और उसे भागते वक्त शायद यह ख्याल हुआ कि बकरी ने उसको जख्मी किया है और फौरन ही बिजली की तरह लौटकर बकरी का मुँह गुस्से में चबा डाला। यह ६ फीट ३ इंच की मादीन थी; जिसने अनोखा तमाशा दिखाया।

---

७३. मेरा सैंतीसवाँ गुलदार

शुरू सन् १९३६ ई० में मेरा तबादला फिर लेंसडौन डिवीजन का हुआ। मुझे बहुत खुशी हुई; क्योंकि मुझे इस डिवीजन के हरे-भरे शादाब जंगल, पहाड़, नदी, नाले और शिकार के मौके बहुत पसन्द थे। यहाँ मुझे फिर वे ही २ हाथी एक आँखवाली रामप्यारी और मशहूर बालमती मिले और मेरा लेबरडोर भारी कुत्ता, जोकि हिफाजत और चिड़ियों के शिकार के लिए बहुत अच्छा था। मगर इस मर्तबा मेरे पास उतनी अच्छी और मजबूत घोड़ी न थी। मैंने मेजर पामर से चार्ज लिया और करीब १५ दिन जाड़ों के कोटद्वारा हेडक्वार्टर में दफ्तर का काम किया। मैंने अपने सामान के वैगन और घोड़ी का इन्तजार किया; जोकि आगरा से आ रहे थे और जहाँ मैं तीन महीने की छुट्टी में था।

सामान आने के दो-एक दिन बाद मैं कोटरी वेली, कोलूचोड़ के बँगले में गया, जहाँ पहाड़ी इलाका नाले, नदियाँ घने जंगल, झाड़ियाँ और ऊँची घास थी और जहाँ हर तरह के छोटे-बड़े शिकार का घर था। मुझे यहाँ एक हफ्ता से ज्यादा ठहरना था और कोटरी वेली की सड़क की घाटियों को सँभालना था; जोकि कोटरी नदी को २० मील की लम्बाई में १४ मर्तबा इधर से उधर पार करती थी, ताकि हल्की गाड़ियाँ उस पर चल सकें और लकड़ी की निकासी पर खर्चा कम हो। उस साल कोटरी वेली के जंगल से कई लाख की लकड़ी की निकासी होनी थी और चारों तरफ बड़े पैमाने पर कटान हो रहे थे। उस वक्त तक कोटरी वेली में गाड़ियाँ बवजह सड़क खराब होने के नहीं जाती थीं। सोख्ता लट्ठे और शहतीर बिलकुल नहीं निकलते थे। सिर्फ चिरान की छोटी लकड़ी मसलन सिलीपर व कड़ी वगैरह पहाड़ी जंगलों से आदमी और औरतें कन्धों पर लाद कर कोटरी नदी

के किनारे घास के मैदानों में जमा करते थे। फिर वहाँ से गाय-बैल और भैंसों के ज़रिये घसीट कर सनेह लाते थे और फिर वहाँ से गाड़ियों पर स्टेशन ले जाते थे। जाड़े और गर्मियों में नैनीताल और अल्मोड़ा जिले के हजारों आदमी, औरत मय परिवार व अपने जानवरों के आकर कोटरी वेली में छप्पर बना कर बस जाते थे और ३-४ हजार गाय, भैंस बोली, रामपुर व मुरादाबाद के जिलों से आकर घसीटने का काम करते थे। कोटरी वेली जाड़े और आधी गर्मियों तक खूब आबाद हो जाता था और फिर बरसात में तरह-तरह के जंगली जानवरों का पूरा कब्जा हो जाता था। कोलूचोड़ पहुँचने के दूसरे दिन सुबह मैं अपनी घोड़ी पर रेंज अफसर, फारेस्टर और फारेस्ट गार्ड को लेकर सड़क की जाँच करने गया, कि वहाँ कहाँ-कहाँ कटान व भरान, पुश्ताबन्दी व सड़क का रास्ता बदलने की जरूरत है; ताकि सनेह से कोलूचोड़ तक गाड़ियाँ चल सकें। हम लोग दोपहर तक कई मील घूमे और किस्म-किस्म के जानवरों के पैरों के निशान नदी की रेत में, शेर, गुलदार, रीछ, साँभर, चीतल, काँकड़ वगैरह के देखे; जोकि रात में घूमते थे। शिकार से तबीयत भरी हुई थी और सिवाय अपने खाने के लिए रोज एक मुर्गी और कैम्प वालों के लिए काम के सिलसिले में चलते-फिरते हफ्ते में एक चीतल या साँभर के और जंगली जानवरों और कुदरत के सीन देखने के और कोई दिलचस्पी न थी। हाँ, अगर कहीं बड़े नर शेर या गुलदार का निशान मिल जाता था तो दिलचस्पी जरूर बढ़ जाती थी।

वापसी पर मेरे कुत्ते ने पहाड़ी मुर्गियाँ उड़ायीं और मैंने एक मारी। बन्दूक की आवाज सुनकर एक पहाड़ी नजदीक के पड़ाव से आया और कहा कि मेहरबानी करके एक गुलदार मार दो, जिसने मेरी तीसरी गाय रात को मारी है और अभी बैठा खा रहा है। मैंने पूछा कि कितनी दूर है। उसने कहा—हमारे छप्परों से मुश्किल से सौ कदम पर; जोकि दिखलायी दे रहे थे। हम सब वहाँ पहुँचे तो वाकई एक अच्छे कद का गुलदार हमको आते देखकर भागा। मैं घोड़ी पर था

और राइफल साथ में नहीं था और न १२ बोर बन्दूक की कोइ गोली ही थी। मैंने उससे कहा कि मैं शाम को हाथी पर राइफल लेकर आऊँगा। अगर इस दरमियान में गुलदार आये तो .उसको भगाना नहीं। उसने कहा कि वह हमारे पड़ाव के चारों तरफ अक्सर दिन में भी घूमता रहता है और किसी से नहीं डरता। मैं वापस आ गया और शाम को ३६६ बोर रायफल लेकर हाथी पर सीधा लाश पर पहुँचा। गुलदार खा रहा था और काफी बड़ा नर मालूम होता था। उस जमाने में हर गुलदार के मारने पर १० रुपया इनाम भी था ; क्योंकि ये गाँववालों के जानवरों का बहुत नुकसान करते थे। जब हाथी करीब ४० कदम के पहुँचा तो वह उठा और थोड़ी दूर पर एक झाड़ी की आड़ में बैठ गया। गिद्ध जो लाश के चारों तरफ बैठे हुए थे, उसके चलने और हमारे नजदीक पहुँचने से उड़ने लगे। हमने धोखा देने के लिए हाथी को दूसरी तरफ मोड़ दिया और फिर वहाँ से चक्कर देते हुए गुलदार से २५ कदम पर निकले। वह छिपने की गरज से सर झुका कर दुबक गया और मुँह मोड़कर हमको देखने लगा। मैंने हाथी रोककर इतमीनान का निशाना उसकी आँख पर लेकर फायर किया। वह वहीं रह गया। उसके एक आँख में गोली लगी और दूसरी आँख काफी बाहर निकल आयी। वह ७ फीट ७ इंच का नर गुलदार था।

दो-चार दिन के बाद मैंने सनेह से ढिमकी तक ११ मील की सड़क को सँभालने और स्टीमेट बनाने का काम खत्म कर दिया। ढिमकी के फारेस्ट गार्ड ने कहा कि एक बहुत बड़ा शेर उसकी चौकी के पूरब तरफ वाले नाले में करीब २ फरलाँग पर रोज निकलता है। और चूखुम बँगले की तरफ जाया करता है। मैंने कहा कि शाम को वापसी पर देखेंगे। शाम को मैंने और आदमियों से कहा कि तुम पड़ाव पर चलो, मैं आता हूँ। मैंने फारेस्ट गॉर्ड को लेकर घोड़ी पर कोटरी और ढिमकी नालों के मिलान को पार किया; जहाँ दोनों तरफ ऊँचे तर पहाड़ थे, जिनके ढाल पर नरकुल व घनी झाड़ियाँ पहाड़ी किस्म की लगी हुई थीं और जहाँ सूरज कभी नहीं पहुँचता था। हम

थोड़ी दूर ढिमकी नाले के किनारे गये, जहाँ दूसरा नाला आकर मिलता था। वहाँ बालू में हमने दो नर शेरों के पैरों के ताजे निशान देखे; जिनमें से एक डिवीजन भर के सब शेरों से बड़ा था; जिनके निशान मैं देख चुका था।

मैंने फारेस्ट गॉर्ड से कहा कि एक पड्डा खरीद कर आज बँधवा दो और कल सुबह जब मैं आऊँ, तब नतीजा बतलाना। दूसरे दिन सुबह जब हम काम के लिए ढिमकी पहुँचे, तो फारेस्ट गार्ड ने कहा कि पड्डे को शेर मार कर नाले में ऊपर की तरफ खींच ले गया है और मैं वहाँ नहीं गया। मैं अपना राइफल ले गया था। मैंने रेंजर व फारेस्टर से कहा कि तुम कुलियों को लेकर काम पर चलो, मैं अभी आता हूँ। मैं फारेस्ट गार्ड और अरदली को लेकर पड्डा और शाम को बैठने का मौका देखने को गया। वहाँ दोनों नर शेरों के पैर के निशान थे। मगर यह नहीं अन्दाज हो सकता था कि वे दोनों साथ आये या अलग-अलग आये। शेर मादीन के साथ तो घूम लेता है, मगर दो नर साथ नहीं रहते हैं। घसीटन पर करीब ५० कदम जाने के बाद देखा कि शेर पड्डे को पहाड़ पर दाहनी तरफ जहाँ पर ढाल हल्का था, घनी झाड़ियों और नरकुल में चढ़ा ले गया था। मैं कुछ दूर लाश के आगे चढ़ा, मगर बड़े-बड़े पत्थरों, घनी झाड़ियों और छोटे-छोटे नालों की वजह से न पैर के निशान दिखलायी दिये और न कुछ अन्दाज ही हुआ कि किस तरफ गया है। लिहाजा लाश के पास का नरकुल लाश के ऊपर दबा दिया, ताकि ढक जावे और शाम को अगर शेर आवे तो नाले के दूसरे किनारे से, जोकि ३० कदम पर था, दिखलायी दे; जहाँ पर शाम को बैठने का इरादा था। शाम को काम से वापसी पर करीब ४ बजे के मैं सामनेवाले ढाल पर एक पत्थर की आड़ में बगैर कोई खटका किये हुए बैठ गया। चिड़ियाँ, नेवले और चितरौले आये और डरते हुए पड्डे को खाते रहे। मगर शेर की मौजूदगी की कोई आहट नजर नहीं आयी। मैं अँधेरा होने से पहले चला आया। सुबह जाकर देखा कि वहाँ बहुत-सी हड्डियाँ पड़ी थीं और बाकी लाश को

वह और आगे उस पहाड़ पर घनी झाड़ियों और पत्थरों में ले गया था; जहाँ लाश को ढूँढ़ने की मेरी हिम्मत नहीं पड़ी; क्योंकि झाड़ियाँ और घास इतनी घनी थीं कि दो-चार कदम पर भी नहीं दिखलायी देता था। ऐसी जगह में शेर का नजदीक से हमला देखने की ख्वाहिश भी मुझे न थी।

उस तरफ का काम खत्म करके मैं नेवड़ी और चूखुम के बँगलों में एक-एक दिन के लिए गया। मैं चुखुम में शाम को सड़क पर घूमने गया। यह जगह बिलकुल सुनसान पहाड़ी जंगलों में है, जहाँ आबादी का १०-२० मील तक चारों तरफ नाम-व-निशान भी नहीं है। मैं बँगले से आधा मील गया हूँगा और जैसे ही एक मोड़ से निकला तो देखा कि सामने से करीब ४० कदम पर एक शेर आ रहा था। एक दूसरे को देखते ही हम दोनों खड़े हो गये। मैंने कंधे से राइफल उतार कर निशाना सर पर जमाया। मगर इतमीनान का निशाना नहीं जमा और कुछ हिम्मत भी नहीं पड़ी क्योंकि शेर का मुँह मेरी तरफ था, अगर गोली ठीक सर पर न पड़ी तो सीधा मेरी ही तरफ मुँह के सामने आता। मैं इन्तजार में रहा कि अगर बगल का निशाना दे, तो दागूँ। जब एक मिनट से ज्यादा हो गया तो मैं बैठ गया। मेरे बैठते ही वह बायीं तरफ जंगल में घुस गया। मैं तेजी से वहाँ पहुँचा और बहुत देखा, मगर वह घने जंगल में गायब हो गया। जँगल में उसके पीछे जाने की मेरी हिम्मत न पड़ी।

७४. मेरा बारहवाँ व तेरहवाँ शेर

सनेह वापस आकर मैंने एक पड्डा घुटनातोड़ नाले पर पहाड़ की जड़ में बाँधा, जोकि सनेह से ढाई मील पूरब था। यहाँ पर भी डिवीजन का दूसरे नम्बर का बड़ा शेर था। पहली ही रात को पड्डा मारा गया और आदमी जो सुबह देखने गये थे, उन्होंने बतलाया कि वड़ा नर शेर लाश को उस जगह से जहाँ पड्डा बाँधा था, २० कदम नाले के बायीं तरफ पहाड़ के ढाल पर खा रहा था। शाम को मैं हाथी पर मय मचान के

गया। वहाँ पर निशान थे कि पड्डे को थोड़ी दूर ले जाकर खाया है, मगर वहाँ से भी और आगे ले गया। हम हाथी को घसीटन पर ले गये। शेर लाश को फिर नाले में लाया। फिर पूरबी ढाल पर चढ़ा ले गया और ऊपर धार पर ले जाकर दूसरी तरफ के ढाल पर नीचे नाले की तरफ़ घनी झाड़ियों में ले गया। अब घसीटन के निशान भी नज़र नहीं आते थे। मुझे नाउम्मीदी हो चली थी। उसी वक्त दो कौए उड़े। हम उनकी तरफ जा रहे थे तो मुझे पिछला हिस्सा और मोटी दुम भारी शेर की तरह दिखलायी दी। झाड़ियाँ बहुत घनी थीं। ढाल तेज था। हम होशियारी से पत्थरों को बचाकर हाथी ले जा रहे थे। शेर निगाह से गायब हो गया। हम ढाल पर उतरते रहे और करीब ५० कदम के बाद उसी नाले में, जोकि घूमकर आया था, पहुँचे। नाले में जाना बवजह पत्थरों के बहुत मुश्किल था। नाले के उस पार थोड़ा-सा मैदान और हल्का जंगल था, जिसमें बाँस की नयी पैदावार की आदमी के बराबर ऊँची बोझियाँ थीं। हम उसमें होकर एक पगडंडी पर गुज़र रहे थे; जोकि एक टीले के पीछे जाती थी। मेरे अरदली ने, जोकि पीछे बैठा था, एक बाँस की घनी बोझी की तरफ इशारा किया, जोकि नाले के किनारे थी और जिसमें से एक शेर ३० कदम पर मुँह निकाले हमको देख रहा था। मैंने ख्याल किया कि वह ही बड़ा शेर होगा और बगैर अच्छी तरह से देखे हुए फैर किया। फैर करते ही एक शेर ने धाड़ते हुए हमला किया। मैंने जल्दी से दूसरा फैर किया और वह बिलकुल हाथी के पैरों के पास गिरा। हाथी दाहनी तरफ मुड़ा, मगर करीम ने बड़ी होशियारी से चन्द ही कदम के अन्दर रोक लिया। शेर गिरते ही लँगड़ाता और बोलता हुआ हाथी के सामने से भागा; मगर करीब ४० कदम पर जाकर खड़ा हो गया और मुड़कर हाथी की तरफ मुँह बनाये हुए दूसरे हमले के लिए गुर्राने लगा। हाथी बिलकुल खामोशी से खड़ा रहा। मैंने तीसरी गोली उसके कंधे पर मारी और वह वहीं गिर पड़ा। यह सब चन्द सेकेन्ड में हो गया। मैंने अपने आदमियों से पूछा कि यह तो बड़ा वाला नर नहीं है। उसी वक्त बाँस

की झाड़ी के पीछे नाले में भी गुरगुराने की आवाज सुनायी दी, जहाँ पहला फैर किया था। फॉरेस्ट गार्ड ने कहा कि नर वहाँ पड़ा है और यह मादीन है। हम गुर्राने की आवाज की तरफ गये तो देखा कि नाले में एक पट्ठा पड़ा हुआ तड़प रहा था; जिसको खत्म करने के लिए एक गोली और दागनी पड़ी। मुझे उन दोनों के कत्ल पर बहुत ही अफसोस हुआ। अब हम हाथी को दूसरे शेर की तरफ ले गये तो यह पूरे क़द की मादीन थी। मैं अपनी जल्दी और गल्ती पर बहुत रंजीदा था। नर शेर निकल गया और अपने खानदान को साथ न पाकर करीब १०० कदम पर टीले के पीछे बोला। फॉरेस्ट गार्ड ने कहा कि नर वह है। मैंने कहा कि अब मैं तीसरा कत्ल करने को तैयार नहीं हूँ। मादीन और पट्ठे दोनों को लादकर हम सब बहुत ही रंजीदा वापस आये।

मादीन ८ फीट ९ इञ्च की और पट्ठा ६ फीट २ इञ्च का था। मैंने नाप से कम वाले पट्ठे को मारने पर १० रुपया जुर्माना अपने ऊपर किया; क्योंकि शिकार के कायदों के मुताबिक उसे मारना मना था।

---

७५. मेरा दिलचस्प कुनाऊँ और उसके वाक़ियात

सनेह से मैं कोटद्वारा और फिर कूच करता हुआ डिवीजन के पच्छिमी हिस्से की तरफ कुनाऊँ बँगले में पहुँचा, जोकि गंगा के किनारे रिषीकेश के सामने था। कुनाऊँ बँगले का आधा आहाता गंगा ने १९२४ की बाढ़ में काट दिया था और यहाँ से पच्छिम की तरफ का सीन गंगा का जोर से बहता हुआ पानी और खासकर सूरज का हर शाम को डूबना, बहुत ही दिल बहलानेवाला था; जोकि बँगले के बरामदे से दिखलायी देता था। बँगले के चारों तरफ आहाते के तार तक घना जङ्गल और झाड़ियाँ थीं। करीब रोज रात को गुलदार आहाते में हमारे कुत्ते और बकरी के लालच में आता था और शाम ही से बँगले के चारों तरफ बोलता था। बँगले के पूरब तरफ पहाड़ तक तर, शादाब जंगल और घनी झाड़ियाँ व नाले थे; जिसमें नरकुल,

बेर, घास और तरह-तरह के पेड़ और बाँस करीब ९ मील लम्बाई में चीला बँगले तक थे। पहाड़ पर भी घने साल और बाँस के शादाब जंगल व नाले थे और हर क़िस्म के जानवर—हाथी, शेर, गुलदार, रीछ, साँभर, चीतल, सुअर, काँकड़ वगैरह कसरत से पाये जाते थे। हमारा कैम्प कुनाऊँ में तीसरे पहर को पहुँचा और मुझे रास्ते में चूने के ठेकेदारों की सरहद का झगड़ा तय करना था। लिहाजा मैं शाम को पहुँचा। मैं चाय पी रहा था। उस वक्त एक गुलदार बँगले के आहाते के फाटक के सामने बोला और दूसरे ने उससे करीब १ फरलाङ्ग पर दक्खिन में जवाब दिया; जिस तरफ हमारे हाथी और ऊँटों का पड़ाव था। मैं थक गया था और अपने आदमियों से कहा कि बकरी और कुत्तों को अंदर बाँध लो। मैंने बँगले में जाकर दरवाजे बन्द कर लिया। करीब १० बजे रात को जब मैं सोने को जा रहा था तो महावत ने आकर कहा कि पहाड़ की तरफ से करीब २० जंगली हाथी आये और उनके इर्द-गिर्द घूमते, पेड़ों को तोड़ते और खाते रहे। फिर गङ्गा, जोकि पास ही थी, उसमें घुस गये; मगर एक नर हमारे २ मादीन हाथियों के आस-पास ही घूम रहा है और न तो शोर मचाने से जाता है और न आग जलाने से ही जाता है। मैंने अपनी दोनाली बन्दूक और चन्द कारतूस दिये कि हवा में दो-एक फैर भगाने के लिए कर दो। सुबह मेरे साईस ने कहा कि रात को गुलदार घोड़ी और बकरी की लालच में अस्तबल के खुले हुए फाटक के सामने आया था और अरदली व खलासियों ने भी यही कहा। मैंने कहा—अच्छा, अब जब फिर आवे तो बतलाना।

सुबह चाय पीने के बाद आहाते के ऊँचे किनारे से बँगले से करीब २० कदम पच्छिम की तरफ मैं गंगा नदी की सैर कर रहा था। सूरज निकल रहा था। गंगा में ऊँचे पहाड़ों से सैकड़ों की तादाद में सिलीपर बह कर आ रहे थे; क्योंकि उस तरफ़ से यह ज़रिया लकड़ी को बहा कर निकासी करने का था और यह लकड़ी हरद्वार के पास घूम के ज़रिये रोक कर फिर वहाँ से रेल के ज़रिये मुख्तलिफ शहरों को भेजी

जाती थी। कई जगह नदी में चट्टानों से ये सिलीपर रुक कर छोटे-बड़े ढेरों में जमा हो गये थे और उन पर तरह-तरह की पानी की चिड़ियाँ बैठी थीं। ऊपर की तरफ से धार में तैरते हुए आठ-दस ऊद-बिलाव आये और गहरे नीले पानी में तैरते, गोते लगाते और लड़ते रहे। चूँकि ऊदबिलाव के मारने पर ५ रुपया इनाम था, लिहाजा मैंने अरदली को आवाज दी कि छर्रे की बन्दूक और गर्राब के कारतूस लाओ। मेरी आवाज सुनकर ये और आगे चले गये और जब तक बन्दूक आयी, वे ६०-७० गज के फासले पर सिलीपरों के ऊपर-नीचे खेलते, गोते लगाते और तैरते रहे। उस वक्त पानी में बहुत गड़बड़ हुआ और उनमें के ३ ऊदबिलाव एक बड़ी मछली को पकड़कर सिलीपरों के ढेर के ऊपर चढ़ाने की कोशिश कर रहे थे। मैंने दूरबीन मँगाकर देखा कि उनमें से बड़ों-बड़ों ने जमा होकर एक तड़पते हुए महाशेर को सिलीपरों के ढेर पर चढ़ा लिया और सब मिलकर खाने लगे। मैंने एक गर्राब का फैर उन पर किया। वे सब भाग गये और मछली को, जोकि काफ़ी बड़ी मालूम होती थी, सिलीपरों पर छोड़ गये। मैंने कहा कि कैम्प का जो भी आदमी इस तरफ की तेज व गहरी धार को तैर कर जावेगा और उन सिलीपरों पर से, जो कि उथले पानी में हैं, मछली को लावेगा, वह एक रुपया इनाम पावेगा।

मेरा एक पहाड़ी खलासी फौरन राजी हो गया और बँगले के पच्छिम से पगडंडी से गंगा के किनारे उतर कर तैरने लगा; जिसमें कुछ देर हो गयी और ऊदबिलाव, जो कि वहीं मछली के लालच में छिपे हुए थे, एक मर्त्तबा फिर मछली लेने आये और मुझे उनको भगाने के लिए २ फैर और करने पड़े। मगर उन्होंने घसीटकर मछली को पानी में छोड़ दिया था। और चूँकि वह मरी हुई थी, लिहाजा वहीं घुटने भर गहरे पानी में पड़ी रही। जब मेरा आदमी उसको मुश्किल से लाया तो वह काफ़ी बड़ा महाशेर करीब १५ सेर के था। उसका सर करीब-करीब ऊदबिलावों ने खा लिया था। वह पूरे कैम्प में थोड़ी-थोड़ी दी गयी। सुबह का खाना खाकर मैं और रेंज अफसर

घोड़ों पर मय फारेस्ट गार्ड और हम दोनों के अरदली, बन्दूक व राइफल लेकर छपान देखने को रवाना हुए ; जो कि पहाड़ में करीब ३ मील पूरब तरफ था। जब ऊँट और हाथीवालों के कैम्प के पास से हम गुज़रे तो ऊँटवालों ने कहा कि रात भर गुलदार उनके कैम्प के इर्द-गिर्द ऊँट के हाल के बियाये हुए बच्चों की फिकर में लगा रहा और हाथीवान ने कहा कि एक नर दाँतवाला हाथी गोल को छोड़कर देर तक सरकारी २ मादीन हाथियों के नज़दीक ही घूमता रहा। मैं उनके कैम्प में गया तो जा बजा हाथी के पैर के निशान देखे; जोकि गंगा के किनारे उतर गये थे। वे वहाँ देर तक ठहरे ; जोकि उनकी जगह-ब-जगह लीद से और बालू पर पैरों के निशानात से मालूम होता था। मैंने कहा कि अच्छा, आज मैं शाम को ऊँटवालों के कैम्प में २ घंटे बैठूँगा और हम १० फीट चौड़ी सड़क पर घने जंगल और घास में छपान की तरफ रवाना हुए।

रास्ते में दो-एक मोर, मुर्गी मारे और शेर, गुलदार और जंगली जानवरों के पैरों के निशानात, जोकि रात को गुज़रे थे, देखे। जंगली मुर्गे चारों तरफ बाँग दे रहे थे और कहीं-कहीं बन्दर, चीतल और साँभर भी खतरे की आवाज़ देते थे। इस इलाके में काम ज्यादा नहीं था, लिहाज़ा मेरा आना भी बहुत कम होता था। जब हम पहाड़ की जड़ पर साँप लाइन पर पहुँचे, जोकि पहाड़ की जड़ के साथ-साथ टेढ़ी कई मील गयी थी, हमने ताजे पैरों के निशानात, लीद और बाँस व टूटे हुए पेड़ देखे और हाथियों की बदबू भी काफ़ी आ रही थी ; जिससे अन्दाज़ हुआ कि हाथियों का गोल वहाँ से हाल ही में गुज़रा है। उनके बोलने और बाँस तोड़ने की आवाज़ भी करीब १ फरलाँग पर सुनायी दे रही थी। मेरा दिल चाहा कि घोड़ी बढ़ा कर उनको देखूँ। मगर काम को देर हो रही थी; लिहाज़ा हमने अब ६ फीट के चौड़े रास्ते पर पहाड़ पर चढ़ना शुरू किया ; जिसके पूरब में समुन्दर से करीब १½ हज़ार फीट की ऊँचाई पर काफ़ी बड़ा मैदानी जंगल था। डिप्टी रेंजर मेरा पुराना विद्यार्थी याकूबअली, जिसने

खासन नदी में सन् १९२७ ई० में एक बड़े और चालाक शेर के पैर के निशान दिखलाये थे, वे भी यहाँ पर ही छपान कर रहे थे। मैं उनके कैम्प के पास से निकला। उनके साथ एक दर्जन कुली अपने झोंपड़े डाले हुए ठहरे थे। मैंने पूछा कि जंगली हाथी और शेर यहाँ भी तुम्हारे पड़ाव में आते हैं। उन्होंने हँसकर कहा कि एक हाथियों का गोल आज ही रात को यहाँ से ऊधम मचाता हुआ गुज़रा है और शेर करीब-करीब रोज़ उसी चश्मे पर पानी पीता है, जिससे हम पानी लेते हैं और जोकि सिर्फ १०० कदम पर है। मैं वहाँ शेर का निशान देखने गया, जोकि औसत दर्जे का था। वहाँ से एक वुडकाक उड़ा और पचास कदम पर बैठ गया। उसको मैंने दूसरी उड़ान में मारा। यह चिड़िया बहुत ही कम पायी जाती है और अंग्रेज इसको बड़े शौक से मारते थे और बड़ा आदर करते थे। छपान का मुआइना करने के बाद हम पहाड़ की जड़ पर पहुँचे; जहाँ यह पहाड़ का रास्ता पहाड़ की जड़ वाली साँप लाइन से मिलता था। वहाँ कोई आवाज़ हाथियों की नहीं सुनायी दी। मैंने सोचा कि हाथी बहुत आहिस्ता-आहिस्ता चरते हुए चलते हैं और पहाड़ की जड़ के शादाब जंगलों व नालों में ही कहीं दो मील के अंदर होंगे। सूरज डूबने में अभी करीब २ घंटे थे। मैंने रेंजर और दूसरे आदमियों से कहा कि तुम पड़ाव को चलो, मैं घोड़ी दौड़ाकर हाथियों को देखकर अँधेरे से पहले कैम्प में पहुँच जाऊँगा। रेंजर ने कहा कि अकेले बगैर हथियार के जाना ठीक नहीं है; मैं साथ आऊँगा। मैंने कहा—तुम्हारा छोटा पहाड़ी घोड़ा मेरी घोड़ी के साथ नहीं चल सकेगा। मुझे अलावा अपनी हिफाज़त के तुम्हारा साथ देना पड़ेगा और अकेले में किसी तरफ साँप लाइन पर ज़रूरत के वक्त आगे या पीछे घोड़ी को भगा ले जाऊँगा। यह कहकर मैं हल्की दुलकी चल दिया। साँप लाइन पर जाना इस क़दर आसान न था, जैसा कि मैं समझा था; क्योंकि हाथियों ने पेड़ और बाँस गिरा कर सड़क को जगह-ब-जगह बन्द कर दिया था। दाहने व बायें जाना गैर

मुमकिन था; क्योंकि पच्छिम में बाँस और ऊँचे पेड़ थे, जिनके ऊपर मोटी-मोटी बेलें चढ़ी हुई थीं और घनी झाड़ियाँ थीं, जिनमें नाले और पत्थरों की वजह से निकलना बहुत मुश्किल था। पूरब में करीब ५० कदम पर ऊँचा पहाड़ मीलों चला गया था; जिस पर भी ऐसे ही घने जंगल थे। मैं करीब २ मील के गया हूँगा कि मुझे बहुत तेज़ बदबू हाथियों के ताज़े पेशाब व लीद की आने लगी और बिलकुल ताज़े बाँस, डालें व पेड़ गिरे हुए दिखलायी देने लगे; जिससे मेरी घोड़ी भड़कने लगी और रोंगटे भी खड़े होने लगे। थोड़ी दूर और जाने के बाद बाँस व डालें तोड़ने की और हाथियों के बोलने की आवाज़ भी सुनायी देने लगी। अब मुझे भी डर व घबराहट का वह मज़ा और नशा आने लगा; जिसके लिए मैं इतनी दूर अकेला गया था। मैं आहिस्ता-आहिस्ता चारों तरफ देखता हुआ, खड़े रोंगटे और धड़कते हुए दिल से आगे बढ़ता गया। एक मादीन हाथी पूरब पहाड़ की तरफ से मुझसे करीब ५० गज पर साँप लाइन से गुजर कर पच्छिम की तरफ गयी। मेरी घोड़ी खड़ी हो गयी और हाथी भी खड़ा हो गया। उसने थोड़ी देर हमारी तरफ देखा और फिर एक खास आवाज करता हुआ पच्छिम की तरफ चला गया; जोकि खतरे की आवाज थी। अब मेरे चारों तरफ से उसी तरह की आवाजें आने लगीं और सब तरफ बाँस व डालों का तोड़ना एकदम बन्द हो गया। मैं चारों तरफ उनकी हरकतों को गौर से धड़कते हुए दिल, खड़े रोंगटे और हल्की सर्दी लगते हुए देख रहा था; जोकि मेरे डरावने लुत्फ़ की इन्तहा थी। आगे बढ़ना मुनासिब न था; क्योंकि आगे हाथी दूर तक फैले हुए थे। और अगर उनके बीच में होकर निकल भी जाता, जोकि मुमकिन था, तो मुझे अपने कैम्प में पहुँचने के लिए कई मील का बड़ा लम्बा चक्कर लेना पड़ता। लिहाजा मैंने तय किया कि उसी जगह जब तक ज्यादा खतरा न हो, खड़े रहकर चन्द हाथी और देखकर वापस जाना चाहिए। घोड़ी भी पीछे जाने के लिए बेचैन थी। चारों तरफ से हाथी खतरे की आवाज़ करते हुए पहली

हथिनी की तरफ़ बढ़ते रहे और वह हथिनी करीब ४० कदम पच्छिम तरफ घने पेड़ों में खड़ी हुई अब भी वैसी ही आवाज कर रही थी। हाथी अब दिखलायी देने लगे और हमको देखकर आगेवाले खड़े हो गये। जब करीब एक दर्जन के जमा हो गये तो एक दाँतवाले नर ने आगे बढ़ना शुरू किया और उसके पीछे चन्द और भी सब कान पीछे किये हुए आने लगे। मुझे ऐसा मालूम होने लगा कि सपना देख रहा हूँ। मैंने घोड़ी को मोड़ा और अपनी पूरी ताकत से लुहा-लुहा की आवाज डर से देता हुआ दुलकी भगाया। हाथियों ने भी तरह-तरह की आवाजें देकर भागना शुरू किया। जमीन पर हलचल-सा आ गया। मैं भी शोर मचाता हुआ काफी दूर निकल गया और सूरज डूबने से पहले उस जगह पहुँच गया, जहाँ मैंने अपने आदमियों को छोड़ा था। अभी काफी उजाला था और सड़क पर पहुँचकर तेज़ दुलकी से अपनी कामयाबी पर बहुत खुश होकर अँधेरे से पहले कैम्प पहुँचा।

---

७६. मेरा अड़तीसवाँ गुलदार

रात को खाना खाने के बाद मैंने दो आदमी लालटेन लेकर ऊँट वालों के पास भेजे कि जब गुलदार आवे तो मुझे इत्तला दें। मैं अँगीठी के सामने बैठा हुआ खत लिख रहा था। ऊँटवालों ने आकर खबर दी कि गुलदार आ गये हैं और ऊँटों के चारों तरफ घूम रहे हैं। मैंने अपनी १२ बोर दोनाली जीको बन्दूक ली; जिसकी कीमत ९० रुपया थी और दाहनी नाल में गोली और बायीं में गराब भरकर टार्च, लालटेन और एक अरदली लेकर रवाना हुए। रात में बमुकाबले राइफल के दोनाली बन्दूक का निशाना नजदीक से अच्छा लगता है। ऊँटवालों के पड़ाव पर पहुँचकर मैंने ऊँटों के बुड्ढे चौधरी को आवाज दी। वह लम्बा-चौड़ा आदमी था और उसके बहुत बड़ी सफेद दाढ़ी थी। मैंने कहा कि फादर इब्राहीम, तुम्हारे गुलदार कहाँ हैं? उसने कहा कि आग के पास बैठ जाओ और अभी देख लोगे। मैंने

लालटेन को अपने पीछे एक पेड़ में तेज करके टाँग दिया, ताकि उसकी रोशनी से ४०-५० गज़ तक जानवर दिखलायी दे और मुझे बन्दूक की नालें और अगला मसा भी दिखलायी दे। रात अँधेरी थी। ऊँट छोलदारी और आग के सामने बैठे हुए थे। हम करीब आधा दर्जन आदमियों के साथ आग के चारों तरफ बैठे हुए थे। थोड़ी देर के बाद दो जानवर झाड़ियों से निकले और पड़ाव के चारों तरफ घूमते रहे। मैंने कहा कि वे तो गीदड़ों की तरह मालूम पड़ते हैं। लेकिन ऊँटवालों ने जिद की कि वे गुलदार हैं। जब वे करीब चालीस कदम के रह गये तो मैंने नाल उनकी तरफ सीधी की और बिजली की रोशनी डाली। मैं उनको न पहचान सका। लेकिन उनकी आँखें तेज चमकीं और मैंने निशाना जमाकर जो दोनों में से नजदीक था, एक के ऊपर फैर किया। उसने आवाज दी और दोनों करीब ५० गज के भागे और एक यकीनी तौर पर गिर गया। थोड़ी देर तड़पा, गुर्राया, क़ै की और फिर खामोश हो गया। मैंने कहा कि चाहे वह गुलदार हो या गीदड़, उनमें का एक मर गया है और गोली फेफड़ों में लगी है; क्योंकि उसने खून जमा हो जाने से क़ै की है। मैंने ऊँटवालों से कहा कि सुबह देखकर नतीजे से मुझे इत्तला देना और मैं वापस चला आया। सुबह जब मैं चाय पी रहा था तो वे एक मादीन गुलदार को लाये, जिसके पसलियों में गोली लगी थी। वह ६ फीट ६ इंच की थी। उसी रात को मेरी बकरी के बच्चे को, जोकि मेरे मेहतर के पास कोठरी में बँधा हुआ था, गुलदार उठा ले गया। कोठरी का दरवाजा टेढ़ा हो गया था और बन्द नहीं होता था; लिहाजा मेहतर ने एक पत्थर उसको बन्द करने के लिए लगा दिया था।

७७. मेरा उन्तालिसवाँ गुलदार

मैं सुबह ९ बजे खाना खाकर ५ मील की दूरी पर लछमनभूला सरहदी झगड़ा तय करने गया; जहाँ गाँववालों ने जंगल के सरहद के अन्दर खेती बढ़ा ली थी। मैं तीसरे पहर को जल्दी लौट आया और अँधेरे तक दफ्तर का काम करता रहा। जब कैम्प क्लर्क चला गया तो मैंने बँगले के दरवाजे बन्द किये और खाना मँगवाया। गंगा के ऊँचे किनारे पर ठंडी हवा बड़े जोर से आती थी। उसी वक्त मेरा अरदली आया और कहा कि आहाते के दरवाजे पर गुलदार बोल रहा है। मुझे बँगले के अन्दर गंगा के बहने के शोर से नहीं सुनायी देता था। मैं बरामदे में आया, टार्च से देखा, मगर कुछ नहीं दिखलायी दिया। जैसे ही मैं कमरे में वापस जा रहा था कि गुलदार वाक़ई आहाते के फाटक से मुश्किल से १५ गज पर सड़क के पार घनी झाड़ियों में फिर बोला। रात बिलकुल अँधेरी थी। करीम महावत भी आहाते में था। उसने मुझसे कहा कि मैं फाटक के सामने फौरन ही किसी पेड़ पर मचान अटका दूँगा और बकरी सामने सड़क पर बाँधकर थोड़ी देर बैठ लीजिए, मौका अच्छा है। उसी ने बकरी का बच्चा भी खाया है। लिहाजा हम मचान, दो आदमी और लालटेन लेकर गये और एक छोटे घने पेड़ को छाँटा; जोकि सड़क के उस पार बाँसों की झाड़ियों में था। वह ४-५ फीट की ऊँचाई पर दो शाखवाला हो गया था; जिसमें खड़े होने का मौका था। गुलदार पूरब की तरफ थोड़ी दूर पर फिर बोला। मैं फौरन दो शाखों में १२ बोर की बंदूक लेकर खड़ा हो गया। बकरी जिसका बच्चा एक दिन पहले गुलदार मार ले गया था और जोकि हर वक्त एक गिलास दूध देती थी और जिसे मेरे कुत्ते का बच्चा पीकर खूब मोटा हो रहा था, सामने २० गज पर उत्तर की तरफ सड़क के पूरबी किनारे पर बाँध दी गयी। मैंने आदमियों से

कहा कि भाग जाओ। आदमियों के जाते ही बकरी खूब जोर-जोर से बोलने लगी। १५ मिनट के अन्दर बगैर किसी आहट और आवाज के मुझे मालूम हुआ कि गुलदार की तरह कोई काली चीज मेरे पेड़ से मिली हुई खड़ी है। मगर अँधेरे की वजह से मैं उसको यकीन के साथ पहचान न सका और ग़ौर से उसको देखता रहा कि अगर यह ज़रा भी हिले तो बंदूक की नाल झुकाकर उसके ऊपर रखकर दाग दूँ। मगर वह काली चीज बगैर हिले हुए एकदम बिजली की तरह से झपटी और उसने बकरी को गिराकर दबा लिया।

बकरी चीखी। मैंने बन्दूक उस तरफ़ मोड़कर फौरन टार्च जलायी और जल्दी में बकरी को, जोकि कैम्प में सबसे हिली हुई थी और मेहतर को और मेरे कुत्ते को एक सेर से ज्यादा दूध रोज़ देती थी, बचाने के लिए फ़ैर किया। गुलदार फैर होते ही घने जंगल में भाग गया। मैं दूसरा फैर भी न कर सका। थोड़ी देर मैं खामोश खड़ा रहा कि शायद गुलदार गिरे, मगर वह १०० कदम पर जाकर फिर बोलने लगा। मैंने नौकरों को आवाज़ दी और पेड़ से उतर कर बकरी को देखा जो तड़प रही थी और लम्बी - लम्बी साँसें ले रही थी। जब लालटेन लेकर आदमी आये तो देखा कि गुलदार ने तो गर्दन बुरी तरह से जख़्मी कर दिया था और मेरी गोली से उसकी रान भी टूट गयी थी। यह देखकर मुझे बहुत ही अफसोस हुआ। बकरी को खत्म करना पड़ा और उसे वहीं छोड़ दिया; ताकि रात को शायद गुलदार ले जावे।

सुबह होने पर हम देखने और बकरी का मातम करने गये; जिसके कत्ल में मेरी गोली भी शामिल थी। बकरी कैम्प भर से हिली थी और किसी ने उसको नहीं खाया। इतने ही में गुलदार दो फरलाँग पर फिर बोला। मैंने करीम महावत से कहा कि जल्दी से हाथी लाओ और

फौरन ५०० बोर दोनाली राइफल लेकर रवाना हुआ। गुलदार पाँच-पाँच मिनट के बाद बोल रहा था, गोया बुला रहा था और हम आसानी से उसके पास पहुँच गये। हमको गुलदार की पहली झलकी

एक टीले पर पूरब से पच्छिम की तरफ एक झाड़ी से दूसरी झाड़ी में जाते हुए दिखलाथी दी। हम उसके आगे की तरफ़ हाथी ले गये और उम्मीद कर रहे थे कि अब कहीं नजर पड़ेगा। मगर वह बजाय पच्छिम के २०० गज पूरब की तरफ फिर बोला। हमने नहीं देखा कि वह किस वक्त और किस तरफ से मुड़ गया। या हो सकता है कि वे दो थे। बहेरहाल हम उसकी आवाज की तरफ पूरब बढ़े, मगर वह फिर पच्छिम में बोला। हमने हाथी को जल्दी से पच्छिम की तरफ मोड़ा, तब देखा कि मिस्टर गुलदारखाँ तेजी से मुड़कर पूरब की तरफ करीब ४० गज पर जा रहे थे। मैंने हाथी रोककर उसके बगल मे गोली मारी और उसने बगैर गिरे हुए सीधा ढौंकता हुआ हाथी पर बड़ी फुर्ती और गुस्से से हमला किया। मैंने दूसरा फैर, जब वह हाथी से चन्द कदम रह गया था, बड़ी जल्दी और बेइतमीनानी से किया। वह फिर बगैर गिरे हुए पच्छिम की तरफ मुड़ गया और ६०-७० कदम पर जाकर गिर गया, कुछ शोर मचाया और खामोश हो गया। हम हाथी ले गये तो वह एक खुली हुई जगह में मरा पड़ा था। उसने अपना हाथ गुस्से से मुँह में लेकर चबा डाला था। दोनों गोलियाँ पसलियों में पड़ी थीं और फेफड़े को पार कर गयी थीं। मुझे अपनी ३६६ बोर माजर राइफल याद आयी कि उसकी गोली जिसके लगी, वह जमीन पर थोड़ी देर के लिए जरूर गिरता था। मेरे पास ३६६ बोर के सिर्फ ४ कारतूस रह गये थे। उनको शेर वगैरह के लिए रोके हुए था; जब तक कि और कारतूस आवें। यह बहुत अच्छा नर ७ फीट ६ इंच का था।

७८. मेरा सुअर से बाल-बाल बचना

सिवाय चन्द चिड़ियों के और दो गुलदार के मैंने कोई जानवर कैम्पवालों के लिए नहीं मारा था। पालतू बकरी को किसी ने खाया नहीं। हमारा चमड़े का ठेकेदार, जोकि चमार था रोज कहता था कि एक सुअर मार दो, ताकि गर्मी आ जावे। जब वह गुलदार की खाल निकाल रहा था तो उसने फिर कहा। मैंने वादा किया कि आज शाम

को कोशिश करेंगे। चमड़े का ठेकेदार और मैं शाम को पैदल ५०० बोर दोनाली राइफल लेकर कनाऊँ के दक्खिन घास के रक़बे में गये; जिसमें बेर की झाड़ियाँ बहुत हैं। उसमें सुबह - शाम दर्जनों सुअर बेर खाने आते हैं। हम करीब एक मील के चीलावाली सड़क पर गये थे कि हमने सड़क के बायीं तरफ बेर की गुठलियों के तोड़ने की आवाज कुछ दूर पर सुनीं। मैं रबड़ के जूते खास तौर से पहनकर गया था और आहिस्ता-आहिस्ता पंजों पर गया। मैं सुअर के एक गोल से ४० गज के अन्दर पहुँच गया। मैं बेर की झाड़ी के पीछे खड़ा देख रहा था कि कोई बड़ा नर दिखलायी दे तो फैर करूँ। लेकिन सिवाय दो-चार की पीठ देखने के और कुछ न देख सका। वे बेर खाने में लगे हुए थे। मैं एक कदम और बढ़ा और उनको मेरी आहट का शक हो गया। उन्होंने सर उठाकर देखा और सब आहिस्ता - आहिस्ता निकल कर मेरी तरफ आने लगे। मैंने आहिस्ता - आहिस्ता झाड़ी के ऊपर सर निकाला और एक बड़ा नर, जो पीछे आ रहा था, उसकी बगल में गोली मारी। वह गिर पड़ा और सब इधर-उधर भाग गये। मैं झाड़ी से खुले में निकल आया और चमड़े के ठेकेदार को आवाज दी। वह दौड़ता हुआ एक बड़ा बाँस लिये हुए, जोकि उसने रास्ते से उठा लिया था, आ रहा था।

मेरी आवाज सुनकर सुअर ने ढोंकते हुए सीधे मेरे ऊपर हमला किया। मेरी दूसरी नाल में गोली थी, मगर नहीं मालूम कि मैं घबराहट में उसे क्यों न दाग सका। मैंने किसी से सुना था कि सुअर हमला करते वक्त मुड़ता नहीं है, बल्कि सीधा ही जाता है; लिहाजा यह ख़्याल दिमाग में लिये हुए मैं उसके पीछे पहुँचना चाहता था। वह जिस तेजी से मेरी तरफ आ रहा था, मैं भी १५ गज़ उसकी तरफ तेजी से दौड़ा और काफ़ी फासले से उसको साफ कूद गया। सुअर सामने भागा चला गया और चमड़े के ठेकेदार के पास निकला। ठेकेदार ने शोर मचाया और अपना लम्बा बाँस जमीन पर जोर से मारा। सुअर थोड़ी दूर पर जाकर गिरा और मर गया। मैंने आकर देखा तो गोली

उसकी पसलियों में पड़ी थी और दूसरी तरफ बड़ा सूराख करके निकल गयी थी। उस जगह पर जहाँ वह पहले गिरा था, फेफड़े के टुकड़े निकल कर घास और झाड़ी में पड़े थे। ५०० बोर राइफल से मेरी तबीयत हट गयी। वह खतरनाक जानवर को रोक नहीं सकती है, जैसाकि ३५० व ४०५ बोर वेन्चेस्टर और ३६६, ३७५ और ४२३ बोर माजर रोकते हैं और जिनमें जानवर को गिरा देने की बड़ी ताकत होती है, चाहे गोली पसलियों में या पुट्ठे में भी लगे। वैसे तो सर, गर्दन और दिल पर जो भी गोली लगे, वह उसी जगह पर गिरा देगी।

७९. मेरा चालीसवाँ गुलदार

कुनाऊँ से वापसी पर चन्द दिन मैं चीला में ठहरा, जोकि हरद्वार से ४ मील उत्तर गंगा के किनारे पर है। वहाँ से हमारा कूच चाँडी को हुआ और मैं अकेला घोड़ी पर घूमता-घामता अनजनी होकर जा रहा था तो एक गूजर ने आवाज देकर मुझे रोका। उसने मुझसे कहा कि एक हफ्ते के अन्दर उसके तीन गाय के बच्चे गुलदार ने मार दिये हैं और एक आज सुबह भी थोड़ी दूर पर मारा है। मैंने कहा—मुझे लाश दिखाओ। वह मुझे एक फरलाँग सड़क से जंगल में ले गया और आधा खाया हुआ गाय का बच्चा दिखाया। मौका अच्छा मालूम हुआ। मैंने कहा—मैं ३ मील चाँडी जाकर राइफल ले आऊँ, बशर्ते कि तुम यहाँ सड़क पर ठहरो; ताकि जब मैं आऊँ तो मेरी घोड़ी पकड़ो और थोड़ी देर में मेरा अरदली भी आ जावेगा। उसने कहा कि मैं ठहरूँगा। मैं घोड़ी दौड़ाकर चाँडी को रवाना हुआ। मेरे ऊँट और कैम्प चाँडी के इसी तरफ आधी दूर पर जाते हुए मिल गये। मैं ३६६ बोर का राइफल और बकाया ४ कारतूस लेकर फौरन अनजनी वापस हुआ और एक अरदली से कह गया कि तुम मेरे पीछे अनजनी आओ। सड़क पर गूजर घोड़ी लिये खड़ा होगा, वहाँ ठहरना। मेरी वापसी पर गूजर सड़क पर मौजूद था। मैंने उससे कहा कि मेरे पीछे आओ।

जब हम लाश की जगह पहुँचे तो देखा कि गुलदार लाश को १०० गज और आगे एक सूखे नाले के पार हटा ले गया था और थोड़ा सा उसी वक्त का ताजा खाया मालूम होता था। शायद वह खा रहा था और हमारे आने की आहट पाकर चला गया। उस वक्त चार बजे शाम का वक्त था और उसके शाम के खाने का वक्त भी था। लिहाजा मैंने सोचा कि बगैर खटपट किये हुए कहीं जल्दी बैठ जाऊँ। मैंने देखा कि एक पेड़ करीब ३० गज पर उत्तर की तरफ पुराना गिरा हुआ पड़ा था; जिसकी एक डाल जमीन से लगी थी और दूसरी जमीन से करीब ४ फीट के ऊँची थी। उस पर बैठने का अच्छा मौका था। मैं घोड़ी से उतरा और उसको गूजर को दी। फिर मैं गूजर की कुल्हाड़ी लेकर सड़क की तरफ से ४ पत्तीदार डालें काटकर लाया। दो को मैंने अपने सामने और दो को अपने पीछे खड़ा किया; ताकि मैं उनमें छिप सकूँ। मैंने गूजर का साफा लेकर गद्दी बनाया और झुकी हुई डाल पर बैठ गया। मैंने गूजर से कहा कि अब तुम खूब आवाज देते हुए घोड़ी को ले जाकर सड़क पर बैठो। मेरा अरदली भी आता होगा।

गूजर ने जैसा बताया था वैसा ही किया। मैं करीब आध घंटे के बैठा हूँगा, कि साँभर ने दक्खिन में खतरे की आवाज़ दी। मैं उस तरफ दूर तक देखता रहा। उस जङ्गल में झाड़ियाँ नहीं थीं, मगर ऊपर से जङ्गल बहुत घना था। थोड़ी देर के बाद मैं टेढ़ी शाख पर साफे पर से फिसल गया और नीचे खिसकने लगा; जिसकी वजह से मुझे आगे झुकना पड़ा और बैठना मुश्किल हो गया। इतने में चन्द मुर्गियाँ मेरे दाहने तरफ से यानी पच्छिम तरफ से शोर मचाती हुई उड़ीं और मैं दक्खिन की तरफ ग़ौर से देख रहा था, जिधर साँभर बोला था। मैंने पच्छिम की तरफ देखा तो गुलदार थोड़ी दूर पर खड़ा हुआ लाश की तरफ देख रहा था। अगर मैं पत्तीदार डालें अपने चारों तरफ न गाड़ लेता तो गुलदार मुझे जरूर देखकर भाग जाता। लेकिन अब मैं और ज्यादा उस तकलीफदेह झुकी हुई डाल पर नहीं बैठ सकता था। गुलदार ने आहिस्ता-आहिस्ता लाश की तरफ बढ़ना शुरू किया और

जब वह लाश से चन्द गज रह गया था तब शायद मेरा अरदली सड़क पर पहुँचा और दोनों ने बातें करना शुरू कीं। गुलदार ने सर उठाकर उस तरफ बहुत ग़ौर से देखा। मैंने राइफल को उसके कंधे पर निशाना लेकर फायर किया। गुलदार वहीं गिर पड़ा। वह उठने की बेहद कोशिश और शोर करने लगा। मैंने दूसरा फैर फौरन जल्दी से किया, जोकि इत्तफ़ाक से कान में लगा और वह वहीं रह गया। मैं उस तकलीफ़-देह डाल से कूद पड़ा। आदमियों को बुलाकर गुलदार के पास गया और देखा कि वह खूब जाबरदस्त अच्छी तन्दुरुस्ती का नर था। हम उसको गिरे हुए पेड़ के नीचे ले आये और पत्तीदार डालों से ढक दिया, ताकि गीदड़ वगैरा खराब न करें। मैं अरदली को लेकर कैम्प गया। दूसरे दिन सुबह मैंने एक ऊँट भेज कर गुलदार मँगाया; जोकि ७ फिट ५ इंच का निकला।

---

८०. जँगली हाथियों से नुकसान और अपने बच्चे के लिए माँ की कुरबानी

लेंसडौन फारेस्ट डिवीजन में करीब १५० के जंगली हाथी उस जमाने में अन्दाज किये जाते थे। कई मर्त्तबा उनकी सुमारी भी की गयी। ये हाथी ३०० वर्ग मील में हरद्वार से कोटद्वारा तक रहते थे। वे जगह-ब-जगह अक्सर दिखलायी देते थे; कहीं अकेले, कहीं दस-पाँच और कहीं बड़े-बड़े गोल में। मैंने वहाँ के ७ बरस क़याम में• सबसे बड़े गोल करीब दो दर्जन के रसियाबड़ बँगले के पास और मंढाल, लूनी, खासन नदियों की वेली और सिल्दसोत में, दो से चार दर्जन तक हरद्वार और गंगा के इर्द-गिर्द दस से पन्द्रह मील के अन्दर ज्यादातर देखे। वे आदमियों और आबादी से दूर रहते थे, सिवाय चन्द मस्त और दो-एक छोटे गोल के, जिनको रात को खेती चरने का मजा पड़ गया था। वे अक्सर जंगल के ठेकेदारों के छप्पर और गूजरों के छप्पर, जो जंगलों में जानवर रखते हैं और क्रीम फैक्टरियों को और हरद्वार को दूध

सप्लाई करते हैं, वहाँ आकर छप्परों को कभी-कभी गिराकर, जिन्स, गुड़ और नमक वगैरह खाने पर परक गये थे और कभी-कभी तो जानवरों और आदमियों को भी मार डालते थे।

मैं चाँडी से रसियाबड़ आया और सुना कि एक दिन पहले वहाँ से चार मील पर एक गूजर के छप्पर हाथियों ने तोड़ डाले और एक औरत को मार डाला। दूसरे दिन मैं उस जगह रेंजर, फारेस्ट गार्ड और अरदली को लेकर देखने गया। वहाँ पहुँच कर हमने देखा कि दो छप्पर गिरे और टूटे हुए पड़े थे। ताँबे के बर्तन और सामान भी टूटे-फूटे पड़े थे। ४ आदमी और तीन औरतें फिर से छप्पर बना रहे थे। गिद्ध छप्परों से नज़दीक ५ पड्डों की लाशों को खा रहे थे, जिनको भी हाथियों ने मार डाला था। हमारी हमदर्दी देखकर वे सब रोने लगे और हमको छप्पर से ४०-५० कदम पर एक बरगद का पेड़ दिखाया, जिसके पास औरत और उसके बच्चे को मारा था। वहाँ सूखा खून अभी तक जमा हुआ था। यह बहुत दर्दनाक सीन था कि माँ किस हद तक अपने बच्चे के लिए अपने आपको कुरबान कर सकती है। उन्होंने कहा कि सुबह के वक्त २ मर्द और दो औरतें एक बीमार रिस्तेदार को ३ मील पर देखने चले गये और बाकी जानवरों को चराने चले गये। पड़ाव पर सिर्फ एक औरत और उसके दो बच्चे रह गये। औरत छप्पर के अन्दर खाना पकाने के लिए सामान ठीक कर रही थी और नौ वर्ष की लड़की और तीन वर्ष का उसका भाई छप्परों के सामने खेल रहे थे। भैंसों के ५ बच्चे भी बाहर बँधे हुए थे।

इन बच्चों ने कुछ जंगली हाथी छप्परों की तरफ आते देखे और शोर मचाते हुए अपनी माँ के पास छप्पर में भागे। माँ बाहर निकली तो उसने देखा कि हाथियों ने पड्डों को घेर रखा था। वह जल्दी से एक खाली टीन लायी और उसको लकड़ी से बजाने और शोर मचाने लगी। मगर हाथियों ने परवाह नहीं की। जब औरत ने देखा कि कुछ पड्डे मार ही डाले तो वह घबराहट और गुस्से में आगे बढ़ी और टीन को हाथियों की तरफ फेंक दिया। उस पर दाँत वाला नर औरत के

ऊपर दौड़ा। वह भाग कर बरगद के बड़े पेड़ पर काफी ऊँचाई पर चढ़ गयी। हाथी लौट गया।

औरत ने लड़कों से कहा कि छप्पर के अन्दर किसी कोने में छिप जाओ। गूजर मर्द व औरत बहुत मेहनती, मजबूत और बहादुर कौम होते हैं। वे जंगलों में अकेले जानवरों को पालते हैं; जहाँ हाथी, शेर, गुलदार भी काफी होते हैं और उन्हीं में वे गुजर करते हैं। औरतें अकेली मीलों से जानवरों के लिए बड़े-बड़े खतरनाक पहाड़ों से चारा पेड़ों से काट कर लाती हैं।

दाँतवाला नर हाथी फिर गोल में शरीक हो गया और एक-एक करके सब पड्डों को कुचल डाला और मार डाला। फिर उन्होंने छप्परों की तरफ रुख किया और एक छप्पर को गिराकर सामान तोड़ना-फोड़ना और जिंस वगैरह खाना शुरू किया। माँ डरने लगी कि दूसरे छप्पर को भी न गिरावें, जिसमें उसके दो बच्चे छिपे हुए थे। जब ९ हाथियों में से चन्द ने इस छप्पर की तरफ रुख किया तो माँ ने लड़की को आवाज दी कि कोने में टट्टी को फाड़कर छप्पर के पीछे से भाई को लेकर जंगल में भाग जा और किसी झाड़ी में छिप जा। लड़की ने बड़ी मुश्किल से टट्टी को फाड़ा और भाई को लेकर छप्परों के पीछे भागी। मगर भाई रोता हुआ माँ की तरफ मदद के लिए दौड़ा और बरगद के सामने खड़ा होकर रोने लगा; जो छप्पर और हाथियों से मुश्किल से २५ गज पर था। बेकस माँ बच्चे को खतरे में देखकर शायद उतरी और हाथियों ने उसे मय बच्चे के कुचल डाला। यह ग़मनाक हादसा मासूम लड़की से रो-रो कर हिचकियाँ लेते हुए सुनकर हम सबके आँसू निकल आये। मगर सिवाय तसल्ली और हमदर्दी की बातों के और कर ही क्या सकते थे?

इस वाकिया से १ महीना पहले एक दाँतवाले मस्त हाथी ने एक आदमी और मार डाला था। जब चार आदमी अपनी-अपनी भैंसों के गोल को एक दिन सुबह अँधेरे में मंढाल वेली में पहाड़ी जंगल से बाँस लाने जा रहे थे तो उन्होंने एक नाले को पार किया, जिसमें कहीं-कहीं

पानी था। उनमें से एक ठहर गया कि जरूरत से फारिग होकर आता हूँ। वह थोड़ी ही दूर गया होगा कि चीखता हुआ भागा। उसके साथियों ने चिल्लाने की सिर्फ एक ही आवाज सुनी; जिससे उनको शक हुआ कि कोई गैरमामूली बात पेश आयी और वे तीनों शोर मचाते हुए गये तो उसको मरा हुआ पाया। उसके पास से एक हाथी शीशम की घनी बोझी की तरफ जा रहा था। लेंसडौन डिवीजन में जंगली हाथी हर साल एक या दो आदमी मारते हैं।

८१. मेरा खूनी और बदमाश हाथी

दो दिन के बाद मैं रसियाबड़ से मीठावाली जंगलात के बँगले में गया और वहाँ दोपहर को मय रेंज अफसर, फारेस्ट गार्ड और अरदलियों के पहुँचा। मेरे ऊँट और सामान अभी नहीं पहुँचे थे। मैं बँगले के बरामदे में बैठकर मेगजीन देखने लगा और आदमी आहाते में और कैम्प क्लर्क के कार्टर में चले गये। थोड़ी देर के बाद बँगले से करीब २०० गज पर ठेकेदार के कुलियों और गूजरों के पड़ाव की तरफ बहुत शोर-गुल होने लगा। रेंज अफसर व फारेस्ट गॉर्ड भागकर जाने लगे। मैंने पूछा कि क्या बात है। उन्होंने कहा कि हमको भी नहीं मालूम है। यह शोर जब बहुत ज्यादा होने लगा तो मैं भी उस तरफ चल दिया कि देखूँ क्या वजह है और अरदली से कहा कि बन्दूक लेते आना। मगर वह राइफल लेकर फाटक के बाहर मिल गया। उस वक्त शोर-गुल पच्छिम पहाड़ की तरफ बढ़ता मालूम हुआ। जब मैं वहाँ पहुँचा तो देखा कि करीब ५० मर्द, औरत व बच्चे सूखे नाले के इस तरफ ४-५ फीट ऊँचे किनारे पर खड़े शोर मचा रहे थे और सूखे नाले के उस पार करीब ४० गज पर एक खूबसूरत नर हाथी खड़ा था। दो काले भोटिया कुत्ते एक उसके आगे से और दूसरा पीछे से उसके ऊपर भूँक रहे थे। हाथी कभी आगेवाले की तरफ और कभी पीछेवाले की तरफ मुँह करता बेचैन था। आदमी, औरत

व बच्चे इस तरफ से तमाशा देख रहे थे और खुश होकर चिल्ला रहे थे। मैंने कहा कि जब तुम इस कदर उसको छेड़ोगे और अगर वह गुस्से में आकर किसी को मार डाले तो फिर शिकायत न करना। मैंने कुत्तों के मालिक से भी कहा कि कुत्तों को बुला लो और वे बहुत मुश्किल से बुलाने पर आये।

जब हाथी के पास से कुत्ते चले आये तो उसने अपनी निगाह हम लोगों की तरफ की और अपने सर पर और बदन पर सूँड़ से मिट्टी डालता रहा। मगर आँखें हम लोगों की तरफ जमाये, कान आगे-पीछे करता रहा। सब लोग चिल्लाकर भागे कि आता है। मेरे हाथ में राइफल था। मैं मेगज़ीन से कारतूस नाल में ले आया और देखता रहा। जब मैंने देखा कि वह ४-५ फीट ऊँचे किनारे में उतरने की जगह तलाश करने लगा है तब मैंने एक फैर उसके सर पर किया। वह चीख मार कर मुड़ा और उस वक्त घबराहट और खौफ में मैंने दूसरा फैर उसकी बगल पर मारा; जहाँ से खून निकलता हुआ दिखलायी दिया। हाथी भागा और करीब ७० फीट के ऊँचे पहाड़ पर तेजी से चढ़कर उसके ऊपर साल के मैदानी जंगल में चला गया। मैं करीब आध मील तक उसके पीछे गया, मगर कोई निशान न पाकर वापस चला आया। मैंने सोचा कि अब वह सोच-समझकर आदमियों के छप्परों को गिरायेगा और उनका सामान खायेगा। वापसी पर मैंने देखा कि हाथी गूजर का एक छप्पर गिराकर सब सामान बर्बाद कर गया था। करीब ५-६ दिन के बाद वह वहाँ से ७ मील पर ऋषीकेश की तरफ मरा हुआ मिला। शायद बगल की गोली फेफड़ों में पहुँच गयी थी; क्योंकि सर की गोली दिमाग़ तक नहीं पहुँची, नहीं तो पहली ही गोली में गिर जाता।

८२. मेरा चौदहवाँ व पन्द्रहवाँ शेर

मार्च सन् १९३८ में मैं सनेह पहुँचा। दूसरे दिन शाम को मैं अपने अरदली को लेकर कोटरी वेली की सड़क पर घूमने गया। वहाँ मेरा एक ऊँटवाला मिला। उसने कहा कि उसके ऊँट के बच्चे को, जोकि भूरा था और जो मुझे बहुत पसन्द था, शेर ने मार डाला। वह बहुत खूबसूरत, समझदार ६ महीने का बहुत खिलाड़ी बच्चा था। कूच के दिन जब सब ऊँट आते और लादे जाते तो वह बच्चा माँ को छोड़कर बँगले के सामने खड़ा होकर बोला करता, जब तक मैं खाना खाकर और तैयार होकर दूसरे कैम्प जाने को बाहर न निकलता; क्योंकि मैं एक-दो रोटी हाथ में लाकर ऊँट के बच्चों को खिलाया करता था। ऊँट के दो-तीन बच्चे और भी थे, मगर वे कोई नहीं आते थे। मुझे देखकर वह बच्चा पहले उछलता-कूदता और फिर खुशी में नाचता हुआ आकर रोटी हाथ से लेकर जोर से भागता। फिर बँगले के एक-दो चक्कर लगाकर मेरे पास आकर खड़ा हो जाता और अपना सर व गर्दन मुझसे रगड़ता रहता था। वह मेरे पीछे-पीछे उस रोटी के अहसान में घूमता रहता था। मुझे यह सुनकर कि उसको शेर ने मार डाला, बहुत अफसोस हुआ। मैंने पूछा कि कब और कहाँ पर मारा है। उसने कहा कि टूटे पहाड़ के नीचे यहाँ से करीब १ मील पर कोटरी नदी के किनारे। और कहा कि बच्चा मरा पड़ा है। माँ उसके पास खड़ी हुई उसको शेर से बचा रही है। शेर को भी थोड़ी दूर पर मैं खड़ा छोड़कर आया हूँ। मैं ऊँटवाले के साथ राइफल और ५ कारतूस, जो मेरे पास थे, लेकर रवाना हुआ। मैं रास्ता छोड़कर सीधा जंगल में होकर तेज और कहीं-कहीं दौड़ता हुआ गया; क्योंकि सूरज डूब रहा था, रात अँधेरी थी और मेरे पास टार्च भी न थी। मैं मौके पर पहुँचा। अभी काफी रोशनी थी। ऊँटनी को और ऊँटों के साथ दूसरा चरवाहा कैम्प को ले गया था। वह हमको रास्ते में मिला और कहने लगा कि शेर

अभी बच्चे के पास ही मौजूद है। वह जगह करीब एक या दो एकड़ के बराबर थी और कोटरी नदी के एक घूम पर पूरब, पच्छिम व दक्खिन तीन पहाड़ों के बीच में थी। उत्तर की तरफ कोटरी नदी थी। सब तरफ घने जंगल और घनी झाड़ियाँ थीं। मैंने पहले यह जगह नहीं देखी थी। ऊँट के बच्चे को शेर ने पूरबवाले पहाड़ की जड़ में मारा था, जहाँ खून पड़ा हुआ था और उसी पहाड़ की ढाल पर चढ़ा ले गया था। झाड़ी और सूखे पत्तों पर घसिटन साफ नजर आ रही थी। करीब ५० गज पर पहाड़ के ढाल पर बच्चे की बगैर खायी हुई लाश पड़ी थी। उस पहाड़ की धार करीब ५० गज और ऊँची होगी और उसके पूरब की तरफ दस-बीस बरस पहले पहाड़ का बहुत बड़ा हिस्सा टूटकर कोटरी नदी में गिरा था। पूरब और पच्छिमवाली पहाड़ की ये दोनों धारें दक्खिनी ऊँचे पहाड़ से आयी थीं; जोकि करीब २०० गज पर था और थोड़ी दूर उत्तर की तरफ जाकर कोटरी नदी में खत्म हो गयी थीं।

इन दोनों पूरबी और पच्छिमी धारों के बीच में एक और छोटी धार लाश से करीब ३० गज पर दक्खिन में थी। इस छोटी धार और पूरबी धार के मिलान पर जानवरों के चलने की एक पगडंडी थी; जोकि दक्खिन को जाती थी। मैंने ख्याल किया कि शेर इस पग-डंडी पर ही गया होगा; क्योंकि और दूसरा मौका भागने का था ही नहीं। लिहाजा मैं आहिस्ता-आहिस्ता उस पर दक्खिन की तरफ़ जाने लगा कि शायद धार पर पहुँच कर गोली चलाने का मौका दक्खिनी ढाल पर मिल जावे। मेरा अरदली और ऊँटवाला मुझसे करीब १५-२० कदम पीछे आ रहे थे।

मैं थोड़ी ही दूर गया हूँगा कि शेर एकदम से बड़े जोर की डाँट देकर एक झाड़ी से, जोकि मुझसे १० फीट के करीब नीचे थी, कूदा और दो छलाँग में उसी पगडंडी पर मेरे आगे जाकर धार के पीछे गायब हो गया। मेरे रोंगटे खड़े हो गये और आगे जाने की हिम्मत न रही ; जिसका मुझे दूसरे दिन बहुत ही अफसोस हुआ। अगर मैं

धार तक दस गज और चला जाता तो उसके दूसरी तरफ ५० गज तक नीचे शेर मेरी ३६६ बोर राइफल से बच नहीं सकता था और धार को पार करके शेर जरूर पीछे मुड़कर यह देखने को खड़ा हुआ होगा कि मैं उसके पीछे आ रहा हूँ या नहीं। मैं ऊँचे पर था और वह मुझसे नीचे होता। शेर ९५ प्रतिशत मौकों पर बगैर जख्मी हुए हमला नहीं करता है। या फिर बच्चों के साथ हो या उसके निकलने का कोई रास्ता न हो और या फिर आदमखोर हो। लेकिन उन खतरों के मौकों पर इन सब बातों का ख्याल करके एक सेकेंड के अन्दर यह तय करना कि क्या करना ठीक होगा, आसान नहीं है। तब हवाश गुम हो जाते हैं और डर के मारे रोंगटे खड़े हो जाते हैं और पसीना निकलते हुए गर्मियों में भी जाड़ा लगने लगता है। और इन्तहा यह है कि बस मज़ा आ जाता है। ये बातें तो आजादी से कमरे में बैठकर बाद को खूब सूझती हैं। नहीं तो मैंने देखा है कि बड़े-बड़े ६-६ फीट के जवानों की बहादुरी मिट्टी में मिल जाती है। लिहाजा मैं पीछे लौटा। ऊँट के बच्चे की लाश को मैंने नीचे लुढ़का दिया और पहाड़ की जड़ के पास एक पेड़ की दो डालों के बीच में मैं खड़ा हो गया। मैंने आदमियों से कहा कि १०० गज पर जाकर नदी के किनारे रेत में बैठो। मैं करीब आधे घंटे तक दो डालों के बीच में कभी-कभी पैर बदलता हुआ खड़ा रहा; क्योंकि पैर के लिए जगह कम थी और मैं तकलीफ से खड़ा था। शेर नहीं आया और अँधेरा हो गया। मैंने आदमियों को सीटी दी और हम खामोशी से उतर कर वापस चले आये। मेरा ख्याल है कि हमारी ये सब हरकतें शेर धार पर छिपा हुआ देखता रहा और इसी तरह से वे तजुर्बे करते हुए होशियार हो जाते हैं और शिकारियों के पड्डू खा-खाकर उनको बेवकूफ बनाते हैं। लिहाजा कामयाबी और नाकामयाबी मचान से शेर मारने की इस पर मुनहसिर है कि दोनों में से कौन धोखा देने में ज्यादा चालाक है। अगर कोई ४ शेर १० लाशों पर कोशिश करके मारे तो मैं उसको होशियार शिकारी कहूँगा। अगर मैं बजाय पेड़ पर खड़े होने के और लाश को नीचे गिराने का

शोर मचाने के, धार पर पगडंडी के पास कहीं आड़ में खामोशी से बैठ गया होता तो उसी शाम को मैं शेर मार लेता।

दूसरे दिन शाम को मैं ४ बजे से पहले मचान और दो आदमी लेकर पहुँच गया और देखा कि लाश को शेर फिर उसी पूरबवाली पहाड़ी पर घसीटकर धार के दूसरी तरफ टूटे हुए पहाड़ के रकबे में ले गया है; जोकि शायद सन् १९२४ की वर्षा में गिरा था। धार के पूरब तरफ बहुत साफ निशान बालू के ऊपर घसीटन का बना हुआ था। उस पर बड़े नर शेर के पैरों के साफ निशान सिर्फ जाने के बने हुए थे, वापसी के नहीं थे। मैंने चारों तरफ गौर से टूटे हुए पहाड़ के रकबे को देखा। उसमें उत्तर की तरफ हल्का ढाल था और पूरे रकबे में छोटे-बड़े पत्थर पहाड़ से टूटकर फैले हुए थे। रकबा घनी झाड़ियों और घास से ढका हुआ था। पूरब और उत्तर के कोने में करीब ६० कदम पर एक बड़ा पेड़ गिरा हुआ पड़ा था, जोकि घनी बेल से ढका हुआ था और उसके पास चन्द पेड़ खड़े थे, जो पहाड़ गिरते वक्त बच गये थे। वहाँ से निकलने का कोई और रास्ता नजर नहीं आ रहा था; सिवाय पच्छिम के, जिस तरफ से हम घसीटन पर आ रहे थे। क्योंकि टूटे हुए पहाड़ के दक्खिन और पूरब तरफ सीधे ऊँचे - ऊँचे पहाड़ थे और उत्तर में ५०-६० फीट सीधी गहराई पर कोटरी नदी और उसका गहरा पानी था। मैंने इस मामले पर काफी गौर नहीं किया। सिर्फ अरदली से पूछा कि शेर के निकलने के लिए पूरब तरफ मौका है या नहीं। उसने कहा कि हाँ, बस मैं रबड़ का जूता पहने हुए नरम बालू में, जो घसीटने से खुल गयी थी, चल दिया और इस पर जरूरी गौर न किया कि शेर जब हमारे आने की आहट पच्छिम से पायेगा तो किधर निकलकर जावेगा। मैंने यह बहुत ही बड़ी गलती की। मैं बहुत ही आहिस्ता-आहिस्ता पंजों पर रबड़ का जूता पहने हुए आधे रकबे को पार कर गया। मेरे दोनों आदमी मुझसे १५ गज पीछे थे। मेरे रोंगटे खड़े होने लगे। मैंने सोचा कि शेर लाश को घनी झाड़ियों में ले गया होगा और सबसे घनी जगह वही गिरा हुआ पेड़ था, जिसके

ऊपर घनी बेल चढ़ी हुई थी। घसिटन भी उसी तरफ जा रही थी। जब मैं गिरे हुए पेड़ के किनारे पहुँचा तो बेल की घनावट से उसके अन्दर कुछ न दिखलायी दिया और न कोई आवाज साँस वगैरह की ही आ रही थी। मगर मेरे रोंगटे फिर खड़े हो गये, दिल बहुत धड़कने लगा और हल्की सर्दी भी मालूम होने लगी। मैं एक पत्थर के पीछे और गिरे हुए पेड़ की बेलों से चन्द फीट पर खड़ा हुआ था। आगे बढ़ने की हिम्मत न पड़ी और खतरे का अहसास दिल में पक्का बैठ गया। मैंने एक पत्थर उठाया, मगर उसको भी फेंकने की हिम्मत न पड़ी और डर बढ़ता गया। मैं दक्खिन की तरफ एक बड़े पत्थर पर चढ़ गया और अपने आदमियों को भी इशारा किया कि पत्थरों पर चढ़ जावें। जब वे भी चढ़ गये तब मैंने उस झाड़ी में पत्थर फेंका और फौरन ही बादल की तरह गरजता हुआ शेर उसमें से दुम उठाये घसिटन की लाइन पर भागा। वह मेरे आदमियों के बहुत ही नजदीक से निकल गया और जिधर से हम आये थे उसी तरफ गायब हो गया। खैरियत हुई कि जो न मेरी झाड़ी में घुसने की और न जमीन पर से पत्थर फेंकने की हिम्मत हुई और हम सब लोग घसिटन के रास्ते से हट गये थे। नहीं तो न मालूम क्या आफत आ जाती। फिर मैं उस झाड़ी में गया तो देखा कि वह अँधेरी कोठरी की तरह से थी। लाश काफी खा ली थी और उसी के पास शेर के लेटने की जगह बनी हुई थी। मैंने बेकार नजदीक के पेड़ पर मचान बाँधा। मैं दो घंटा बैठकर वापस चला आया। मुझे उस दिन इसका खूब अन्दाज हो गया कि पड्डा या मचान बाँधने या शेर के पीछे जाने से पहले वहाँ के रकबे को अच्छी तरह से जान लेना चाहिए, जिससे कामयाबी ज्यादा और खतरे का मौका कम हो जाता है।

दूसरे दिन शाम को मैं उस रकबे को कुछ जानने के बाद बड़ी उम्मीद लेकर गया कि आज शेर को उसके टूटे हुए पहाड़ के किले में फाँस लूँगा। मौके पर पहुँच कर मैं उस घसिटन से १० गज ऊपर पत्थर की आड़ में धार पर बैठ गया और अपने दो आदमियों को,

जोकि उस रकबे को और शेर के रास्ते को एक दिन पहले देख चुके थे, दक्खिनी पहाड़ की जड़ के साथ-साथ खामोशी से भेजा और समझा दिया कि जब वे गिरे हुए पेड़ के ५० कदम पूरब पहुँच जावें, जहाँ से कल शेर भागा था, तब खूब जोर - जोर से बोलते हुए और पत्थर फेंकते हुए मेरी तरफ चले आवें। मुझे पूरी उम्मीद थी कि शेर आज भी लाश के पास पड़ा होगा और जब वह आदमियों की आवाज अपनी तरफ आते हुए सुनेगा तो फिर उसी घसिटन के रास्ते भागेगा। जब वह मुझसे १० कदम पर नीचे धार के पच्छिम निकल आवेगा तब मैं फैर करूँगा और वह लुढ़कता हुआ उस जगह पहुँच जावेगा, जहाँ उसने ऊँट का बच्चा मारा था। लेकिन अफसोस है कि कुछ नहीं निकला। मैंने आदमियों से पूछा कि क्या लाश वहीं पड़ी है। उन्होंने कहा कि उस घनी झाड़ी के अन्दर नहीं गये। मैंने जाकर देखा तो शेर मुझसे ज्यादा चालाक निकला। वह लाश के पास फिर आया ही नहीं। मैंने हार मान ली और वापस हुआ। मैं सोचता रहा कि किस तरह उसको काबू में लाना चाहिए। छोड़ी हुई लाश पर बैठना वक्त बर्बाद करना था। लिहाज़ा मैंने तय किया कि आज शाम को इस रकबे और शेर के घूमने-फिरने की जगहों की परीक्षा की जाय। जब मैं उस धार पर पहुँचा, जहाँ से पहले दिन शेर गायब हो गया था, तो बड़ा ही अफसोस हुआ। अगर मैं उस रोज शेर के पीछे १० कदम और चला जाता तो ५०-६० गज़ के अन्दर ही शेर पर गोली चल जाती। जानवरों का रास्ता इस धार से नीचे को गया था। खैर, मैं उसी पगडंडी पर दक्खिन की तरफ करीब एक मील के घने जंगलों और ऊँचे - नीचे पहाड़ों पर होता हुआ सियासूत में पहुँचा; जिसमें ६ फीट चौड़ी सड़क थी और दोनों तरफ ऊँचे-ऊँचे पहाड़ थे।

मैं उस सूत को जानता था। उसमें उसी बड़े नर शेर के पैर के निशान थे। मैंने तय किया कि वहाँ पर आज ही पड्डा बाँधा जाय। मैं कैम्प की तरफ पच्छिम को रवाना हुआ; जोकि वहाँ से करीब १ मील के थ और पड्डे को लाकर वहाँ बाँध दिया। सुबह होने पर मेरे

आदमियों ने बतलाया कि शेर पड्डा मार कर करीब १०० कदम के ६ फुटे रास्ते पर ले गया और फिर वहाँ से दक्खिन तरफ करीब १० कदम नाले में ले जाकर एक आदमी के बराबर ऊँचे चट्टान के नीचे छोड़ गया। वह एक टाँग खा गया है और मेरे आदमी लाश को खूब ढक आये हैं। मैंने उम्मीद की थी कि शेर लाश को जानवरों की पगडंडी पर ले जावेगा या उत्तरी नाले में ले जावेगा; जोकि पड्डे के सामने ही था। काम से वापसी पर शाम को मैं एक कुर्सी, एक किताब और राइफल लेकर गया। मैं कुर्सी को लाश के सामने ४० गज पर बाँध कर अच्छी तरह से ढककर आराम से कुर्सी पर बैठ गया और आदमियों से कहा कि लाश को खोल कर पड़ाव में चले जाओ। मैं वक्त गुजारने के लिए किताब पढ़ता रहा। एक घंटे के बाद लाश की तरफ पहाड़ पर लँगूर बन्दरों ने खतरे की आवाज देना शुरू की। मैंने किताब रखकर ३६६ बोर राइफल लिया और करीब आधे घंटे तक इंतजार करता रहा। चन्द चिड़ियों ने लाश के नजदीक नाले के ऊपर बाँस की नयी घनी झाड़ियों में खतरे की आवाज देना शुरू की। मैंने देखा तो शेर का सर झाड़ी से बाहर निकला हुआ था और वह लाश को देख रहा था। वह इधर-उधर थोड़ा घूमा और लाश के पास ६ फीट की ऊँचाई से कूदा। वह कद में छोटा मालूम हुआ। उसने लाश को सूँघा और गर्दन से पकड़ कर उसे नाले के ऊपर चढ़ाने की ३-४ मर्त्तबा कोशिश की, मगर न चढ़ा सका। वह कीचड़ और पानी में लोटकर आया था। उसका सब जिस्म भीगा हुआ था। जब वह बैठने के लिए पत्थरों को हटा रहा था तब मैंने उसके कँधे पर गोली मारी और वह वहीं गिर गया। जब वह मर गया तो मैं उतरा और मादीन देखकर अफसोस हुआ। मैं पड़ाव पर जाकर हाथी लाया और शेर को लादकर भिजवा दिया। हम चन्द आदमी लेकर लाश को घसीट कर उसी जगह पर पगडंडी के सामने नाले के पास डालकर चले गये। दूसरे दिन आदमी लाश को देखने गये और उन्होंने आकर कहा कि लाश को शेर पगडंडी पर घसीट ले गया है और लँगूर बन्दर

बहुत शोर मचा रहे थे, लिहाजा चले आये। मेरा उस रोज मोहन-वाली सान्टेशन जाने का प्रोग्राम था, जोकि सनेह से १० मील था। मैं जल्दी रवाना हो गया और बावजूद कि वापसी पर बराबर घोड़ी को दौड़ाता हुआ लाया, मगर लाश पर चार बजे के बाद कुर्सी और दो आदमी लेकर पहुँचा। वहाँ नाले के दोनों तरफ और नाले में गिद्ध जमा थे। पड्डा नाले में गोल व चिकने बड़े बड़े पत्थरों पर ढालदार हालत में ऐसा फँसा हुआ था कि कोई गिद्ध उसके ऊपर या उसके नजदीक नहीं ठहर सकता था और बैठते ही फिसल कर गिर पड़ता था। नाले के दोनों तरफ हल्का जंगल, झाड़ियाँ और ऊँचे-नीचे पत्थर थे। मैं कुर्सी बाँधने के लिए सियासूत और पड्डे वाले नाले के मिलान पर पेड़ ढूँढ़ रहा था। इतने में लाश से करीब १०० गज़ पूरब हमारी तरफ आते हुए काँकड़ ने खतरे की कई आवाजें दीं; जिससे मुझे अन्दाज हुआ कि काँकड़ शेर के पीछे-पीछे बोलता हुआ आ रहा है, जोकि उसकी आदत है कि जहाँ कहीं शेर या गुलदार उसको दिखलायी देता है तो वह बोलता हुआ उसके पीछे-पीछे काफी फासले से आता है और जब शेर व गुलदार तंग आ जाता है तो वह उसके ऊपर हमला करता है तब वह बोलता हुआ जोर से भागता है। देर हो गयी थी और कुर्सी बाँधने का अब वक्त नहीं था, लिहाजा मैं कोई दो शाखों-वाला पेड़ तलाश करने लगा कि उस पर ही बैठ जाऊँ या खड़ा हो जाऊँ। मगर वह भी कहीं नजर नहीं आ रहा था। इतने में आखिर-कार शेर ने गुस्ताख काँकड़ पर हमला किया और वह जोर से बोलता हुआ पीछे भागा। अब तो फासला और भी कम हो गया था और मेरी आँखों में ख्याली नक्शा बँध गया कि किस तरह से शेर ने काँकड़ को भगाकर फिर लाश की तरफ आना शुरू किया। मैं घबरा गया और जिस बड़े बाकली के पेड़ के नीचे मैं नाले के सामने खड़ा था, वहीं उसकी आड़ लेकर खड़ा हो गया। उस पर चढ़ना मेरे लिए गैरमुमकिन था और अगर मैं नाले के किनारों पर जाता तो बवजह तंग और गहरे नाले के और दोनों तरफ घनी झाड़ियों के, लाश नहीं दिखलायी देती।

इतने में पूरबी किनारे से जिस तरफ से शेर आ रहा था, गिद्धों ने घबराकर एकदम से भागना और चारों तरफ उड़ना शुरू कर दिया। एक-दो गिद्ध पेड़ों से टकरा कर मेरे आगे-पीछे गिरे। मुझे झुरझुरी आ गयी; जोकि मुझको कभी लाट साहब के आने पर भी न आयी थी। शेर अब ५०-६० कदम के अन्दर था; जिसका मुझको बिलकुल पूरा यकीन था और जोकि पुराना चालाक शेर था। वह मेरे ऊँट के बच्चे को मारकर मुझे काफी धोखा दे चुका था और उसी का बदला लेने का मेरा इरादा था। मैंने अपने आदमियों से भी कहा कि वे कुर्सी लेकर आहिस्ता-आहिस्ता पीछे कैम्प की तरफ जल्दी से चले जावें। मैं राइफल को बिलकुल तैयार करके बाकली के पेड़ के पीछे छिपकर देखता रहा। चन्द मिनट में एक लाल गर्दनवाला गिद्ध कूदता और घबराया हुआ नाले के पूरबी किनारे पर मुझसे करीब ३० गज पर आया और इधर-उधर देखकर, बगैर कुछ दूर दौड़े ही उड़ने के लिए पर फैलाने लगा, जैसा कि ये अक्सर हवा में अपना बोझ सँभालने के लिए करते हैं। वह मुश्किल से झाड़ियों और डालों में लगता हुआ चला गया। उसके बाद करीब १५ मिनट तक बिलकुल खामोशी रही। तमाम गिद्ध नाले के पूरबी किनारे से उड़ गये। सिर्फ चन्द गिद्ध लाश के पास नाले में और बाकी नाले के पच्छिमी किनारे पर अभी थे। मैं बाकली के पेड़ के पीछे चोर की तरह छिपा हुआ बराबर नाले के पूरबी किनारे की तरफ आँखें जमाये हुए मिनट दो मिनट के अन्दर शेर के दर्शन का इन्तजार कर रहा था। आखिरकार लाश के सामने झाड़ी के पीछे से शेर का सर निकला। पहले उसने नाले को नीचे की तरफ यानी मेरी तरफ खूब गौर से देखा, फिर चारों तरफ देखकर लाश को देखा और गिद्धों पर गुर्राने लगा। गिद्ध भागने और उड़ने लगे। मैं अपना राइफल शेर की तरफ सीधा किये हुए बाकली के पेड़ से सहारा लिये हुए छिपा खड़ा था। शेर को मेरी मौजूदगी का बिलकुल शक नहीं हुआ और उसने लाश की तरफ देखा। फिर वह ७-८ फीट गहरे नाले में कूदा और पड्डे के पास जाकर जब उसको सूँघने लगा,

तब मैंने पहले कंधे का निशाना लिया; जिसके सामने एक पत्थर पड़ता था, लिहाजा मैंने सर का निशाना लिया और दागने ही वाला था कि पच्छिमी किनारे पर गिद्धों ने लड़ना और शोर मचाना शुरू किया। शेर ने एकदम से सर उठाकर उधर देखा और मैंने गर्दन का निशाना लेकर धड़कते हुए दिल से फैर किया। शेर राइफल की आवाज के साथ गिरा और फौरन ही खड़ा होकर नीचे की तरफ दौड़ा। उसने मुझे अभी तक नहीं देख पाया था। मगर पहाड़ में सब जख्मी जानवर नीचे ही भागते हैं; जोकि आसान होता है। वह १०-१५ गज भागा होगा कि मेरी दूसरी गोली पर वह फिर गिरा और फिर कुछ उछल-कूद कर फिर उठा, कि मेरी तीसरी गोली ने चित्त कर दिया। वह पत्थरों में थोड़ी देर चीखा, तड़पा और फिर मर गया। मेरा खौफ और फिकर कम हुई। मैं अब नाले के पच्छिमी किनारे पर शेर के सामने गया। मैंने पत्थर फेंके और जब कोई हरकत नहीं मालूम हुई तो आदमियों को आवाज दी और जाकर गौर से देखा तो बहुत भारी नर देखकर और ४ दिन की बराबर कोशिश के बाद बदला लेकर बहुत खुशी हुई। मेरी पहली गोली गर्दन के रग व पुट्ठों को काटती हुई बगैर हड्डी छुए निकल गयी थी। दूसरी गोली सीने में और तीसरी कंधे पर पड़ी थी।

मैंने एक आदमी पड़ाव पर भेजा कि हाथी और लदवाने को चन्द आदमी ले आवे। ८-९ आदमियों ने मुश्किल से उसको पत्थरों में से चन्द कदम आगे निकाला, जहाँ पर उसको हाथी पर लादा गया। वह ९ फीट ८ इंच का निहायत अच्छी तन्दुरुस्ती का नर शेर था।

Plate No. X.



The author and the murderer of the camel pet.

८३. चीत साँप ज़िंदा पकड़ा गया

सेई खैर की नयी पैदावार को काटकर बहुत नुकसान कर रही थीं और खासकर प्लान्टेशन में। सेई का सर लाने पर पाँच रुपया इनाम गवर्नमेंट से मंजूर था। एक काफला कुँजड़ों का, जोकि खानाबदोश लोग थे, आकर सनेह में ठहरा; जहाँ पर मैं पड़ाव किये हुए था। मैंने उन कुँजड़ों को सेई को गवर्नमेंट फारेस्ट में मारने की इजाजत दे दी। उन्होंने पहले ही दिन अपने कुत्तों की मदद से और सेई के गड्ढों में धुआँ करके १४ सेई मारीं और ७० रुपया इनाम लिया। मिस्टर चतुर्वेदी आई० एफ० एस०, जोकि अब भारत जंगलात के इन्स्पेक्टर जनरल हैं, वे भी वहाँ दौरे में आ गये। हम लोग शाम को हाथी पर घूमने जा रहे थे। हमने देखा कि कुँजड़े कम्बल में बाँधे हुए एक पूरा बोझ ४ आदमियों के कन्धों पर बल्ली में लटकाये हुए कुछ ला रहे थे; जो कि कम्बल के अन्दर कुलबुला रहा था। हमने पूछा—इसमें क्या है ? उन्होंने बतलाया कि चीत साँप है। मैंने कहा—तुमने उसको सरकारी जंगल से क्यों पकड़ा ? मैं इसके पचास रुपया मावजा लूँगा, और कल सुबह उसको बँगले पर जिन्दा लाओ। दूसरे दिन वे चीत साँप को लाये। उन्होंने उसे बँगले के फाटक के सामने फैला दिया। उसकी लम्बाई १५ फीट थी। उन्होंने माफी चाही और कहा कि उन्होंने इसको अपनी लड़की के दहेज में देने को पकड़ा है; ताकि दामाद और लड़की इसको शहरों में दिखलाकर रोजी कमावें। मैंने कहा कि अच्छा, तुमको १० सेई मारने का कोई इनाम नहीं दिया जावेगा और तुम इसको ले जा सकते हो। चीत साँप खुला हुआ बिलकुल खामोश पड़ा था, गो एक ही दिन पहले पकड़ा गया था। मैंने पूछा कि तुमने क्या कर दिया है, यह भागता क्यों नहीं है। मेरा कुत्ता जोकि देर से उस पर भूँक रहा था, थोड़ा नजदीक चला गया। चीत सिकुड़ा और अपना पिछला हिस्सा उसके ऊपर फेंका, ताकि लपेट ले। लेकिन कुत्ता बचकर

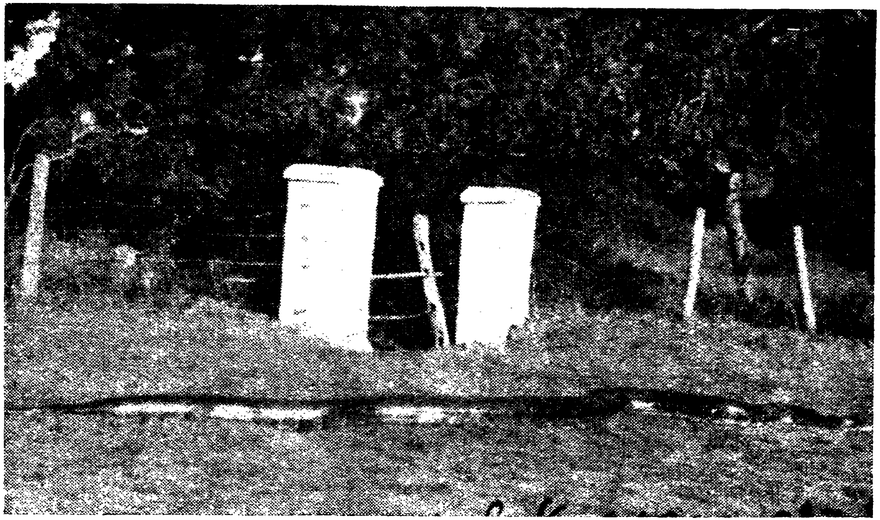
भाग गया। यह देखकर कुँजड़े का करीब १० वर्ष का एक लड़का लकड़ी लेकर दौड़ा। साँप ने उसके ऊपर भी खुले हुए मुँह से हमला किया। कुँजड़े ने उसकी दुम पकड़कर घसीट लिया और कहा कि हमने इस पर मन्तर कर दिया है, अब यह कुछ नहीं कर सकता है। मैंने २१ फीट तक का चीत साँप देखा है, जिसको जंगल के ठेकेदार के आदमियों ने कुल्हाड़ियों से एक नाले के किनारे घास में, जहाँ उन्होंने जंगल में पड़ाव किया था, मारा था और उसके पेट से एक नौ-उमर नर चीतल निकाला था, जिसके १४ इंच के सींग थे। यह चीतल थोड़ा-थोड़ा हजम होने लगा था और उसके वजन की वजह से साँप भाग नहीं सकता था।

८४. मेरा पचासवाँ गुलदार

चूँकि मेरी किताब बहुत बड़ी हुई जाती है, लिहाजा मैं उन गुलदारों को यहाँ छोड़ रहा हूँ, जो आसानी से मार लिये गये थे।

दिसम्बर सन् १९३८ ई० में मैं कुनाऊँ के बँगले में ठहरा हुआ था। जंगल के काम खत्म पर थे। स्कूलों की गर्मियों की छुट्टियों में मेरे बीबी व बच्चे आये। एक रोज शाम को मैं अपने छोटे लड़के मुमताजुद्दीन को हाथी पर लेकर घूमने गया। इधर-उधर घूमकर अँधेरा होने के करीब खाली हाथ वापस आ रहा था कि कैम्प के नजदीक मेरे लड़के ने इशारा किया। मैंने देखा कि एक गुलदार झाड़ियों के सामने नजदीक ही बैठा था। रोशनी कम थी। मैंने बेइतमीनान का फैर किया। गुलदार लुढ़का, मगर फौरन ही खड़ा होकर झाड़ियों में घुस गया। मैंने पीछा किया और चाहता था कि मौका मिल जावे तो उसको खत्म कर दूँ। लेकिन उसकी सिर्फ आगे-आगे चलते हुए झलकियाँ दिखलायी दीं। मैंने फिर एक और बेइतमीनान फैर अपने ऊँटवालों के पड़ाव के पास बाँसों में किया, लेकिन हम उसे ढूँढ़ न सके। दूसरे दिन सुबह मैं हाथी पर गया। ऊँटवालों ने कहा कि १० बजे रात तक

Plate No. XI.



Python caught alive.

वह उनके पड़ाव से १०० गज दक्खिन तरफ कराह रहा था। मैं उस तरफ गया तो एक पेड़ तक बहुत खून मिला। उसके बाद कोई पता न चला। मेरे महावत ने पेड़ के ऊपर बहुत ऊँचे तक खून देखा। लेकिन गुलदार नहीं दिखलायी दिया। हमने पेड़ के चारों तरफ चक्कर लगाना शुरू किया और करीब ७० गज पर गुलदार को पाया; जिसको किसी ने करीब-करीब सब खा लिया था, सिर्फ सर, गर्दन और अगले पैर छोड़े थे। मेरी समझ में नहीं आया। हाथी से उतरकर मैंने बहुत अच्छी तरह से देखा। मगर जमीन पथरीली और सख्त थी और कोई पैर के निशान न दिखलायी दिये कि किसने खाया है। पेड़ पर ताजे नाखून के और खून के निशान थे। ऐसा मालूम होता था कि जब गुलदार जिन्दा था तो सुअर का कोई गोल उस तरफ आ निकला और गुलदार उनके डर से पेड़ पर चढ़ गया। मगर ज्यादा देर तक वहाँ अपने आपको सँभाल न सका, वह गिर पड़ा और सुअर उसको खा गये; क्योंकि सुअर और रीछ ही मय हड्डी-खाल के खाते हैं। मैं उसका सर और गर्दन काट लाया और उसका सर, गर्दन बनवाकर शील्ड पर चढ़वाया; जो बहुत अच्छा था। यह अच्छे क़द का नर मालूम होता था।

८५. एक शेर के परिवार से हमारी दिलचस्प तफ़रीह

दूसरे दिन शाम को मैंने दो पड्डे बँधने के वास्ते भेजे, एक पूरब की तरफ और दूसरा दक्खिन की तरफ, साँप लाइन और ६ फुटे रास्ते के मिलान पर पहाड़ के नीचे; जहाँ मैंने पिछली फसल में हाथियों का गोल देखा था। पड्डे भेजने के बाद मैं बीबी-बच्चों को हाथी पर लेकर घूमने के लिए रवाना हुआ। हम बँगले से करीब आधा मील के गये होंगे कि हमने देखा कि हमारे आदमी पूरब की तरफ से घबराये हुए भागे आ रहे थे। मैंने पूछा कि क्या मामला है। उन्होंने कहा कि वे पड्डे को लिये हुए सड़क पर जा रहे थे कि कुछ हाथी जंगल से

निकल आये। वे डर गये और पड्डु को एक पेड़ से बाँधकर भाग आये। मगर हाथियों ने पड्डु को आकर घेर लिया और शायद मार डाला है। मैंने हाथी को उस सड़क पर पूरब तरफ घुमा दिया। हम करीब एक फरलाँग गये होंगे तो मैंने देखा कि ८-९ छोटे-बड़े हाथी एक ही जगह गोल चक्कर बनाये हुए खड़े थे और सबकी पूँछें बाहर और सर चक्कर के अन्दर थे। हम हाथियों के करीब ६० गज तक गये होंगे कि महावत ने हाथी को रोक दिया और कहने लगा कि अब आगे जाना ठीक नहीं है। मैंने कहा—अच्छा, अब इनका तमाशा देखेंगे, जब तक ये गुस्सा न हों।

हम कुछ देर वहाँ खड़े रहे और हाथियों को पता नहीं लगा। उनमें से एक मुड़ा और हमको देखकर थोड़ी देर खड़ा रहा। फिर वही खतरे की आवाज उसने दी और सब मुड़कर हमको देखने लगे। हमारा हाथी भी घबराने लगा। लड़के-बच्चे समझते नहीं थे, लिहाजा बड़े शौक से देखकर हँस रहे थे। उनमें का बड़ा नर जिसके दाँत नहीं थे, हमारी तरफ आहिस्ता-आहिस्ता शान से बढ़ना शुरू किया और वह जब करीब आधी दूर आ गया तो मैंने ज़ोर से लुहा-लुहा की आवाज दी। वह ठहर गया। दूसरों ने अजब-अजब तरह की आवाजें करना शुरू कीं और सब एक जगह जमा हो गये। उन्होंने बच्चों को अन्दर ले लिया। मुझे बड़ा अफसोस हुआ कि मैं अपना केमरा बँगले पर छोड़ आया था, नहीं तो जंगल हल्का था और बड़ी अच्छी फोटो आती। जैसे ही बड़ा हाथी फिर हमारी तरफ बढ़ा मैंने एक फैर ४ नम्बर छर्रे का किया और सब शोर मचाते हुए भागे। हम आगे बढ़े और देखा कि पड्डु मरा हुआ पड़ा था और नाक व कान से खून बह रहा था। लेकिन उसके जिस्म पर कोई और निशान जख़्म का नहीं था। रस्सी पेड़ से टूट गयी थी। उन्होंने शायद पड्डु का फुटबाल बना दिया था और लातों व सूँड़ से उसको इधर-उधर खूब फेंका था; जोकि वहाँ की जमीन व झाड़ियों से मालूम होता था। मैंने उतर कर देखा तो तमाम हाथ-पैर व पसलियाँ टूटी हुई थीं। मैंने

उसको हाथी के रस्से में बँधवाकर सौ-डेढ़ सौ गज खिंचवाकर एक नाले और उस सड़क के मिलान पर छोड़ दिया। अब हम दक्खिन वाले पड्डे की तरफ गये, ताकि उसको ज़ाये होने से बचा लें। मगर हमको थोड़ी दूर पर उसके बाँधने वाले आदमी वापस आते हुए मिले। मैंने उनसे कहा कि हमारे पीछे-पीछे चले आओ और पड्डे को खोल लावें। मगर उन्होंने कहा कि अब वहाँ पहुँचने तक अँधेरा हो जावेगा और शायद पड्डे को मार भी लिया हो; क्योंकि उसी के नजदीक लँगूर बन्दर और साँभर बहुत शोर मचा रहे थे, लिहाजा हम वापस आये और रास्ते में मैंने सड़क पर एक काँकड़ कैम्प के लिए मारा। दूसरे दिन सुबह इत्तला आयी कि दोनों पड्डों को शेर ले गया। मुझे उस दिन बाहर का कोई काम न था, सिवाय गूजरों के चन्द झगड़े तय करने के; जिनको मैंने बुला रक्खा था। दोपहर तक उनके फैसले खत्म हो गये। खाना खाकर ३ बजे तक दफ्तर का भी काम खत्म करके ४ बजे सबको लेकर मय केमरा और राइफल के, बालमती हथिनी पर करीम महावत के साथ मैं रवाना हुआ। मैंने महावत से कहा कि अगर अच्छा बड़ा नर शेर न मिला तो सिर्फ तमाशा देखेंगे और हो सका तो फोटो लेंगे। उसने कहा—अच्छा; क्योंकि फोटो लेना मारने से ज्यादा मुश्किल है।

हम पहले दक्खिन तरफ का पड्डा देखने गये और लाश की घसिटन पर कुछ दूर पहाड़ की जड़ की तरफ गये; जहाँ घनी झाड़ियाँ, पेड़ और चट्टानें थीं। हमने एक पेड़ पर चन्द कौए देखे। हम उनकी तरफ बढ़े तो लाश को देखा कि आधे से ज्यादा ताजा खाया हुआ था। इतने में महावत ने इशारा किया। एक शेर लाश की तरफ से पहाड़ की तरफ जा रहा था और मेरे लड़के ने एक और दूसरा शेर हाथी के पीछे दिखलाया। वह भी पहाड़ की तरफ जा रहा था। उसी वक्त हमको आहिस्ता-आहिस्ता गुर्राने की आवाज करीब २० गज पर पहाड़ के ढाल पर मालूम हुई। हमने ऊपर देखा तो दो शेर वहाँ ढाल पर झाड़ियों के ऊपर खड़े थे। ये दोनों भी नीचे से आकर इकट्ठा हो गये।

जब हमने ग़ौर से देखा और सबका मुकाबला किया तो अन्दाज हुआ कि माँ और करीब-करीब पूरे क़द के तीन पट्ठे थे। हम कुछ देर वहाँ खड़े होकर ४ शेरों का तमाशा १५ गज के फासले पर और अपने १० फीट ऊँचे पर देखते रहे। माँ झाड़ी के अन्दर से गुरगुराती रही, लेकिन पट्ठों ने जब यह समझ लिया कि हम खामोश खड़े हैं तो एक निकले हुए पत्थर पर तीनों आये और उनमें से एक बिलकुल खुले में बैठ गया और दो खड़े रहे। उन्होंने फोटो का बहुत अच्छा मौका दिया। मैं माँ का इंतज़ार करता रहा कि वह भी निकल आवे, मगर वह नहीं निकली। मैंने केमरा खोलकर उनका फोकस लिया, मगर अफसोस कि मैं अपनी पढ़ने की ऐनक नहीं ले गया था और गो मैंने ४ फोटो उनकी तरह-तरह की हरकतों और मुँह बनाने और कान ऊपर-नीचे करने के लिये, मगर कोई साफ़ न आया; जिसका मुझे बहुत अफसोस रहा। फोटो लेकर और उनका तमाशा खूब अच्छी तरह से देखकर हम दूसरे पड्डे की तरफ रवाना हुए कि शायद वहाँ बड़ा नर शेर मिले।

वहाँ जाकर मैंने देखा कि शेर पड्डे को मुँह में उठाकर और सिर्फ कहीं-कहीं जमीन से लगता हुआ करीब एक मील के जंगल ही जंगल ले गया और दक्खिनवाली लाश से करीब एक फरलाङ्ग पर साँप लाइन के पास बगैर खाये छोड़ गया। मैंने लाश के चारों तरफ हाथी घुमाया, मगर शेर नहीं दिखलायी दिया। चूँकि पहला पड्डा भी बिलकुल नजदीक था, जहाँ पर ४ शेर तो मौजूद ही थे; लिहाजा सबकी राय हुई कि वहीं चलकर थोड़ी दूर और उन्हीं का तमाशा देखा जाय। वहाँ पहुँचकर देखा कि वे लाश को भी पहाड़ पर ले गये। पहाड़ का ढाल तेज और बहुत ऊँचा-नीचा घनी झाड़ियों और पेड़ों से ढका हुआ था। मैं बच्चों को लेकर हाथी पर जानेवाला न था। लिहाजा हमने पहाड़ की जड़ पर चक्कर लगाया। हमारी आहट सुनकर वे तीनों पट्ठे फिर निकल आये और हमको १० मिनट तक फिर खूब तमाशा दिखलाया। इस तरह हमारे पड्डों की कीमत के १५-१६ रुपये काफ़ी वसूल हो गये।

माँ झाड़ी में से अपने बच्चों को डाँटती रही। एक बच्चे ने बहुत पैंतरे बदले, कान ऊँचे-नीचे किये और जब ज्यादा गुर्राने और गुस्सा दिखलाने लगा तो हम साँप लाइन पर दक्खिन तरफ चल दिये और आध मील के अन्दर दूसरा तमाशा देखा। हमारा हाथी चलते-चलते ठहरने लगा और सूँड़ से सड़क के दाहनी तरफ इशारा करने लगा। महावत ने कहा कि होशियार हो जाइये, कोई जानवर नजदीक ही में है। दोनों तरफ जंगल बहुत घने थे। थोड़ी ही दूर और गये होंगे तो हमने देखा कि एक रीछ एक गिरे हुए हरे पेड़ की एक डाल पर खड़ा हुआ था; जोकि जमीन से मिली हुई थी। दूसरा रीछ ६-७ फीट ऊपर की डाल को हाथ से पकड़े हुए एक शहद की मक्खी के छत्ते में मुँह घुसेड़े हुए हमारी तरफ पीठ किये हुए शहद चूस रहा था और हाथी के करीब १० फीट तक भी पहुँच जाने पर बिलकुल बेखबर था।

थोड़ी देर के बाद उसने मुँह निकाला, चारों तरफ देखा और हमको मिस्ल पहाड़ के सर पर खड़ा देखकर कुछ देर उसने समझने में ली। फिर वह चीखता हुआ जंगल में भागा। जिसका नतीजा यह हुआ कि जो मक्खियाँ उसके ऊपर बड़े बालों में लिपटी हुई थीं, वे सब उड़ पड़ीं और हमारी तरफ आयीं। हम रूमाल और कपड़े हिलाते हुए जिस क़दर तेजी से हाथी को भगा सके, भगाकर वापस आये।

८६. एक बदमाश दाँतवाले हाथी का फोटो

अक्तूबर सन् १९३९ में मैंने बरसात के बाद दौरा शुरू किया। उस वक्त सड़कों, मकानों और पुलों की सालाना मरम्मत हो रही थी। रेंज अफसर लालढाँग ने रिपोर्ट की कि जंगली हाथियों ने मीठावाली बँगले और नौकरों के कार्टरों को बहुत नुकसान किया है। लिहाजा ३००) की मंजूरी उनकी मरम्मत के वास्ते दी जावे। मैंने लिखा कि मैं लालढाँग दो-तीन दिन के अन्दर आ रहा हूँ और नुकसान की हालत देखकर मंजूरी दूँगा। लालढाँग पहुँचकर दूसरे दिन सुबह मैं रेंज अफसर को

लेकर घोड़ों पर मीठावाली बँगले को गया, जोकि ५ मील पर था। रास्ते के दोनों तरफ बाँस और दूसरे पेड़ों का नुकसान बहुत ज्यादा देखा। बँगले के बरामदे के दो पीलपाये और छत का टीन एक कोने पर गिरा हुआ पाया और एक कमरे का दरवाजा गिरा हुआ और उसके अन्दर का फर्नीचर भी टूटा हुआ पाया। उसके अन्दर छोटे हाथियों की लीद भी पायी। बावरचीखाना और नौकरों के कार्टर में भी काफी नुकसान पाया।

वापसी पर मैंने लूनी के फॉरेस्ट गार्ड और मुखिया से पूछा कि कितने हाथी आ गये थे। उन्होंने कहा कि करीब २ दर्जन हाथी एक हफ्ते से ज्यादा मीठावाली सोत और बँगले के आस-पास रहे और थोड़े ही दिन हुए, मीठाबेरी की तरफ गये हैं। उनमें का एक दाँतवाला बदमाश हाथी लूनी ताल पर ठहर गया है और वह उस दिन सुबह तक वहाँ था। मैंने कहा कि वापसी पर मुझे दिखाना। चूँकि उसने पहले चन्द आदमी मारे थे और एक दाँत की वजह से आसानी से पहचाना जाता था, लिहाजा काफ़ी मशहूर था; मगर अब बुड्ढा और कमजोर हो चला था, लिहाजा जवान हाथी उसको मारकर गोल से निकाल देते थे। लूनी चौकी पहुँचकर मैंने और रेंज अफसर ने अपने घोड़े सड़क पर फॉरेस्ट गार्ड और अरदली के सुपुर्द किये। हम मुखिया को लेकर ऊँची घास में होते हुए तालाब पर पहुँचे। मगर हाथी नहीं दिखलायी दिया और हाथी की ताजी लीद और घूमने-फिरने के ताजे निशान मौजूद थे। हम नाउम्मीद होकर लौटने लगे तो हाथी ने हमसे करीब ३५ गज़ पर तालाब के किनारे घने पेड़ों में हिलना और कान हिलाना शुरू किया। वह सुस्त व कमजोर मालूम होता था; मगर क़द में बहुत भारी और एक दाँत का था। मैंने कहा कि वह फोटो लेने का बहुत अच्छा मौका देगा, उसको खड़ा रहने दो। हम सड़क पर वापस आये और मुखिया से कहा कि तुम यहीं खड़े रहो। मैं लालढाँग जाकर एक घंटे के अन्दर केमरा ले आऊँ। लालढाँग वहाँ से तीन मील था। मैंने घोड़ी भगायी। बाकी सब आदमी पीछे आते रहे। मैं एक घंटे के अन्दर केमरा लेकर

Plate No. XII.



Wild elephant with one tusk in his jungle home.

आ गया। मुखिया को सड़क पर छोड़ दी और मैं आहिस्ता-आहिस्ता केमरा बिलकुल तैयार करके तालाब की तरफ गया। उस वक्त हाथी तालाब में कमर भर गहरे पानी में लेटा हुआ था। यह अक्सर देखा गया है कि हाथी जब बीमार होता है या मरने के करीब होता है तो पानी के नजदीक कई-कई दिन तक ठहर जाता है और ज्यादातर जंगली हाथी पानी ही के पास खास-खास जगहों पर अक्सर मरते देखे गये हैं।

मैं हाथी की दुम की तरफ गया। मगर मेरे आने की आहट सुनकर वह उठ बैठा और मेरी तरफ देखने लगा। मैंने पहली फोटो करीब ४० गज से ली। लेकिन वह घबराहट और जल्दी में साफ नहीं आयी। मैं और नजदीक गया तो हाथी खड़ा हो गया और झूमता और हिलता रहा। मैंने एक फोटो बगल की तरफ से लिया। जब मैंने उसको सुस्त पाया तो हिम्मत बढ़ी और उसके सामने जाकर तीसरी फोटो ली। तब वह चीख मारकर मेरी तरफ बढ़ा और मैं सड़क की तरफ भागा। मगर हाथी ने पीछा नहीं किया। दो-तीन दिन के बाद वह मीठाबेरी की तरफ चला गया, जहाँ मेजर ट्रेशम का फ़ार्म लूनी से ७ मील पर था। वहाँ के लोगों ने उसको दो-एक दिन सुस्त घूमते हुए देखा। एक रात को उस तरफ से हाथियों का गोल निकल पड़ा, जिसमें उससे ज्यादा तगड़ा हाथी था और उन दोनों में खूब लड़ाई हुई; जिनमें शायद पहले की दुश्मनी थी। सुबह होने पर मीठाबेरी फार्म के आदमी देखने गये कि रात के शोर का क्या सबब था, तो एक दाँतवाले हाथी को बहुत जख्मी और सिसकता हुआ पाया। उसके दो-तीन दिन के बाद फॉरेस्ट गार्ड ने मुझे उसका दाँत निकालकर भेजा; जोकि ५ फीट ९ इंच लम्बा और १४ इंच मोटा था। उसका वजन करीब १०५ पौंड के था। वह २ रुपये ८ आने फी पौंड के हिसाब से नीलाम हुआ।

८७. मेरा सोलहवाँ व सत्रहवाँ शेर

मार्च सन् १९३९ ई० में मैं मय बीवी बच्चों के खारा बँगले में ठहरा हुआ था, जोकि बियावान जंगल में सिवालिक पहाड़ की धार पर है और जहाँ वह हिमालिया पहाड़ में मिलता है। बँगले के बरामदे और आहाते से चारों तरफ के पहाड़ और नाले दूर तक खूब दिखलायी देते थे। एक रात को आँधी, पानी और ओला पड़ा। सुबह जब मैंने किवाड़ खोले तो शेरों के पैरों के निशान कीचड़ के बरामदे में पक्के फर्श पर देखे। ऐसा मालूम होता था कि रात को जब पानी बरस रहा था तो वे साये की गरज से बरामदे में आये। हमने बँगले के नीचे भी शेर के निशान देखे थे। मैंने बच्चों से पूछा कि जंगल का सिनेमा देखोगे। और उन्होंने कहा कि हाँ।

मैंने शाम को एक पड्डा बँगले के दक्खिन तरफ नाले में दो सड़कों के मिलान पर, सड़क के रास्ते बँगले से करीब आधा मील मगर सीध में करीब एक फ़रलाँग के अन्दर बँधवा दिया। शेर पड्डे को मारकर, कुछ खाकर कुछ दूर पर एक छोटे नाले में ले गया और झाड़ी में ढालदार जमीन पर छोड़ गया। जो आदमी पड्डे को देखने गये थे, उन्होंने बतलाया और उसे ढक आये। मैं आदमियों से यह कहकर कि तुम करीम महावत की सलाह से किसी मुनासिब पेड़ पर चारपाई बाँध देना, काम पर चला गया। शाम को चार बजे के बाद सबको हाथी पर लेकर मैं पहुँचा तो देखा कि मचान पहाड़ के ढाल पर जरूरत से ज्यादा ऊँचा और लाश के बिलकुल ऊपर ही बाँध दिया गया था; जो गलती अक्सर सब कोई करते हैं। चारों तरफ घनी नौउमर बाँस की झाड़ियाँ थीं। नजदीक में कोई मुनासिब पेड़ भी न था। हाथी के ऊपर से पेड़ पर चढ़ने की कोशिश की, मगर कोई न चढ़ सका। पेड़ चूँकि ढाल पर था, इसलिए हाथी उसके पास न पहुँच सका। लिहाजा हमने तय किया कि हाथी से शेर को ढूँढ़ें; जोकि लाश के पास ही रहता है।

मचान के दक्खिन में चन्द कदम पर एक ६ फीट का रास्ता था। हम उस पर काफी दूर तक गये। मगर कुछ नहीं दिखलायी दिया। हम नाउम्मीद होकर वापस आ रहे थे तो मेरी स्त्री ने लेक्चर देना शुरू किया कि बेचारे पड्डे की जान मुफ्त में खोयी और ५ रु० भी खोये। मचान के पास जब हम पहुँचे तो मैंने महावत से कहा कि सबको बँगले पर ले जाओ और हाथी को वापस लाकर यहाँ से १०० गज पर सड़क पर इन्तजार करना और मैं मचान पर बैठ गया। अँधेरा होने लगा और मैं हाथी को बुलाने का इरादा कर रहा था कि मैंने अपने पीछे छोटी सड़क पर कुछ आहट सुनी। मचान खुला हुआ था, लिहाजा मुड़कर देखना मुनासिब न था। मैं खामोश बैठा रहा। थोड़ी देर तक फिर बिलकुल खामोशी रही और मैंने फिर सीटी देने का इरादा किया। अब मैंने अपने पेड़ की जड़ के पास हल्की गुर्राहट सुनी। फिर कोई काली चीज लाश पर पहुँची और पत्तीदार डालें खड़-बड़ करने लगीं; जिनको मचान पर बैठते वक्त हम लाश से हटाना भूल गये थे।

पीछे से फिर गुरगुराहट की आवाज आयी और वह वापस लौट गया। थोड़ी देर में दोनों लाश पर आये। मैंने कोशिश की कि देखूँ कितने-कितने बड़े हैं। मैं समझा कि जोड़ा है। मैंने काफी देर तक बिजली खोली, मगर नर को न पहचान सका और दोनों भाग गये। बँगला वहाँ से करीब २०० गज पर बिलकुल मेरे सामने था। इसलिए कोठी और लालटेनें दिखायी दे रही थीं और लोगों की आवाजें सुनायी दे रही थीं।

मैंने फिर महावत को बुलाने का इरादा किया कि दोनों शेरों ने फिर आगे-पीछे आना शुरू किया और लाश के पास खड़े हो गये। मैंने बायें हाथ से टार्च दबायी और दाहने से आगेवाले शेर पर फायर किया। जैसे ही वह गिरा, मैंने फौरन ही दूसरे पर भी फायर किया और वह भी गिर गया। एक मर्तबा वे बिजली देखकर भी फिर आ गये और मरना ही चाहते थे। मैंने टार्च की रोशनी काफी डाली

और खूब देखा, मगर दोनों बराबर ही के मालूम दिये। महावत हाथी लाया और बँगले से आदमी भी आ गये। मैंने नीचे उतर कर देखा तो वे माँ और बेटे थे। मैं यह देखकर बहुत ही रंजीदा हुआ। उनकी नाप ८ फीट ११ इंच और ८ फीट ७ इंच थी। मेरी स्त्री ने इन बेगुनाहों का कत्ल देखकर बहुत मलामत की। उनकी तस्वीरें सामने वाले पृष्ठ पर दी हुई हैं।

८८. मेरा इक्यावनवाँ गुलदार

खारा से हम लालढाँग गये और वहाँ दो-चार दिन का कयाम था। वहाँ पर जंगलात का तरकारी और फलों का बहुत बड़ा बाग था। मैं शाम का वक्त रोज उस बाग के दुरुस्त कराने में सर्फा करता था। कैम्पवालों ने गोश्त की ख्वाहिश की। खारा में उनको कुछ नहीं मिला था। बच्चे भी घूमने जाना चाहते थे। लिहाजा एक शाम को हम सब खासन के उस पार करीब आधा मील हाथी पर गये होंगे कि चीतल बोलने लगे। हम उनकी तरफ गये और एक गुलदार देखा। मगर मेरी स्त्री ने कहा कि इसको किसलिए मारते हो। यहाँ से उठाकर ले जाओगे; खाल निकलवाओगे और फिर उसके ऊपर रुपया खर्च करके बनने भेजोगे और तुम्हारे पास उनकी काफी खालें हैं। लिहाजा मैंने उसको घूमने दिया और वह बहुत निडर हो गया। मैंने एक चीतल कैम्प के वास्ते मारा।

बच्चों ने कहा कि हमको जंगली हाथियों का मरघट दिखलाओ। खासन नदी के एक बड़े कुंड के किनारे ऊँचे पहाड़ के नीचे ४ बरस में ३ हाथी एक ही जगह पर आकर मरते रहे थे और लालढाँग गाँववालों ने उस जगह पर त्योहारों पर चावल और फूल चढ़ाना शुरू किये। उसको देखकर जब हम वापस आ रहे थे तो एक गुलदार और शायद वही खासन नदी के किनारे ऊँचे टूटे हुए पहाड़ पर फिर बोला और पहाड़ी बकरियों ने, जिनको घुरल कहते हैं, खतरे की

Plate No. XIV.



Two tigers—mother and son.

आवाजें देना शुरू की। यह जगह बँगले से एक फरलाँग पर थी। हम हाथी ले गये और ३-४ घुरल पहाड़ की चोटी पर देखे। उनसे १० फीट नीचे पत्थरों की आड़ में एक गुलदार खड़ा हुआ दिखलायी दिया। मैंने बच्चों से पूछा कि किसको मारूँ। किसी ने कहा कि जंगली बकरी नहीं देखी है उसको मारो और किसी ने कहा कि गुलदार को मारो; जो न मालूम कितने जानवरों को मारेगा। मेरी स्त्री ने कहा कि चीतल कैम्प के वास्ते है, किसी को न मारो। मगर सब की राय हुई कि घुरल को मारो। फासला १०० गज से ज्यादा था और छोटे जानवर का निशाना हाथी की पीठ पर से ठीक लेना मुश्किल था। मैं हाथी से उतरा। उस वक्त तक घुरल इधर-उधर होगये सिर्फ एक का सर दिखलायी दे रहा था। मगर गुलदार साफ दिखलायी दे रहा था; लिहाजा मैंने उसी का निशाना लेकर फैर किया और गुलदार गिरा। वह मय पत्थरों के लुढ़कता हुआ, शोर मचाता हुआ पत्थरों की आड़ में नीचे गिरा। मैंने थोड़ी दूर जाकर सर ऊँचा किया और जैसे ही उसने मुझे देखा फौरन शोर मचाता हुआ हमला किया। मैं भागकर हाथी पर चढ़ गया। अब हम हाथी को उसकी तरफ ले गये। जैसे ही उसने हमको देखा कि वह फिर शोर मचाता हुआ चन्द कदम दौड़ा और घास की बोझी की तरफ पूरब मुड़ गया, मगर थोड़ी दूर जाकर गिर गया और शोर मचाता, उठता और गिरता रहा।

इतने में उसका शोर सुनकर निहायत अच्छा नर गुलदार उस घास की बोझी से निकलकर जख्मी गुलदार के पास आकर नदी के खुले रकबे में खड़ा हो गया। उसने चारों तरफ और हमारी तरफ देखा और फिर जख्मी गुलदार को सूँघा, खून चाटा और उसकी तरफ देखता हुआ घास की तरफ बढ़ा। महावत ने कहा कि यह बहुत अच्छा नर है, इसको मार लो। मगर दो बेगुनाह कत्ल करके मैं पछता रहा था। लिहाजा जख्मी को खत्म करके उसको वहीं छोड़ा और नर, जोकि घास में छिप गया था, उसको खूब पास से कई बार देखा। वह शायद समझ गया कि मुझको नुकसान नहीं पहुँचावेंगे। गो अपने

साथी को जख्मी और फिर मारते हुए उसी वक्त देख चुका था। जब हम उसको दबाते हुए घास के किनारे ले गये, तब वह पहाड़ पर पूँछ उठाकर चढ़ गया। वह ६ फीट ८ इंच की मादीन थी। चीतल और गुलदार का हाथी पर से धुँधला फोटो सामनेवाले पृष्ठ पर दिया गया है।

---

८६. वादे के मुताबिक़ एक दोस्त को दो दिन में शेर दिलवाया

मिस्टर मायादास डिप्टी डायरेक्टर एग्रीकल्चर और मैं सन् १९३४ में झाँसी में थे। मगर काम की ज्यादती की वजह से हम दोनों को एक साथ दौरे में जाने और शिकार खेलने का मौक़ा नहीं मिला। एक साल के बाद उनकी बदली लखनऊ को बतौर डायरेक्टर एग्रीकल्चर यू० पी० के हो गयी। सन् १९३९ ई० में इत्तफाक़ से लखनऊ में मेरी उनसे मुलाकात हुई और उन्होंने शिकायत की कि हमको शेर नहीं दिलवाया। मैंने कहा कि आप कोटद्वारा कभी आइये, मैं कोशिश करूँगा। एक रोज़ जब इत्तफाक़ से मैं कोटद्वारा अपने जाड़ों के हेड कार्टर पर था तो मिस्टर मायादास का तार आया कि मैं कल दौरे पर आ रहा हूँ। मैं दूसरे दिन सनेह, जोकि ६ मील था, जानेवाला था। वे सुबह की गाड़ी से क़रीब ९ बजे पहुँचे। वे अपने फार्म की परीक्षा करने चले गये और मैं सनेह चला गया। शाम को वे भी सनेह पहुँचे।

मैंने तीन पड्डे तीन जगह जहाँ पर रात को शेर के निकलने के मौक़े थे, बँधने को भेज दिये और चाय पीकर हम भी हाथी पर टहलने को काशीपुर रियासत की सरहद पर रवाना हुए। अँधेरा होने के बाद जब हम वापस आ रहे थे तो हमने देखा कि एक पड्डा ग़लत जगह बँधा हुआ था। हमने हाथी से उतरकर पड्डे को करीब एक फरलाँग सरहदी सड़क और एक सूखे नाले के मिलान पर बड़ी मुश्किल से

बाँधा; क्योंकि पड्डा तगड़ा और बेकाबू था। हम पड़ाव को यह उम्मीद करते हुए वापस आ गये कि तीन में से एक तो मारा ही जावेगा। मगर सरहद पर जिसको हमने हटाया था, उसके मारे जाने की तो बहुत ही कम उम्मीद थी। सुबह इत्तला आयी कि तीनों में से वही पड्डा जो हमने हटाकर बाँधा था, मारा गया है। हम मचान लेकर हाथी पर सुबह ही इस गरज़ से गये कि अगर मिल जावेगा तो हाथी से मार लेंगे, नहीं तो मचान बाँधकर चले आयेंगे और शाम को जाकर बग़ैर खटका किये हुए बैठ जावेंगे। जब हम मौके पर पहुँचे तो वहाँ न तो खून का निशान था और न घसीटने का ही। हम आस-पास सब जंगल ढूँढ़कर नाउम्मीद होकर वापस आ रहे थे तो जंगली मुर्गियों ने खतरे की आवाज़ें सूखे नाले के पच्छिम तरफ देना शुरू कीं। उस तरफ गये तो पड्डे की काफी खायी हुई लाश मिली। उसके करीब एक छायादार पेड़ के नीचे ताज़े शेर के लेटने के निशान भी बने हुए थे। हमने उसी पेड़ पर मचान बाँध दिया, जोकि लाश से करीब ३० गज पर होगा और वापस चले आये। मुझे शक था कि उस जगह पर शेर दिन में शाम को खाने आ जावेगा। खैर, शाम को चार बजे हम जाकर मचान पर बैठ गये। मैं एक कोने में बैठा और अपने दोस्त को पूरा मौक़ा दिया कि लाश के चारों तरफ देख सकें। मैं उस जमाने में रोज़े रख रहा था; लिहाज़ा कुछ खाने को और पानी की बोतल अपने पास रख ली थी। हम करीब दो घंटे के खमोशी से बैठे रहे और शेर की मौजूदगी के कोई आसार आसपास नजर नहीं आये। सूरज डूब चुका था और मैंने राइफल को पास रखकर अपने खाने का सामान आहिस्ता-आहिस्ता खोलकर खाना शुरू किया। उसी वक्त हमारे पच्छिम तरफ जंगली मुर्गियों ने आहिस्ता-आहिस्ता खतरे की आवाज देना शुरू की। यही वक्त मुर्गियों का रात के बसेरे के लिए पेड़ों पर बैठने का था और उस वक्त भी वे इसी क़िस्म की आवाज करती हैं। लिहाजा मैंने कोई खास तवज्जेह नहीं दी। मगर हमारे दोस्त ने लाश की तरफ बहुत गौर से देखना और अपनी ४७० बोर दोनाली

तोप को उठाना शुरू किया। मैंने झुककर लाश की तरफ देखा तो शेर झाड़ी से आधा निकला हुआ ढाल पर खड़ा चारों तरफ देख रहा था। वह वक्त बहुत ही होशियारी और खामोशी का था। लिहाजा मैंने अपना राइफल नहीं उठाया और उसी तरह से बैठा रह गया। शेर ने इतमीनान करने के बाद दो-चार क़दम लाश की तरफ बढ़ाया और हमारे दोस्त ने अपनी ४७० बोर तोप, जोकि अक्सर हाथी और गैंडे वगैरह बड़े जानवरों के मारने के लिए होती है, दागी; जिससे मेरे तो कान उड़ गये और शाम की सुनसान में तमाम जंगल मीलों तक गूँज गया। बेचारे शेर का दम आवाज के साथ ही निकल गया और वह वहीं गिर पड़ा। मगर उन्होंने बग़ैर साँस लिये दूसरी गोली भी ठोंककर राइफल को जल्दी से फिर भरना शुरू किया। मैंने कहा—बस, खाल खराब जायगी। हमने सीटी दी और महावत हाथी लाया। हम चले आये और सुबह शेर को मँगवाया। वह निहायत तन्दुरुस्त बहुत भारी नर शेर ९ फीट १० इंच का था; जिसका फोटो सामनेवाले पृष्ठ पर दिया हुआ है। इस तरह हमारे दोस्त सिर्फ दो दिन में वादे के मुताबिक शेर मारकर सुबह रुख़सत हो गये।

---

६०. मेरा पैदल अट्ठारहवाँ आदमखोर शेर

मैं नवम्बर सन् १९३९ में डिवीजन के पच्छिमी इलाके का हरद्वार की तरफ दौरा कर रहा था। रेंज अफ़सर कोटरी रेंज की रिपोर्ट आयी कि कोटरी वेली में मुकाम ढकयानी पड़ाव के पास ठेकेदार के एक आदमी को शेर ने जख्मी किया था; जोकि कोटद्वारा अस्पताल भेजा गया, जहाँ वह मर गया। करीब एक हफ्ते के बाद कोटरी वेली के चन्द ठेकेदार किराये की लारी पर आये। उन्होंने कहा कि एक हफ्ते से कम हुआ, शेर ने एक आदमी जख्मी किया था, जोकि मर गया और कल एक आदमी को मारकर खा गया; जिससे उनके कटान व चिरान के सब कुली भागकर कोलूचोड़ आ गये हैं। अगर वह शेर

Plate No. XV.



A tiger measuring 9′ 10″ shot by Mr. C. Mayadas.

जल्द न मारा जावेगा तो उनका लाखों का नुकसान हो जावेगा और वे सरकारी रुपया भी अदा न कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि वह आदमियों की आवाज सुनकर या उनको देखकर बगैर छेड़े हुए हमला करता है और कोटरी वेली का रास्ता भी बन्द हो गया है।

उस तरफ मुझे बहुत काम देखने थे। मैंने कहा कि मैं एकदम से अपना प्रोग्राम बदलकर और जिन कामों की तारीखें मुकर्रर कर चुका हूँ, उनको छोड़कर ६ पड़ाव नहीं जा सकता। मगर मैं कमांडिग अफसर लैंसडौन को लिखता हूँ कि वे अपनी फौज के नौउमर शिकार के शौकीन दो-एक अफसर भेज दें; जिनसे फीस नहीं ली जावेगी और ढकयानी के तीन मील चारों तरफ वे जिस तरह से चाहें, उस आदमखोर शेर को मार सकते हैं। ठेकेदार लोग बारबरदारी, पड्डु और कुलियों का इन्तजाम अपनी तरफ से करेंगे और यही डिप्टी कमिश्नर गढ़वाल को लिखे देता हूँ कि अपने जिले के शौकीन दो-चार शिकारी भेज दें। शेर मार दिया जावेगा और तुम्हारा काम बन जावेगा। लिहाजा मैंने उसी रोज ये खत लिखकर भेज दिये। एक हफ्ते के अन्दर चन्द फौजी अफसर और जिले के शिकारी पहुँच गये और कई हफ्ते कोशिश की, मगर नाकामयाब रहे और मायूस होकर चले गये।

आदमखोर शेर रोज-बरोज चालाक और दिलेर होता गया। रात को उसने कुलियों के पड़ाव पर आना शुरू किया। वह तीसरे आदमी को छप्पर में से निकाल ले गया और कोटरी वेली की सड़क पर दिन में घूमने लगा। एक दिन उसने ५ आदमियों के ऊपर हमला किया। आदमी पेड़ पर चढ़ गये और दो घंटे तक वह पेड़ को घेरे रहा। तब एक बड़ी पार्टी ने आकर उन आदमियों को रिहा किया।

दिसम्बर सन् १९३९ ई० में ठेकेदारों ने पाँच सौ रुपया इनाम मुकर्रर कर दिया और शिकारियों का कुल खर्चा बर्दाश्त करना शुरू किया; जिससे कई एक शिकारी आते-जाते रहे लेकिन कामयाब न हो सके। जनवरी सन् १९४० ई० में जब मैं वहाँ पहुँचा, तब तक शेर छः

आदमी मार चुका था। बदकिस्मती से मेरा एक हाथी वर्किङ्ग प्लान अफसर को दे दिया गया था। बड़े दिन की छुट्टियों में जब मैं मकान गया हुआ था, फीलवान ने दूसरे हाथी को रात को चरने को छोड़ दिया और वह नजदीक के गाँव के खेत में चला गया। गाँववालों ने उसे जंगली हाथी समझकर उसके कूले में गोली मार दी और उसे हरद्वार के वेटनरी अस्पताल में इलाज के लिए छोड़ना पड़ा। मैंने कोलूचोड़ बँगले में पहुँचकर कयाम किया और ६ मील ढकयानी पर एक पड्डा भेजा। आदमियों से कह दिया गया कि फारेस्ट गार्ड और ठेकेदारों की राय से जहाँ आदमखोर शेर ज्यादा निकलता हो, वहाँ पड्डा बाँधकर ढिमकी की चौकी में फारेस्ट गार्ड के साथ ठहरना, जोकि कोलूचोड़ से तीन मील पर थी, और मैं सुबह घोड़ी पर आऊँगा।

दूसरे दिन सुबह दिन निकलने पर बादल खूब घिरे हुए थे। काफी सर्दी थी। मैंने राइफल और फारेस्टर ने अपनी १२ बोर एकनाली बन्दूक ली। फारेस्ट गार्ड को मैंने अपनी दोनाली बन्दूक दी और सब रवाना हुए। ढिमकी चौकी से हमने अपने दोनों आदमी और वहाँ के फारेस्ट गार्ड को लिया। हम ढकयानी ठेकेदार के खाली पड़ाव में पहुँचे; जहाँ कम-से-कम ६०-७० छप्पर बने हुए थे, मगर इनके सब आदमी भागकर कोलूचोड़ चले गये थे। मैंने उस रकबे को सिवाय सड़क के और बिलकुल नहीं देखा था। कोटरी नदी को पार करके हम ठेकेदार के छप्परों में पहुँचे। बादल सुबह से घिरे हुए थे और अब बूँदें भी पड़ने लगीं। हमने घोड़ी और आदमी वहाँ छप्परों में छोड़े। फारेस्ट गार्ड ने कहा कि यहाँ से एक फरलाँग पर पूरब में उस धार पर दो छः फुटी सड़कों के मिलान पर पड्डा बाँधा है। पचास गज नीचे पूरब में पानी का नाला है। कल यहाँ पर ताजे पैरों के निशान थे और आदमखोर शेर इस नाले और इन सड़कों पर करीब-करीब रोज घूमता है। हम एक राइफल, दो बंदूकें और भाले लेकर चार-पाँच आदमी रवाना हुए। धार पर पहुँचकर देखा तो शेर पड्डा मारकर सड़क पर नीचे नाले के उस पार ले गया था और फिर नाले के पूरबी ऊँचे

किनार की जड़-जड़ दक्खिन तरफ ले गया था। उस वक्त आँधी-पानी और बिजली के साथ जोर से बरसने लगा। मैंने उस मौके को अच्छा समझा कि ऐसी हालत में पैरों की आहट जानवर को नहीं सुनायी देती है। मैं नाले के किनारे हो गया। फारेस्ट गार्ड को दोनाली बन्दूक देकर अपने दाहने ढाल पर और फारेस्टर को अपने पूरब लेकर हम आहिस्ता-आहिस्ता होशियारी से दक्खिन की तरफ चले। हम थोड़ी ही दूर गये होंगे कि फारेस्ट गार्ड चिल्लाया—शेर-शेर। मैं उसकी तरफ ढाल पर दौड़ा। शेर की झलकी लाश से पूरब तरफ नाले के किनारे, जोकि यहाँ पर कम ऊँचा था, लम्बी घास में पड्डा छोड़कर, जिसको वह खा रहा था, जाते देखा। मिस्ल और बेजख्मी शेरों के मैं उसके पीछे घास में दस कदम गया हूँगा कि शेर ने ढौंककर गुस्से से हमला किया। मैं राइफल बिलकुल तैयार किये हुए ठहर गया कि जब पास आ जावेगा और दिखलायी देगा तो फौरन फैर करूँगा। घास घनी थी; जिसमें गज-दो-गज पर भी कुछ नहीं दिखलायी देता था। जैसे ही मुझे उसकी झलक दिखलायी दी और मैंने राइफल उठाया तो वह फौरन मुड़ गया। मेरी हिम्मत उसका पीछा करने की जाती रही। मैं उसको घास में छोड़कर सब आदमियों को लेकर सामनेवाले करीब ३० फीट ऊँचे पच्छिमी किनारे पर जाकर एक पत्थर पर बैठ गया और सब आदमियों से कहा कि चार-चार, पाँच-पाँच फीट की पत्तीदार डालें लाकर मेरे चारों तरफ गाड़ दो और तुम सब लोग घोड़ी और आदमियों के पास छप्परों में जाकर शाम तक मेरा इन्तजार करो। अब पानी जोर का बरसने लगा। मैं बरसाती ओढ़कर बैठ गया और चाय से भरा हुआ थरमोफ्लास्क साथ रख लिया। जाड़ा नाकाबिल बर्दाश्त था। मैंने अपने ख्याल से बहुत जल्दी और बहुत बड़ी अक्लमन्दी की और सोचा कि शेर घास में लाश से ५० गज पर है। दिन भर में किसी-न-किसी वक्त लाश पर जरूर आवेगा और बहुत अच्छा मौका देगा।

हरीसिंह फारेस्टर, जोकि मेरा ट्रेनिंग स्कूल का शिक्षार्थी था, उसने

कहा कि मैं आपके साथ बैठूँगा। मगर मैंने कहा—कोई जरूरत नहीं है। शेर नीचे से लाश पर आवेगा और मेरा ३६६ बोर राइफल काफी है। वे सब चले गये। आँधी, बिजली और पानी बहुत जोर से आ गये। मैं सोचने लगा कि तकलीफ और जाड़ा तो जरूर है, मगर शेर की भी आज खैरियत नहीं है। मुझे यह नहीं मालूम था कि आदमखोर शेर मामूली शेरों से ज्यादा चालाक और तजुर्बेकार होता है और वह सामने से हमारी हरकतें देख रहा है। ९ से १२ बजे तक करीब दो इंच के बारिश हुई होगी। बरसाती सब भीग गयी। कोट, कमीज और बनयाइन के नीचे पानी जिस्म में पहुँच गया। जिस पत्थर पर मैं बैठा था, वह बीच में गहरा था। उसमें ६ इंच गहरा पानी भर गया। पूरी थरमास की चाय मैंने खत्म कर दी, मगर फिर भी जाड़ा नाकाबिल बर्दाश्त हो गया। पसलियों में दर्द होने लगा। नाले में पानी करीब २ फीट के और ज्यादा ऊँचा हो गया। लाश, जोकि पानी से १० फीट के करीब थी, अब पानी के जोर से हिलने लगी। करीब ११ बजे के एक पत्थर पहाड़ की धार से, जोकि मेरे पीछे करीब ३० गज फासले पर और १५-२० फीट ऊँची होगी, लुढ़क कर मेरे पीछे आया। उस वक्त पानी खूब बरस रहा था। मैंने समझा कि पत्थर या तो पानी से लुढ़का होगा या फिर किसी जानवर के चलने से लुढ़का होगा। मैंने उस तरफ देखने की भी परवा न की। मेरी निगाह और दिल घास और लाश की तरफ लगे हुए थे।

आखिरकार १२ बजे के बाद मैं और न बैठ सका। मुझे ख्याल हुआ कि जुकाम तो जरूर हो जावेगा और शायद निमोनियाँ भी न हो जावे; क्योंकि अब पसलियों के नीचे तेजी से दर्द होने लगा था। थरमोफ्लास्क को कन्धे में डालकर मैं अपने पत्तों के किले से बाहर निकला तो शेर के ताजे पैर के निशान मैंने नरम मिट्टी में अपनी पीठ से मुश्किल से २ फीट पर देखे। उसने मेरे पीछे दो चक्कर लगाये थे। खैरियत यह हुई कि बरसाती भीगकर पत्तों के रंग की हो गयी थी और मैंने उसे टोप के ऊपर से ओढ़ ली थी; जिससे वह मुझको पहचान

न सका। दूसरे, आँधी पच्छिम की तरफ से मेरी तरफ चल रही थी, जिससे उसको खुशबू न लगी। इतने नजदीक पैरों के निशान देखते ही मेरे बाल खड़े हो गये। डर के जाड़े की झुरझुरी लगने लगी और अब मुझे अन्दाज हुआ कि किस खतरे में मैंने अपने आपको डाला है। मैं चारों तरफ आँखें फाड़-फाड़कर देखने लगा। सब तरफ धुआँधार बारिश और कुहरे में शेर ही शेर दिखलायी देने लगे। यह ख्याल होते ही कि शेर आदमखोर है और उसी ढाल पर है, जिस पर मैं था और घनी झाड़ियों और घास में कहीं छिपा न हो, आवाज देने की हिम्मत न पड़ी; क्योंकि वह आदमी की आवाज सुनकर दौड़ता था। लिहाजा मैंने ख्याल किया कि बजाय सौ कदम उत्तर ६ फुटी सड़क पर जाने के सीधा पच्छिम तरफ पचास कदम धार पर जाकर पड़ाव में चला जाऊँ। उस रकबे में पिछली गर्मियों में आग लग चुकी थी और भीगी हुई राख पर रबड़ का जूता चढ़ाई में फिसलता था। मैं जब धार पर पहुँचा तो देखा कि उसके पच्छिम ढाल पर, जिस पर होकर गुजरना था, बड़ी-बड़ी घास और छोटे-छोटे कई नाले थे; जिसमें दो कदम पर भी कुछ नजर नहीं आता था। लिहाजा उसमें होकर जाने की हिम्मत न पड़ी और फिर मजबूरन ६ फुटी सड़क पर होकर न मालूम किस तरह से बारिश में पड़ाव पर पहुँचा।

मेरे आदमी मुझे देखकर ताज्जुब करने लगे। जाड़ा बहुत सख्त था। काफ़ी आग जलाकर मैंने कपड़े सुखाये। २ बजे के करीब बारिश बन्द हुई और बादल खुलने लगे। मैंने फॉरेस्टर से कहा कि जहाँ इतनी तकलीफ उठायी है, वहाँ फिर आने की तकलीफ के बजाय अभी तुम मेरे साथ चलो और आज शाम तक वहाँ और बैठें। अगर लाश पर शेर आ जावे तो उसको खत्म ही कर दें। जब हम दोनों वहाँ पहुँचे तो फारेस्टर ने शेर के पैरों के निशान, जहाँ मैं पहले बैठा था, वहाँ से दो फीट पर डालों के पीछे देखा। वह बहुत ताज्जुब करने लगा कि खैरियत हुई, जो उसने नहीं पहचाना। मैंने कहा—तुम पीछे मुँह करके बैठो और मैं लाश की तरफ बैठूँगा। हम दोनों अँधेरा होने तक पहाड़ी

इलाके में जनवरी के सख़्त जाड़े में दिन भर के भूखे बैठकर ६ मील बहुत रात को कोलूचोड़ बँगले पहुँचे। जुकाम व खाँसी हो गया। मैंने इरादा किया कि दूसरे मौके पर ढिमकी चौकी पर डेरे में ठहर कर, जोकि ढकयानी से ३ मील था, कोशिश करूँगा।

मेरे हाथी की गोली नहीं निकल सकी और वह अस्पताल ही में था। फरवरी सन् १९४० के आखीर में कन्सरवेटर साहब पूरब से कालागढ़ डिवीजन की तरफ से आये। कोटरी वेली में ढकयानी कैम्प के ३-४ मील चारों तरफ छोड़कर काम फिर शुरू हो गया था और शेर अभी तक आदमियों का नुकसान कभी-कभी कर रहा था। हम लोग ढकयानी से ३ मील पर नौड़ी बँगले में ठहरे हुए थे। मैं इतवार के दिन कंसरवेटर साहब के दोनों हाथी लेकर गया और जहाँ मेरा पड्डा मारा गया था, उस नाले को खूब देखा। मगर शेर का कोई निशान नहीं मिला। ३ हफ्ते के बाद कंसरवेटर साहब पच्छिमी सरहद से हरद्वार चले गये। मेरी तबीयत भी ठीक न थी, लिहाजा मैं कोटद्वारा हेड कार्टर पर चला आया। मेरी स्त्री मुझे देखने आयीं।

मैंने कोटद्वारा में अपना इलाज कराया और लखनऊ से डाक्टर बुलाकर हाथी के कूले से गोली निकलवायी। मैंने चन्द दिन के लिए राजा साहब सहानपुर से एक हाथी माँगा और आदमखोर शेर के लिए रवाना होकर सिर्फ रात भर सनेह ठहर कर कोलूचोड़ पहुँचा। दूसरे दिन मैंने अपना डेरा, ३ पड्डे और चन्द आदमी भेजे कि डेरा ढिमकी में लगाकर शाम को फारेस्ट गार्ड की राय से दो पड्डे ऐसी जगहों पर बाँध दें जहाँ आदमखोर शेर के ताजे निशान आज-कल के मिलते हों। दूसरे दिन मैं भी वहाँ पहुँचकर ३-४ दिन ठहरूँगा। दूसरे दिन सुबह जब सामान ऊँटों पर लादा जा रहा था तो ढिमकी से एक आदमी आया और इत्तला दी कि शेर ने एक पड्डा मार लिया है। मैं मय स्त्री के और बाबरची के हाथी पर रवाना हुआ। ऊँट सामान लेकर पीछे आते रहे। ढिमकी पहुँचकर मैंने फारेस्ट गार्ड से पूछा कि कितनी दूर पर पड्डा मारा गया है। उसने कहा कि यहाँ से

करीब १ फरलाँग के होगा। मैंने खानसामा को उतार दिया कि सामान वगैरह ठीक करे और मैं फारेस्ट गार्ड को लेकर रवाना हुआ। मैंने महावत से पूछा कि तुम्हारा हाथी शेर से डरता तो नहीं है; क्योंकि सब हाथी शेर के सामने खामोशी से नहीं जाते हैं। उसने जवाब दिया कि नहीं। जब हम उस जगह पर पहुँचे, जहाँ पड्डा मारा गया था तो हाथी ने अपनी सूँड़ को जमीन पर जोर-जोर से मारना शुरू किया; जोकि हमारे हाथी कभी नहीं करते थे। मैंने महावत से पूछा कि इसका क्या मतलब है। उसने कहा कि शेर की खुशबू पाकर बतला रहा है। शेर पड्डे को पहाड़ की तेज ढाल पर घसीट ले गया था। करीब १५-२० ही कदम जाने के बाद हाथी ने अड़ना और मुड़ना शुरू किया। मेरी स्त्री ने जोकि पहले ही से खिलाफ थीं पहाड़ का तेज ढाल और पच्छिम तरफ गहरा नाला देखकर वापसी के लिए जोर दिया। मैंने महावत से कहा कि हाथी वापस ले चलो और वह बेचैन हाथी को मुश्किल से मोड़कर फिर उसी जगह लाया, जहाँ पड्डा मारा गया था। मैंने स्त्री को वहीं हाथी पर छोड़ा और फारेस्ट गार्ड को लेकर हम लाश की घसिटन पर रवाना हुए। उस पहाड़ पर करीब १०० कदम चढ़ने के बाद चोटी आ गयी; जहाँ हल्के ढालवाली ऊँची-नीची जगह, घनी लम्बी घास और उसके चारों तरफ जंगल था। शेर बायीं तरफ पड्डे को कुछ दूर घास के रकबे में ले गया था और फिर एक गहरे और अँधेरे नाले में गिरा दिया था; जहाँ कुछ नहीं दिखलायी देता था। फारेस्ट गार्ड ने कहा कि पूरब से एक छोटा नाला आकर इस नाले में घास के रकबे के बाद मिलता है, हम उसमें होकर आवेंगे। मैंने कहा कि अगर शेर ने इस घनी घास में कहीं हमला किया, जहाँ हम एक कदम के आगे नहीं देख सकते हैं। उसने कहा कि मैं आगे चलूँगा और वह अपना भाला लेकर आगे बढ़ा। मैंने कहा कि बिलकुल मेरे पीछे रहो; क्योंकि मैं अपने शौक में किसी दूसरे की जान खतरे में कभी नहीं डालता था।

हम दोनों नालों के मिलान पर पहुँचे। यह नाला भी ६ फीट गहरा

था। हम बेदिली से डरते हुए उस नाले में कूदकर बड़े नाले में पहुँचे, जिसमें पड्डु को शेर ने गिराया था। नाले की रेत में पुराने और ताजे पैरों के बहुत-से निशान आने-जाने के बने हुए थे, लेकिन आदमखोर शेर का निशान कोई नहीं मालूम होता था; जिसके अगले बायें पैर की उँगली जमीन पर नहीं लगती थी। एक किस्म की चिड़ियाँ, जोकि गोश्त खाती हैं, नाले के मिलान के दोनों तरफ करीब ३-४ कदम पर बोल रही थीं। इससे ख्याल हुआ कि लाश नजदीक है। हम पहले बायीं तरफ गये, जिधर पड्डा गिराया था। वहाँ हमें पड्डे का सर, गर्दन और अगले पैर मिले। मैंने नाले के पूरबी ढाल पर एक पेड़ दो डालवाला देखा; जिसमें घोड़े की तरह से बैठ सकते थे। मैंने लाश के दूसरे हिस्से को ढूँढ़ने की कोशिश नहीं की और वापस चला आया। मैं शाम को दो आदमी कुर्सी की एक गद्दी और राइफल लेकर खामोशी से जाकर उस पेड़ के दो शाखों में गद्दी रखकर बैठ गया और आदमियों से कहा कि तुम घसिटन की लाइन पर पेड़ पर बैठो। मैं करीब १ घंटे के बैठा हूँगा। गर्मी के दिन थे। नींद आने लगी। उस वक्त पच्छिमवाले ढाल पर सूखी पत्तियों में बहुत खड़-बड़ सुनायी दी। मैंने देखा कि ४ शेर लापरवाई से उतर रहे थे। गुलदार से बड़े तीन पट्ठे थे और उनकी माँ थी। जब वे सामनेवाले ढाल पर मुझसे कुछ ऊँचाई पर थे, तब माँ ने गुरगुराना शुरू किया और फिर बैठ गयी। बच्चे जहाँ थे वहीं ठहर गये और चारों तरफ देखना शुरू किया। उन्होंने मुझे भी देख लिया था, मगर मैं दो डालों के बीच में बिलकुल खामोश बैठा था। वे शायद पहचान नहीं पाये, गो मैं उनसे मुश्किल से २५ या ३० फ़ीट के फ़ासले पर सामने दूसरे ढाल पर था। मैंने अपने को ढका नहीं था। एक पट्ठा और नीचे उतरा और मेरे बराबर ऊँचाई पर आकर गौर से मुझे देखा, मुँह बनाया, गुर्राया और भागा। उस पर और सब भी भाग गये।

मैं खामोश बैठा रहा कि शायद और तमाशा देखने को मिले। अभी अँधेरा होने में देर थी। करीब १५ मिनट के बाद दो पट्ठे

दक्खिन की तरफ से नाले में आये। दोनों आपस में लड़ते रहे। एक लाश सूँघ रहा था। दूसरे ने पंजे से उसको उछाल दिया और फिर मुझे देखा और दोनों भाग गये। मैं नाउम्मीद होकर वापस चला आया।

दो दिन रोज दो पड्डे बाँधे गये, मगर कोई नहीं मारा गया और न आदमखोर शेर के पैर के निशान ही कहीं दिखलायी दिये। रोज सुबह मैं काफी हथियार और आदमी लेकर पड्डे देखने खुद जाता था; क्योंकि कोई आदमी पड्डा देखने जाने को राजी नहीं होते थे। मुझे कोटरी की सड़क में ढकयानी से आगे कुछ खराब हिस्सा बदलना था, लिहाजा तीसरे दिन सुबह मैं फारेस्टर, फारेस्ट गार्ड, ४ कुली और औजार लेकर मय एक राइफल के रवाना हुआ। जब हम ढकयानी के उजड़े हुए पहाड़ के पास से गुजरे तो मैंने दो कुलियों से कहा कि पड्डे को जाकर देखो। अगर न मारा हो तो ढिमकी पड़ाव पर ले जाना और अगर मारा गया हो तो वापसी में मुझे इतला देना। तुम आगे देखने न जाना, लेकिन फारेस्टर ने कहा कि थोड़ी दूर ही तो है। हम खुद ही क्यों न देख लें, और मैंने घोड़ी मोड़ दी।

पड्डे की जगह पहुँचकर हमने देखा कि पड्डे को मारकर शेर उसी रास्ते पर घसीट ले गया था जिस पर वह पहले जनवरी में ले गया था। मैंने घोड़ी वहीं छोड़ दी और फारेस्टर व फारेस्ट गार्ड को और सिर्फ अपना ही ३६६ बोर राइफल लेकर नाले के पच्छिमी किनारे-किनारे रवाना हुए। इत्तफाक से हम उस दिन न काफी आदमी और न हथियार ही लाये थे। हम चारों तरफ बहुत गौर से चोर की तरह देखते हुए उस जगह से, जहाँ मैं जाड़ों की धुआँधार बारिश में एक फीट ऊँचे पत्थर पर चारों तरफ डालें खड़ी करके अकेला बैठा था और शेर मेरे पीछे डालों के पास से घूम कर चला गया था, उससे थोड़ी ही दूर आगे गये थे कि शेर पूरबी किनारे पर गुर्राने लगा और लाश भी नाले के किनारे के नीचे करीब ५० कदम पर दिखलायी दी। मगर शेर किनारे के ऊपर झाड़ियों में था, इसलिए नहीं दिखलायी

दिया। नाला उस जगह पर पूरब तरफ घूमा था, लिहाजा हम करीब ५० कदम के और आगे बढ़े। शेर की गुर्राहट और ज्यादा तेज होती गयी; जिससे हमको उसकी जगह का पूरा अन्दाज हो गया कि कहाँ पर है। अब हमारी तरफ का नाले का किनारा, जिस पर हम चल रहे थे, नीचा होता गया और दूसरा हथियार भी न था। मेरी हिम्मत ३-४ फीट की ऊँचाई से और ज्यादा नीचे उतरने की नहीं पड़ी और वहीं बैठ गया। फारेस्टर व फारेस्ट गार्ड से भी कहा कि बैठ जाओ और अगर शेर दिखलायी दे तो इशारे से बतलाना। हम थोड़ी ही देर बैठे होंगे कि शेर की झलक झाड़ियों में गुर्राते हुए हमारी तरफ आते हुए दिखलायी देने लगी। वह बाँसों की झाड़ियों को बचाता हुआ सर झुकाये हुए बराबर गुर्राता हुआ चला आ रहा था। मैं उसके ऊपर निशाना जमाये हुए इस इन्तज़ार में था कि कहीं पर काफ़ी दिखलायी दे तो फैर करूँ।

जब वह क़रीब ५० कदम के होगा तो फारेस्टर ने कहा कि अब वह हमला करने ही वाला है, दाग़ो। मुझे डर था कि अगर गोली बाँसों की डाल में छू गयी तो निशाना ठीक नहीं लगेगा और चूँकि शेर हमारी तरफ मुँह किये हुए आ रहा था, लिहाज़ा निशाना बहुत छोटा मिलता था। मगर डर और खौफ का लुत्फ़ खूब आ रहा था। जैसे ही वह थोड़ा मुड़ कर एक झाड़ी को बचा कर आगे निकला, मैंने फैर किया, वह गिरा और फौरन ही उठ कर पूँछ उठाये हुए ढौंकता हुआ तेजी से हमारी तरफ दौड़ा। मैंने दूसरी फैर की। शेर फिर गिरा, मगर उठता-गिरता, पिछला धड़ घसीटता हुआ अगले हाथों के सहारे आ रहा था। इतने में तीसरी और चौथी गोलियाँ भी उस पर पड़ीं और वह हमसे आधी दूर पर गिर कर तड़पने लगा। अब मेरी नाल में सिर्फ एक गोली रह गयी थी; जिसको मैं बहुत अहतियात से दागना चाहता था। शेर झाड़ियों में था। उसकी हालत का सही अन्दाज़ नहीं मालूम होता था। मगर वह खामोश था, जिससे पूरी उम्मीद थी कि मर गया है। हम सब बहुत खुश थे और मैं नाले में कूदा।

मगर फारेष्टर ने मजबूर किया कि नीचे के बजाय ऊपर उत्तर की तरफ से आवेंगे। लिहाज़ा हम ऊपर से घूम कर शेर के पास गये, पत्थर फेंके, शोर मचाया, मगर वह मर चुका था। हमने नज़दीक जाकर देखा तो वह जवान तन्दुरुस्त मादीन थी। मगर तमाम बदन में चेचक की तरह दाने थे। अगले बायें पैर के बीच की उँगली कटी हुई थी और वह जगह फूली हुई लाल थी। उसके जिस्म पर ३ ज़ख्मों के निशान थे। दो बायें कन्धे पर और एक रान पर। दबाने से मालूम होता था कि उसके अन्दर गोलियाँ हैं।

आदमखोर शेर के मारे जाने की इत्तला चन्द ही घन्टों में कोटरी वेली के ठेकेदारों में फैल गयी और जब दोपहर को खाल निकाली जा रही थी, बहुत आदमी जमा हो गये। एक हाथ की बनायी हुई गोली और दो गर्राब उन ज़ख्मों के नीचे निकले। मालूम होता था कि किसी गाँववाले ने भरनी बन्दूक से उस पर फैर किया था और वह तभी से बदला लेने की गरज़ से आदमी की दुश्मन हो गयी थी। उसका आखिरी शिकार एक नौउमर पठान रियासत रामपुर का था; जोकि गाय व भैंसों पर पहाड़ से लकड़ी ढोकर लाते थे। उसका साला शेर को देखने आया और रोते हुए उसने बयान किया कि एक दिन वह और आधा दर्जन आदमी काम से वापस आकर शाम को अपने जानवरों के लिए घास काटने कोटरी वेली सड़क पर आधा मील जाकर पूरबी पहाड़ के ढाल पर घास काटने लगे। उसके साले ने कहा कि थोड़ा और ऊपर चलकर घास ज्यादा है। वहाँ से जल्दी एक-एक बोझ ले आवें। आदमखोर शेर के डर की वजह से कोई राज़ी न हुआ, मगर उसने कहा कि मैं जाऊँगा। जब तक मौत का वक्त नहीं आता कोई मार नहीं सकता है। जब नीचे के आदमियों ने घास काट ली, तब उसको आवाज़ दी, मगर जवाब न आने पर उनको शक हुआ और दो-चार आदमी शोर मचाते हुए गये तो उसका जूता और खून में भरे हुए कुछ कपड़े देखकर भाग आये। सुबह एक पार्टी गयी। तब लोग वहाँ से आधी खायी हुई लाश ले आये।

६१. मेरा उन्नीसवाँ शेर एक लड़की की शिरकत में

सैयद जाफर अली बैरिस्टर मरहूम सहारनपुर के अक्सर बड़े दिन और गर्मियों की छुट्टियों में पास लेकर शिकार खेलने अपने लड़के-लड़कियों के साथ तफरीह के लिए आया करते थे। पहली मर्त्तबा उनसे मेरी मुलाकात चकराता में सन् १९३२ ई० में हुई और फिर सन् १९३५ ई० में झाँसी में दौरे में हुई। सन् १९४० ई० में उन्होंने कोटरी ब्लाक का पास लिया और मुझे लिखा कि अगर मुमकिन हो सके तो दो-चार दिन के लिए साथ ही कैम्प करें और डाक्टर मेजर मिश्रा ने भी यह ही लिखा। मैंने दोनों को इत्तला दी कि ईस्टर की छुट्टियों में सनेह आ जाइये। मैं अपनी स्त्री और लड़की के साथ सनेह में ठहरा हुआ था। वहीं ये दोनों साहब भी आ गये। मिस्टर जाफर अली, उनके लड़के और साहबज़ादी मिस क़मरजहाँ एम० ए० सुपरिन्टेंडेन्ट माउन्टेसरी स्कूल अलीगढ़ यूनिवर्सिटी पहले पहुँचे। शाम को हम पैदल कोटरी वेली सड़क पर घूमने चले गये। कोटरी नदी में पानी कम हो गया था, लिहाज़ा सड़क के किनारे पत्थरों पर से नदी को कई जगह पार किया। १ मील पर कुछ मैदानी इलाका आ गया; जहाँ पर एक और नाला आकर कोटरी नदी में मिला था। जंगल में उस ज़माने में सदहा किस्म के फूल फूल रहे थे और अमलतास पीले फूलों से लदे हुए थे। हल्की खुशबूदार ठंडी हवा आ रही थी। हम पत्थरों पर बैठ गये हमने देखा कि नाले के किनारे पेड़ों पर चन्द गिद्ध बैठे हुए थे। मैंने कहा कि आप यहाँ बैठिए, मैं ज़रा देख आऊँ कि वहाँ गिद्धों की मौजूदगी की क्या वजह है। उन सबने कहा कि हम भी चलेंगे। लिहाज़ा हम सब गये तो नाले की तरफ घसीटन का निशान और शेर के पैरों के निशान देखे। नाले में पानी बहुत कम था। पहाड़ी इलाका था और छोटे-बड़े पत्थर और लकड़ियाँ नाले में इस तरह पड़े हुए थे कि चलना मुश्किल था। मैंने फिर कहा कि

आप यहाँ ठहर जायँ, मैं देख आऊँ कि क्या और कहाँ है। मगर इन सबने कहा कि हम भी शेर के रहने की जगह देखेंगे। मैंने कहा—अगर आ सकते हैं तो आइये। मिस कमरजहाँ अधेड़ उमर की खातून ने बहुत शौक और हिम्मत दिखलायी। शेर का लाश पर मौजूदगी का पता चिड़ियों के खतरे की आवाज़ से मालूम हुआ और फिर काँकड़ ने भी बतलाया। करीब १०० क़दम जाने के बाद एक साँभर का पट्ठा आधा खाया हुआ मिला था। मैंने कहा कि मौका अच्छा है, अगर हिम्मत हो तो २० क़दम पर पहाड़ की ढाल पर बैठने की जगह है इस पर बैठ जावें। शायद शेर अँधेरे तक आ जावे। सब राजी हो गये और हम तीनों अँधेरे तक बैठे। जब शेर की आमद पत्थरों के खड़बड़ से नाले के ऊपर से आती हुई मालूम हुई तो मैंने सोचा कि अगर शेर ज़ख्मी हो गया और जगह पर न गिरा तो जरूर नीचे भागेगा। फिर उसी रास्ते से हमारा जाना बहुत ही खतरनाक हो जावेगा। लिहाजा मैं जोर से खाँस कर खड़ा हो गया। शेर जो कि हमसे क़रीब ३० क़दम पर एक हल्के घूम पर था, आवाज देकर भागा। सबने पूछा कि यह क्या किया? मैंने कहा कि रोशनी कम है, निशाना अगर ठीक न लगता तो वह नीचे भागता और हमको रात भर यहीं बैठना पड़ जाता। इसलिए भगा देना ही ठीक था। हम पत्थरों और लकड़ियों में होते हुए नाले से सड़क पर पहुँचे और बँगले में बिलकुल अँधेरा होने के बाद पहुँचे। मिस कमरजहाँ ने गैरमामूली दिलचस्पी व हिम्मत शेर के शिकार में दिखलायी। मैं अपने आदमियों से दो पड्डे बाँधने को कह गया था। एक घुटनातोड़ नाले में, जहाँ मैंने एक साल पहले मादीन और पट्ठा मारा था और बड़ा नर बच गया था और दूसरा सियासौत में, जहाँ मैंने अपने ऊँट के बच्चे के कातिल को मारा था। दूसरे दिन सुबह मैं रेंज अफसर के साथ घोड़ों पर कालागढ़ डिवीजन की सरहद पर एक ठेकेदार के माल का तखमीना करने और निकासी बन्द करने जा रहा था; जिसके ऊपर सरकारी किस्त का रुपया बाकी था। रास्ते में फारेस्ट गार्ड मिला और उसने कहा कि

पड्डा मारा गया है। मैंने पूछा कि कहाँ? उसने जवाब दिया कि सरहदी सड़क पर जिस पर कि हम जा रहे थे और घुटनातोड़ नाले के मिलान पर। मैंने कहा कि मैंने तो पड्डा घुटनातोड़ नाले और पहाड़ के मिलान पर बाँधने के लिए भेजा था, जो कि यहाँ से १ मील उत्तर में है। यहाँ सरहदी लाइन पर शेर दिन में नहीं आवेगा। यह पड्डा और वक्त खराब करना है। उसने कहा कि पड्डा देर में आया और आदमी पड्डे को पहाड़ की जड़ पर ले जाते डरे। हम उस जगह पहुँचे जहाँ पड्डा मारा गया था और लाश की घसीटन पर क़रीब सौ क़दम के गये, तो देखा कि शेर लाश को एक छोटे पहाड़ की जड़ में सूखे नाले की घनी झाड़ियों में छोड़ गया था और पिछली रानों को काफी खा गया था। मैंने चारों तरफ देखा तो एक कुसुम का मोटा पेड़ पूरब व दक्खिन की तरफ करीब ३०-३५ गज़ पर नाले के दक्खिनी किनारे पर मचान के लायक था। मैंने लाश को कुसुम के पेड़ के सामने नाले में खिचवा लिया और फारेस्ट गार्ड से कहा कि अपनी चारपाई चौकी से जो कि नज़दीक थी, लाकर मेरे अरदली की मदद से दो शाखों में बँधवा दो जोकि नाले के दक्खिनी ऊँचे किनारे से ६ फीट और नाले से १० फीट होगा। वापसी में आकर मैंने देखा और एक सीढ़ी भी चढ़ने के लिए बँधवा दी। मैं १२ बजे के करीब दोपहर को सनेह वापस आया।

डाक्टर मिश्रा भी उस वक्त तक आ गये थे। खाना खाते वक्त मैंने कहा कि एक पड्डा मारा गया है और आप दो साहब हैं। लिहाजा लाट्री डाल लीजिए कि कौन बैठे। डाक्टर साहब ने कहा कि मैं हाथी पर घूमने जाऊँगा। बैरिस्टर साहब ने शेर नहीं मारा है, लिहाज़ा वे ही बैठें। मिस्टर जाफर अली ने कहा कि मेरी लड़की को शेर मारने का बहुत शौक है। यह मौक़ा मैं इनको देना चाहता हूँ। मैंने कहा कि अच्छा आज औरतों ही को यह तमाशा दिखलाया जावे। जगह भी नज़दीक थी और आसानी से पहुँच सकते थे। मैंने अपनी लड़की से जिसने उसी साल मिस क़मरजहाँ की निगरानी में मैट्रिक पास किया

था, कहा कि आज तुम भी चलना। मैंने मिस क़मरजहाँ से पूछा कि क्या आपने अभी तक कोई जानवर का शिकार किया है; उन्होंने कहा कि मैंने हाल ही में २० बोर बन्दूक का लाइसेंन्स लिया है और एक हरियल मारा है। मैंने कहा कि अपनी बन्दूक और ५ गोली के कारतूस लाइये और सामने पेड़ पर निशाना लगाइये। मगर इनके पास गोली के कारतूस नहीं थे। उनके पिता बैरिस्टर साहब ने अपनी १२ बोर बन्दूक और गोली के कारतूस दिये। मिस साहबा ने २५ क़दम से ३ कारतूस सेमल के पेड़ पर एक कागज़ का टुकड़ा चपका कर दागे; जोकि ६ इंच लम्बे-चौड़े कागज़ पर लग गये। मैंने कहा—निशाना ठीक है और अगर ज़रूरत हुई तो मैं दुहरा दूँगा। मैंने ज़रूरी हिदायत देकर कहा कि शाम को चार बजे चलेंगे।

दफ्तर का काम खत्म करके और चाय पीकर हम तीनों और अरदली मोटर में रवाना हुए। डाक्टर मिश्रा एक हाथी पर घूमने गये। दूसरे हाथी पर मैंने बैरिस्टर साहब को और उनके साहेबज़ादे को रवाना किया कि हमारे मोटर से एक फरलाँग के अन्दर दक्खिन तरफ रियासत काशीपुर के जंगल में घूमते रहें। अगर शेर ज़ख्मी हो गया तो हाथी से ढूँढेंगे। हमने मोटर को मचान से करीब ८० गज़ पर छोड़ा और खामोशी से जाकर मचान पर बैठ गये। मचान को खूब पत्तीदार डालों से ढक लिया और लाश को जोकि पत्तों से ढकी हुई थी खुलवाकर अरदली से कहा कि जाकर मोटर पर बैठो। मैंने सबसे ज़्यादा अच्छी जगह मिस क़मरजहाँ को पच्छिम तरफ दी; जिस तरफ से शेर के आने की उम्मीद थी। फिर लड़की को बिठाया। बाद को मैं पूरब तरफ पेड़ की मोटी डाल का सहारा लगा कर बैठा। मैंने दोनों लड़कियों से कहा कि खूब सँभल कर बैठ जाओ। फिर मत हिलना। शेर गालिबन सामने वाली धार पर पहले आवेगा। वहाँ से चारो तरफ देखकर इतमीनान करके सीधा जहाँ लाश छोड़ गया था, वहाँ जावेगा और फिर बहुत होशियारी से घसिटन पर आवेगा। उस वक्त न तुम मेरी तरफ देखना और न इशारा करना। जब वह लाश

के पास आ जावे और पूरा दिखलाई देने लगे, तब उसकी बग़ल में इतमीनान का निशाना लेकर गोली मारना।

कुछ देर के बाद सैकड़ों की तादाद में लाल चींटे उस डाल से उतरने लगे, जिस का सहारा लगाये मैं बैठा था। मैंने पेड़ का सहारा छोड़ दिया, ताकि वे जहाँ जा रहे हों वहाँ चले जावें। मुझे नहीं मालूम था कि उनकी पलटन हमारे ही ऊपर हमला करने को आ रही है। चन्द मिनट में वे दुमें उठाये हुए मेरे ऊपर फैल गये और जहाँ खुला हुआ जिस्म पाया, काटना शुरू कर दिया। मेरा बैठना मुश्किल हो गया। यह सब मैंने एक घंटा बर्दाश्त किया, फिर मजबूर होकर लड़कियों से कहा कि मेरा खामोश बैठना मुश्किल है और शेर के आने की भी कोई उम्मीद इस जगह दिन में नज़र नहीं आती है, लिहाज़ा वक्त ज़ाये करना बेकार है। मिस क़मरजहाँ ने कहा कि १५ मिनट और ठहर जाइये। उसी वक्त पहाड़ की जड़ पर घुटनातोड़ नाले की तरफ शेर बोला। चन्द मिनट के बाद उसने दूसरी आवाज़ और नज़दीक और तीसरी आवाज़ और नज़दीक से दी।

मैंने कहा कि शेर आ रहा है और दो फरलाँग से कम फासले पर है। लिहाज़ा तुम हाथ-पैर फैला कर जल्दी से खामोशी से इन्तज़ार करो। मैंने जिस्म पर से लाल चींटे हटाये और जिस्म खुजलाकर सँभल कर बैठ गया। शेर ने चौथी आवाज़ करीब दो सौ गज़ पर उत्तर की तरफ मोटर सड़क के नज़दीक दी। हम उसी ओर पहाड़ी की तरफ देख रहे थे, जोकि हमसे करीब ५० फीट ऊँची और करीब ६० गज़ के उत्तर तरफ थी। शेर उस पहाड़ी पर खड़ा होकर लापरवाई से थोड़ी देर देखने के बाद हमारे पच्छिम तरफ जहाँ उसने लाश को रक्खा था, आहिस्ता-आहिस्ता उतरने लगा और नाले में हमसे क़रीब ३० क़दम पहुँच कर लाश को न पाकर एकदम से होशियार हो गया। वह चारों तरफ बड़े ग़ौर से कुछ देर तक देखता रहा और फिर आहिस्ता-आहिस्ता सूँघते हुए घसीटन पर आना शुरू किया। जब उसने पड्डे को देखा तो फिर थोड़ी देर ठहर कर चारों तरफ देखा

और आहट लेने के बाद पूरा इतमीनान करके कि कोई धोखा नहीं है, लाश के क़रीब आकर खड़ा हो गया। मैं अपना निशाना उसके कंधे पर जमा कर इन्तज़ार कर रहा था कि मिस क़मरजहाँ का फ़ैर पहले हो तो मैं भी दाग़ूँ। उन्होंने बहुत देर तक निशाना बाँधे रहने के बाद फ़ैर किया और ग़ैरमामूली तौर से बहुत ज़्यादा ज़ोर की आवाज़ हुई। फ़ौरन ही मैंने भी फ़ैर किया और शेर एक आवाज़ देकर वहीं गिर गया। मैंने अपना खाली कारतूस निकाल कर फेंका तो उन्होंने पूछा कि क्या आपने भी फ़ैर किया है? मैंने कहा कि हाँ। मैंने पूछा कि एक कारतूस दाग़ा या दोनों, तो जवाब दिया कि एक। मैंने कहा कि नाल खोल कर देखो। जब देखा तो नाल की दोनों गोलियाँ दग़ी हुई थीं। मेरी लड़की ने पूछा कि क्या इसी तरह से शेर मारे जाते हैं? इसने तो कुछ भी शोर या ऊधम नहीं मचाया। मैं खाँसा, तालियाँ बजायीं, मगर शेर मर चुका था। मैंने उतर कर देखा तो मादीन थी। मिस क़मरजहाँ बहुत खुश थीं कि आखिरकार शेर मार ही लिया, जिसका अरसे से अरमान था। मैंने अरदली को आवाज़ दी और कहा कि हाथी पर शेर को लाद कर ले आओ। जब हम मोटर पर पहुँचे तो बैरिस्टर साहब भी हाथी लेकर आ गये। मैंने कहा कि आपकी साहबज़ादी ने शेर मार लिया। तीनों गोलियाँ दाहने कंधे पर पड़ीं। हम सनेह अँधेरा होने से पहले पहुँच गये। अँधेरे के बाद शेर पहुँचा और जब हम उसको नाप रहे थे, तब डाक्टर मिश्रा साहब भी वापस आ गये। वह ८ फीट २ इंच की तन्दुरुस्त मादीन थी। मेरी स्त्री शेर को देखने नहीं गयीं। उन्होंने मुझसे कहा कि इन बेगुनाह बेचारों की जान लेकर उनके जोड़े बे जोड़े करके तुमको क्या मिलता है? तुम खुश होते हो और मुझको रंज होता है। मैंने वादा किया कि मैं शिकार छोड़ दूँगा और क़रीब डेढ़ साल तक मैंने बन्दूक़ नहीं दाग़ी।

६२. मेरा छप्पनवाँ गुलदार बहुत खतरनाक हालत में, जिससे मैं बाल-बाल बचा

दिसम्बर सन् १९४० ई० में कंसरवेटर दौरे में आये। उन्होंने मुझसे कहा कि बहराइच डिवीज़न के तबादले के लिए तैयार रहो, क्योंकि मुझे लेंसडौन में क़रीब ५ बरस के हो गये थे। मैंने कहा कि अगर मुमकिन हो तो मेरा तबादला झाँसी कर दिया जावे। ताकि मैं वहीं से पेन्शन लूँ, जोकि मेरे घर आगरा से नज़दीक है। उन्होंने कहा कि मैं वादा नहीं करता, मगर कोशिश करूँगा। जनवरी सन् १९४१ में मेरा तबादला झाँसी को हो गया और मैं पहले ही दौरे में २२ जनवरी को मुकाम ताल भेट में पी० डब्लू० डी० के बँगले में ठहरा हुआ था; जोकि झाँसी से २७ मील पर था। रात में खूब बारिश हुई और सुबह काफ़ी ठंडा था। कोहरा पड़ रहा था। मैं चाय पीकर किंवाड़ बन्द किये अँगीठी के सामने बैठा खत लिख रहा था। उसी वक्त तालभीट रेंज का रेंज क्लर्क दौड़ता हुआ आया और कहा कि एक गुलदार ने गाँव के किनारे रेंज क्वार्टर के पास के घर में से एक बकरी पकड़ ली और पहाड़ की जड़ पर झाड़ियों में बैठा खा रहा था। नज़दीक के घरों का एक बुड्ढा टट्टी को गया और उसके पास से गुज़रा, गुलदार गुरगुराने लगा। अभी दिन नहीं निकला था और बुड्ढे को साफ दिखलायी भी नहीं देता था। उसने अपने दो जवान लड़कों को आवाज दी और कहा कि देखो कौन जानवर है? लड़कों ने देखा कि एक गुलदार बकरी को खा रहा था। उन्होंने शोर मचाया। गुलदार बकरी को उठा कर और आगे बढ़ गया। शोर सुन कर और आदमी भी आ गये। गुलदार बकरी को छोड़ कर पहाड़ की तेज़ ढाल पर क़रीब १०० गज़ ऊपर ताल भीट के पुराने किले की दीवार के नीचे पत्थरों में घुस गया और उसके पीछे गाँव के आदमी और लड़के

शोर मचाते हुए गये। लोग जमा होना शुरू हो गये और गुलदार चट्टान के एक सूराख में घुस गया। उसका पिछला हिस्सा दिखलाई दे रहा है, आदमी घेरे हुए खड़े हैं, उसको मार दीजिए। मैंने कहा कि मैंने शिकार करना छोड़ दिया है। किसी गाँव वाले से कहो कि मार दे। उसने कहा कि गाँव में एक भरनी बन्दूक है। वह वहाँ बन्दूक लिये मौजूद है। मगर डरता है। मैंने ३६६ बोर राइफल और ५ कारतूस लिये और जिस तरह सूट पहने बैठा था, रेंज क्लर्क के साथ अरदली को लेकर चला गया। वहाँ पहुँच कर मैंने देखा कि क़रीब २०० आदमी के पहाड़ के तेज ढाल पर, चट्टानों पर, पेड़ों पर और इसी क़दर औरतें और बच्चे पहाड़ के नीचे घरों के सामने जमा थे। एक आदमी पहाड़ पर क़िले की दीवार के नीचे पत्थरों में लम्बा बाँस लिये हुए ज़मीन पर मार रहा था, और शोर मचा रहा था। जहाँ पर गुलदार हमसे क़रीब १०० क़दम पर छिपा हुआ था। मैंने कहा कि मैं इस तेज़ ढाल पर बगैर कीलों वाले जूते के नहीं चढ़ सकता हूँ। रेंज क्लर्क ने कहा कि मेरा हाथ पकड़ लीजिए; जोकि मुझको पसन्द नहीं था, कि लोग क्या ख़्याल करेंगे कि गुलदार मारने दूसरे का सहारा लेकर जा रहे हैं। मैंने एक लकड़ी एक गाँव वाले के हाथ से लेकर पहाड़ पर चढ़ना शुरू किया। मैं जब उस जगह पहुँचा, जहाँ एक आदमी लम्बा बाँस लिये हुए अपने से क़रीब १० फीट ऊपर पत्थरों में मार रहा था और गुलदार गुर्रा रहा था; मगर पत्थरों की वजह से मुझे कुछ नहीं दिखलायी दिया। मैंने उस आदमी से कहा कि तुम सामने से हटो, तो मैं तुम्हारी जगह पर आकर देखूँ। जब वह हटा और मैं उसकी जगह पर गया तो मैंने देखा कि गुलदार की पिछली टाँगें और उसकी लटकती हुई पूँछ दिखलायी दे रही थी। ऐसा मालूम होता था कि दो बड़े पत्थरों के बीच में आगे रास्ता तंग था और गुलदार उससे ज़्यादा नहीं जा सकता था। गुलदार के नीचे एक झाड़ी थी और ऊपर घना जाला था। सूरज अभी नहीं निकला था। ठंडी हवा ज़ोर से चल रही थी और मेरी आँखों से ग़ैरमामूली तौर पर पानी निकल रहा था; जिस

से उस अँधेरे गढ़े में गुलदार की सही पोजीशन का अन्दाज़ नहीं हो रहा था और न उसका कोई नाज़ुक हिस्सा ही दिखलायी दे रहा था, जिस पर गोली मारता। लिहाज़ा मैं तैयार राइफल लिये हुए कुछ देर गौर करता रहा कि अगर गुलदार उस सूराख में सीधा नहीं है और मेरी गोली सिर्फ पिछले धड़ पर लगी तो पहले तो वह सीधा मेरे ऊपर आवेगा क्योंकि मुझसे फासला मुश्किल से १५ फीट होगा। दूसरे फिर चारों तरफ आदमी और पहाड़ की जड़ पर सैकड़ों औरतें और बच्चे हैं। यह ज़ख्मी गुलदार न मालूम क्या ऊधम करे। लिहाज़ा मैं इन्तज़ार कर रहा था कि कोई अच्छा हिस्सा उसके जिस्म का दिखलायी दे तो गोली मार कर बिल्कुल खत्म कर दूँ। मगर तमाशा देखने वाले बेचैन थे और शोर मचाना शुरू किया कि दाग़ो, दाग़ो। मैं सोच रहा था कि नहीं दाग़ता हूँ तो सब लोग यही कहेंगे कि मैं डर गया और औरतें हँसेंगी। लिहाज़ा मेरी अकड़ ने मजबूर किया कि फैर करूँ। इस उम्मीद पर कि अगर गुलदार उस सूराख में सीधा खड़ा होगा, तो मेरी गोली उसके तमाम जिस्म में गुज़र जावेगी, और वह ज़रूर मर जावेगा। लिहाज़ा मैंने इतमीनान का निशाना उसकी पूछ की जड़ पर लेकर फैर किया। राइफल की आवाज पहाड़ में गूँज उठी थी।

बाँसवाला आदमी मेरे दाहने और मेरा अरदली बायीं तरफ खड़ा था। ये दोनों भागने के लिए मुड़े। दोनों तेज ढाल पर लुढ़के और भी आदमी शोर मचाते और लुढ़कते हुए भागे। मैं गौर से गुलदार की हालत देख रहा था, वह हिला तक नहीं, मगर उसकी पूँछ से खून बहने लगा। मुझे ख्याल हुआ कि शायद गोली कुल जिस्म से होती हुई सर में पहुँच गयी और वह फौरन बगैर हिले हुए मर गया। जब भागना बन्द हो गया तो लोगों ने फिर शोर मचाया कि एक गोली और मारो। मैंने भी मुनासिब समझा और एक गोली उसी जगह और मारी। इस मर्तबा गुलदार ने पीछे निकलना शुरू किया। मैं नाल में तीसरी गोली लाकर गौर से देख रहा था कि कोई हिस्सा मिस्ल कमर या बगल नजर पड़े तो दागूँ। लेकिन यकायक गुलदार मुड़ा और ढोंक

कर हमला कर दिया। मैंने राइफल बगैर निशाना लिये नाल को उसके जिस्म से लगाकर दाग दी ; मगर बदकिस्मती से १५ वर्ष के इस्तेमाल में दूसरी मर्तबा मेरी ३६६ बोर की राइफल ने ऐसे नाजुक वक्त में धोखा दिया और कारतूस नहीं दगा। मैं भागने के लिए मुड़ा। मगर गुलदार लिपट गया और हम दोनों उस तेज ढाल पर लुढ़के। कभी मैं गुलदार के ऊपर और कभी वह मेरे ऊपर पहिये की तरह तेजी से लुढ़कते हुए करीब ४०-५० कदम नीचे एक बड़े पत्थर से टकराये। गुलदार पत्थर से आगे निकलकर दूसरे पत्थर से दस कदम नीचे रुक गया। मेरे होश जाते रहे थे, कि इतने में गुलदार ने चारों तरफ देखा और फिर शोर मचाते हुए हमला किया। उसने पत्थर के ऊपर अगले हाथ और ठोड़ी जमाकर मुँह गुस्से का बनाकर मुझसे दो फीट पर आकर गुर्राने लगा। पत्थर गुलदार की तरफ से करीब ५ फीट ऊँचा था और मेरी तरफ से सिर्फ दो फीट ऊँचा था। मुझे ख्याल हुआ कि अगर यह पत्थर के ऊपर आ गया तो मेरी गर्दन पकड़ लेगा। मैं भागने के काबिल न था। उठकर बैठ गया। नाल को उसकी गर्दन में लगाकर लिबलिबी दबायी और यह भूल गया कि वह तो पहले ही से दगी हुई थी। मैंने बोल्ट को घुमाया, ताकि दूसरा कारतूस नाल में लाऊँ। मगर बोल्ट जम गया। उसकी सुई कारतूस की टोपी में घुस गयी थी और बोल्ट नहीं घूमा। गुलदार शोर मचा रहा था और पत्थर पर चढ़ने की कोशिश कर रहा था। उसने पिछले पैरों का सहारा लेकर ऊपर उछलने की कोशिश की; मगर चूँकि पिछले पैर जख्मी थे, वह कलाबाजी खाकर फिर लुढ़कता हुआ उसी पत्थर पर रुका। मैं बोल्ट खोलने की कोशिश कर रहा था। इतने में ठेकेदार ने अपनी भरनी बन्दूक की गोली १५ फीट से एक चट्टान की आड़ से मारी ; जोकि गुलदार की रान पर पड़ी और उसको देखते ही गुलदार मुझे छोड़कर उसके पीछे शोर मचाता हुआ दौड़ा। ठेकेदार बन्दूक फेंककर भागा और आदमी भी जो उस तरफ थे, भागे और लुढ़के। गुलदार ठेकेदार के करीब पहुँच चुका था। मैं जोर लगा रहा था कि मेरा बोल्ट घूम

गया और दूसरा कारतूस नाल में लाकर मैं निशाना लेने लगा तो देखा कि दोनों ऊपर और नीचे के निशाने लेने के दीदवान लुढ़कते वक्त टूटकर गिर गये थे। चूँकि निशाना नजदीक का था, लिहाजा मैंने अन्दाजन नाल उसके कन्धे पर जमाकर फैर किया और गुलदार शोर मचाता हुआ और कलाबाजियाँ खाता हुआ पहाड़ की जड़ पर पहुँचा। आदमी पहाड़ की ढाल पर तो भाग ही रहे थे और लुढ़क रहे थे, अब औरतें और बच्चे चीखते और शोर मचाते हुए गाँव में और घरों में भागे। गुलदार जहाँ गिरा वहीं पड़ा रह गया। सिवाय राइफल के मेरा टोप, ऐनक, लकड़ी सब गिर चुके थे। तमाम जिस्म खून से भरा हुआ था। सर से खून बहकर कानों में आ रहा था। कोट व पतलून कुहनियों और घुटनों पर फट गये थे। तमाम जिस्म के जख्मों में दर्द हो रहा था। मैंने समझा कि मेरे सख्त चोटें आयी हैं। हड्डियाँ टूट गयी हैं, लिहाजा मैं वहीं पड़ा रहा। मेरे अरदली और रेन्ज के आदमी दौड़कर आये। उन्होंने मुझको उठाया। मैं काँप रहा था, मगर ताज्जुब हुआ कि कोई हड्डी नहीं टूटी थी। सर, ठोड़ी, कुहनियों, घुटनों और पैर में काफी जख्म थे। आदमियों के सहारे पहाड़ से उतरकर मैं रेन्ज कार्टर गया, जख्म धोये और टिंचर आयोडीन खूब लगाया। सुबह जब मैं बँगले से निहायत अच्छे सूट में चला था, मुझे नहीं मालूम था कि गाँववालों को मुफ्त का तमाशा दिखाकर अपनी हालत ऐसी खराब कर लूँगा। मैं मोटर मँगाकर बँगले पहुँचा और जख्मों को खूब साफ करके पट्टियाँ बाँधी। उसी वक्त वे लोग गुलदार लाये; जोकि एक छोटा गठे हुए जिस्म का सिर्फ साढ़े छः फीट का नर गुलदार था और जिसने होश उड़ा दिये थे। मेरी राइफल का कुन्दा फट गया और जगह-जगह पत्थरों से खराब हो गया। मैंने चन्द आदमी खोई हुई चीजों के ढूँढ़ने को भेजे और बजुज ऐनक के सब मिल गयीं। मैं उसी दिन कैम्प छोड़कर इलाज के लिए झाँसी चला गया; ताकि जख्मों में जहरीला माद्दा न पैदा हो जावे। मेरे शिकार के तमाम वाकियात में इससे ज्यादा खतरनाक कोई वाकिया नहीं हुआ; जोकि

गाँव के एक छोटे मगर बहादुर गुलदार ने दिखलाया। मेरी स्त्री इस वाकिया को सुनकर आगरा से देखने आयीं और मुझसे पूछा कि अपना वादा क्यों तोड़ा; जिसका यह इनाम है। उन्होंने मुझे मजबूर किया कि राइफल, बन्दूक और खालें बेच डालो। मैंने फिर बेदिली से वादा कर लिया। उसी साल मेरे तीसरे लड़के का अन्तकाल हो गया; जोकि होनहार रेन्जर मोहकमा जंगलात में था। इससे मुझको बेगुनाह जानवरों को मारने से नफरत हो गयी और शिकार छोड़ दिया। मैंने अपनी राइफल ८००) रुपये में और बन्दूक ७००) रुपये में बेच दी; जोकि नयी १५० और ९५ रुपयों में खरीदी थीं। लड़ाई के बाद हथियारों की कीमतें बहुत बढ़ गयी थीं; क्योंकि बाहर से माल आना बन्द हो गया था। अक्टूबर सन् १९४४ ई० में पेंशन पर जाने से पहले मैंने करीब एक दर्जन शिकार की खालें अपने दोस्त मेजर कालीकट के हाथ फी गुलदार पचास रुपया और फी शेर सौ रुपया के हिसाब से बेच दी; जोकि बनवायी में खर्च हुआ था और बतौर यादगार के सिर्फ एक-एक खाल मैंने अपने वास्ते रख ली; क्योंकि मेरी स्त्री ने कहा था कि मैं इन हत्या की चीजों को घर में नहीं रक्खूँगी; या तो बाँट दूँगी या जला दूँगी। जब मेजर कालीकट चेक लेकर खालें लेने आये तो वह मेरे लिए दो खालें छोड़ने के लिए छाँटने लगे, मगर वे सब बहुत अच्छी हालत में बगैर किसी नुक्स के एक-सी ही थीं और चन्द ही साल के अन्दर की मारी हुई थीं; क्योंकि पुरानी खालें मैं डाक्टरों और लेडी डाक्टरों को और दोस्तों को बाँटता रहता था और सिर्फ एक दर्जन के करीब अपने पास रखता था। मेजर कालीकट को जब कोई फर्क नहीं मिला तो खालों पर हाथ मलने लगे। मैंने पूछा यह क्या करते हो? उन्होंने कहा कि गोली के निशान ढूँढ़ता हूँ। मैंने कहा कि वे नहीं मिलेंगे, मैंने इनको जाल में पकड़ा था। वे हँसे। मैंने कहा कि अच्छा अगर चार से ज्यादा गोली के निशान ढूँढ़ लो तो वह मुफ्त ले जाना। उन्होंने एक खाल का अस्तर खोल डाला और जब गोली का कोई निशान नहीं पाया तो पूछा कि गोली कहाँ लगी। मैंने

कहा कि इनके ज्यादातर नजदीक से आँख या कान में गोली मारी है। लिहाजा पेंशन के बाद जब मैं आगरा मकान पर गया तो अपने साथ शिकार और जंगली जानवरों के कत्ल का कोई निशान नहीं ले गया और शिकार तो अरसे से छोड़ ही दिया था।

नौकरी के आखिरी हिस्से में लड़ाई के सिलसिले में सप्लाई के काम बहुत बढ़ गये थे; जिसकी वजह से मुझे दिल धड़कने और हाई ब्लड प्रेशर की शिकायत हो गयी थी। इसके अलावा पेंशन लेने के बाद यकायक जंगल की मेहनती जिन्दगी से शहर की बेकारी में तन्दुरुस्ती और गिरने लगी। इसके ऊपर मेरे जवान दामाद की मौत सन् १९४५ में ८ बच्चे छोड़कर हो गयी। इस परेशानी से और भी तबीयत खराब होती गयी। एक साल के अन्दर मेरा जी० पी० फंड, बीमे और चौथाई पेंशन के फरोख्त करने का रुपया वसूल हुआ। मेरे दोस्तों ने राय दी कि उमर भर सख्त मेहनत व मसक्कत में सर्फ हुई और अब बेकारी से और वक्त नहीं कटता है। इसलिए कुछ काम करना चाहिए। मैंने एक ग्लास फैक्टरी शिरकत में फिरोजाबाद में खरीदी; जिसमें मैंने चालीस हजार रुपया लगाया। उसी वक्त बलवे शुरू हो गये और ६ महीने के अन्दर मुझे तीस हजार रुपये का नुकसान हुआ; जिससे उमर भर की कमाई की बरबादी का आखिरी वक्त सख्त धक्का लगा। मैं सन् १९४७ में मायूस होकर घर आकर बैठ गया और दिन बहुत भारू कटने लगे। शुरू सन् १९४८ में मुझे राजा साहब सिंगाही ने अपनी रियासत की मैनेजरी पर ६ सौ रुपया माहवार तनख्वाह पर मुकर्रर किया और चार अरदली और बिला किराये का मकान दिया; जोकि मैंने कबूल किया। मैंने चालीस बरस के बाद अपनी जन्म-भूमि और बचपन के दोस्त अब्दुल रहमान, जोकि अब जंगल के बड़े ठेकेदार हैं और मनसब अली, जोकि रियासत में जिलेदार हैं और उस इलाके में जहाँ मेरा बचपन बहुत अच्छा कटा था, अपने पुराने साथियों में आकर फिर काम करना शुरू किया।

मुझे इस देहात और जंगल की जिंदगी से खास दिलचस्पी थी,

लिहाजा मेरी तन्दुरुस्ती भी ठीक होनी शुरू हुई। वक्त बहुत अच्छा कट रहा था, मगर सन् १९४९ मेरे लिए बहुत ही मनहूस साबित हुआ; जिसमें मेरे दो बड़े लड़कों का अन्तकाल हो गया और उन्होंने १४ बच्चे और दो बेवाएँ छोड़ीं। उनकी देख-भाल, तालीम, शादी-व्याह का कुल भार मेरे ऊपर है और खुदा का शुक्र है कि मैं ६७ बरस की उमर में अपना काम दफ्तर और बाहर का बहुत अच्छी तरह से चला रहा हूँ।

६३. एक दोस्त का पहला शेर

मई सन् १९५० ई० में मेरे दोस्त मि० नरोनहा कानपुर से मय स्त्री-बच्चों के शिकार व तफरीह की गरज से आये। मैंने गोरी किले के बँगले में उनका शिकार का इन्तजाम करा दिया। मैं ब वजह काम के न जा सका। उन्होंने २ पड्डे रोजाना बँधवाये। दोनों मार डाले गये, मगर नातजुर्बाकारी की वजह से शेर नहीं मिला। उन्होंने मुझे लिखा कि दो दिन के लिए वक्त निकाल कर जिस तरह से भी हो, आ जाओ। उन्होंने मोटर भेजा। फासला दस मील का था, मैं पहुँच गया।

मैंने उसी रात को तीसरा पड्डा बँधवाया, जोकि मारा गया। दूसरे दिन सुबह हम वहाँ गये और देखा कि पड्डे को मार कर काफी खाकर वहीं छोड़ दिया है, न रस्सी तोड़ी गयी और न उसको घसीटा ही गया है; जिससे शक हुआ कि शायद न आवे। हम एक पेड़ पर चारपाई बाँध कर चले आये। शाम को मिस्टर नरोनहा, उनकी मेम साहब और हम गये। हम करीब ४ बजे के मचान पर बैठ गये। करीब आधा घंटा के बाद चीतलों ने खतरे की आवाज दी और थोड़ी देर के बाद एक मोर उस तरफ से शोर मचाता हुआ उड़ा। फिर हमको हमारे सामने सड़क के उत्तर तरफ सूखे पत्तों में चलने की आवाज सुनायी दी और फिर हमने देखा कि एक शेर बगैर जरूरी अहतियात के चला आ रहा था। वह सड़क पर पहुँच कर थोड़ा ठहरा, उसने सड़क के दोनों तरफ देखा और फिर सड़क पर लाश की तरफ, जोकि सड़क के

बिलकुल किनारे पड़ी हुई थी, देखा तक नहीं। वह लाश से गुजर चुका था। मिस्टर नरोनहा ने बन्दूक उठायी। मैंने इशारा किया कि न दागो। क्योंकि वह छोटा मालूम होता था। उन्होंने बहुत फुर्ती की और फैर कर दिया। गोली उसके कूले में पड़ी और वह गिर रहा था कि दूसरी गोली उसके सर पर पड़ी और वह वहीं रह गया। उसके बर्ताव से मालूम होता था कि उसको लाश का भी पता न था और वह बगैर होशियारी के सीधा सड़क पर मामूली चाल से तालाब की तरफ जोकि हमारे पीछे दक्खिन में था, गर्मी की प्यास बुझाने जा रहा था। पड्डा शायद दूसरे ही शेर ने मारा था। दूसरा शेर थोड़ी देर के बाद पूरब से आया और पड्डे से करीब ५० कदम की दूरी पर बैठ गया, जहाँ चीतल और गोन आकर जमा हो गये और खतरे का शोर मचाते रहे। जब शेर तंग आ गया तो वह उनके ऊपर तालाब की तरफ दौड़ा और फिर पानी में दौड़ता रहा, जिसकी आवाज हमको साफ सुनायी देती रही। हमारे मोटर वाले और अरदली ने भी देखा कि गोन के पीछे पानी में वह दौड़ता रहा, जोकि खतरे की आवाजें देते रहे। उस वक्त सूरज डूब चुका था और अँधेरा होने लगा था। हम काफी तमाशा भी देख चुके थे। हम शेर को लादकर बँगला पहुँचे। मिस्टर नरोनहा अपने पहले शेर पर बहुत खुश थे; जिसका फोटो सामने के पृष्ठ पर दिया हुआ है।

९४. मेरा बीसवाँ शेर गोरी किले के बँगले पर; जोकि बहुत चालाक था

शिकार अब भी यहाँ काफी थे, जैसा कि इस किताब के शुरू में बयान हो चुका है। रियासत के कई एक हथियारों के लाइसेंस भी मेरे नाम थे। मगर चूँकि मैं अरसे से शिकार छोड़ चुका था लिहाजा मैंने यहाँ भी ३ बरस तक बन्दूक नहीं दागी। गो मैंने जब से शिकार खेलना बन्द किया है उसी जमाने में मेरे जान व माल और तन्दुरुस्ती

Plate No. XVI.



Tiger shot by my friend Mr. Willie Noronha.

का ज्यादा नुकसान हुआ। फिकरों और कामों की ज्यादती से तबीयत परेशान रहती थी। कभी किसी से मिलने की गरज से अगर जंगल में होकर मोटर में गुजरना पड़ता था तो जी बहुत बहलता था। फरवरी सन् १९५१ ई० में काम की ज्यादती से मैं बहुत थक गया। सर में बराबर दर्द रहने लगा और मैं चाहता था कि खामोशी से दो-चार दिन कहीं गुजारूँ। मुझे जंगल की साफ आब व हवा और खामोशी से बेहतर दूसरी जगह पसन्द न थी। इत्तफाक से डिवीजनल फारेस्ट अफसर ८ मील पर बिलरायाँ में कैम्प कर रहे थे। मैंने किला फारेस्ट रेंज का पास मँगाया और दूसरे ही दिन खाना खाकर जरूरी असबाब, बावरची, ३ अरदली और दो पड्डों को किला गोरी शाह के बँगले पर भेज दिया। मैं आधा दिन दफ्तर में काम करके करीब २ बजे के दूसरे आधे पहर पर रवाना हुआ और शाम को अँधेरे से पहले दस मील पर किले के बँगले में पहुँचा। असबाब बँगले में रखकर एक पड्डु और एक आदमी को लेकर मैंने बँगले से आधा मील जाकर पहले चौराहे पर पड्डु को बाँध दिया। मैंने वापसी में एक जंगली मुर्गा मारा और करीब दस बरस के बाद फिर बन्दूक दागी। बँगले पर आकर फारेस्ट गार्ड से मुलाकात हुई। मैंने पूछा—क्या आजकल कोई शेर इस तरफ है? उसने कहा कि एक पुराना शेर कभी-कभी इस तरफ से निकल जाता है। मगर तीन-चार दिन से उसके पैर के निशान नहीं दिखलायी दिये हैं। मगर वह बहुत चालाक है। वह अक्सर शिकारियों के पड्डु मारता और खाता है, मगर दूसरी खूराक खाने नहीं आता है। मैंने जल्दी खाना खाया और सो गया।

दूसरे दिन सुबह मैं अद्धे पर दो नौ उमर अरदलियों को और मचान लेकर पड्डा देखने गया और वहाँ पहुँचकर पड्डु को गायब पाया। रस्सी टूटी हुई मिली मगर कोई निशान पड्डा मारने के नजर नहीं आते थे; न खून और न घसिटन के निशान थे। वहाँ पर जमीन सख्त थी, लिहाजा शेर के पैर के निशान भी न मिले। मुझे ख्याल हुआ कि पड्डा जोकि ४० रुपये का लिया था और एक साल से ज्यादा

उमर का मजबूत था, शायद रस्सी तोड़कर भाग गया हो, अब इनकी कीमत भी मिस्ल और चीजों के पाँच गुनी हो गयी थी। लिहाजा हम सब शेर या पड्डे के पैर के निशान गौर से देखने लगे कि किस तरफ गया है। कुछ दूर एक सड़क पर खून की दो बूँदें एक पत्ते पर दिखलायी दीं और जंगल में कुछ घास और पत्तों पर कहीं-कहीं कुछ निशान घसिटन के दिखलायी दिये। मैंने दोनों लड़कों, काशी और सीचू को सीटी दी और बुलाकर कहा कि मचान, कुल्हाड़ी और रस्सियाँ अड्डे से लेकर २०-२५ कदम मेरे पीछे-पीछे आहिस्ता-आहिस्ता आओ। जब मैं खड़ा होऊँ तो तुम भी खड़े हो जाना और अगर फैर करूँ तो यह सामान फेंककर पेड़ों पर चढ़ जाना। जँगल और झाड़ियाँ खूब घने थे। मेरे दोनों नौकर नातजुर्बेकार बीस बरस से कम उमर के होंगे और इससे पहले कभी शेर के शिकार में किसी के साथ नहीं गये थे; लिहाजा वे पूरी तौर पर समझते भी न थे। मैंने पूछा कि डरते तो नहीं हो। वे हँसे और कहा कि आप तो आगे हैं। मैं ३७५ बोर माजर राइफल में ५ कारतूस लगाकर आहिस्ता-आहिस्ता घसिटन पर रवाना हुआ। करीब ५० कदम के बाद घास, झाड़ी व जमीन पर पड्डा मारने के निशान थे और बहुत खून पड़ा हुआ था। मालूम होता था कि शेर वहाँ तक इतने बड़े पड्डे को जिन्दा ही मुँह में दबाकर ले आया था और वहाँ पर मारा था। फिर वहाँ से घसीटने का पूरा निशान साफ तौर पर मिला। एक फरलाँग के बाद उसने मोटर-सड़क को पार करके लाश को पच्छिम की तरफ घने जंगल में नालों और पानी की झील की तरफ ले गया। करीब दो फरलाँग के बाद उसने पड्डे को खाया; जहाँ काफी पैरों की हड्डियाँ चबायी हुई पड़ी थीं। मैंने पहले इतनी मोटी हड्डियाँ चबाते हुए शेर को कभी नहीं देखा था। शेर के पैर के निशान घास और पत्तों में नहीं दिखलायी दिये, जिससे उसके कद का अन्दाज होता। मगर पड्डे को जगह पर न मारना और मुँह में दबाकर ५० कदम ले जाना और फिर मार कर बहुत आगे ले जाकर खाना, इन सब अहतियातों से अन्दाज होता था कि शेर पुराना

तजुर्बेकार है ; जिसका जिकर फारेस्ट गार्ड ने किया था कि वह शिकारियों के पड्डे खा जाता है और फिर लाश पर नहीं आता और बँगले के पास ही रहकर उनको बेवकूफ बनाता रहता है। मुझे और ज्यादा दिलचस्पी हुई। मैंने ख्याल किया कि बजाय मचान के शायद यह पैदल मौका गोली चलाने का दे दे। शेर ने जहाँ पर खाया था, उसी जगह पर पेट का मलबा भी निकालकर फेंक दिया था और लाश और आगे ले गया था। लिहाजा मैं वहाँ से बहुत ही आहिस्ता और होशियारी से आगे गया। करीब १०० कदम जाने के बाद लाश दिखलायी दी। मैंने चारों तरफ बहुत गौर से काफी देर तक शेर की आहट ली, मगर कुछ नजर नहीं आया और न किसी जानवर या चिड़ियों की खतरे की आवाज ही सुनायी दी। शायद उस वक्त वहाँ वे कोई न थे। मैं लाश के पास पहुँचा। मैंने दोनों लड़कों से कहा कि वे वहीं ठहरें और मैं आगे बढ़ा तो करीब ५० कदम पर लाश से पच्छिम तरफ दबी हुई घास और पत्तों पर शेर के लेटने के निशान मिले। सुबह का वक्त था और खूब जाड़ा था। मैंने वह जमीन छुई तो काफी गरम थी। यानी शेर उसी वक्त हमारी आहट पाकर आगे गया था। बावजूद मेरे रबड़ का जूता पहने हुए पंजों के बल आहिस्ता-आहिस्ता आने के। मैं करीब १०० कदम के और पच्छिम की तरफ गया, मगर शेर नहीं दिखलायी दिया। जिससे ख्याल हुआ कि वह बहुत होशियार है। जंगल घना था और सही तौर पर अन्दाज नहीं हो सकता था कि किस तरफ गया है। लिहाजा मैंने १०० कदम का चक्कर उत्तर और दक्खिन तरफ लिया। फिर भी कुछ न दिखलायी दिया। मुझे यकीन था कि वह अब १०० कदम के अन्दर नहीं है। मैं लाश के पास आया और देखा कि दोनों पिछली टाँगें ऊपर तक पूरी खा गया था, लिहाजा अगर आया भी तो देर में आने की उम्मीद थी।

जब शेर पैदल नहीं दिखलायी दिया, जिसके ऊपर मुझे कामयाबी की काफी उम्मीद थी तो मैंने इरादा किया कि शाम को मचान बाँध कर बैठूँ और पड्डे की कीमत वसूल करूँ। लिहाजा मचान के लिए

कोई मुनासिब पेड़ तलाश करना शुरू किया। वहाँ पर ज्यादातर सीधे साल के पेड़ थे। सिर्फ एक शाखदार पेड़ लाश से पूरब व दक्खिन में करीब २० गज पर था। मगर वह शेर के आनेवाली लाइन के सीध में था, जिसको वह आसानी से देख सकता था। मचान के लायक दूसरा पेड़ ४७ गज पर पच्छिम व दक्खिन तरफ था और शेर के लेटने की जगह और वापसी के रास्ते से बहुत करीब था। मैंने दोनों लड़कों से कहा कि अगर इनाम लेना चाहते हो तो जल्दी से इस पेड़ पर मचान बाँध दो। हम इशारों से और बहुत आहिस्ता-आहिस्ता बात करते थे। लड़कों ने मचान बाँधना शुरू किया और मैंने अहतियातन एक चक्कर फिर लिया; क्योंकि अक्सर चालाक शेर डोलपोखरा वाले चालाक शेर की तरह आड़ से मचान बाँधते देखते रहते हैं और फिर नहीं आते, जिसका ज़िकर हो चुका है।

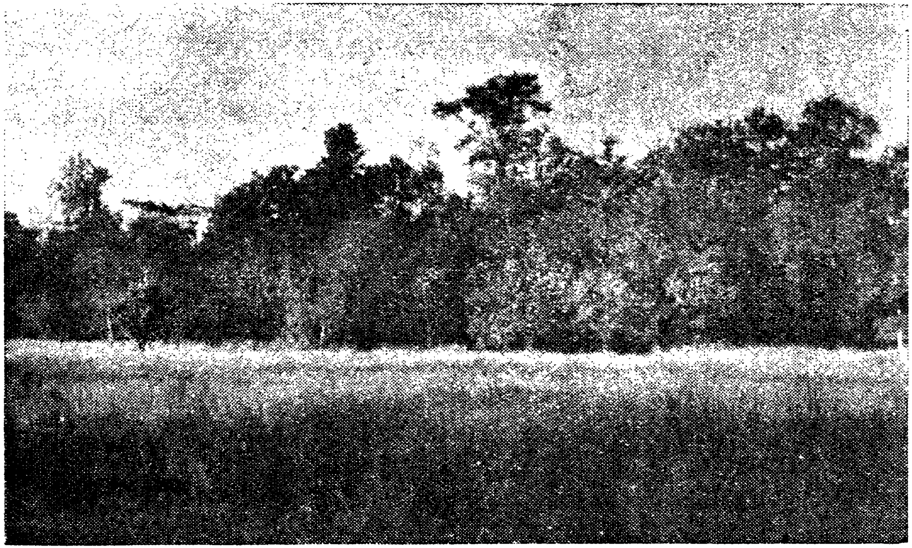
मेरी वापसी पर मचान करीब-करीब बँध चुका था। मैंने मचान पर बैठ कर सिर्फ वे डालें और पत्तियाँ कटवा दीं, जिनसे लाश साफ दिखलायी देने लगी और उसके आने वाले रास्ते पर मुझसे करीब १५ फीट पर अगर शेर निकले तो साफ दिखलायी दे सके। फिर लाश को पत्तों से ढक दिया। यह सब काम करीब आध घंटे में खत्म करके हम सब बँगले को वापस आये। तीसरे पहर को हम सुबह की ही तरह खामोशी से गये और पत्तेवाली डालें अपने साथ ले गये। मैंने मचान पर बैठकर चारों तरफ से खूब ढक लिया और तीन बजे इतमीनान से बैठ गया, जोकि जरा जल्दी था; ताकि शेर को आते हुए कोई खटका न सुनायी दे। इस तरह से मैंने सब अहतियात किये, जिनका मुझको तजुर्बा था और जिनका मैं ख्याल कर सका। आदमियों को मैंने बँगले भेज दिया और हिदायत कर दी कि फैर होने पर आना या अँधेरा होते वक्त आना और मोटर-सड़क से मेरी सीटी का इन्तजार करना। सीटी खुद भी देकर लालटेन लेकर मेरे पास आना। मैं पौने चार बजे तक खामोश बैठा रहा और शेर की कोई आहट नहीं पायी। उसके बाद पच्छिम तरफ करीब एक फरलाँग पर चीतलों की खतरे

की धीमी और चन्द आवाजें झील की तरफ सुनायी दीं। १५ मिनट के बाद फिर उसी जगह पर एक काँकड़ ने भी चन्द खतरे की आवाजें दीं और चला गया। इन बातों से मुझे ख्याल हुआ कि शेर शायद सो रहा है। ये जानवर उस तरफ पानीवाली झील की तरफ जाते हुए गुजरे और शेर को देखकर बोले। मगर उसने कोई तवज्जेह नहीं दी, लिहाजा चले गये। इसके १०-१५ मिनट के बाद छोटी चिड़ियों ने खतरे की आवाजें देते हुए एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर मेरी तरफ आना शुरू किया और मुझसे करीब ५०-६० गज तक आकर खामोश हो गयीं। इससे मुझे पूरा अन्दाज हुआ कि शेर अपनी जगह से उठकर मेरे करीब आकर बैठ गया है। थोड़ी देर के बाद मुझसे ३०-४० गज पर शेर के पैर से दबकर एक सूखी पतली लकड़ी के टूटने की आवाज सुनायी दी, जिससे शेर के आने का और पक्का सबूत हो गया। मैंने मुड़कर देखा मगर झाड़ियों की घनावट की वजह से कुछ नहीं दिखलायी दिया। मैं उसकी तरफ राइफल सीधा करके इन्तजार करता रहा, मगर बिलकुल खामोशी हो गयी। ५ - १० - १५ मिनट सख्त इन्तजार में गुजरे, मगर कोई आहट नहीं सुनायी दी। मैंने राइफल को पैरों पर रखकर और खूब मुड़कर अपने बायें तरफ देखा तो शेर की पूँछ लाश की तरफ बढ़ती हुई दिखलायी दी और फिर झाड़ियों और पेड़ों की आड़ हो गयी। मैंने फिर राइफल को उस सूराख की तरफ सीधा किया, जोकि मैंने शेर के वापसी के रास्ते पर मचान से करीब १५ फीट पर झाड़ियों में बनाया था और जिससे अब शेर सिर्फ एक ही गज पर रुक गया था। वह करीब १०-१२ मिनट के उसी जगह ठहरा रहा।

मैं उसकी इस इन्तहाई होशियारी और अहतियात पर ताज्जुब कर रहा था और सोच रहा था कि शायद मेरे राइफल को हिलते हुए देखकर वह खामोशी से लौट गया और मायूस हो चला था कि इतने नजदीक आकर बेवकूफ बनाकर निकल गया। जबकि मैं साँस तक रोके हुए था कि इतने में कोई कीड़ा उसकी नाक में घुस गया और

उसको यकायक छींक आ गयी ; जिससे काफी जोर की गुर्राहट भी निकल गयी। मैं इन्तजार करता रहा कि थोड़ी देर में उसका सर उस खुली हुई जगह में जिसको मैंने झाड़ियाँ तोड़कर बनाया था, नजर पड़ा, वह बड़े गौर और अहतियात से लाश की तरफ और उसी तरफ पेड़ों पर कान ऊपर-नीचे करते हुए देख रहा था। मगर उसको यह नहीं मालूम था कि ३७५ बोर राइफल का निशाना उसके सर पर मुश्किल से १५ फीट पर से जमा हुआ था। इस राइफल से मैंने सिर्फ तीन फैर निशाने पर चलाये थे और काफी इतमीनान नहीं था, लिहाजा इन्तजार था कि और निकले तो बगल पर फैर करूँ। मैंने लाश की तरफ देखा तो जल्दी में उसके ऊपर से पत्तीवाली शाखें हटाना भूल गये थे ; जिनसे लाश को ढका था और जिनकी वजह से शेर को शक हो रहा था। चन्द मिनट में वह एक कदम और बढ़ा और एक पैर उठाये हुए कानों और नाक को चारों तरफ घुमा रहा था। मैंने उसकी बगल पर फैर किया। उसने एक धाड़ मारी और पिछले दो पैरों पर खड़ा होकर सर के बल गोता लगाते हुए अपने बायें तरफ बिजली की तरह मुड़कर झाड़ियों में भाग गया और मैं दूसरा फैर न कर सका। मैंने उम्मीद की थी कि ३७५ बोर की गोली खाकर वह जरूर गिरेगा और दूसरी गोली चलाने का अच्छा मौका देगा। लिहाजा काफी फुर्ती से दूसरा कारतूस नाल में नहीं लाया। मुझे पूरा यकीन था कि गोली मैंने जहाँ मारी है वहीं लगी है। मैं कान लगाये रहा और ६०-७० गज पर गिरने की और गुर्राहट की हल्की-सी आवाज सुनी, लेकिन तड़पने और दुम मारने की आवाज नहीं सुनायी दी ; जोकि मरने से पहले जरूरी थी। कभी ख्याल होता था कि गिरते ही मर गया होगा और कभी ख्याल होता था कि शायद निकल गया हो और सुबह जख्मी शेर को पैदल तलाश करना पड़ेगा। मगर उस वक्त कुछ नहीं किया जा सकता था। घड़ी देखी तो सवा पाँच बजे थे, सूरज डूब रहा था। मैंने सिगरेट जलाया और सोचता रहा कि क्या करना चाहिए। साढ़े पाँच बजे मैंने सीटी दी। मगर कोई जवाब नहीं आया।

Plate No. XVII.



Tiger's natural home—Dense forest above for winter and rains.
Thick high grass in front with water for summer.

पौने ६ बजे मैंने फिर डबल सीटी दी और जवाब मिला। मैंने फिर दो सीटियाँ दीं और दोनों लड़कों ने जोर-जोर से बोलते और हँसते हुए आना शुरू किया। मुझे ख्याल हुआ कि अगर शेर जिंदा है तो लड़कों की आवाज सुनकर जरूर हमला करेगा। अगर मैं मचान से उनको कुछ कहता हूँ तो उसका भी वह ही असर होगा और अगर हवा में फैर करता हूँ तो शेर झील की तरफ भागेगा, जिससे बगैर हाथी के घास में ढूँढ़ना और मुश्किल व खतरनाक होगा; क्योंकि जख्मी होकर शेर भूत हो जाता है। लाश के पास पहुँचकर उन्होंने आपस में कहा कि यहाँ तो शेर नहीं है। मैंने सीटी देकर रूमाल के इशारे से बुलाया। राइफल उनको दिया और एक रस्सी, जो मैंने मचान से खोली थी, वह उनको दी। मचान से उतरकर खामोशी से लाश के पास जाकर रस्सी को पड्डे की गर्दन में बाँधकर राइफल, लालटेन और कुल्हाड़ी मैंने ली और फिर हम तीनों ने पड्डे की लाश को सड़क की तरफ घसीटना शुरू किया। बड़ी मुश्किल से हम तीनों पड्डे को करीब दो सौ गज के ले जा सके और पस्त होकर वहीं छोड़ दिया। जब सड़क पर पहुँचे तो वह ज्यादा दूर न थी; लिहाजा फिर वापस आये और लाश बड़ी मेहनत व मुश्किल से सड़क पर लाकर अद्धे से बाँधा और घसीटकर फिर उसी चौराहे पर लाकर छोड़ गये; इस उम्मीद पर कि अगर इस तरफ से रात को कोई शेर या गुलदार निकलेगा तो एक मौका उसी लाश से और मिल जावेगा, बजाय लाश को जाया करने के।

बँगले पर पहुँचकर मैंने देखा कि मेरे दोस्त शेख अब्दुल रहमान ने अपनी मोटर को अपने बिलरायाँ के डीपू से दस मील मेरे पास अपने भाई मुंशी फजल हुसेन के साथ भेजी कि शायद मुझे जरूरत हो। सुबह हमने मोटर और अद्धा सड़क पर छोड़े और ८-९ आदमी और अपना कुत्ता लेकर उस जगह पहुँचे, जहाँ शेर को जख्मी किया था। खून देखा तो कहीं खून न दिखलायी दिया। सबने कहा कि गोली नहीं लगी। मगर मुझे यकीन था कि १५ फीट से गोली खाली नहीं

जा सकती है। गौर से देखने से मालूम हुआ कि फैर के बाद शेर जमीन को नाखूनों से चीरता हुआ गया था, जिससे और यकीन हुआ कि गोली लगी है। मैंने मचान पर जाकर उस सिम्त का अन्दाज किया जहाँ शेर गिरता हुआ मालूम हुआ था। हम सीधे उस तरफ करीब ७० गज के गये होंगे तो देखा कि शेर पड़ा हुआ था। खाँसने व शोर मचाने के बाद नजदीक जाकर देखा तो वह निहायत अच्छी तन्दुरुस्ती में नर शेर था, जिसके दिल पर गोली पड़ी थी।

बैल के अद्धे पर बड़ी मुश्किल से हम नौ आदमियों ने शेर को लादा और बँगले पर लाये। मैं कोई सामान खाल निकलवाने और साफ कराने का साथ नहीं ले गया था। मुंशी फज़ल हुसेन ने अपनी लारी बिलरायाँ जाकर भेजी; जिस पर शेर को सिंगाही पहुँचाया गया। हमारे दोस्त शेख अब्दुल रहमान ने शेर को बिलरायाँ में लारी पर देखा और फौरन मोटर से आये। इत्तफाक से मुंशी मनसब अली भी लखनऊ से राजा साहब के पास से जरूरी डाक लेकर उसी दिन शेर लारी में चले जाने के बाद ही पहुँचे। उन्होंने याद दिलाया कि करीब ५५ बरस हुए जमाना बचपन में इसी बँगले में सुपरिन्टेंडेन्ट पुलिस ने एक शेर और एक रीछ मारा था और हम भी यहाँ गोरी बादशाह का मेला देखने आये थे। तमाम मेले के लोग शेर देखने इसी बँगले में घुस आये और निकाले गये थे। जिस पर मेरे मुँह से यह निकला था कि मैं अब अपना ही मारा हुआ शेर देखूँगा और शेख अब्दुल रहमान ने मुझे चिढ़ाना शुरू किया था। खुदा ने उसी बँगले में भी एक शेर दिलवा दिया; जहाँ शेर मारने का शौक पैदा हुआ था।

मैंने खुदा का शुक्र अदा किया कि उसने मेरी आरजू खूब-खूब पूरी की। शेर की नाप ९ फीट १० इंच थी और बहुत खूबसूरत और तन्दुरुस्त था। वह राजा साहब सिंगाही को पेश किया गया; जिन्होंने तमाम खर्चा उठाया और मैंने दो-तीन रोज जंगल की सैर व तफरीह का खूब लुत्फ़ उठाया।

मैंने इस आखिरी शेर को मचान से मारने की पूरी तफसील इस वजह से दी है, ताकि नौ उमर शिकारी इससे और मेरे पिछले तरह-तरह के वाक़ियात को अगर ग़ौर से पढ़ें और इन पर अमल करें तो मुझे उम्मीद है कि उनको मचान से शेर मारने में ५० फी सदी कामयाबी होगी और बिला वजह वक्त और पैसा जाये न होगा। खतरे का मौक़ा भी कम आवेगा।

शेर को मचान से मारने की कामयाबी नीचे की बातों पर मुनहसिर है:—

२० फी सदी पड्डा बाँधने की जगह छाँटने पर; जोकि चौराहे या नाले और सड़क के मिलान पर होना चाहिए। जहाँ से शेर अक्सर निकलता हो और वहाँ जंगल काफ़ी घना हो। मचान के लायक पेड़ हों और वहाँ शाम को काफी सुनसान हो जाता हो।

२० फी सदी मचान के वास्ते पेड़ छाँटने पर; जोकि लाश से २५ से लेकर ४० गज़ पर होना चाहिए और शेर के लाश पर आनेवाले रास्ते के सामने न हो, बल्कि दाहने-बायें हो।

२० फ़ी सदी मचान बाँधने पर; मचान बाँधने से पहले लाश के चारों तरफ बोलते और खाँसते हुए सौ कदम चारों तरफ घूम लेना चाहिए; ताकि शेर भाग जाय। मचान को सुबह या दोपहर से पहले बाँध देना चाहिए और जल्दी व खामोशी से बाँधना चाहिए। मचान को बैठने से पहले खूब हरी पत्तीवाली डालों से ढक देना चाहिए।

२० फी सदी खामोशी से बैठने पर; शिकारी को अकेले या ज़्यादा-से-ज़्यादा एक और साथी को लेकर बिलकुल खामोश बैठना चाहिए और मौसम के लिहाज़ से ऐसे वक्त से जाकर बैठ जाना चाहिए कि अँधेरा होने तक ३ घण्टा बैठ सके। २० फी सदी किस्मत पर।

अपने बीस शेरों के अलावा मैंने दो सौ से ज्यादा दूसरों के मारे हुए शेर देखे हैं। नर शेरों की औसत नाप १० फीट तक और औसत मादीन की नाप ९ फीट तक देखी है। सिवाय पाँच फी सदी शेरों के जो कि सवा दस फीट तक निकले और सिर्फ एक दस फीट सात इंच

का देखा। नाप, बग़ैर खाल निकाले नाक से दुम की आखिरी नाप तक ली जाती है।

हर किस्म के स्पोर्ट के लिए अच्छी तन्दुरुस्ती का होना जरूरी है। बग़ैर तन्दुरुस्ती के स्पोर्ट या तफ़रीह की ख़्वाहिश भी नहीं होती और न लुत्फ़ ही आता है। अच्छी तन्दुरुस्ती हर बात में अहतियात से हासिल होती है। सुबह उठना, जल्द सोना, किसी-न-किसी किस्म की रोजाना हल्की कसरत करना, तेल मलकर रोज सुबह स्नान करना, हल्की और जल्द हजम होनेवाली ख़ूराक खाना और थोड़ा भूखे रहना—तन्दुरुस्ती बनाने के अच्छे ज़रिये हैं।

अगस्त सन् १९५१ में मैं मय स्त्री के हज्ज को निहायत अच्छी तन्दुरुस्ती में गया। मेरी स्त्री ने निहायत सच्चाई और वफ़ादारी के ५२ बरस के साथ को यकायक सिर्फ़ ३ घण्टे के बुख़ार और लू लगने की अलालत में पूजा करते हुए हमेशा के लिए मुकाम मीना मुल्क हजाज़ अरब में छोड़ा। उनकी यकायक मौत के ग़म को भुलाने के लिए मैंने यह किताब लिखना शुरू की और दुआ है कि पैदा करनेवाला उनकी मुक्ति करे।

नवम्बर, सन् १९५२ ई०

—हकीमुद्दीन

Plate No. XVIII



Author's wife at the age of 47.

६५. जंगली चिड़ियों और जानवरों की रक्षा

उत्तरी हिन्दुस्तान में जंगली चिड़ियाँ और जानवर आम तौर पर बहुत तेज़ी से कम होते जाते हैं। इसकी वजह यह मालूम होती है कि मुल्क की मर्दुमशुमारी दिन पर दिन बढ़ती जाती है और जंगल कटते और बरबाद होते जाते हैं। खेती बढ़ती जाती है। उम्दा सड़कें और पुल दूर के जंगलों में बनते जाते हैं; जिनसे अब हर जगह आसानी से पहुँच सकते हैं। मोटर, टार्च और हथियारों के लाइसेन्स बढ़ते जाते हैं; जिनसे जंगली चिड़ियाँ और जानवर बनिस्बत पहले के ज्यादा मारे जाते हैं। और आम पब्लिक में कोई ऐसा कानून नहीं है कि वह नर-मादा चिड़ियों का ख्याल रखकर बच्चे देने की फसल को ख्याल में रखकर शिकार करे। हर सरकार का यह फ़र्ज है कि वह अपने मुल्क की जंगली चिड़ियाँ व जानवरों की, जिनको क़ुदरत ने पैदा किया है, जरूरी हिफ़ाजत व रक्षा करे और उनको भी दुनिया में रहने का मौक़ा दे।

नीचे चंद क़ायदे हुक्मरान वक्त के ग़ौर के लिए जंगली चिड़ियों और जानवरों की रक्षा के लिए दिये जाते हैं :—

१. सरकारी जंगलों में शिकार के १५ दिन के पास की फ़ीस २५ रुपये फी शिकारी कर दी जावे और एक वक्त में एक शिकार के ब्लाक में ३ से ज्यादा शिकारियों को शिकार खेलने की इजाजत न दी जावे।

२. एक परमिट में जितने जानवरों के मारने की इजाजत दी जावे, उसकी सख्ती से पाबन्दी की जावे और २५ से ५० रुपये तक फी जानवर ज्यादा मारने पर मुआविजा लिया जावे।

३. सिवाय दरिन्दों के कुल जानवरों की मादें मारने पर ५० से १०० रुपये तक मुआविजा लिया जावे।

४. हँकुवे से शिकार करना बिलकुल बन्द कर देना चाहिए; जिसमें

जानवरों को हाथी या आदमियों से हाँक कर छिपे हुए शिकारियों के पास ले जाते हैं, जहाँ जानवरों के भागकर बचने का कोई मौक़ा नहीं रहता और न असल मानों में शिकारियों को शिकार का ही कोई ज्यादा लुत्फ़ आता है। यह तो जानवरों के कत्ल-आम का तरीका है; जिससे जंगली जानवरों व चिड़ियों की बहुत ज्यादा बरबादी होती है। जितने मारे जाते हैं, करीब-करीब उतने ही जख्मी होकर बेकार मरते हैं।

५. जाल और फन्दों से भी पकड़कर चिड़ियों व जानवरों को मारना और बेचना बंद होना चाहिए।

६, शिकार का परमिट एक ही शख्स को एक ही साल में दो मर्त्तबे से ज्यादा एक फारेस्ट डिवीजन में न देना चाहिए।

७. अगर शिकार की इजाजत हाथी की पीठ पर से दी जाती है तो फिर दूसरी सवारियों से भी देनी चाहिए। हाथी तो शिकार की तलाश में उसके पीछे जंगलों में करीब-करीब हर जगह जा सकता है और पहलेवाली सवारियाँ ज्यादातर सड़कों ही पर जा सकती हैं, लिहाजा कम नुकसानदेह हैं। शिकार के ख्याल से दोनों के फ़ायदे एक-से ही हैं। यानी जंगली जानवर सवारी को चाहे वह मोटर हो, गाड़ी हो या हाथी हो बमुक़ाबिले पैदल आदमी के ज्यादा नजदीक पहुँचा देते हैं। हाथी की पीठ से ज्यादा हिफ़ाजत और कम स्पोर्ट बमुकाबिले गाड़ी के मिलता है और आम पबलिक का ख्याल यह है कि यह खास रियायत उन बड़े लोगों के वास्ते है जो कि हाथी का इन्तज़ाम कर सकते हैं।

८. सालाना शिकार के परमिट को बन्द करना भी जरूरी मालूम होता है; जिसमें जानवरों की बरबादी का ज्यादा मौक़ा मिलता है।

९. मुहकमा जंगलात के गजटेड अफ़सरान से नीचे के अमला, जिनको सरकारी जंगलों में शिकार खेलने की इज़ाज़त नहीं है और जो बारहों महीने जंगल में रहते हैं चन्द साल से जानवरों का बहुत क़त्ल-आम करने लगे हैं, जिनके सिपुर्द जंगली जानवरों व चिड़ियों की हिफ़ाजत का इन्तज़ाम है। फ़ारेस्ट रेन्जरान और रेन्ज अफ़सरान को

अपने खाने के लिए चिड़ियाँ मारने की और एक जानवर हर महीने उनके अमले के लिए मारने की इज़ाज़त दे देनी चाहिए और ज़्यादा मारने पर ५० से १०० रुपयों तक फी जानवर मिस्ल औरों के मुआविज़ा लेना चाहिए। उनमें से जो रेन्जर बड़े जानवरों के शिकार के शौक़ीन हों, वह मिस्ल बाहरवालों के १५ दिन के शिकार का परमिट लें और पूरी तौर पर क़ायदों की पाबन्दी करें।

---

६६. जंगली चिड़ियों और जानवरों के अजायबघर

कुदरत ने तरह-तरह के जानवर और चिड़ियाँ मुख्तलिफ़ मुल्कों में पैदा किये हैं; जोकि आम लोगों के लिए मुमकिन नहीं, कि उनको और उनका रहन-सहन उनके मुल्कों में जाकर देख सकें। क्या ही उनका तफ़रीह का जरिया आम पबलिक के लिए होगा अगर बड़ी हुकूमतें अपनी राजधानी के बड़े शहरों में अपने मुल्क के जंगली जानवर और चिड़ियों के अजायबघर बनवा दें और दूसरे मुल्कों के जानवर व चिड़ियाँ भी जोकि उनके मुल्क की आब-व-हवा में रह सकते हों, उनको भी रखें और अजायबघर में जहाँ तक हो सके उनके रहन-सहन को और खाने के वह ही हालात बतावें जैसे कि उनको असली मुल्क में कुदरत ने बनाये हैं।

उनके रहने का इन्तजाम इस तरह से किया जावे कि गोश्त खानेवाले दरिन्दे और वनस्पति खानेवाले हिरन की क़िस्म के जानवर सब पबलिक को आसानी से खूब अच्छी तरह से नजर आ सकें और उसके अलावा ऊपर के सब जानवर एक-दूसरे को भी हर वक्त अच्छी तरह से देख सकें और आपस में बहुत मिल-जुल भी सकें; जिससे पबलिक को हर वक्त इन जंगली जानवरों के अजीब-व-ग़रीब तमाशे, खेल-कूद, आपस में एक दूसरे से मेल-मुहब्बत, बर्त्ताव और कभी-कभी किसी-किसी में नक़ली लड़ाई, जिससे आम इन्सान बहुत कम वाक़िफ़ हैं, देखने को मिलेंगे; जोकि ये जानवर आपस में अपनी रोजाना की आजाद जिन्दगी में अक्सर दिखलाते हैं।

यह कुदरती दिलचस्प तमाशे पबलिक के लिए आला तफ़रीह का बायस होंगे और जानवरों का वक्त भी बहुत अच्छा कटेगा, बजाय काल-कोठरी की तरह अलग-अलग जेलखाने में रखने के; जैसे कि वह आजकल पक्के मकानों और सीमेन्ट के फ़र्श पर रखे जाते हैं; जोकि

Plate No. XIX.



The author at the age of 67.

कुदरत ने उनको नहीं दिये हैं और न वह उनको पसन्द हैं। उनके लिए तो मिट्टी और रेत के फ़र्श और धूप व बारिश और सर्दी से बचने को घनी झाड़ियाँ मगर काफ़ी मैदान घूमने-फिरने और वर्जिश के लिए ज्यादा जरूरी हैं।

मैंने करीब आधा दर्शन अजायबघर उत्तरी हिन्दोस्तान में देखे हैं और जानवरों की नाक़ाबिल इतमीनान हालत देखकर अफ़सोस मालूम होता है कि बावजूद काफ़ी खर्चे के न उनकी जरूरियात के मुताबिक रहने का इन्तजाम है, जिसमें कुछ कम ही खर्च होता है। अगर यह अजायबघर ठीक तरीके पर बनाये जाते और उनमें जंगली जानवरों के कुदरती चारे के और जंगली फलों के दरख़्त लगाये जाते, जिन पर वह जंगल में गुजर करते हैं, बजाये कीमती सीमेन्ट के मकानों और खूबसूरत फूलों के दरख्तों के; जिनसे उनको कोई दिलचस्पी नहीं हो सकती है।

तमाम वनस्पति खानेवाले जानवर हिरन, चीतल की किस्म के छोटे व बड़े सब एक साथ अजायबघर के एक तरफ़ बड़े मैदान में बाहरी किनारे के पास रखे जा सकते हैं, जिसमें उनके वास्ते एक तालाब, नमक मिला हुआ मिट्टी का एक-एक टीला, घास-फूस, बेर व करौंदे की झाड़ियाँ और उनके कुदरती चारे के दरख़्त-मिस्ल सेमल, हड़, आँवला, बेर, कचनार, जामुन, शहतूत, अंजीर, गूलर, पीपल, बरगद, ढाक, अम्बाड़ा, अमरूद और आम वग़ैरह लगा दिये जायँ। इनके अलावा चन्द खेत जौ, अरहर, उर्द, मँडुआ, ज्वार वग़ैरह एक-एक, दो-दो बीघा पर बो दिये जायँ तो उन तमाम जानवरों की ज़िंदगी तन्दुरुस्ती के साथ आराम से गुज़रे। अजायबघर के दूसरी तरफ़ भी इसी तरह का इन्तज़ाम कर दिया जाय और ये सब जानवर तीन-तीन महीने एक आहाते में रखे जायँ; जिससे कि तीन महीने के वक्त में खाली आहाते में फिर चारे के खेत तैयार कर दिये जायँ।

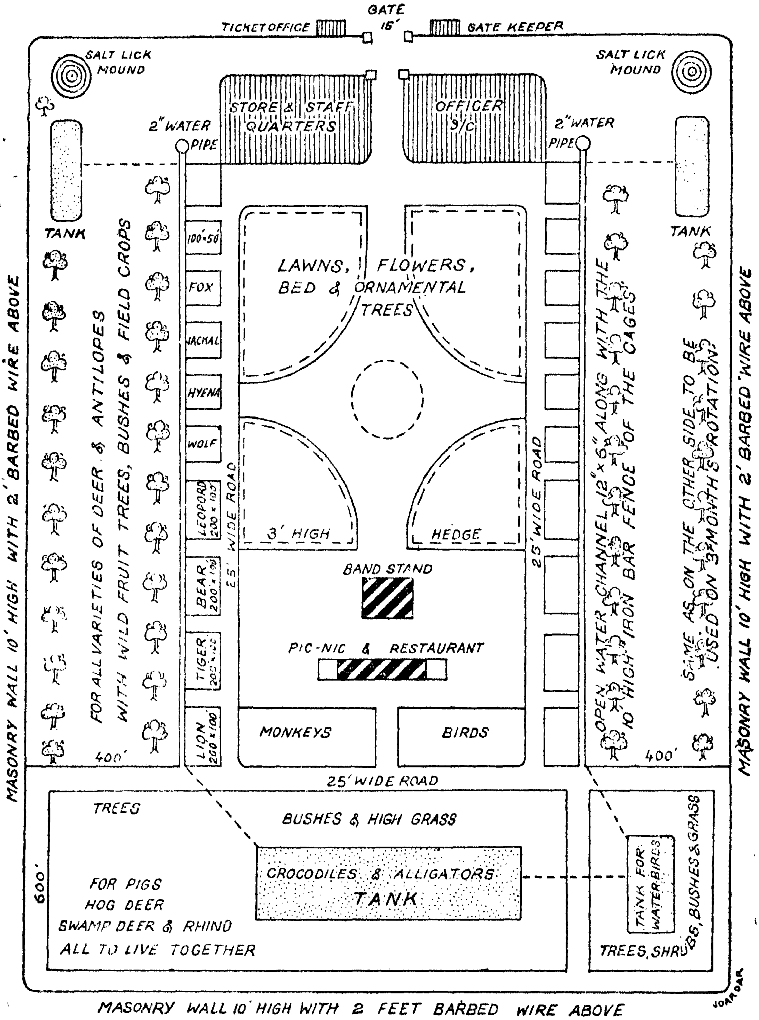
इस आहाते के अन्दरूनी किनारे के साथ-साथ २००×१०० और १००×५० फीट की लोहे की शलाखों के कटहरे शेर, गुलदार, रीछ,

लकड़बग्घा, भेड़िया, गीदड़, लोमड़ी, चीत साँप और दीगर दरिन्दों के लिए बना दिये जायँ और उनमें उनकी रिहाइश व छिपने के लिए झाड़ियाँ, घास, घने दरख़्त और उनके ऊपर घनी बेलें लगा दी जायँ और एक-एक छोटी कोठरी बना दी जाय। दरिन्दों को भी ३ महीने के बाद कटहरों के ज़रिये दूसरी तरफ़ बदल दिया जाया करे।

अजायबघर के बीच में एक उम्दा पार्क बना दिया जाय, जिसमें खूबसूरत पेड़, फूलों की क्यारियाँ और २५ फीट चौड़ा और ५० से १०० फीट तक लम्बा, एक पिकनिक हाउस जिसके दोनों किनारों पर रेस्टोरेन्ट हों, बना दिये जायँ; जिसमें पबलिक आराम से बैठ सके, चाय वग़ैरह पी सके और वक्त गुजार सके। इसके सामने एक चबूतरा बैंड बाजे के लिए हो, जहाँ रोज शाम को बैंड बजे और बैंड की आवाज सुनकर कुल जंगली जानवर और चिड़ियाँ भी अपना-अपना जंगली अनोखा राग गाकर पबलिक को खुश करें। अजायबघर के फाटक के सामने आख़ीरी हिस्से को पानी के जानवरों और चिड़ियों के लिए रखा जावे। उसके सामने बन्दरों व खुश्की की चिड़ियों को रखा जावे और इन सबके चारों तरफ़ २५ फ़ीट सड़क बना दी जावे; ताकि पबलिक खूब देख सके।

इस किस्म का अजायबघर जंगली क़ैदियों को ख़ुश, तन्दुरुस्त और मशगूल रखेगा और यह जंगली जानवर अपने आपस के बरताव, मेल-जोल, दौड़-धूप, नकली लड़ाई, खेल-कूद और दरिन्दे हिरन, चीतल वग़ैरह को देखकर अपने-अपने लोहे की शलाख़ों के आहाते के अन्दर तरह-तरह की घातें, पैंतरे व तमाशे हर वक्त पबलिक को दिखलावेंगे; जिससे उनकी दिन भर वर्जिश होगी, तन्दुरुस्ती अच्छी रहेगी और उनका वक्त भी अच्छा कटेगा; बमुकाबिले अब अकेले-अकेले अलग कटहरों में बेकार पड़े रहने और कैदियों की तरह जिन्दगी गुजारने के। हिरन, चीतल वग़ैरह अपने दुश्मनों को देखकर तरह-तरह की अपनी-अपनी बोलियों में ख़तरे की आवाजें देंगे और जंगल के वे लुत्फ़ व

PLAN FOR THE ZOO



K B HAKIM-UDDIN

नाकाबिल यकीन तमाशे दिखलावेंगे, जो कि सिर्फ़ कुछ उन्हीं लोगों को देखने को मिलते हैं जो जंगलों में उमर गुज़ारते हैं।

पबलिक काफ़ी रुपया नकली सिनेमा, खेल-तमाशों और तफ़रीह में सर्फ़ करती है, लिहाज़ा पूरी उम्मीद होती है कि इस असली कुदरती सिनेमा देखने के लिए वह ख़ुशी से नीचे लिखी हुई फ़ीस अदा करेंगे और सिनेमावाले तसवीरें लेने के लिए काफ़ी रुपया देंगे।

बच्चे	मर्द या औरत	खोन्चे वाले
=)	।)	।)

रेस्टोरेन्ट हर साल नीलाम कर दिये जायँ। इससे उम्मीद की जाती है कि काफ़ी आमदनी अजायबघर के खर्चे को और रफ़्ते-रफ़्ते सरमाये की वसूली को हो जाया करेगी और साथ ही इसके अलावा सैकड़ों आदमियों की रोज़ी इसके बदौलत चलेगी।

एक नज़री नक्शा इस क़िस्म के अजायबघर का पिछले सफ़े पर दिया गया है।